स्थापित वि. संवत् १९३२ (१८७५ ई.)

ॐ गणेशाय नमः

शिमला व दिल्ली की दैनिक लग्न सारणी सहित

गणितकर्त्ता पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र पं. पन्ना लाल ज्योतिषी की असली व प्रामाणिक पंचाँग 2025-26 ई.

150वाँ वर्षप्रवेश विशेषांक

गौरवशाली 150 वाँ प्रकाशन वर्ष

स्थापित संवत् १९३२

विश्व-विख्यात

पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़

माई हीरां गेट (अड्डा होशियारपुर), जालन्धर शहर — 144008 (पंजाब)

एकमात्र वितरक :

जनरल बुक डिपो

चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर

94172-91325, 97799-13583

मूल्य: ₹ 135/-

विषय-सूची-पंचांगदिवाकर-संवत् २०८२ (सन् 2025-26 ई.)

इस वर्ष के कुछ नवीन, उपयोगी एवं आकर्षक विषय

आगामी वर्ष के आकर्षक विषय

- संक्षिप्त दीपावली पूजन विधि
- कालसर्प दोष के कारण सन्तान सुख में बाधा
- भद्रा विधि-निषेध तथा परिहार
- बीकानेर, जोधपुर तथा ऊधमपुर के दैनिक सूर्योदयास्त
- अन्य अनेक उपयोगी विषयों को सम्मिलित करने का प्रयास करेंगे।

पंचाँग दिवाकर के 150वें गौरवमयी वर्ष प्रवेश पर

श्री श्री १००८ काशी धर्म पीठाधीश्वर जगद् गुरु शंकराचार्य स्वामी नारायणानन्द तीर्थ महाराज जी का शुभाशीर्वाद

भारतीय पञ्चाङ्ग पद्धतिरस्माकं हिन्दु-सभ्यतायाः गौरवान्वितायाः समृद्धयाश्च संस्कृतेर-भिव्यंजनं करोति।

शताधिकवर्षेभ्यः प्राक् गणिताचार्येण सुप्रसिद्धेन ज्योतिर्विद पण्डित देवीदयाल महाभागेन लवपुरे संस्थापितं प्रकाशितं च प्रसिद्धं लोकप्रियं च पञ्चाङ्गदिवाकरम् आगामिवर्षे निज १२५तमे वर्षे प्रवेशं लभमानमस्ति। सम्प्रति तस्यैव पण्डितप्रवरस्य प्रपौत्रः गणिताचार्यः पण्डित पन्नालाल शर्मा ज्योतिर्विद् निज सुयोग्य पुत्र द्वयमाध्ययेन पञ्चाङ्ग कार्ये शुद्धस्फुटसूक्ष्म-गणितागत चित्रापक्षीय निरयणपद्धतिमनुसरन् पञ्चाङ्ग दिवाकरस्य लेखनं सम्पादनं च कुर्वन्नस्ति। नवीने पञ्चाङ्गदिवाकरे ज्योतिषः व्रतपर्वादि धर्मशास्त्र विषयकानामु-पयोगिविषयानां च समावेशनात् पञ्चाङ्ग दिवाकरं सम्प्रति सर्वविधर्मपरायण जनसामान्यस्य कृते सुतरामुपयोगी प्रतीयते।

आशास्यते यद् लोकहितं सम्मुखीनं कृत्वा निज कुल परम्परा परिपालने पण्डित पन्ना लाल ज्योतिर्विद् निज सुपुत्रयोः सहयोगेन पञ्चाङ्गमिदमतोऽप्यधिकं उपयोगिनं कर्तुं प्रयासरतो भविष्यति। अस्य प्रचुरः प्रचारः प्रसारश्च भवेत् अस्योन्नतिं सुतरां कामय-मानः शुभाशीरपि कामये। तिथौ वैशाख पूर्णिमा, भृगुवासरः प्रविष्टे १७ वैशाख, सं. २०५६ विक्रमी

श्री हस्त-मुद्रा-
१००८ स्वामी नारायणानन्द तीर्थ रामेश्वर मठः श्री काशी धर्म पीठाधीश्वर काशीक्षेत्रम्(वाराणसी)

प्रमुख व्रत, पर्व, त्यौहार एवं छुट्टियाँ (सन् 2025-26 ई.)

○ जनवरी–(सन् 2025 ई.) ○

- इंग्लिश नववर्ष 2025 ई. प्रा. 1 जन. बुध
- मार्त्तण्ड सप्तमी 6 जन. सोम
- श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं. 6 जन. सोम
- पुत्रदा एकादशी व्रत 10 जन. शुक्र
- पौष पूर्णिमा 13 जन. सोम
- लोहड़ी पर्व 13 जन. सोम
- माघस्नान प्रारम्भ 13 जन. सोम
- मकर (माघ) संक्रान्ति 14 जन. मंग
- प्रथम शाही स्नान– –कुम्भ महापर्व (प्रयागराज) } 14 जन. मंग
- श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी 17 जन. शुक्र
- गणतन्त्र दिवस (76वाँ) 26 जन. रवि
- माघ (मौनी) अमावस 29 जन. बुध
- द्वितीय (प्रमुख) शाही स्नान कुम्भमहापर्व (प्रयागराज } 29 जन. बुध
- गुप्त नवरात्र प्रारम्भ 30 जन. गुरु
- बाबा श्रीलाल दयाल– –जयन्ती (ध्यानपुर, पं.) } 31 जन. शुक्र

○ फरवरी ○

- गौरी तृतीया (गोंतरी) 1 फर. शनि
- तिल–कुन्द चतुर्थी 1 फर. शनि
- वसन्त (श्री) पंचमी 2 फर. रवि
- लक्ष्मी–सरस्वती पूजन 2 फर. रवि
- तृतीय (अन्तिम) शाही–स्नान कुम्भमहापर्व (प्रयागराज) } 2/3 फर.
- रथसप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली) 4 फर. मंग
- आरोग्य–पुत्र सप्तमी 4 फर. मंग
- भीष्माष्टमी 5 फर. बुध
- गुप्त नवरात्र समाप्त 6 फर. गुरु
- भीष्म द्वादशी, तिल १२ 9 फर. रवि
- माघ पूर्णिमा 12 फर. बुध
- माघस्नान समाप्त 12 फर. बुध
- श्रीगुरु रविदास जयन्ती 12 फर. बुध
- स्वा. दयानन्द सरस्वती जयं. 23 फर. रवि
- श्रीमहाशिवरात्रि व्रत 26 फर. बुध

○ मार्च ○

- होलाष्टक प्रारम्भ 7 मार्च शुक्र
- अन्नपूर्णा–अष्टमी 7 मार्च शुक्र
- गोविन्द द्वादशी 10 मार्च सोम
- होलिका दहन (भद्रा बाद) 13 मार्च गुरु
- होलाष्टक समाप्त 14 मार्च शुक्र
- होली–पर्व 14 मार्च शुक्र
- वसन्तोत्सव 15 मार्च शनि
- होला मेला (श्रीआनन्दपुर– –व पांओंटा साहिब) 15 मार्च शनि
- श्रीरंग–पंचमी 19 मार्च बुध
- महाविषुव दिवस 20 मार्च गुरु
- शीतलाष्टमी व्रत 22 मार्च शनि
- वारुणी पर्व 27 मार्च गुरु
- मेला पिहोवातीर्थ (हरि.) 28 मार्च शुक्र
- वि. संवत् 2081 पूर्ण 29 मार्च शनि
- वि. संवत् 2082 शुरु 30 मार्च रवि
- चैत्र (वासन्त) नवरात्र शुरु 30 मार्च रवि
- तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण 30 मार्च रवि
- गौरी तृतीया(गणगौर) 31 मार्च सोम

○ अप्रैल ○

- श्री (लक्ष्मी) पंचमी 2 अप्रै. बुध
- हय–व्रत 2 अप्रै. बुध
- नाग–पंचमी 2 अप्रै. बुध
- स्कन्द षष्ठी व्रत 3 अप्रै. गुरु
- अशोकाष्टमी 5 अप्रै. शनि
- श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति 5 अप्रै. शनि
- वासन्त नवरात्र समाप्त 6 अप्रै. रवि
- श्रीरामनवमी 6 अप्रै. रवि
- नवरात्र व्रत पारणा 7 अप्रै. सोम
- लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव 8 अप्रै. मंग
- श्रीविष्णु दमनोत्सव 9 अप्रै. बुध
- अनङ्ग त्रयोदशी 10 अप्रै. गुरु
- श्रीमहावीर जयन्ती (जैन) 10 अप्रै. गुरु
- शिव दमनोत्सव 11 अप्रै. शुक्र
- श्रीहनुमान जयं.(दक्षिण) 12 अप्रै. शनि
- वैशाखस्नान प्रारम्भ 12 अप्रै. शनि
- वैशाखी–पर्व (पं.) 13 अप्रै. रवि
- गुड फ्राइडे (क्रिश्चि.) 18 अप्रै. शुक्र
- भगवान् परशुराम जयं. 29 अप्रै. मंग
- अक्षय–तृतीया 30 अप्रै. बुध
- केदार–बद्री यात्रा प्रारंभ 30 अप्रै. बुध

○ मई ○

- आद्यगुरु शंकराचार्य जयं. 2 मई शुक्र
- श्रीगङ्गा–जयन्ती 3 मई शनि
- श्रीबगुलामुखी जयन्ती 5 मई सोम
- जानकी–जयन्ती 5 मई सोम
- श्रीनृसिंह–जयन्ती 11 मई रवि
- श्रीकूर्म–जयन्ती 12 मई सोम
- वैशाख–बुद्ध पूर्णिमा 12 मई सोम
- वैशाख स्नान समाप्त 12 मई सोम
- भद्रकाली एकादशी 23 मई शुक्र
- शनैश्चर–जयन्ती(सायं व्या.) 26 मई सोम
- वटसावित्री व्रत(अमा. पक्ष) 26 मई सोम
- ज्येष्ठ, भावुका अमावस 27 मई मंग
- रम्भा तृतीया व्रत 29 मई गुरु

○ जून ○

- अरण्य षष्ठी 1 जून रवि
- विन्ध्यवासिनी पूजा 1 जून रवि
- श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयं. 3 जून मंग
- मेला क्षीर–भवानी (काश्मीर) 3 जून मंग
- श्रीगङ्गा–दशहरा पर्व 5 जून गुरु
- निर्जला एकादशी व्रत (स्मार्त्त) 6 जून शुक्र
- निर्जला एकादशी (वैष्णा.) 7 जून शनि
- वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा) 10 जून मंग
- ज्येष्ठ पूर्णिमा 11 जून बुध
- सन्त कबीर जयन्ती 11 जून बुध
- सायन दक्षिणायन शुरु 21 जून शनि
- गुप्त नवरात्र प्रारम्भ 26 जून गुरु
- श्रीजगन्नाथ रथयात्रा–पुरी 27 जून शुक्र
- कुमार–षष्ठी 30 जून सोम

○ जुलाई ○

- विवस्वत सप्तमी 1 जुला. मंग
- गुप्त नवरात्र समाप्त 4 जुला. शुक्र
- हरिशयनी एकादशी व्रत 6 जुला. रवि
- श्री विष्णुशयनोत्सव 6 जुला. रवि
- चातुर्मास्य व्रत, नियम शुरु 6 जुला. रवि
- श्रीशिवशयनोत्सव 10 जुला. गुरु
- कोकिला व्रत 10 जुला. गुरु
- गुरु पूर्णिमा, व्यासपूजा 10 जुला. गुरु
- श्रावण सोमवार व्रत शुरु 14 जुला. सोम
- श्रावण–शिवरात्रि 23 जुला. बुध
- हरियाली अमावस 24 जुला. गुरु
- मे. चिन्तपूर्णी–हि.प्र. शुरु 25 जुला. शुक्र
- मधुस्त्रवा–हरियाली तीज 27 जुला. रवि
- नाग–पञ्चमी 29 जुला. मंग
- श्रीकल्कि–जयन्ती 30 जुला. बुध
- गो. तुलसीदास जयं. 31 जुला. गुरु

○ अगस्त ○

- श्रीदुर्गाष्टमी 1 अग. शुक्र
- मे. चिन्तपूर्णी–हि.प्र. समाप्त 1 अग. शुक्र
- ऋक्–उपाकर्म 9 अग. शनि
- यजु–अथर्ववेदि उपाकर्म 9 अग. शनि
- श्रावण पूर्णिमा 9 अग. शनि
- रक्षाबन्धन (राखी) 9 अग. शनि
- श्रीअमरनाथ यात्रा समाप्त 9 अग. शनि
- कज्जली तृतीया 12 अग. मंग
- अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी 12 अग. मंग
- बहुला चतुर्थी 12 अग. मंग
- चन्दन षष्ठी व्रत 14 अग. गुरु
- श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत 15 अग. शुक्र
- स्वतन्त्रता दिवस (79वाँ) 15 अग. शुक्र
- श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव) 16 अग. शनि
- गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव 17 अग. रवि
- श्रीगुग्गा नवमी 17 अग. रवि
- वत्स द्वादशी (पूजा) 20 अग. बुध
- पिठोरी अमावस 22 अग. शुक्र
- कुशाग्रहणी अमावस 23 अग. शनि
- सामवेदि उपाकर्म 26 अग. मंग
- हरितालिका तृतीया 26 अग. मंग
- कलंक चतुर्थी 26 अग. मंग
- सिद्धि विनायक व्रत 27 अग. बुध
- ऋषि पंचमी व्रत 28 अग. गुरु
- सूर्य षष्ठी व्रत 29 अग. शुक्र
- मुक्ताभरण–सन्तान सप्तमी 30 अग. शनि
- श्रीराधाष्टमी 31 अग. रवि
- श्रीमहालक्ष्मी व्रत शुरु 31 अग. रवि
- दूर्वाष्टमी व्रत 31 अग. रवि

○ सितम्बर ○

- श्रीचन्दनवमी(उदासीन) 1 सितं. सोम
- श्रीवामन–जयन्ती 4 सितं. गुरु
- अनन्त चतुर्दशी व्रत 6 सितं. शनि
- मेला सोढल, जालंधर (पं.) 6 सितं. शनि
- प्रोष्ठपदी–पूर्णिमा श्राद्ध 7 सितं. रवि
- महालय प्रारम्भ 7 सितं. रवि
- खग्रास चन्द्रग्रहण 7 सितं. रवि
- पितृपक्ष(श्राद्ध) प्रारम्भ 8 सितं. सोम
- श्रीमहालक्ष्मी व्रत समा. 14 सितं. रवि
- महालय/श्राद्ध समाप्त 21 सितं. रवि
- सर्वपितृ श्राद्ध 21 सितं. रवि
- शरद् नवरात्र प्रारम्भ 22 सितं. सोम
- उपाङ्ग ललिता व्रत 26 सितं. शुक्र
- सरस्वती आवाहन 29 सितं. सोम
- सरस्वती पूजन 30 सितं. मंग
- श्रीदुर्गाष्टमी 30 सितं. मंग

○ अक्तूबर ○

- महानवमी (व्रत, पूजा, बलिदान हेतु) } 1 अक्तू. बुध
- सरस्वती बलिदान 1 अक्तू. बुध
- नवरात्र समाप्त 1 अक्तू. बुध
- महात्मा गाँधी जयन्ती 2 अक्तू. गुरु

पर्व	तिथि
विजयादशमी (दशहरा)	2 अक्तू. गुरु
सरस्वती विसर्जन	2 अक्तू. गुरु
नवरात्र व्रत पारणा	2 अक्तू. गुरु
भरत-मिलाप	3 अक्तू. शुक्र
शरद् पूर्णिमा व्रत	6 अक्तू. सोम
कोजागर व्रत	6 अक्तू. सोम
महर्षि श्रीवाल्मीकि-जयं.	7 अक्तू. मंग
कार्तिकस्नान प्रारम्भ	7 अक्तू. मंग
व्रत करवा-चौथ	10 अक्तू. शुक्र
अहोई अष्टमी व्रत	13 अक्तू. सोम
गोवत्स द्वादशी	17 अक्तू. शुक्र
धन त्रयोदशी	18 अक्तू. शनि
यम प्रीत्यर्थ दीपदान	18 अक्तू. शनि
श्रीहनुमान जयं. (उ.भारत)	19 अक्तू. रवि
नरक-चतुर्दशी	20 अक्तू. सोम
दीपावली, महालक्ष्मी पूजन	21 अक्तू. मंग
कार्तिक अमावस	21 अक्तू. मंग
अन्नकूट-गोवर्धन पूजा	22 अक्तू. बुध
बलि-पूजा, गोक्रीडा	22 अक्तू. बुध
विश्वकर्मा दिवस (पं.)	22 अक्तू. बुध
भाईदूज, यमद्वितीया	23 अक्तू. गुरु
श्रीविश्वकर्मा-पूजन	23 अक्तू. गुरु
सूर्य षष्ठी पर्व (बिहार)	27 अक्तू. सोम
गोपाष्टमी	30 अक्तू. गुरु
अक्षय-कूष्माण्ड नवमी	31 अक्तू. शुक्र

○ नवम्बर ○

पर्व	तिथि
भीष्मपंचक प्रारम्भ	1 नवं. शनि
हरिप्रबोधिनी एका. (स्मा.)	1 नवं. शनि
हरिप्रबोधोत्सव	2 नवं. रवि
तुलसी विवाह	2 नवं. रवि
चातुर्मास्य व्रतादि समा.	2 नवं. रवि
वैकुण्ठ चतुर्दशी	3 नवं. सोम
त्रिपुरोत्सव	5 नवं. बुध
कार्तिक पूर्णिमा	5 नवं. बुध
भीष्मपंचक समाप्त	5 नवं. बुध
श्रीगुरु नानक जयन्ती	5 नवं. बुध
कार्तिकस्नान समाप्त	5 नवं. बुध
पद्मक योग	6 नवं. गुरु
श्रीकालभैरवाष्टमी	12 नवं. बुध
स्कन्द-गुह षष्ठी	26 नवं. बुध
चम्पा-षष्ठी (महाराष्ट्र)	26 नवं. बुध
मित्र (विष्णु) सप्तमी	27 नवं. गुरु

○ दिसम्बर ○

पर्व	तिथि
मोक्षदा एकादशी व्रत	1 दिसं. सोम
श्रीगीता-जयन्ती	1 दिसं. सोम
श्रीदत्तात्रेय जयन्ती	4 दिसं. गुरु
रूक्मिणी अष्टमी	12 दिसं. शुक्र
सूर्य उत्तरायण में	21 दिसं. रवि
क्रिसमिस डे (क्रिश्चि.)	25 दिसं. गुरु
तुलसी पूजन महोत्सव	25 दिसं. गुरु
मार्त्तण्ड-सप्तमी	27 दिसं. शनि
श्रीगुरु गोविन्द सिंह जयं.	27 दिसं. शनि
पुत्रदा एका. (स्मार्त्त)	30 दिसं. मंग

» जनवरी–2026 ई. »

पर्व	तिथि
पौष पूर्णिमा	3 जन. शनि
माघस्नान प्रारम्भ	3 जन. शनि
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी	6 जन. मंग
लोहड़ी पर्व	13 जन. मंग
मकर (माघ) संक्रान्ति	14 जन. बुध
माघ (मौनी) अमावस	18 जन. रवि
गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	19 जन. सोम
गौरी तृतीया (गोंतरी)	21 जन. बुध
तिल-कुन्द चतुर्थी	22 जन. गुरु
वसन्त (श्री) पंचमी	23 जन. शुक्र
लक्ष्मी-सरस्वती पूजन	23 जन. शुक्र
आरोग्य-पुत्र सप्तमी	25 जन. रवि
रथसप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	25 जन. रवि
भीष्माष्टमी	26 जन. सोम
गणतन्त्र दिवस (77वाँ)	26 जन. सोम
गुप्त नवरात्र समाप्त	27 जन. मंग
भीष्म-द्वादशी, तिल १२	29 जन. गुरु

» फरवरी–2026 ई० »

पर्व	तिथि
माघ पूर्णिमा	1 फर. रवि
माघस्नान समाप्त	1 फर. रवि
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	1 फर. रवि
स्वा. दयानन्द सरस्वती जयं.	12 फर. गुरु
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	15 फर. रवि
होलाष्टक प्रारम्भ	24 फर. मंग
अन्नपूर्णा-अष्टमी	24 फर. मंग
गोविन्द-द्वादशी	28 फर. शनि

» मार्च–2026 ई० »

पर्व	तिथि
होलिका-दहन (भद्रा-पुच्छे)	2 मार्च सोम
ग्रस्तोदय खग्रास चंद्रग्रहण	3 मार्च मंग
होलाष्टक समाप्त	3 मार्च मंग
होली-पर्व	3 मार्च मंग
वसन्तोत्सव	4 मार्च बुध
होला मेला (श्रीआनन्दपुर- -व पांओंटा साहिब)	4 मार्च बुध
श्रीरंग-पंचमी	8 मार्च रवि
शीतलाष्टमी व्रत	11 मार्च बुध
वारुणी पर्व	17 मार्च मंग
मेला पिहोवातीर्थ (हरि.)	17 मार्च मंग
वि. संवत् 2082 पूर्ण	19 मार्च गुरु
वि. संवत् 2083 शुरु	19 मार्च गुरु
चैत्र (वासन्त) नवरात्र शुरु	19 मार्च गुरु

श्रीसत्यनारायण व्रत

(सन् 2025–26 ई.)

श्रीसत्यनारायण व्रत का उदय-कालिक पूर्णिमा की तिथि से कभी-कभी एक दिन का अन्तर आ जाता है, क्योंकि चन्द्रोदयकालिक एवं प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा ही व्रत हेतु ग्रहण करनी चाहिए।

मास	तिथि
पौष	13 जन. सोम
माघ	12 फर. बुध
फाल्गुन	13 मार्च गुरु
चैत्र	12 अप्रै. शनि
वैशाख	12 मई सोम
ज्येष्ठ	10 जून मंग
आषाढ़	10 जुला. गुरु
श्रावण	8 अग. शुक्र
भाद्रपद (देखें पृष्ठ 22)	7 सितं. रवि
आश्विन	6 अक्तू. सोम
कार्तिक	5 नवं. बुध
मार्गशीर्ष	4 दिसं. गुरु
(सन् 2026 ई.)	
पौष (देखें पृष्ठ 26)	2 जन. शुक्र
माघ	1 फर. रवि
फाल्गुन (देखें पृ. 27)	2 मार्च सोम

पूर्णिमा व्रत (2025-26 ई.)

(उदय-व्यापिनी, स्नानदानार्थ)

मास	तिथि
पौष	13 जन. सोम
माघ	12 फर. बुध
फाल्गुन	14 मार्च शुक्र
चैत्र	12 अप्रै. शनि
वैशाख	12 मई सोम
ज्येष्ठ	11 जून बुध
आषाढ़	10 जुला. गुरु
श्रावण	9 अग. शनि
भाद्रपद	7 सितं. रवि
आश्विन	7 अक्तू. मंग
कार्तिक	5 नवं. बुध
मार्गशीर्ष (8:38 बाद)	4 दिसं. गुरु
(सन् 2026 ई.)	
पौष	3 जन. शनि
माघ	1 फर. रवि
फाल्गुन	3 मार्च मंग

अमावस्याएँ

(स्नानदानार्थ) (सन् 2025-26 ई.)

मास	तिथि
माघ	29 जन. बुध
फाल्गुन (8:55 बाद)	27 फर. गुरु
चैत्र	29 मार्च शनि
वैशाख	27 अप्रै. रवि
ज्येष्ठ	27 मई मंग
आषाढ़	25 जून बुध
श्रावण	24 जुला. गुरु
भाद्रपद	23 अग. शनि
आश्विन	21 सितं. रवि
कार्तिक	21 अक्तू. मंग
मार्गशीर्ष	20 नवं. गुरु
पौष	19 दिसं. शुक्र
(सन् 2026 ई.)	
माघ	18 जन. रवि
फाल्गुन	17 फर. मंग
चैत्र (6:53 तक)	19 मार्च गुरु

श्रीगणेश चतुर्थी व्रत

मास	तिथि
माघ (संकष्ट)	17 जन. शुक्र
फाल्गुन	16 फर. रवि
चैत्र	17 मार्च सोम
वैशाख	16 अप्रै. बुध
ज्येष्ठ	16 मई शुक्र
आषाढ़	14 जून शनि
श्रावण	14 जुला. सोम
भाद्रपद (अङ्गारकी)	12 अग. मंग
आश्विन	10 सितं. बुध
कार्तिक	10 अक्तू. शुक्र
मार्गशीर्ष	8 नवं. शनि
पौष	7 दिसं. रवि
(सन् 2026 ई.)	
माघ (अङ्गारकी) संकष्ट	6 जन. मंग
फाल्गुन	5 फर. गुरु
चैत्र	6 मार्च शुक्र

श्रीसिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत

मास	तिथि
पौष	3 जन. शुक्र
माघ	1 फर. शनि
फाल्गुन	3 मार्च सोम
चैत्र	1 अप्रै. मंग
वैशाख	1 मई गुरु
ज्येष्ठ	30 मई शुक्र
आषाढ़	28 जून शनि
श्रावण	28 जुला. सोम
भाद्रपद	27 अग. बुध
आश्विन	25 सितं. गुरु
कार्तिक	25 अक्तू. शनि
मार्गशीर्ष	24 नवं. सोम
पौष	23 दिसं. मंग
(सन् 2026 ई.)	
माघ	22 जन. गुरु
फाल्गुन	21 फर. शनि

पितृपक्ष में श्राद्ध–सन् 2025 ई.
(आश्विन कृष्ण पक्ष में श्राद्ध तिथियों का निर्णय)

अपने पूर्वज पितरों के प्रति श्रद्धा भावना रखते हुए आश्विन कृष्ण पक्ष में पितृ-तर्पण एवं श्राद्धकर्म करना नितान्त आवश्यक है। इससे स्वास्थ्य, समृद्धि, आयु, सुख-शान्ति, वंशवृद्धि एवं उत्तम सन्तान की प्राप्ति होती है। श्रद्धापूर्वक किए जाने के कारण ही इसका नाम '**श्राद्ध**' है। इस बात का भी ध्यान रहे कि श्राद्धकृत्य '**अपराह्णकाल**' व्यापिनी तिथि में किए जाते हैं।

श्राद्ध	तिथि	श्राद्ध	तिथि
प्रोष्ठपदी/पूर्णिमा श्राद्ध	7 सितं. रवि	अष्टमी का श्राद्ध	14 सितं. रवि
प्रतिपदा का श्राद्ध	8 सितं. सोम	नवमी/सौभाग्यवतीनां श्राद्ध	15 सितं. सोम
द्वितीया का श्राद्ध	9 सितं. मंग	दशमी का श्राद्ध	16 सितं. मंग
तृतीया का श्राद्ध, चतुर्थी का श्राद्ध	10 सितं. बुध	एकादशी का श्राद्ध	17 सितं. बुध
		द्वादशी/संन्यासीनां श्राद्ध	18 सितं. गुरु
भरणी श्राद्ध	11 सितं. गुरु	त्रयोदशी/मघा श्राद्ध	19 सितं. शुक्र
पंचमी का श्राद्ध	11 सितं. गुरु	✤चतुर्दशी/अपमृत्यु श्राद्ध	20 सितं. शनि
षष्ठी का श्राद्ध	12 सितं. शुक्र	अमावस, सर्वपितृ, अज्ञात मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध	21 सितं. रवि
सप्तमी का श्राद्ध	13 सितं. शनि		

✤ चतुर्दशी तिथि को केवल शस्त्र, विष, दुर्घटनादि (अपमृत्यु) से मृतों का श्राद्ध होता है। उनकी मृत्यु चाहे किसी अन्य तिथि में हुई हो। चतुर्दशी तिथि में सामान्य मृत्यु वालों का श्राद्ध अमावस्या तिथि में करने का शास्त्र विधान है।

निरयण संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल (सन् 2025–26 ई.)

नाम संक्रान्ति	ता. मास वार	प्रवेशकाल (घं. मिं.)	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टै. टा.)
माघ संक्रान्ति	14 जन., मंग	8:55	सू.उ. से दोपहर 15:19 तक
फाल्गुन संक्रान्ति	12 फर., बुध	21:56	मध्याह्न बाद से
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च, शुक्र	18:50	दोपहर 12:26 बाद से
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रै., रवि	27:21	अगले दिन प्रात: 9:45 तक
ज्येष्ठ संक्रान्ति	14 मई, बुध	24:11	अगले दिन प्रात: 6:35 तक
आषाढ़ संक्रान्ति	15 जून, रवि	6:44	सू.उ. से दोपहर 13:08 तक
श्रावण संक्रान्ति	16 जुला., बुध	17:30	प्रात: 11:06 बाद से
भाद्र. संक्रान्ति	16 अग., शनि	25:52	अगले दिन प्रात: 8:16 तक
आश्विन संक्रान्ति	16 सितं., मंग	25:47	अगले दिन प्रात: 8:11 तक
कार्तिक संक्रान्ति	17 अक्तू., शुक्र	13:45	प्रात: 7:21 से सायंकाल तक
मार्ग. संक्रान्ति	16 नवं., रवि	13:36	प्रात: 7:12 से सायंकाल तक
पौष संक्रान्ति	15 दिसं., सोम	28:19	अगले दिन प्रात: 10:43 तक
माघ संक्रान्ति(26)	14 जन., बुध	15:06	प्रात: 8:42 से सायं तक
फाल्गुन संक्रान्ति	12 फर., गुरु	28:08	अगले दिन प्रात: 10:32 तक
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च, शनि	25:01	अगले दिन प्रात: 7:25 तक

प्रदोष व्रत (सन् 2025–26 ई.)

प्रदोष व्रत भगवान् शिव की प्रसन्नता और प्रभुत्व की प्राप्ति हेतु किया जाता है। वैसे तो सभी प्रदोष व्रत अत्यन्त कल्याणप्रद होते हैं, परन्तु **शनिप्रदोष** सन्तान प्राप्ति के लिए, **भौम-प्रदोष** ऋणमोचन हेतु ; **सोमप्रदोष** मन:शान्ति एवं सुरक्षा हेतु, **रवि प्रदोष व्रत** आरोग्य प्राप्ति एवं आयुवृद्धि के लिए विशेष अधिक फलदायी होता है। व्रती को चाहिए कि व्रत वाले दिन सूर्यास्त के समय पुन: स्नान करके शिवपूजन एवं कथा करें और तत्पश्चात् "**भवाय भवनाशाय, महादेवाय धीमते। रूद्राय नीलकण्ठाय शर्वाय शशि मौलिने। उग्रायोग्राघनाशाय भीमाय भय हारिणे। ईशानाय नमस्तुभ्यं पशूनां पतये नम:।।**" से प्रार्थना करके भोजन करें।

मास	तिथि
पौष शुक्ल	11 जन. शनि
माघ कृष्ण (सोम)	27 जन. सोम
माघ शुक्ल (सोम)	10 फर. सोम
फाल्गुन कृष्ण (भौम)	25 फर. मंग
फाल्गुन शुक्ल (भौम)	11 मार्च मंग
चैत्र कृष्ण	27 मार्च गुरु
चैत्र शुक्ल	10 अप्रै. गुरु
वैशाख कृष्ण	25 अप्रै. शुक्र
वैशाख शुक्ल	9 मई शुक्र
ज्येष्ठ कृष्ण (शनि)	24 मई शनि
ज्येष्ठ शुक्ल	8 जून रवि
आषाढ़ कृष्ण (सोम)	23 जून सोम
आषाढ़ शुक्ल (भौम)	8 जुला. मंग
श्रावण कृष्ण (भौम)	22 जुला. मंग
श्रावण शुक्ल	6 अग. बुध
भाद्रपद कृष्ण	20 अग. बुध
भाद्रपद शुक्ल	5 सितं. शुक्र
आश्विन कृष्ण	19 सितं. शुक्र
आश्विन शुक्ल(शनि)	4 अक्तू. शनि
कार्तिक कृष्ण(शनि)	18 अक्तू. शनि
कार्तिक शुक्ल (सोम)	3 नवं. सोम
मार्गशीर्ष कृष्ण (सोम)	17 नवं. सोम
मार्गशीर्ष शुक्ल (भौम)	2 दिसं. मंग
पौष कृष्ण	17 दिसं. बुध

(सन् 2026 ई.)

मास	तिथि
पौष शुक्ल	1 जन. गुरु
माघ कृष्ण	16 जन. शुक्र
माघ शुक्ल	30 जन. शुक्र
फाल्गुन कृष्ण (शनि)	14 फर. शनि
फाल्गुन शुक्ल	1 मार्च रवि
चैत्र कृष्ण (सोम)	16 मार्च सोम

मासिक कालाष्टमी व्रत
(सन् 2025 ई.)

मास	तिथि
माघ	21 जन. मंग
फाल्गुन	20 फर. गुरु
चैत्र	22 मार्च शनि
वैशाख (प्रदोषव्यापिनी)	20 अप्रै. रवि
ज्येष्ठ	20 मई मंग
आषाढ़	18 जून बुध
श्रावण	17 जुला. गुरु
भाद्रपद	16 अग. शनि
आश्विन	14 सितं. रवि
कार्तिक	13 अक्तू. सोम
मार्गशीर्ष	12 नवं. बुध
पौष	11 दिसं. गुरु

(सन् 2026 ई.)

मास	तिथि
माघ	10 जन. शनि
फाल्गुन	9 फर. सोम
चैत्र	11 मार्च बुध

मासिक शिवरात्रि व्रत
(सन् 2025 ई.)

मास	तिथि
माघ	27 जन. सोम
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	26 फर. बुध
चैत्र	27 मार्च गुरु
वैशाख	26 अप्रै. शनि
ज्येष्ठ	25 मई रवि
आषाढ़	23 जून सोम
श्रावण	23 जुला. बुध
भाद्रपद	21 अग. गुरु
आश्विन	19 सितं. शुक्र
कार्तिक	19 अक्तू. रवि
मार्गशीर्ष	18 नवं. मंग
पौष	18 दिसं. गुरु

(सन् 2026 ई.)

मास	तिथि
माघ	16 जन. शुक्र
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	15 फर. रवि
चैत्र	17 मार्च मंग

मासिक दुर्गाष्टमी व्रत
(सन् 2025 ई.)

मास	तिथि
पौष	7 जन. मंग
माघ	5 फर. बुध
फाल्गुन	7 मार्च शुक्र
चैत्र	5 अप्रै. शनि
वैशाख (7:20 बाद)	4 मई रवि
ज्येष्ठ	3 जून मंग
आषाढ़	3 जुला. गुरु
श्रावण	1 अग. शुक्र
भाद्रपद	31 अग. रवि
आश्विन	30 सितं. मंग
कार्तिक	30 अक्तू. गुरु
मार्गशीर्ष	28 नवं. शुक्र
पौष	28 दिसं. रवि

(सन् 2026 ई.)

मास	तिथि
माघ	26 जन. सोम
फाल्गुन	24 फर. मंग

एकादशी व्रत (सन् 2025-26 ई.)

'धर्मसिन्धु' ग्रन्थानुसार एकादशी दो प्रकार की होती है। विद्धा और शुद्धा॥

1. दशमी तिथि से युक्त एकादशी तिथि विद्धा एकादशी कहलाती है।

2. सूर्योदयकालिक एकादशी तिथि द्वादशी तिथि से युक्त हो तो वह शुद्धा एकादशी कहलाती है।

यद्यपि धर्मग्रन्थों में गृहस्थों को दशमीयुता एकादशी में व्रत करने की आज्ञा दी गई है, परन्तु परम्पराया 'स्मार्त्त' (अर्थात् साधारण गृहस्थी) लोग भी वैष्णव सम्प्रदाय (संन्यासी, यति, दीक्षित) द्वारा पालनीय वैष्णव एकादशी वाला व्रत ही रख लेते हैं।

पुत्रदा (पौष शुक्ल)	10 जन. शुक्र
षट्तिला (माघ कृष्ण)	25 जन. शनि
जया (माघ शुक्ल)	8 फर. शनि
विजया (फाल्गुन कृष्ण)	24 फर. सोम
आमलकी (फाल्गुन शुक्ल)	10 मार्च सोम
पापमोचनी (चैत्र कृष्ण) वैष्णव	26 मार्च बुध
कामदा (चैत्र शुक्ल)	8 अप्रै. मंग
वरुथिनी (वैशाख कृष्ण)	24 अप्रै. गुरु
मोहिनी (वैशाख शुक्ल)	8 मई गुरु
अपरा (ज्येष्ठ कृष्ण)	23 मई शुक्र
निर्जला (ज्येष्ठ शुक्ल) वैष्णव	7 जून शनि
योगिनी (आषाढ़ कृष्ण) वैष्णव	22 जून रवि
हरिशयनी (आषाढ़ शुक्ल)	6 जुला. रवि
कामिका (श्रावण कृष्ण)	21 जुला. सोम
पवित्रा (श्रावण शुक्ल)	5 अग. मंग
अजा (भाद्रपद कृष्ण)	19 अग. मंग
पद्मा (भाद्रपद शुक्ल)	3 सितं. बुध
इन्दिरा (आश्विन कृष्ण)	17 सितं. बुध
पापांकुशा (आश्विन शुक्ल)	3 अक्तू. शुक्र
रमा (कार्तिक कृष्ण)	17 अक्तू. शुक्र
हरिप्रबोधिनी (कार्तिक शुक्ल)वैष्ण.	2 नवं. रवि
उत्पन्ना (मार्गशीर्ष कृष्ण)	15 नवं. शनि
मोक्षदा (मार्गशीर्ष शुक्ल)	1 दिसं. सोम
सफला (पौष कृष्ण)	15 दिसं. सोम
पुत्रदा (पौषशुक्ल) वैष्णव	31 दिसं. बुध

(सन् 2026 ई.)

षट्तिला (माघ कृष्ण)	14 जन. बुध
जया (माघ शुक्ल)	29 जन. गुरु
विजया (फाल्गुन कृष्ण)	13 फर. शुक्र
आमलकी (फाल्गुन शुक्ल)	27 फर. शुक्र
पापमोचनी (चैत्र कृष्ण)	15 मार्च रवि

दशमहाविद्या जयन्तियां-सं. २०८२

श्रीमहातारा जयन्ती	5 अप्रै. शनि
श्रीमातङ्गी जयन्ती	30 अप्रै. बुध
श्रीबगुलामुखी जयन्ती	5 मई सोम
श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती	11 मई रवि
श्रीधूमावती जयन्ती	3 जून मंग
श्रीमहाकाली जयन्ती	15 अग. शुक्र
श्रीभुवनेश्वरी जयन्ती	4 सितं. गुरु
श्रीकमला जयन्ती	9 अक्तू. गुरु
श्रीत्रिपुरभैरवी जयन्ती	4 दिसं. गुरु
श्रीललिता जयन्ती (2026 ई.)	1 फर. रवि

दशावतार जयन्तियां-(सन् 2025 ई.)

श्रीमत्स्य जयन्ती	31 मार्च सोम
श्रीराम जयन्ती (नवमी)	6 अप्रै. रवि
श्रीपरशुराम जयन्ती	29 अप्रै. मंग
श्रीनृसिंह जयन्ती	11 मई रवि
श्रीकूर्म जयन्ती	12 मई सोम
श्रीबुद्ध जयन्ती	12 मई सोम
श्रीकल्कि जयन्ती	30 जुला. बुध
श्रीकृष्ण जयन्ती	15 अग. शुक्र
श्रीवराह जयन्ती	25 अग. सोम
श्रीवामन जयन्ती	4 सितं. गुरु

पर्व श्रीपिण्डोरीधाम (गुरदासपुर)-2025 ई.

श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती	4 फर. मंग
श्रीहोलिका दहन	13 मार्च गुरु
श्रीभगवत्नारायण जयंती	18 मार्च मंग
रामनवमी पर्व	6 अप्रै. रवि
वैशाखी पर्व	13 अप्रै. रवि
जानकी जयन्ती	5 मई सोम
गंगा दशहरा पर्व	5 जून गुरु
गुरु पूर्णिमा	10 जुला. गुरु
तुलसी जयन्ती पर्व	31 जुला. गुरु
कृष्ण जयन्ती पर्व	15-18 अगस्त
महंत गु. गोबिन्ददास जयंती	27 अक्तू. सोम

सिद्ध महापुरुषों के जन्मदिन/स्मरणोत्सव

स्वामी विवेकानन्द जी	12 जन. रवि
स्वामी रामानन्दाचार्य जी	21 जन. मंग
स्वामी विवेकानन्द (प्राचीनमतेन)	21 जन. मंग
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. गुरु
लाला लाजपतराय जयंती	28 जन. मंग
सिद्ध बाबा लालदयाल जी	31 जन. शुक्र
श्रीगुरु रविदास जयंती	12 फर. बुध
छत्रपति शिवाजी जयन्ती	19 फर. बुध
समर्थ गुरु रामदास जी	22 फर. शनि
महर्षि दयानन्द सरस्वती	23 फर. रवि
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद स्मरणोत्सव	28 फर. शुक्र
श्रीरामकृष्ण परमहंस	1 मार्च शनि
याज्ञवलक्य जयन्ती	4 मार्च मंग
श्रीचैतन्य महाप्रभु	14 मार्च शुक्र
सन्त तुकाराम जी	16 मार्च रवि
शहीदी सः भगत सिंह	23 मार्च रवि
श्रीझूलेलाल जयन्ती	31 मार्च सोम
श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	10 अप्रै. गुरु
श्रीहनुमान जयन्ती (दक्षिण-भारत)	12 अप्रै. शनि
डॉ. बी.आर. अम्बेदकर	14 अप्रै. सोम
सती अनुसूइया जयन्ती	17 अप्रै. गुरु
श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती	24 अप्रै. गुरु
श्रीशुकदेव जयन्ती	27 अप्रै. रवि
भगवान् परशुराम जयन्ती	29 अप्रै. मंग
छत्रपति शिवाजी (प्राचीनमतेन)	29 अप्रै. मंग
आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य	2 मई शुक्र
श्रीसूरदास जयन्ती	2 मई शुक्र
श्री रामानुजाचार्य (दक्षिण भारत)	3 मई शनि
श्रीटैगोर जयन्ती	7 मई बुध
महात्मा बुद्ध, महर्षि भृगु जयंती	12 मई सोम
श्रीनारद-जयन्ती	14 मई बुध
श्रीमहाराणा प्रताप	29 मई गुरु
सन्त कबीर जयन्ती	11 जून बुध
श्रीध्यानू भगत	24 जून मंग
ऋषि वेदव्यास जयन्ती	10 जुला. गुरु
लोकमान्य गंगाधर तिलक	23 जुला. बुध
गोस्वामी तुलसीदास जी	31 जुला. गुरु
लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव	1 अग. शुक्र
हयग्रीव जयन्ती	8 अग. शुक्र
सन्त ज्ञानेश्वर जयन्ती	16 अग. शनि
भक्त नवल (जोधपुर)	16 अग. शनि
श्री दधीची जयन्ती	31 अग. रवि
श्रीचन्द महाराज (उदासीन)	1 सितं. सोम
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं. सोम
श्रीकात्यायनी जयन्ती	20 सितं. शनि
महाराजा अग्रसेन	22 सितं. सोम
श्री माधवाचार्य जयन्ती	2 अक्तू. गुरु
महात्मा गाँधी, शास्त्री जी	2 अक्तू. गुरु
श्रीधनवन्तरी जयन्ती	19 अक्तू. रवि
स्वामी रामतीर्थ जयन्ती	22 अक्तू. बुध
महाकवि कालीदास जयन्ती	2 नवं. रवि
श्रीवीर वैरागी जयन्ती	3 नवं. सोम
श्री गुरु नानकदेव जी	5 नवं. बुध
महाराजा रणजीत सिंह	13 नवं. गुरु
जवाहर लाल नेहरू जयन्ती	14 नवं. शुक्र
शहीदी लाला लाजपतराय	17 नवं. सोम
श्रीसत्यसाईं बाबा जयन्ती	23 नवं. रवि
डॉ० राजेन्द्र प्रसाद	3 दिसं. बुध
श्रीदत्तात्रेय जयन्ती	4 दिसं. गुरु
शहीद सः ऊधम सिंह जयं.	26 दिसं. गुरु

(सन् 2026 ई.)

स्वामी रामानन्दाचार्य जी	9 जन. शुक्र
स्वामी विवेकानन्द जी	12 जन. सोम
सिद्ध बाबा लालदयाल जी	20 जन. मंग
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. शुक्र
लाला लाजपतराय जयंती	28 जन. बुध
श्रीगुरु रविदास जी	1 फर. रवि
समर्थ गुरु रामदास जी	11 फर. बुध
महर्षि दयानन्द सरस्वती	12 फर. गुरु
श्रीरामकृष्ण परमहंस	19 फर. गुरु
छत्रपति शिवाजी जयन्ती	19 फर. गुरु
याज्ञवलक्य जयंती	22 फर. रवि
डॉ० राजेन्द्र प्रसाद स्मरणोत्सव	28 फर. शनि
श्रीचैतन्य महाप्रभु	3 मार्च मंग
सन्त तुकाराम जी	5 मार्च गुरु

दरबार श्रीध्यानपुर (गुरदासपुर) के पर्व-2025 ई.

बाबा श्रीलालदयाल जयन्ती	31 जन. शुक्र
वसंतपंचमी (पं. द्वारकादास जयं.)	2 फर. रवि
होलिका-दहन	13 मार्च गुरु
श्रीरामनवमी पर्व	6 अप्रै. रवि
महंत श्रीनारायणदास जयंती	29 मई गुरु
व्यास-पूजा पर्व	10 जुला. गुरु
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व	15 अग. शुक्र
दीपावली पर्व	21 अक्तू. मंग
गद्दी स्वा. रामसुन्दरदास जी	1 नवं. शनि

वि. संवत् २०८२ में विभिन्न सम्वतों का प्रारम्भ

वर्ष का राजा–'सूर्य' वर्ष का मन्त्री-'सूर्य'

- वि. संवत् (सिद्धार्थी) २०८२ का शुभारम्भ = 30 मार्च, रविवार, 2025 ई.
- कल्पादि से गत वर्ष = 1,97,29,49,126 वर्ष
- सृष्टि से आरम्भ संवत् = 1,95,58,85,126 वर्ष
- इनमें सतयुग की कुल समयावधि = 17,28,000 वर्ष
- त्रेतायुग की कुल समय अवधि = 12,96,000 वर्ष
- द्वापर युग की कुल समय अवधि = 8,64,000 वर्ष
- कलियुग की कुल समय अवधि = 4,32,000 वर्ष
- भोग्य कलि वर्ष (Balance) = 4,26,874 वर्ष
- २०८२ में कलि वर्ष = 5126वां वर्ष (30 जुलाई, बुधवार, 2025 ई.)
- श्रीकृष्ण जन्म संवत् = 5261 प्रा. (15 अग., शुक्रवार, 2025 ई.)
- सप्तर्षि संवत् 5101 प्रारम्भ = 30 मार्च, रविवार, 2025 ई.
- महात्मा बुद्ध सम्वत् 2649 प्रा. = 12 मई, सोमवार, 2025 ई.
- महावीर निर्वाण संवत् 2551 प्रा. = 22 अक्तूबर, बुधवार, 2025 ई.
- सन् ईस्वी (क्रिश्चियन) 2026 प्रारम्भ = 1 जनवरी, गुरुवार, 2026 ई.
- शाका संवत् 1947 प्रारम्भ = 22 मार्च, शनिवार, 2025 ई.
- हिजरी सन् 1447 (मुस्लिम) प्रा. = 27 जून, शुक्रवार, 2025 ई.
- बंगाली सन् 1432 प्रारम्भ = 13 अप्रैल, रविवार, 2025 ई.
- नानकशाही संवत् 558 प्रारम्भ = 14 मार्च, शनिवार, 2026 ई.
- खालसा संवत् 327 प्रारम्भ = 13 अप्रैल, रविवार, 2025 ई.
- जय हिन्द संवत् 79वाँ प्रारम्भ = 15 अगस्त, शुक्रवार, 2025 ई.
- 'पंचांगदिवाकर' का प्रवेश वर्ष 150वाँ = 30 मार्च, रविवार, 2025 ई.

सन् 2025-26 ई. में संक्रान्ति, पूर्णिमा, अमावसादि—एक दृष्टि में

(मास) 2025–26↓	संक्रान्ति	एकादशी व्रत	प्रदोष व्रत	सत्य-नारायण व्रत	पूर्णिमा (उदय व्या.)	श्रीगणेश चतुर्थी	अमावस (स्नानदानार्थ)
जनवरी	14 (माघ)	10, 25	11, 27	13	13	17	29
फरवरी	12 (फाल्गु.)	8, 24	10, 25	12	12	16	27
मार्च	14 (चैत्र)	10,26(वैष्ण)	11, 27	13	14	17	29
अप्रैल	13 (वैशा.)	8, 24	10, 25	12	12	16	27
मई	14 (ज्येष्ठ)	8, 23	9, 24	12	12	16	27
जून	15 (आषा.)	6(स्मा.),22(वै.)	8, 23	10	11	14	25
जुलाई	16 (श्राव.)	6, 21	8, 22	10	10	14	24
अगस्त	16 (भाद्र.)	5, 19	6, 20	8	9	12	23
सितम्बर	16 (आश्वि.)	3, 17	5, 19	7	7	10	21
अक्तूबर	17 (कार्ति.)	3, 17	4, 18	6	7	10	21
नवम्बर	16 (मार्ग.)	2(वै.),15	3, 17	5	5	8	20
दिसम्बर	15 (पौष)	1,15,31वै.	2, 17	4	4	7	19
जनवरी(26)	14 (माघ)	14, 29	1,16,30	2	3	6	18
फरवरी(26)	12 (फाल्गु.)	13, 27	14	1	1	5	17
मार्च (26)	14 (चैत्र)	15	1,16,30	2	3	6	19

आगामी वि. संवत् 2083 के सम्भावित व्रत-पर्व

(सन् 2026-27 ई.)

चैत्र नवरात्र शुरु	19 मार्च गु.
श्रीदुर्गाष्टमी	26 मार्च गु.
श्रीरामनवमी	26 मार्च गु.
श्रीमहावीर जयं (जैन)	31 मार्च मं.
वैशाख संक्रान्ति	14 अप्रै. मं.
अक्षय-तृतीया	19 अप्रै. र.
श्रीबुद्ध-जयन्ती	1 मई शु.
अधिक मास शुरु	17 मई र.
श्रीगङ्गा-दशहरा पर्व	25 मई चं.
अधिक मास समाप्त	15 जून चं.
गुरु-पूर्णिमा	29 जुला. बु.
दुर्गाष्टमी (मेला चिंतपूर्णी)	20 अग. गु.
रक्षा-बन्धन	28 अग. शु.
श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत	4 सितं. शु.
सिद्धि विनायक व्रत	14 सितं. चं.
श्राद्ध प्रारम्भ	26 सितं. श.
श्राद्ध समाप्त	10 अक्तू. श
शरद् नवरात्र प्रारम्भ	11 अक्तू. र.
श्रीदुर्गाष्टमी	19 अक्तू. चं.
विजयादशमी	20 अक्तू. मं.
शरद् पूर्णिमा व्रत	25 अक्तू. र.
करवा-चौथ व्रत	29 अक्तू. गु.
दीपावली	8 नवं. र.
भाई-दूज	11 नवं. बुध
श्रीगुरु नानक जयं.	24 नवं. मं.
श्रीगीता-जयन्ती	20 दिसं. र.

(सन् 2027 ई.)

मकर संक्रान्ति	14 जन. गु.
माघ(मौनी)अमावस	6 फर. श.
वसन्त पंचमी	11 फर. गु.
श्रीगुरु रविदास जयं.	20 फर. श.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	6 मार्च श.
होलिका दहन	21 मार्च र.

गण्डमूलक नक्षत्रों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) संवत् २०८२ वि.

(1 जनवरी, सन् 2025 ई. से 20 मार्च, 2026 ई. तक)

रेवती, अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा एवं मूल—ये गण्डमूल नक्षत्र कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न जातक स्वयं अपने या माता-पिता के स्वास्थ्य, व्यवसाय एवं उन्नति आदि के सम्बन्ध में अशुभ होते हैं। गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक के नक्षत्र की लगभग 27 दिन पश्चात् उसी नक्षत्रकाल में विद्वान् एवं योग्य ब्राह्मण द्वारा शान्ति करवानी चाहिए। यदि जन्मकाल के समय शान्ति न करवाई गई हो तो, जातक के जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान-पूजन करवा लेना शुभकारक रहता है।

नोट—हमारे कार्यालय से छपी '**सम्पूर्ण गण्डमूल नक्षत्र शान्ति प्रयोग**' पुस्तक पूजनादि कार्यों के लिए मंगवा सकते हैं। **मूल्य 100/- रु.**

पता—जनरल बुक डिपो, चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पं.)

प्रारम्भ काल					समाप्ति काल				
ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मिं.	ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मिं.
6	जन.	रेवती	19	07	8	जन.	अश्विनी	16	30
15	जन.	आश्लेषा	10	28	17	जन.	मघा	12	45
25	जन.	ज्येष्ठा	7	08	27	जन.	मूल	9	02
2	फर.	रेवती	24	53	4	फर.	अश्विनी	21	50
11	फर.	आश्लेषा	18	34	13	फर.	मघा	21	07
21	फर.	ज्येष्ठा	15	54	23	फर.	मूल	18	43
2	मार्च	रेवती	9	00	4	मार्च	अश्विनी	4	30
10	मार्च	आश्लेषा	24	52	13	मार्च	मघा	4	06
20	मार्च	ज्येष्ठा	23	32	23	मार्च	मूल	3	24
29	मार्च	रेवती	19	27	31	मार्च	अश्विनी	13	45
7	अप्रै.	आश्लेषा	6	25	9	अप्रै.	मघा	9	57
17	अप्रै.	ज्येष्ठा	5	55	19	अप्रै.	मूल	10	21
26	अप्रै.	रेवती	6	27	27	अप्रै.	अश्विनी	24	39
4	मई	आश्लेषा	12	54	6	मई	मघा	15	52
14	मई	ज्येष्ठा	11	47	16	मई	मूल	16	08
23	मई	रेवती	16	03	25	मई	अश्विनी	11	12
31	मई	आश्लेषा	21	08	2	जून	मघा	22	56
10	जून	ज्येष्ठा	18	02	12	जून	मूल	21	57
19	जून	रेवती	23	17	21	जून	अश्विनी	19	50
28	जून	आश्लेषा	6	36	30	जून	मघा	7	21
7	जुला	ज्येष्ठा	25	12	10	जुला	मूल	4	50
17	जुला	रेवती	4	51	18	जुला	अश्विनी	26	14
25	जुला	आश्लेषा	16	01	27	जुला	मघा	16	23
4	अग.	ज्येष्ठा	9	13	6	अग.	मूल	13	00
13	अग.	रेवती	10	33	15	अग.	अश्विनी	7	36

प्रारम्भ काल					समाप्ति काल				
ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मिं.	ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मिं.
21	अग.	आश्लेषा	24	09	23	अग.	मघा	24	55
31	अग.	ज्येष्ठा	17	27	2	सितं.	मूल	21	51
9	सितं.	रेवती	18	07	11	सितं.	अश्विनी	13	58
18	सितं.	आश्लेषा	6	33	20	सितं.	मघा	8	06
27	सितं.	ज्येष्ठा	25	08	30	सितं.	मूल	6	18
7	अक्तू.	रेवती	4	02	8	अक्तू.	अश्विनी	22	45
15	अक्तू.	आश्लेषा	12	00	17	अक्तू.	मघा	13	58
25	अक्तू.	ज्येष्ठा	7	52	27	अक्तू.	मूल	13	28
3	नवं.	रेवती	15	06	5	नवं.	अश्विनी	9	40
11	नवं.	आश्लेषा	18	18	13	नवं.	मघा	19	38
21	नवं.	ज्येष्ठा	13	56	23	नवं.	मूल	19	28
30	नवं.	रेवती	25	11	2	दिसं.	अश्विनी	20	52
8	दिसं.	आश्लेषा	26	53	10	दिसं.	मघा	26	45
18	दिसं.	ज्येष्ठा	20	07	20	दिसं.	मूल	25	22
28	दिसं.	रेवती	8	44	30	दिसं.	अश्विनी	6	05
(सन् 2026 ई.)									
5	जन.	आश्लेषा	13	25	7	जन.	मघा	11	57
15	जन.	ज्येष्ठा	3	04	17	जन.	मूल	8	12
24	जन.	रेवती	14	16	26	जन.	अश्विनी	12	33
1	फर.	आश्लेषा	23	58	3	फर.	मघा	22	11
11	फर.	ज्येष्ठा	10	53	13	फर.	मूल	16	13
20	फर.	रेवती	20	08	22	फर.	अश्विनी	17	55
1	मार्च	आश्लेषा	8	35	3	मार्च	मघा	7	32
10	मार्च	ज्येष्ठा	19	05	12	मार्च	मूल	24	44
20	मार्च	रेवती	4	05	21	मार्च	अश्विनी	24	38

पंचक—आरम्भ एवं समाप्तिकाल

(सन् 2025-26 ई.)

पंचक नक्षत्र (धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण से रेवती नक्षत्र तक) कालीन दक्षिण दिशा की ओर यात्रा करना, मकान, दुकानादि की छत डालना, चारपाई-पलंगादि बुनना, शव का दाह (मुर्दा जलाना), बाँस की चटाई, दीवार प्रारम्भ करना आदि स्तम्भारोपण, ताँबा, पीतल, तृण-काष्ठादि का संचय करना आदि कृत्यों का निषेध माना जाता है। समुचित उपाय एवं पंचक-शान्ति करवाकर ही उक्त कार्यों का सम्पादन करना कल्याणकारी होगा। ध्यान रहे, पंचक नक्षत्रों का विचार मात्र उपरोक्त विशेष कृत्यों के लिए ही किया जाता है। विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश, वधू-प्रवेश, उपनयन, विपणि आदि मुहूर्तों में तो पंचक नक्षत्रों का प्रयोग शुभ माना गया है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
ता. मास	घं.	मिं.	ता. मास	घं.	मिं.
3 जन.	10	48	7 जन.	17	50
30 जन.	18	35	3 फर.	23	17
27 फर.	4	37	3 मार्च	6	39
26 मार्च	15	15	30 मार्च	16	35
22 अप्रै.	24	31	27 अप्रै.	3	39
20 मई	7	36	24 मई	13	48
16 जून	13	10	20 जून	21	45
13 जुला	18	54	18 जुला	3	39
9 अग.	26	11	14 अग.	9	06
6 सितं.	11	22	10 सितं.	16	03
3 अक्तू.	21	28	7 अक्तू.	25	28
31 अक्तू.	6	49	4 नवं.	12	35
27 नवं.	14	07	1 दिसं.	23	18
24 दिसं.	19	47	29 दिसं.	7	41
(सन् 2026 ई.)					
20 जन.	25	36	25 जन.	13	36
17 फर.	9	06	21 फर.	19	07
16 मार्च	18	14	20 मार्च	26	28

श्रीगणेश चतुर्थी, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत, श्रीमहालक्ष्मी व्रत का चंद्रोदय समय एवं कलंक-चतुर्थी का चन्द्रास्त काल

भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2082) (भा.स्टैं.टा.)

नगर	श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय काल												श्रीकृष्ण जन्माष्टमी		कलंकचौथ चंद्रदर्शन निषेध	श्री महालक्ष्मी व्रत
	16अप्रै. 2025 ई. घं. मिं.	16 मई 2025 ई. घं. मिं.	14 जून 2025 ई. घं. मिं.	14 जुला. 2025 ई. घं. मिं.	12 अग. 2025 ई. घं. मिं.	10 सितं. 2025 ई. घं. मिं.	10 अक्तू 2025 ई. करवाचौथ	8 नवं. 2025 ई. घं. मिं.	7 दिसं. 2025 ई. घं. मिं.	6 जन. 2026 ई. संकटचौथ	5 फर. 2026 ई. घं. मिं.	6 मार्च 2026 ई. घं. मिं.	स्मार्त 15 अगस्त घं. मिं.	वैष्णव 16 अगस्त घं. मिं.	26 अग. चन्द्रास्त	14 सितं. चन्द्रोदय
अमृतसर	22:20	22:59	22:25	22:08	21:10	20:13	20:15	20:00	19:58	21:02	21:46	21:28	22:51	23:35	20:36	23:19
अजमेर	22:06	22:44	22:14	22:05	21:12	20:21	20:31	20:17	20:13	21:09	21:46	21:23	23:02	23:49	20:40	23:36
अम्बाला	22:08	22:47	22:15	22:00	21:02	20:07	20:11	19:56	19:53	20:55	21:38	21:19	22:46	23:30	20:29	23:16
अहमदाबाद(गु.)	22:06	22:43	22:15	22:11	21:21	20:33	20:48	20:36	20:30	21:21	21:53	21:28	23:18	24:06	20:50	23:54
अलवर (राज.)	22:01	22:38	22:09	21:58	21:02	20:11	20:20	20:06	20:02	20:59	21:38	21:16	22:52	23:38	20:31	23:26
आगरा	21:54	22:32	22:02	21:52	20:58	20:06	20:15	20:01	19:57	20:54	21:32	21:10	22:47	23:33	20:26	23:20
इन्दौर (म.प्र.)	21:51	22:29	22:01	21:57	21:08	20:20	20:35	20:23	20:17	21:08	21:39	21:14	23:05	23:53	20:37	23:42
ऊना (हि.प्र.)	22:13	22:53	22:19	22:03	21:04	20:08	20:10	19:55	19:52	20:56	21:41	21:22	22:45	23:29	20:30	23:15
उदयपुर (राज.)	22:05	22:43	22:14	22:07	21:16	20:27	20:38	20:26	20:21	21:15	21:49	21:25	23:11	23:58	20:45	23:46
ऊधमपुर (का.)	22:22	23:02	22:28	22:09	21:08	20:10	20:10	19:55	19:53	20:59	21:46	21:29	22:47	28:30	20:34	23:14
उज्जैन	21:53	22:31	22:02	21:58	21:08	20:20	20:34	20:22	20:16	21:08	21:40	21:14	23:04	23:53	20:38	23:41
कठुआ (ज.का.)	22:19	22:59	22:25	22:06	21:07	20:10	20:10	19:55	19:53	20:58	21:44	21:27	22:46	23:30	20:33	23:14
कपूरथला	22:17	22:56	22:23	22:06	21:08	20:11	20:14	19:59	19:56	21:00	21:44	21:26	22:49	23:33	20:34	23:18
करनाल	22:05	22:44	22:12	21:58	21:01	20:07	20:12	19:58	19:54	20:55	21:37	21:17	22:46	23:31	20:28	23:16
काँगड़ा(हि.प्र.)	22:15	22:55	22:21	22:03	21:04	20:07	20:08	19:53	19:51	20:55	21:41	21:22	22:44	23:27	20:30	23:12
कानपुर	21:42	22:21	21:51	21:42	20:49	19:57	20:07	19:54	19:49	20:45	21:22	20:59	22:39	23:26	20:17	23:14
कैथल (हरि.)	22:08	22:47	22:15	22:01	21:04	20:09	20:14	20:00	19:57	20:58	21:39	21:20	22:48	23:33	20:31	23:20
कुल्लू (हि.प्र.)	22:11	22:51	22:17	22:00	21:01	20:04	20:05	19:50	19:48	20:52	21:37	21:19	22:41	23:24	20:26	23:09
कुराली (पं.)	22:10	22:49	22:16	22:01	21:03	20:07	20:11	19:56	19:53	20:56	21:39	21:20	22:46	23:30	20:29	23:15
कुरुक्षेत्र	22:06	22:45	22:13	21:59	21:02	20:07	20:12	19:57	19:54	20:55	21:38	21:18	22:46	23:31	20:29	23:16
कालका(हरि.)	22:09	22:48	22:15	21:59	21:01	20:06	20:09	19:54	19:51	20:54	21:38	21:19	22:44	23:28	20:28	23:14
करसोग (हि.प्र.)	22:09	22:48	22:15	21:59	21:00	20:04	20:06	19:51	19:49	20:52	21:37	21:18	22:42	23:26	20:27	23:11
कोलकाता	20:59	21:37	21:09	21:06	20:16	19:29	19:43	19:31	19:25	20:16	20:47	20:21	22:14	23:02	19:46	22:51
खरड़ (पं.)	22:10	22:49	22:16	22:00	21:03	20:07	20:11	19:56	19:53	20:55	21:39	21:20	22:45	23:30	20:29	23:16
खन्ना (पं.)	22:11	22:50	22:18	22:02	21:04	20:09	20:13	19:58	19:55	20:57	21:41	21:22	22:47	23:32	20:31	23:17
गाज़ियाबाद	22:00	22:39	22:08	21:55	21:00	20:07	20:13	19:59	19:55	20:55	21:35	21:14	22:47	23:32	20:27	23:19
ग्वालियर	21:51	22:29	21:59	21:50	20:57	20:07	20:17	20:03	19:59	20:55	21:31	21:08	22:49	23:35	20:26	23:23
गुरदासपुर (पं.)	22:19	22:58	22:24	22:07	21:07	20:11	20:12	19:57	19:54	20:59	21:44	21:27	22:48	23:31	20:33	23:17
गुरुग्राम	22:01	22:40	22:09	21:57	21:02	20:09	20:15	20:01	19:57	20:57	21:36	21:15	22:49	23:34	20:29	23:21
चण्डीगढ़	22:09	22:48	22:15	22:00	21:02	20:07	20:10	19:55	19:52	20:55	21:38	21:19	22:45	23:29	20:29	23:15
चम्बा	22:17	22:57	22:23	22:04	21:04	20:07	20:07	19:52	19:50	20:55	21:42	21:24	22:44	23:27	20:30	23:12

श्रीगणेश चतुर्थी, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत, श्रीमहालक्ष्मी व्रत का चंद्रोदय समय एवं कलंक-चतुर्थी का चन्द्रास्त काल

भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2082) (भा.स्टैं.टा.)

नगर	श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय काल												श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी		कलंकचौथ चंद्रदर्शन निषेध	श्री महालक्ष्मी व्रत
	16अप्रै. 2025 ई. घं. मिं.	16 मई 2025 ई. घं. मिं.	14 जून 2025 ई. घं. मिं.	14 जुला. 2025 ई. घं. मिं.	12 अग. 2025 ई. घं. मिं.	10 सितं. 2025 ई. घं. मिं.	10 अक्तू 2025 ई. करवाचौथ	8 नवं. 2025 ई. घं. मिं.	7 दिसं. 2025 ई. घं. मिं.	6 जन. 2026 ई. संकटचौथ	5 फर. 2026 ई. घं. मिं.	6 मार्च 2026 ई. घं. मिं.	स्मार्त्त 15 अगस्त घं. मिं.	वैष्णव 16 अगस्त घं. मिं.	26 अग. चन्द्रास्त	14 सितं. चन्द्रोदय
चेन्नई	21:11	21:47	21:24	21:32	20:51	20:12	20:39	20:29	20:20	21:00	21:19	20:45	23:04	23:56	20:25	23:49
जयपुर (राज.)	22:02	22:41	22:10	22:01	21:07	20:15	20:25	20:11	20:07	21:03	21:41	21:19	23:57	23:43	20:35	23:31
जम्मू	22:43	23:02	22:27	22:08	21:10	20:12	20:12	19:57	19:55	21:00	21:47	21:30	22:48	23:32	20:35	23:17
जलालाबाद(पं.)	22:19	22:58	22:25	22:10	21:12	20:17	20:21	20:06	20:03	21:05	21:49	21:30	22:56	23:40	20:39	23:26
जलगांव(महा.)	21:48	22:26	21:59	21:57	21:09	20:23	20:41	20:29	20:22	21:11	21:40	21:13	23:09	23:58	20:40	23:49
ज्वाली (हि.प्र.)	22:16	22:56	22:22	22:04	21:05	20:08	20:09	19:54	19:52	20:56	21:42	21:24	22:45	23:28	20:31	23:14
जालन्धर	22:16	22:55	22:22	22:05	21:07	20:11	20:13	19:58	19:56	20:59	21:43	21:25	22:49	23:33	20:33	23:18
ज्वालामुखी	22:14	22:54	22:20	22:03	21:04	20:07	20:09	19:53	19:51	20:55	21:40	21:23	22:44	23:28	20:30	23:13
जीन्द (हरि.)	22:07	22:46	22:14	22:01	21:04	20:10	20:16	20:02	19:58	20:59	21:40	21:19	22:50	23:35	20:32	23:22
जोधपुर (राज.)	22:12	22:50	22:20	22:11	21:18	20:26	20:38	20:24	20:20	21:16	21:52	21:29	23:09	23:56	20:47	23:44
तलवाड़ा (पं.)	22:16	22:56	22:22	22:05	21:05	20:09	20:10	19:55	19:53	20:57	21:42	21:24	22:46	23:30	20:31	23:15
टोहाना (हरि.)	22:10	22:49	22:17	22:03	21:06	20:11	20:17	20:02	19:59	21:00	21:42	21:22	22:51	23:36	20:33	23:22
दिल्ली	22:01	22:40	22:09	21:56	21:01	20:08	20:14	20:00	19:56	20:56	21:36	21:15	22:48	23:33	20:28	23:20
दीनानगर (पं.)	22:19	22:58	22:24	22:06	21:07	20:10	20:11	19:56	19:54	20:58	21:44	21:27	22:47	23:31	20:33	23:16
देहरादून	22:02	22:42	22:09	21:54	20:57	20:02	20:06	19:51	19:48	20:50	21:33	21:13	22:41	23:25	20:24	23:11
धर्मशाला	22:15	22:55	22:21	22:03	21:04	20:06	20:08	19:52	19:50	20:55	21:41	21:23	22:42	23:27	20:29	23:12
धारीवाल (पं.)	22:19	22:58	22:24	22:07	21:08	20:11	20:13	19:57	19:55	20:59	21:45	21:27	22:48	23:32	30:34	23:17
नंगल (पं.)	22:13	22:52	22:19	22:02	21:04	20:07	20:10	19:55	19:52	20:56	21:40	21:22	22:45	23:29	20:30	23:15
नादौन (हि.प्र.)	22:14	22:53	22:20	22:03	21:04	20:07	20:09	19:54	19:51	20:55	21:40	21:22	22:44	23:28	20:30	23:14
नाहन (हि.प्र.)	22:06	22:46	22:13	21:58	21:00	20:05	20:08	19:54	19:51	20:53	21:36	21:17	22:43	23:28	20:27	23:14
नवांशहर (पं.)	22:13	22:52	22:19	22:03	21:05	20:09	20:12	19:57	19:54	20:57	21:41	21:22	22:47	23:31	20:31	23:17
नालागढ़ (हि.प्र.)	22:10	22:49	22:16	22:00	21:02	20:07	20:09	19:55	19:52	20:55	21:39	21:20	22:45	23:29	20:29	23:14
नूरपुर (हि.प्र.)	22:17	22:57	22:23	22:05	21:05	20:08	20:09	19:54	19:52	20:56	21:42	21:25	22:45	23:28	20:31	23:14
पठानकोट (पं.)	22:18	22:58	22:24	22:06	21:06	20:09	20:10	19:55	19:53	20:58	21:43	21:26	22:46	23:30	20:33	23:15
पटियाला (पं.)	22:09	22:49	22:16	22:01	21:04	20:09	20:13	19:58	19:55	20:57	21:40	21:20	22:47	23:32	20:31	23:18
पंचकूला	22:09	22:48	22:15	22:00	21:02	20:06	20:10	19:55	19:52	20:55	21:38	21:19	22:45	23:29	20:28	23:15
पटना	21:20	21:58	21:29	21:21	20:29	19:39	19:49	19:36	19:31	20:26	21:02	20:38	22:21	23:08	19:58	22:56
प्रयागराज	21:32	22:12	21:42	21:35	20:43	19:52	20:04	19:50	19:45	20:40	21:15	20:52	22:35	23:22	20:11	23:10
पालमपुर(हि.प्र.)	22:14	22:54	22:20	22:02	21:03	20:06	20:07	19:52	19:49	20:54	21:40	21:22	22:43	23:26	20:29	23:12
पानीपत	22:04	22:43	22:11	21:58	21:02	20:08	20:13	19:59	19:55	20:56	21:37	21:17	22:47	23:32	20:29	23:19
पूना (महा.)	21:50	22:27	22:01	22:02	21:17	20:33	20:54	20:42	20:35	21:21	21:47	21:17	23:21	24:10	20:48	24:02

श्रीगणेश चतुर्थी, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत, श्रीमहालक्ष्मी व्रत का चंद्रोदय समय एवं कलंक-चतुर्थी का चन्द्रास्त काल

भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2082) (भा.स्टै.टा.)

नगर	श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय काल												श्रीकृष्ण जन्माष्टमी		कलंकचौथ चंद्रदर्शन निषेध	श्री महालक्ष्मी व्रत
	16अप्रै. 2025 ई. घं. मिं.	16 मई 2025 ई. घं. मिं.	14 जून 2025 ई. घं. मिं.	14 जुला. 2025 ई. घं. मिं.	12 अग. 2025 ई. घं. मिं.	10 सितं. 2025 ई. घं. मिं.	10 अक्तू 2025 ई. करवाचौथ	8 नवं. 2025 ई. घं. मिं.	7 दिसं. 2025 ई. घं. मिं.	6 जन. 2026 ई. संकटचौथ	5 फर. 2026 ई. घं. मिं.	6 मार्च 2026 ई. घं. मिं.	स्मार्त 15 अगस्त घं. मिं.	वैष्णव 16 अगस्त घं. मिं.	26 अग. चन्द्रास्त	14 सितं. चन्द्रोदय
पिहोवा (हरि.)	22:08	22:47	22:14	22:00	21:03	20:08	20:13	19:59	19:55	20:57	21:39	21:19	22:47	23:32	20:30	23:18
पांओटा साहिब	22:05	22:44	22:11	21:56	20:59	20:04	20:07	19:53	19:50	20:52	21:35	21:15	22:42	23:27	20:26	23:13
परवाणू (हि.प्र.)	22:09	22:48	22:15	21:59	21:01	20:06	20:09	19:54	19:51	20:54	21:37	21:19	22:44	23:28	20:28	23:14
फगवाड़ा (पं.)	22:15	22:54	22:21	22:04	21:06	20:10	20:13	19:58	19:55	20:58	21:43	21:24	22:48	23:32	20:32	23:18
फरीदकोट	22:17	22:56	22:24	22:08	21:10	20:15	20:19	20:04	20:01	21:03	21:47	21:28	22:53	23:38	20:37	23:24
फरीदाबाद	22:00	22:39	22:08	21:56	21:00	20:07	20:14	20:00	19:56	20:55	21:35	21:14	22:48	23:33	20:28	23:20
फाज़िल्का	22:19	22:59	22:26	22:11	21:13	20:18	20:22	20:08	20:05	21:07	21:50	21:30	22:57	23:42	20:40	23:28
फिरोज़पुर	22:18	22:58	22:25	22:09	21:11	20:15	20:18	20:04	20:01	21:04	21:47	21:28	22:53	23:38	20:37	23:24
फतेहाबाद (हरि.)	22:11	22:50	22:18	22:04	21:08	20:14	20:19	20:05	20:01	21:02	21:42	21:23	22:53	23:38	20:35	23:25
बरनाला (पं.)	22:13	22:52	22:20	22:05	21:07	20:12	20:16	20:02	19:59	21:00	21:43	21:24	22:51	23:35	20:34	23:21
बीकानेर (राज.)	22:16	22:54	22:23	22:12	21:17	20:24	20:32	20:18	20:14	21:13	21:52	21:30	23:05	28:51	20:45	23:38
बनीखेत (हि.प्र.)	22:18	22:57	22:23	22:05	21:05	20:08	20:08	19:53	19:51	20:56	21:42	21:25	22:44	23:28	20:31	23:13
बरेली (उ.प्र.)	21:51	22:30	21:59	21:47	20:52	19:59	20:06	19:52	19:48	20:47	21:26	21:05	22:39	20:25	20:20	23:12
बैजनाथ (हि.प्र.)	22:13	22:53	22:19	22:02	21:02	20:05	20:07	19:52	19:49	20:54	21:39	21:21	22:42	23:26	20:28	23:11
बिलासपुर (हि.प्र.)	22:11	22:50	22:17	22:00	21:02	20:06	20:08	19:53	19:51	20:54	21:38	21:20	22:44	23:28	20:29	23:13
बैंगलूरु	21:22	21:58	21:35	21:43	21:02	20:24	20:51	20:40	20:31	21:11	21:30	20:56	23:15	24:07	20:36	24:02
बठिण्डा	22:15	22:54	22:22	22:07	21:10	20:15	20:19	20:05	20:02	21:03	21:46	21:26	22:54	23:38	20:36	23:24
मथुरा	21:56	22:35	22:04	21:53	20:59	20:07	20:15	20:02	19:57	20:55	21:33	21:12	22:48	23:34	20:27	23:22
मण्डी (हि.प्र.)	22:11	22:51	22:17	22:00	21:01	20:05	20:07	19:51	19:49	20:53	21:38	21:20	22:42	23:26	20:27	23:11
मुकेरियां (पं.)	22:17	22:57	22:23	22:06	21:07	20:10	20:11	19:56	19:54	20:58	21:43	21:26	22:47	23:31	20:33	23:16
मोहाली (पं.)	22:09	22:48	22:16	22:00	21:02	20:07	20:10	19:56	19:53	20:55	21:38	21:20	22:45	23:30	20:29	2316
मेरठ (उ.प्र.)	22:00	22:39	22:07	21:55	20:59	20:04	20:11	19:57	19:53	20:53	21:34	21:13	22:45	23:30	20:26	23:17
मुम्बई	21:55	22:32	22:06	22:07	21:21	20:37	20:57	20:45	20:38	21:25	21:51	21:22	23:24	24:13	20:52	24:04
मनाली (हि.प्र.)	22:12	22:51	22:18	22:00	21:00	20:04	20:05	19:49	19:46	20:51	21:37	21:20	22:40	23:23	20:26	23:08
मुक्तसर (पं.)	22:18	22:57	22:24	22:09	21:11	20:16	20:20	20:06	21:04	21:05	21:48	21:28	22:55	23:39	20:38	23:25
मोगा (पं.)	22:16	22:55	22:22	22:06	21:09	20:13	20:17	20:02	19:59	21:01	21:45	21:26	22:51	23:36	20:35	23:22
मलेरकोटला	22:12	22:51	22:19	22:03	21:06	20:11	20:14	20:00	19:57	20:59	21:42	21:23	22:49	23:34	20:33	23:20
महेन्द्रगढ़ (हरि.)	22:05	22:43	22:12	22:00	21:05	20:12	20:20	20:06	20:02	21:00	21:40	21:19	22:53	23:38	20:33	23:26
यमुनानगर	22:05	22:44	22:12	21:57	21:00	20:05	20:10	19:55	19:52	20:54	21:36	21:16	22:44	23:29	20:27	23:15
रिवाड़ी (हरि.)	22:02	22:41	22:10	21:58	21:03	20:10	20:18	20:04	20:00	20:59	21:38	21:17	22:51	23:37	20:31	23:24

श्रीगणेश चतुर्थी, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत, श्रीमहालक्ष्मी व्रत का चंद्रोदय समय एवं कलंक-चतुर्थी का चन्द्रास्त काल

भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2082) (भा.स्टैं.टा.)

नगर	श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय काल												श्रीकृष्ण जन्माष्टमी		कलंकचौथ चंद्रदर्शन निषेध	श्री महालक्ष्मी व्रत
	16अप्रै. 2025 ई. घं. मिं.	16 मई 2025 ई. घं. मिं.	14 जून 2025 ई. घं. मिं.	14 जुला. 2025 ई. घं. मिं.	12 अग. 2025 ई. घं. मिं.	10 सितं. 2025 ई. घं. मिं.	10 अक्तू 2025 ई. करवाचौथ	8 नवं. 2025 ई. घं. मिं.	7 दिसं. 2025 ई. घं. मिं.	6 जन. 2026 ई. संकटचौथ	5 फर. 2026 ई. घं. मिं.	6 मार्च 2026 ई. घं. मिं.	स्मार्त 15 अगस्त घं. मिं.	वैष्णव 16 अगस्त घं. मिं.	26 अग. चन्द्रास्त	14 सितं. चन्द्रोदय
रोहतक (हरि.)	22:04	22:43	22:12	21:59	21:03	20:10	20:16	20:02	19:58	20:58	21:38	21:18	22:49	23:35	20:31	23:22
रोहड़ू (हि.प्र.)	22:06	22:46	22:13	21:56	20:58	20:02	20:05	19:50	19:47	20:50	21:34	21:16	22:40	23:24	20:24	23:11
रोपड़ (पं.)	22:11	22:50	22:17	22:01	21:03	20:07	20:10	19:56	19:53	20:56	21:39	21:21	22:45	23:30	20:30	23:15
राजपुरा (पं.)	22:09	22:48	22:16	22:00	21:03	20:08	20:12	19:57	19:54	20:56	21:39	21:20	22:46	23:31	20:30	23:17
रायपुर(छ्तगढ़)	21:24	22:01	21:34	21:32	20:44	19:58	20:15	20:03	19:56	20:46	21:15	20:48	22:44	23:33	20:16	23:23
रामपुर बुशैहर	22:08	22:47	22:14	21:57	20:59	20:02	20:04	19:49	19:47	20:50	21:35	21:17	22:40	23:24	20:26	23:09
रूड़की (उ.खण्ड)	22:02	22:41	22:09	21:55	20:58	20:03	20:08	19:53	19:50	20:51	21:33	21:14	22:42	23:27	20:25	23:13
राजौरी(ज.का.)	22:27	23:07	22:32	22:12	21:12	20:13	20:12	19:57	19:55	21:02	21:48	21:33	22:49	23:32	20:37	23:17
लुधियाना(पं.)	22:13	22:53	22:20	22:04	21:06	20:10	20:13	19:58	19:56	20:58	21:42	21:23	22:48	23:32	20:32	23:18
लखनऊ	21:41	22:19	21:49	21:40	20:46	19:55	20:04	19:50	19:46	20:42	21:20	20:57	22:36	23:22	20:15	23:10
वाराणसी	21:28	22:07	21:37	21:30	20:38	19:48	19:59	19:46	19:41	20:35	21:11	20:47	22:31	23:18	20:08	23:06
शिमला	22:08	22:48	22:15	21:59	21:00	20:05	20:07	19:52	19:50	20:53	21:37	21:18	22:42	23:27	20:27	23:12
श्रीनगर (का.)	22:27	23:07	22:32	22:11	21:09	20:10	20:08	19:52	19:51	20:59	21:48	21:31	22:45	23:28	20:34	23:12
श्रीगंगानगर	22:19	22:58	22:25	22:11	21:14	20:20	20:25	20:10	20:07	21:08	21:50	21:30	22:59	23:44	20:41	23:30
संगरूर	22:11	22:51	22:18	22:03	21:06	20:11	20:15	20:01	19:58	20:59	21:42	21:23	22:50	23:34	20:33	23:21
सरकाघाट(हि.प्र.)	22:12	22:51	22:18	22:01	21:02	20:06	20:07	19:52	19:50	20:54	21:39	21:21	22:43	23:27	20:28	23:12
सहारनपुर	22:04	22:43	22:10	21:56	20:59	20:04	20:09	19:55	19:51	20:53	21:35	21:15	22:43	23:28	20:26	23:14
सागर (म.प्र.)	21:42	22:20	21:52	21:46	20:56	20:07	20:20	20:08	20:02	20:55	21:28	21:03	22:51	23:39	20:25	23:28
सोनीपत	22:03	22:42	22:10	21:57	21:02	20:08	20:14	20:00	19:56	20:56	21:37	21:16	22:48	23:33	20:29	23:20
सिरसा (हरि.)	22:13	22:52	22:20	22:06	21:10	20:15	20:21	20:06	20:03	21:04	21:45	21:25	22:55	23:40	20:38	23:26
सोलन (हि.प्र.)	22:08	22:47	22:15	21:59	21:01	20:05	20:08	19:53	19:51	20:53	21:37	21:18	22:43	23:27	20:27	23:13
सुन्दरनगर	22:11	22:50	22:17	22:00	21:02	20:05	20:07	19:52	19:50	20:53	21:38	21:20	22:43	23:27	20:28	23:12
सुजानपुर टिहरा	22:13	22:53	22:19	22:02	21:03	20:06	20:08	19:53	19:50	20:55	21:40	21:22	22:44	23:27	20:29	23:13
सुन्दरबनी (का.)	22:25	23:05	23:31	22:11	21:11	20:13	20:13	19:57	19:55	21:01	21:49	21:32	22:49	23:32	20:36	23:17
सुनाम (पं.)	22:11	22:50	22:18	22:03	21:06	20:11	20:16	20:01	19:58	21:00	21:42	21:23	22:50	23:35	20:33	23:21
हमीरपुर(हि.प्र.)	22:13	22:52	22:19	22:02	21:03	20:06	20:08	19:53	19:51	20:55	21:40	21:22	22:44	23:28	20:29	23:13
हरिद्वार	22:01	22:40	20:08	21:54	20:57	20:02	20:07	19:52	19:49	20:50	21:32	21:12	22:41	23:26	20:24	23:12
हिसार (हरि.)	22:09	22:48	22:16	22:03	21:07	20:13	20:19	20:05	20:01	21:01	21:42	21:22	22:53	23:38	20:34	23:25
होशियारपुर	22:15	22:54	22:21	22:04	21:05	20:09	20:11	19:56	19:54	20:57	21:42	21:24	22:47	23:31	20:32	23:17
हाँसी (हरि.)	22:08	22:46	22:15	22:02	21:06	20:12	20:18	20:04	20:00	21:00	21:41	21:20	22:52	23:37	20:33	23:24

संदिग्ध व्रत-पर्वों का शास्त्र-सम्मत निर्णय-वि.संवत् २०८२

(लेखक :-पं. विवेक शर्मा, जालन्धर (पं.)-144008) ✆ 9417291325

(1) भगवान् परशुराम जयन्ती (29 अप्रैल, मंगलवार)

वैशाख शुक्ल तृतीया को भगवान् परशुराम जयन्ती मनाई जाती है। भविष्यपुराण अनुसार वैशाख शुक्ल तृतीया तिथि को रात्रि के प्रथम प्रहर (प्रदोषकाल) में भगवान् परशुराम का अंशावतार हुआ था–

वैशाखस्य सिते पक्षे तृतीयां पुनर्वसौ।
निशायाः प्रथमयामे समाख्यः समये हरिः॥

'धर्मसिन्धु' अनुसार भी इसे प्रदोषव्यापिनी तृतीया तिथि में ग्रहण करने का निर्देश दिया है।–''**इयं रात्रि प्रथमयामव्यापिनी ग्राह्या॥**'' ध्यान रहे, यहाँ '**प्रथमयाम**' का अर्थ अधिकतर निबन्धकारों ने '**प्रदोष**' ही माना है।

इस वर्ष 29 अप्रैल, मंगलवार को तृतीया तिथि सायं 5 बजकर 32 मिनट (17:32) बाद रात्रि प्रथम प्रहर (प्रदोष) व्यापिनी है। **अतएव भगवान् परशुराम जयन्ती 29 अप्रैल, मंगलवार, 2025 ई. को ही शास्त्रसम्मत होगी। अगले दिन, 30 अप्रैल को तृतीया तिथि प्रदोषव्यापिनी नहीं है।**

(2) श्रीगङ्गा–जयन्ती (3 मई, शनिवार))

वैशाख शुक्ल सप्तमी को श्रीगङ्गा जी की उत्पत्ति हुई थी। श्रीगङ्गा–पूजन, भागीरथ आदि देव–ऋषि पूजन मध्याह्न–व्यापिनी वैशाख शुक्ल सप्तमी तिथि में करना चाहिए। धर्मसिन्धुकार का यह वाक्य है–'**वैशाख शुक्लसप्तम्यां गंगोत्पत्तिः। तस्यां मध्याह्न–व्यापिन्यां गंगापूजनं कार्यम्। दिनद्वये तद्–व्याप्तौ पूर्वा॥**' शास्त्रानुसार सप्तमी तिथि यदि दोनों दिन मध्याह्न को व्याप्त या अव्याप्त हो तो यह पर्व पहिले दिन मनाना चाहिए।

इस वर्ष वैशाख शुक्ल सप्तमी तिथि केवल **3 मई, 2025 ई.** को ही मध्याह्न–व्यापिनी है। तद्नुसार उपरोक्त शास्त्रवाक्यानुसार '**श्रीगङ्गा–जयन्ती**' 3 मई, 2025 ई. को मनायी जाएगी।

[3 मई, 2025 ई. को **हरिद्वार** में **मध्याह्न–काल** लगभग 10घं.–55मिं. **से** 13घं.–34मिं. **तक रहेगा।**]

(3) श्रीजानकी (सीता) जयन्ती (5 मई, सोमवार)

श्री सीता (जानकी) जी का आविर्भाव वैशाख शुक्ल नवमी, मंगलवार, पुष्य–नक्षत्र कालीन तथा मध्याह्न के समय हुआ था–

''**पुष्यान्वितायां तु कुजे नवम्यां श्री माधवे मासि सिते हलाग्रतः।**
भुवोऽर्चयित्वा जनकेन कर्षणे सीता–विरासीत् व्रतमत्र कुर्यात्॥''

अतः आत्मकल्याणार्थ इसदिन व्रत रखकर श्रीजानकी–राम का संकल्पपूर्वक जन्मोत्सव तथा पूजन करना चाहिए।

इस वर्ष यह नवमी अष्टमीयुता वाले दिन (5 मई, 2025 ई.) मध्याह्न–काल को व्याप्त है। 6 मई, मंगलवार को यह मध्याह्न–व्यापिनी नहीं है। अतः शास्त्र–नियमानुसार यह पर्व अष्टमीयुता तथा मध्याह्न–व्यापिनी नवमी वाले दिन **5 मई, सोमवार** को मनाया जाएगा।

(4) श्रीनृसिंह–जयन्ती (11 मई, रविवार)

'धर्मसिन्धु' अनुसार सूर्यास्तकाल–व्यापिनी वैशाख शुक्ल चतुर्दशी के दिन '**नृसिंह जयन्ती**' मनाई जाती है–

''**वैशाखशुक्ल चतुर्दशी नृसिंहजयन्ती। सा सूर्यास्तमयकालव्यापिनी ग्राह्या॥ दिन–द्वये तव्याप्तौ तदव्याप्तौ वा परैव॥ स्वाती–नक्षत्र–शनिवारादियोगे सातीव–प्रशस्ता॥**'

(दोनों दिन सूर्यास्त काल में चतुर्दशी की व्याप्ति या अव्याप्ति की स्थिति में यह जयन्ती दूसरे दिन होगी।)

इस वर्ष वैशाखशुक्ल चतुर्दशी दो दिन–10 एवं 11 मई को सूर्यास्त–व्यापिनी है। परन्तु उपरोक्त शास्त्र नियमानुसार '**नृसिंह–जयन्ती**' दूसरे दिन–**11 मई, रविवार** को ही मनाई जाएगी। स्वाति–नक्षत्र होने से यह पर्व विशेषतया प्रशस्त होगा।

(5) निर्जला एकादशी व्रत (ज्येष्ठ शुक्ल) (6–7 जून)

द्वादशी तिथि की वृद्धि हो जाने पर स्मार्त्त (गृहस्थी) द्वादशीयुता एकादशी वाले दिन और वैष्णव सम्प्रदाय वाले षष्ठिघटयात्मक (६० घड़ी) द्वादशी के दिन व्रत करते हैं। दशमी तिथि द्वारा अरुणोदय के वेध और अवेध–दोनों स्थितियों में यह नियम समान रूप से चरितार्थ होगा।

इस प्रकार की स्थिति में नारद, माधव और हेमाद्रि के वचनों में परस्पर विरोधाभास है। '**अत्रशुद्धत्वात्स्मार्तानाम् एकादश्यामे–वोपवासो न द्वादश्यामिति॥**' (माधव)–यहाँ माधव मतानुसार स्मार्त्तों का व्रत द्वादशीयुता एकादशी वाले दिन तथा वैष्णवों का व्रत षष्ठिघट्यात्मक (60 घड़ी) द्वादशी वाले दिन होना चाहिए।

जबकि हेमाद्रि, पद्मपुराण, नारद के मतानुसार स्मार्त्तों (गृहस्थियों) और वैष्णव (संन्यासी, दीक्षित, विधवा आदि) सम्प्रदाय वालों–दोनों का व्रत षष्ठिघट्यात्मक द्वादशी के दिन होना चाहिए। '**सर्वत्रैकादशी कार्या द्वादशीमिश्रिताः नरैः॥**' (पद्मपुराण)। मार्कण्डेय के वचनानुसार भी सन्देह होने पर द्वादशी में ही उपवास

करें।–'**संधिग्धेषु च वाक्येषु द्वादशीं समुपोषयेत्।।**' तथा '**विवादेषु च सर्वेषु द्वादश्यां समुपोषणम्।।' पारणं च त्रयोदशयामाज्ञेयं।** परन्तु यहाँ माधव के मत को ही अधिकतर आचार्य मान्यता देते हैं।

इस वर्ष ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी की वृद्धि हुई है। यह 7 जून, 2025 ई. को अहोरात्रव्यापिनी है। अत: उपरोक्त बहुसम्मत माधवमतानुसार इस वर्ष **निर्जला एकादशी** स्मार्त्तों (गृहस्थियों) हेतु 6 जून, शुक्रवार को तथा वैष्णव सम्प्रदाय हेतु 7 जून, शनिवार, 2025 ई. को लिखी गई है।

(6) योगिनी एकादशी व्रत (आषाढ़-कृष्ण) (21–22 जून)

इस वर्ष आषाढ़ कृष्ण एकादशी का क्षय है। अत: स्मार्त्तों (गृहस्थियों) को एकादशी व्रत (**योगिनी एकादशी व्रत**) दशमीविद्धा एकादशी में ही करना होगा, क्योंकि ऐसा न करने पर (द्वादशी के दिन वैष्णवों के व्रत के साथ ही व्रत करने पर) उनको पारणा त्रयोदशी में करनी पड़ेगी, जोकि उनके लिए सर्वथा निषिद्ध एवं वर्जित मानी गई है। इसलिए इस स्थिति में '**ऋष्यशृंग**' का विशेष वचन है–

'पारणाहे न लभ्येत द्वादशी कलयाऽपि चेत्।
तदानीं दशमीविद्धाऽप्युपोष्यैकादशी तिथि:।।'

इसलिए इस वर्ष **यह योगिनी एकादशी व्रत** स्मार्त्तों (गृहस्थियों) के लिए **21 जून, 2025 ई.** के दिन तथा वैष्णवों (संन्यासियों, किसी सम्प्रदाय से दीक्षित, विधवाओं) के लिए 22 जून, 2025 ई. के दिन लिखा गया है।

(7) विवस्वत सप्तमी (1 जुलाई, मंगलवार)

आषाढ़ शुक्ल सप्तमी को भगवान् सूर्य '**विवस्वान्**' नाम से विख्यात हुए थे। इसदिन रथचक्र के समान गोल मण्डल बनाकर उसमें विवस्वान् का गन्ध-पुष्पादि से पूजन करे और अनेक प्रकार के भक्ष्य, भोज्य और पेय पदार्थ अर्पण करके व्रत करें।

यह पर्व पूर्वविद्धा आषाढ़शुक्ल सप्तमी में मनाया जाता है। '**ब्रह्मपुराण**' अनुसार–
'पूर्वविद्धा द्विजश्रेष्ठ, कर्त्तव्या सप्तमीतिथि:।'

इस वर्ष यह सप्तमी 1 जुलाई, 2025 ई. को पूर्व (षष्ठी) विद्धा है, अत: इस वर्ष **यह पर्व 1 जुलाई, मंगलवार को ही मनाया जाएगा।**

(8) कज्जली तृतीया (12 अगस्त, मंगलवार)

यह पर्व परा (चतुर्थी) विद्धा तृतीया में मनाने की शास्त्राज्ञा है। '**निर्णयसिन्धु**' कार का वचन है–''**भाद्र–कृष्ण तृतीया 'कज्जली' संज्ञा। सा परा ग्राह्या।**''

इस वर्ष भाद्र. कृष्ण तृतीया 12 अगस्त, मंगलवार को चतुर्थीविद्धा है। अत: उपरोक्त नियमानुसार इसे 12 अगस्त, 2025 ई. को ही मनाया जाएगा।

(9) श्री कृष्ण-जन्माष्टमी व्रत

(I) 15 अगस्त, शुक्रवार–अर्धरात्रि-व्यापिनी अष्टमी (स्मार्त्त)-गृहस्थियों के लिए
(II) 16 अगस्त, शनिवार; उदयकालिक अष्टमी (वैष्णवों के लिए)

श्रीमद्‌भागवत्, श्रीभविष्य, अग्नि, विष्णु आदि पुराणों संहिताओं एवं व्रतोत्सव निर्णायक सभी धर्मग्रन्थों के अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण का अवतार (जन्म) भाद्रपद कृष्ण अष्टमी तिथि, बुधवार, रोहिणी नक्षत्र एवं वृष राशिस्थ चन्द्रमाकालीन अर्धरात्रि के समय हुआ था–

''सिंहराशिगते सूर्ये गगने जलदाकुले। मासि भाद्रपदे अष्टम्यां कृष्ण पक्षेऽर्धरात्रिके। वृषराशि स्थिते चन्द्रे, नक्षत्रे रोहिणीयुते।।''

(भविष्यपुराण) उत्तरपर्व ५५/१४

परन्तु ध्यान दें, उपरोक्त इन सभी निर्णायक तत्त्वों की विद्यमानता प्रतिवर्ष भाद्र. कृष्णाष्टमी को नहीं हो पाती अर्थात् यदि अष्टमी अर्धरात्रि में आ जाए, तो कभी रोहिणी नक्षत्र का अभाव होता है। यदि अर्धिरात्रि कालीन रोहिणी नक्षत्र आ जाए, तो कई बार अष्टमी तिथि अर्धरात्रिव्यापिनी नहीं होती, इत्यादि। विभिन्न स्थितियों में दो दिनों में व्याप्त श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी व्रत के विषय में संशय आना स्वाभाविक होता है। सम्भवत: इसी कारण हमारे पुराण, व्रत निर्णायक धर्मग्रन्थों ने एकादशी, श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी आदि व्रतों की तिथि का निर्णय स्मार्त्त (गृहस्थियों) एवं वैष्णव सम्प्रदाओं के लिए भिन्न–भिन्न निर्णायक सिद्धान्तों से किया है। इसीलिए भारत के लगभग सभी पंचांगकारों द्वारा जन्माष्टमी व्रत (तिथि) को दो अलग–अलग दिनों में स्मार्त्तों और वैष्णवों के लिए लिखा रहता है। अधिकांश शास्त्रकारों ने सिद्धान्त रूप में अर्धरात्रि एवं चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टमी में ही व्रतादि करने को मान्यता दी है।

सिद्धान्तग्रन्थ धर्मसिन्धु में भी पूर्वविद्धा (सप्तमीयुता) अर्द्धरात्रि–कालीन भाद्र. अष्टमी को ग्रहण करने की आज्ञा दी है–

कृष्ण जन्माष्टमीऽयं निशीयव्यापिनी ग्राह्या। पूर्वदिन एव निशीथयोगे पूर्वा।।

पंजाब, हिमाचल, जम्मू–कश्मीर, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान आदि उत्तर–पश्चिमी राज्यों के करोड़ों स्मार्त्त धर्मावलम्बी गृहस्थी लोग गत सहस्र वर्षों से इसी परम्परा का अनुसरण करते हुए सप्तमीयुता अर्द्धरात्रिकालीन वाली अष्टमी को व्रत, जपोपासना आदि कृत्य करते आ रहे हैं। यथा–

'स्मार्त्तानां गृहिणी पूर्वा पोष्या, यतिर्भि: निष्कामि, गृहिभि: वनस्थे विधवाभि: वैष्णवैश्च परै वो पोष्या:।।

ऋषि व्यास, नारद आदि ऋषियों के मतानुसार भी सप्तमीयुता अष्टमी ही व्रत, पूजन आदि हेतु ग्रहण करनी चाहिए–

कार्या विद्धापि सप्तम्यां रोहिणी सहिताष्टमी।
तत्रोपवासं कुर्वीत तिथ्यान्ते पारणम्॥ (नारद)

इस प्रकार स्मार्त्त सम्प्रदाय के लोग (जिसमें अधिकतर गृहस्थी लोग आते हैं) जन्माष्टमी व्रत के दिन का चयन करते हुए इस बात का पूरा ध्यान रखते हैं कि भगवान् कृष्ण से सम्बद्ध या व्रत भी अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी के दिन ही किया जाए, यदि उसमें रोहिणी का भी योग हो, तो और भी श्रेष्ठ है।

परन्तु **'वैष्णव'** मत वाले लोग विशेषकर मथुरा-वृन्दावन सहित उ.प्र., बिहार, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में उदयकालिक अष्टमी (नवमीयुता) के दिन ही श्रीकृष्ण-जन्मोत्सव मनाते आ रहे हैं, चाहे उस दिन अर्धरात्रि को अष्टमी हो या न भी हो। वैष्णव सम्प्रदाय के अधिकांश लोग दूसरे दिन उदयकालिक (नवमीविद्धा अष्टमी वाले दिन ही) अष्टमी को ही व्रत उत्सव करेंगे, पहिले दिन अर्धरात्रि व्यापिनी अष्टमी को सप्तमीविद्धा मानकर त्याग देंगे।

'वैष्णावास्तु अर्धरात्रि व्यापिनीमपि रोहिणी युतामपि सप्तमीविद्धामष्टमी परित्यज्य नवमीयुतैव ग्राह्या॥' (तिथि-निर्णय)

इस प्रकार वैष्णव सम्प्रदाय के अनुसार निर्धारित जन्माष्टमी के दिन ही तथा श्रीकृष्ण जन्मस्थली मथुरा को आधार मानकर मनाई जाने वाली श्रीकृष्णाष्टमी के दिन ही केन्द्रीय सरकार अवकाश (छुट्टी) की घोषणा करती है। साधारण गृहस्थी लोग (स्मार्त्त) भी इस अवकाश एवं उत्सव वाले दिन ही व्रत रख लेते हैं, जोकि शास्त्र-विरुद्ध हो जाता है क्योंकि सभी डायरीयां व मीडिया आदि भी सरकार द्वारा उद्घोषित अवकाश को प्रमाण मान लेते हैं तथा उसी दिन व्रत कर लेते हैं जबकि उनमें से 98 प्रतिशत से भी अधिक लोग स्मार्त्त-सम्प्रदाय (गृहस्थी) से सम्बद्ध होते हैं।

परन्तु सत्य (वास्तविक्ता) **तो यह** है कि अधिकांश शास्त्रकारों ने स्मार्त्त सम्प्रदाय वाली जन्माष्टमी अर्थात् अर्द्धरात्रिकालिक अष्टमी को ही मान्यता प्रदान की है-

दिवा वा यदि व रात्रौ नास्ति चेद् रोहिणीकला।
रात्रियुक्तां प्रकुर्वीत विशेषणेन्दु संयुताम्॥ (पुराणान्तर) नि:सिन्धु

प्रस्तुत वर्ष 15 अगस्त, 2025 ई., शुक्रवार को सप्तमी तिथि रात्रि 11 बजकर 50 मिनट तक (23:50) व्याप्त है, तदुपरान्त अर्द्धरात्रि में अष्टमी तिथि व्याप्त है। **अतएव गृहस्थी आदि स्मार्त्त लोगों को व्रत, पूजन, चन्द्रमा को अर्घ्य देना, झूला-झुलाना आदि के लिए यही दिन प्रशस्त होगा।** जबकि 16 अगस्त, 2025 ई., शनिवार को अष्टमी तिथि रात्रि 9 बजकर, 35 मिनट (21:35) तक ही व्याप्त है अर्थात् अर्द्धरात्रि के समय नवमी तिथि व्याप्त है। यद्यपि 16 ता. को दोपहर 11:44 के बाद वृष राशिस्थ चन्द्रमा होने से अर्धरात्रि के समय भी वृषराशिस्थ चन्द्रमा रहेगा। परन्तु अष्टमी तिथि का अभाव रहेगा।

तिथि-निर्णय अनुसार भी जन्माष्टमी में अर्धरात्रि को ही मुख्य निर्णायक तत्त्व माना है-रोहिणी नक्षत्र अथवा वृष राशिस्थ चन्द्रमा मुख्य निर्णायक नहीं है। अष्टमी तिथि चाहे शुद्धा (सूर्योदय से अर्धरात्रि तक) हो अथवा सप्तमीविद्धा-पूर्व (पहिले) दिन को ही व्रत करना युक्ति संगत है-

'केचित् अर्द्धरात्रि एव मुख्य निर्णायक:। रोहिणी योगस्तु तने निर्णयासभ्भवे निर्णायक:। तन्मते तादृश शुद्धा-विद्धा विषये पूर्वदिने एव व्रतम्॥

गरुड़ पुराण और विष्णुधर्म के अनुसार भी पूर्वविद्धा श्रीकृष्ण-जयन्ती में उपवास करके तिथि के अन्त में व्रत का पारण करना चाहिए।

सिद्धान्तग्रन्थों में भी अधिकांशत: व्रत, पर्व, त्यौहारों के कर्मकाल **[व्रत, पर्व से सम्बद्ध विशेष पूजन-आदि कार्य किए जाते हैं, उस व्रत-पर्व का कर्मकाल कहलाता है।]** विद्यमान तिथि के दिन ही करने के निर्देश दिए गए हैं। यथा-

तत्र सर्वातिथि: यदह: कर्मकाल व्यापिनी सैव ग्राह्या॥ (निर्णयासिन्धु) एवं च, **कर्मणो यस्य य: कालस्तत् कालव्यापिनी तिथि:। तस्य कर्माणि कुर्वीत्॥**
(विष्णुधर्मोत्तर)

अर्थात् जो तिथि कर्म के समय तक जिस दिन रहे, वही ग्रहण करनी चाहिए।

श्रीकृष्ण का जन्म अर्धरात्रि व्यापिनी अष्टमी में हुआ था, अत: जन्माष्टमी व्रत का **कर्मकाल** (श्रीकृष्ण की विशेष पूजा, श्रीकृष्ण के निमित्त व्रत, बालरुप पूजा, झूला-झुलाना, चन्द्र को अर्घ्यदान, जागरण आदि) **अर्धरात्रि ही है, अतएव जन्माष्टमी व्रत रखने के लिए अर्धरात्रि में अष्टमी का होना अनिवार्य है।** अर्धरात्रि के समय नवमी तिथि का कोई औचित्य नहीं है। पहले दिन अर्धरात्रि-व्याप्त अष्टमी को छोड़कर व्रत उस दिन करना, जिस दिन अर्धरात्रि के समय अष्टमी व्याप्त नहीं कर रही अपितु वहाँ नवमी तिथि है, किसी भी दृष्टि से शास्त्र-सम्मत एवं तर्कसंगत नहीं है।

ध्यान रहे, भगवान् श्रीकृष्ण की जन्म-स्थली मथुरा-वृन्दावन में वर्षों की परम्परानुसार जन्मोत्सव सूर्य-उदयकालिक एवं नवमीविद्धा अष्टमी में मनाने की परम्परा है, जबकि उत्तरी भारत में लगभग सभी प्रान्तों में सैंकड़ों वर्षों से अर्द्धरात्रि एवं चन्द्रोदयव्यापिनी जन्माष्टमी में व्रतादि ग्रहण करने की परम्परा है। **ध्यान रहे-** सप्तमीविद्धा अष्टमी वर्जित अवश्य है, लेकिन वह तब जबकि, वह (अष्टमी) दो दिन कर्मकाल (अर्धरात्रि) व्यापिनी हो या वह दोनों दिन कर्मकालव्यापिनी न हो। **व्रत-पर्वशास्त्र का यही आदेश है। वास्तव में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत तथा जन्मोत्सव-दो अलग-अलग स्थितियां हैं।**

इस प्रकार, 15 अगस्त, शुक्रवार को ही श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का कर्मकाल-(अर्द्धरात्रि अष्टमी) है। *इसीलिए इसी समय से पूर्व श्रीकृष्ण के निमित्त व्रत, बालरूप पूजा, झूला-झुलाना, चन्द्र का अर्घ्य-दान, जागरण-कीर्तन का विधान होगा।*

हमारे मतानुसार 16 अगस्त, शनिवार को भी **'श्रीकृष्ण-स्तोत्र'** पाठ, ध्यान, कीर्तनादि करके इन पुण्य सुअवसरों का लाभ उठाना चाहिए। व्रत एवं उत्सव तो 15 अगस्त, शुक्रवार को ही श्रेष्ठ एवं उत्तम रहेगा।

स्मार्त्त और वैष्णव का भेद

स्मार्त्त–वेद, श्रुति-स्मृति आदि ग्रन्थों को मानने वाले धर्मपरायण प्रायः सभी गृहस्थी लोग स्मार्त्त कहलाते हैं। पंजाब, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, दिल्ली, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात आदि राज्यों के साधारण गृहस्थी परिवार स्मार्त्त सम्प्रदाय अनुसार ही अपने सभी व्रतोपवास के साधारण नियम अनुकरणीय करते हैं। पुराण, संहिता एवं स्मृतियों में स्मार्त्तों के लिए स्थान-स्थान पर गृही या गृहस्थ शब्द का और वैष्णवों के लिए वनवासी या यति शब्दों का प्रयोग किया गया है।

वैष्णव–वे धर्मपरायण लोग जिन्होंने किसी प्रतिष्ठित वैष्णव सम्प्रदाय के गुरु से दीक्षा ग्रहण की हो, गले में श्रीगुरु द्वारा दी गई कण्ठी धारण की गई हो तथा मस्तक एवं गले पर श्री खण्ड, चन्दन या गोपी चन्दन या विष्णुचरण का तिलक, त्रिपुण्ड्र, उर्द्धपुण्ड आदि के चिन्ह धारण किए हुए एवं विशिष्ट सम्प्रदाय से सम्बन्धित भक्तजन वैष्णव कहलाते हैं।

धर्मसिन्धुकार ने एकादशी, अष्टमी आदि व्रतों में स्मार्त्त एवं गृहस्थ-जनों को पूर्वविद्धा में व्रतादि करने का निर्देश दिया है, जबकि वैष्णवों एवं विधवाओं आदि को परवर्ती तिथि में व्रतादि करने का निर्देश दिया है–

''स्मार्त्तानां गृहिणां पूर्वो पोष्या। यतिर्भिः निष्काम गृहिभिः वनस्थैः विधवाभिर्वैष्णवैश्च परैवोपोष्या।।(धर्मसिन्धु)

(10) कुशोत्पाटिनी अमावस (23 अगस्त, शनिवार)

भाद्रपद मास की अमावस्या तिथि कुशोत्पाटिनी (या कुशाग्रहणी) अमावस के नाम से जानी जाती है। इसदिन कुशा-सञ्चय करने से वर्षभर उसकी शुद्धता रहती है। जिस कुश का मूल सुतीक्ष्ण हो, जिसमें पत्ती हो, अग्रभाग कटा न हो और हरा हो, वह देव तथा पितृ-दोनों कार्यों के लिए उपयुक्त होता है। यह तिथि पूर्वाह्णव्यापिनी तथा दिन के द्वितीय प्रहर व्याप्त अमावस ली जाती है। यथा–

मासे नभस्यमावस्या तस्यां दर्भौच्चयो मतः।
अयातयामास्ते दर्भा विनियोज्याः पुनः पुनः।।

एवं च, **'इयममावस्या द्वितीयप्रहरव्यापिनी ग्राह्या।।'** (वर्षकृत्य)

स्कन्दपुराणानुसार भी **'दर्भाणां सञ्चये सङ्गवःकाल ईरितः।।'** अर्थात् कुशों के संचय में संगवकाल (दिन के पाँच भागों में से दूसरा भाग)–व्यापिनी अमावस्या शुभ कही गई है।

भारतीय व्रत-पर्वशास्त्रकारों ने दिनमान को 5 समान भागों में विभक्त किया है, जिनके नाम क्रमशः ये हैं–

(*i*) **प्रातःकाल**–सूर्योदय के बाद के 3 मुहूर्त्त तक।
(*ii*) **संगवकाल**–चतुर्थ से षष्ठ मुहूर्त्त तक।
(*iii*) **मध्याह्नकाल**–सप्तम से नवम मुहूर्त्त तक।
(*iv*) **अपराह्णकाल**–दशम से 12वें मुहूर्त्त तक।
(*v*) **सायाह्नकाल**–13 से 15वें मुहूर्त्त तक।

आगामी वर्ष भाद्रपद अमावस दो दिन (22 एवं 23 अग.) मध्याह्न-व्यापिनी है। ता. 23 अगस्त को द्वितीय प्रहर (संगवकाल) लगभग प्रातः 8घं.–37मिं. से दोपहर 11घं.–13मिं. तक रहेगा। अतः स्पष्ट है, 23 अग., शनिवार को भाद्रपद अमावस तिथि द्वितीय प्रहर-व्यापिनी होने से कुशोत्पाटन का कार्य 23 अगस्त, 2025 ई., शनिवार को ही करना प्रशस्त होगा। इस तिथि को दर्भस्थल पर जाकर पूर्व या उत्तराभिमुख बैठकर निम्न मन्त्र पढ़कर और **'हुँ फट्'** कहकर दाहिने हाथ से एक बार में कुश उखाड़े–

विरञ्चिना सहोत्पन्न परमेष्ठिन्निसर्गज।
नुद सर्वाणि पापानि दर्भ स्वस्तिकरो भव।।

यद्यपि कुछ प्रदेशों में परम्परागत मध्याह्न में कुशोत्पाटन करते हैं, जिस कारण वे 22 अगस्त को ही मध्याह्न-काले कुशोत्पाटन कार्य कर लेंगे।

'व्रते पिठोरसंज्ञेऽमा मध्याह्नव्यापिनी शुभा।' वाक्यानुसार पिठोरी अमावस्या 22 अगस्त, 2025 ई. को लिखी गई है।

(11) श्रीवराह जयन्ती (25 अगस्त, सोमवार)

भाद्रपद शुक्ल तृतीया तिथि जिस दिन अपराह्ण-व्यापिनी हो, उस दिन **'श्रीवराह-जयन्ती'** मनाई जाती है। तृतीया तिथि यदि दोनों दिन अपराह्णव्यापिनी हो अथवा न हो तो दूसरे दिन यह जयन्ती होगी।–**'रम्भाख्यां वर्जयित्वा तु तृतीयां द्विजसत्तम्। अन्येषु सर्वकार्येषु गणयुक्ता प्रशस्यते।।'** (ब्रह्मवैवर्त पुराण)

इस वर्ष भाद्र. शुक्ल तृतीया दो दिन–25 एवं 26 अगस्त को अपराह्ण व्यापिनी है। परन्तु 26 अगस्त को तृतीया तिथि अपराह्ण को केवल स्पर्श मात्र कर रही है। **अतः** श्रीवराह जयन्ती पहिले दिन पूर्ण अपराह्णकाल व्याप्त तृतीया तिथि के दिन 25 अगस्त, सोमवार को मनाई जाएगी।

[25/26 अगस्त को पंजाब, हिमाचल, जम्मू, राजस्थान, हरि. आदि उत्तरी राज्यों में अपराह्ण-काल लगभग 13घं.–47मिं. से 16घं.–21मिं. तक रहेगा।]

(12) कलंक-चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषेध) (26–27 अगस्त)

भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी के दिन चन्द्रदर्शन होने पर मिथ्याकलंक लगता है। इसका अभिप्राय यह है कि यदि चतुर्थी तिथि में चन्द्र–उदय होकर पंचमी–तिथि तक वर्तमान हो (अर्थात् चन्द्र–अस्त पंचमी तिथि में हो), तो सिद्धिविनायक व्रत के दिन चन्द्रदर्शन करना या होना दोषकारक नहीं होता तथा यदि पहिले दिन सायंकाल से चतुर्थी तिथि की व्याप्ति हो जाए अर्थात् तृतीया में चन्द्रोदय होकर चतुर्थी तिथि व्याप्ति तक चन्द्रदर्शन हो (चन्द्र अस्त चतुर्थी तिथि में हो), तो चन्द्रदर्शन का दोष पहिले दिन होगा, चाहे उस दिन सिद्धिविनायक व्रत न भी हो। निष्कर्ष यह है कि चतुर्थी में ही चन्द्रदर्शन का दोष है। सिद्धिविनायक व्रत का इससे सम्बन्ध नहीं है। जोकि मध्याह्न–व्यापिनी ग्राह्या होता है।

चतुर्थ्यामुदितस्य पंचम्यां दर्शनं विनायकव्रत दिनेपि न दोषाय पूर्वदिने सायाह्नमारभ्य प्रवृत्तायां चतुर्थ्यां विनायकव्रताभावेपि पूर्वेद्युरेव चंद्रदर्शने दोष इति सिध्यति।.......... इदानीं लोकास्तवेकतरपक्षाश्रयेण विनायक व्रतदिने एवं चंद्रं न पश्यन्ति न तदयकाले दर्शनकाले वा चतुर्थीसत्त्वासत्त्वे नियमेनाश्रयन्ति।। (धर्मसिन्धुः)

परन्तु इस उपरोक्त नियम की उपेक्षा करते हुए प्रचलित लोकमतानुसार महाराष्ट्र, गुजरातादि में लोग सिद्धिविनायक व्रत वाले दिन ही चन्द्रदर्शन का निषेध मानते हैं। चाहे उस दिन सायंकाल पंचमी तिथि व्याप्ति में ही चन्द्रास्त हो अर्थात् पंचमी तिथि तक चन्द्रदर्शन हो रहे हों। वे उदयकाल या दर्शनकाल में चतुर्थी होने या न होने पर चन्द्रदर्शन के नियम को नहीं मानते। जबकि पंजाब, हिमाचल, जम्मू, हरियाणादि उत्तरी भारत में चतुर्थी तिथि व्यापिनी में ही चन्द्रदर्शन का दोष मानते हैं।

इस वर्ष (वि. संवत् 2082) **'सिद्धि विनायक व्रत'** मध्याह्न–व्यापिनी 27 अगस्त, बुधवार को है। परन्तु चतुर्थी तिथि 26 अगस्त, मंगलवार की दोपहर 13घं.–55मिं. से प्रारम्भ हो रही है तथा इसदिन चतुर्थी के समय ही रात्रि 20घं.–34मिं. पर चन्द्रास्त होगा। जबकि 27 अगस्त को चतुर्थी तिथि दोपहर बाद 15घं.–45मिं. तक ही है तथा इसदिन चन्द्रास्त रात्रि 21घं.–00मिं. पर होगा, जबकि उस समय पंचमी तिथि व्याप्त होगी। **इस प्रकार उत्तरी भारत में तो लोग शास्त्रनिर्देशानुसार 26 अगस्त, मंगलवार को ही चन्द्रदर्शन का निषेध मानेंगे।** परन्तु महाराष्ट्र आदि कुछ राज्यों में 27 अगस्त, बुधवार को चन्द्रदर्शन निषेध का विचार करेंगे तथा कलंक चतुर्थी, पत्थर–चौथ आदि इसी दिन मनाई जाएगी।

(13) श्रीसत्यनारायण व्रत (भाद्रपद पूर्णिमा) (7 सितम्बर)

7–8 सितम्बर, 2025 ई. की मध्यरात्रि में घटित होने वाला खग्रास चन्द्रग्रहण भारत में दृश्यमान होगा। इस ग्रहण का सूतक 7 सितम्बर, 2025 ई. को दोपहर 12घं.–57मिं. पर प्रारम्भ होगा। यह सूतक इस दिन प्रदोषकाल में, जिस समय सत्यनारायण पूजादि अनुष्ठान, कथा आदि होती है, विद्यमान होगा। अतएव इस व्रत का आचरण करने वालों को चन्द्रोदय के समय स्नान (गंगाजल मिश्रित) करके भगवान् सत्यनारायण की पूजादि करनी चाहिए। ऐसा करने से ग्रहणदोष सम्मार्जित हो जाता है। यहाँ श्रीसत्यनारायण को पक्व अन्न (पंजीरी आदि) का भोग नहीं लगाना चाहिए। इस बारे शास्त्रवचन है–**'स्नात्वा कर्माणि कुर्वीत पक्वमन्नं विवर्जयेत्।।'** अतः यहाँ फल एवं सूखे मेवे (Dry Fruits) आदि का ही भोग लगाना चाहिए और चरणामृत हेतु कुशायुक्त दूध का प्रयोग करना चाहिए।

(14) आश्विन कृष्ण चतुर्थी का महालय श्राद्ध (10 सितम्बर)

आश्विन कृष्णपक्ष (पितृपक्ष) के किए जाने वाले सभी श्राद्ध **'पार्वण–श्राद्ध'** कहलाते हैं। पित्तरों के निमित्त किए जाने वाले मृत्यु–तिथ्यनुसार सभी श्राद्ध अपराह्ण–व्यापिनी तिथि में करने की शास्त्राज्ञा है।

'पूर्वाह्णो वै देवानां मध्याह्ने मनुष्याणामपराह्ण पितृणाम्–श्रुति पूर्वाह्णे दैविकं श्राद्धमपराह्णे तु पार्वणम्।।' (याज्ञवल्क्य)

इसवर्ष आश्विन कृष्ण चतुर्थी तिथि 10 सितम्बर, 2025 ई. को 15घं.–39मिं. से 16घं.–07मिं. तक अपराह्ण–काल को स्पर्श कर रही है। अतएव **'चतुर्थी तिथि'** का पार्वण श्राद्ध तो **10 सितम्बर, बुधवार** को होगा। क्योंकि 11 सितम्बर को चतुर्थी अपराह्ण–काल से पहिले ही समाप्त हो जाएगी। इसी प्रकार **तृतीया तिथि** का श्राद्ध भी **10 सितम्बर, बुधवार को ही होगा।** क्योंकि तृतीया तिथि 13घं.–39मिं. से 15घं.–39मिं. तक अपराह्ण–काल को व्याप्त कर रही है।

[**नोट**–10 या 11 सितम्बर, 2025 ई. को पंजाब, दिल्ली, हरियाणा आदि उत्तरी राज्यों में अपराह्ण–काल लगभग 13घं.–39मिं. से 16घं.–07मिं. तक रहेगा।]

(15) उपाङ्ग ललिता व्रत (26 सितम्बर, शुक्रवार)

यह व्रत अपराह्णव्यापिनी आश्विन शुक्ल पंचमी के दिन किया जाता है–

'अत्र पंचमी अपराह्णव्यापिनी ग्राह्या, अपराह्णस्यैव तत्पूजाकालत्वोपपत्तेः।' (धर्मसिन्धुः)

इस वर्ष आश्विन शुक्ल पंचमी 26 सितम्बर, शुक्रवार को ही अपराह्ण–व्यापिनी है। अतः यह पर्व इस वर्ष पहिले दिन (**26 सितम्बर, 2025 ई.**) ही होगा।

(16) शरद् पूर्णिमा व्रत (6 अक्तूबर, सोमवार)

प्रदोष एवं निशीथव्यापिनी आश्विन पूर्णिमा में शरद् पूर्णिमा व कोजागर व्रत होता है। यदि पहले दिन पूर्णिमा निशीथव्यापिनी हो और दूसरे दिन प्रदोषव्यापिनी न हो तो यह व्रत पहले दिन ही करना चाहिए। यथा–

आश्विनपौर्णमास्यां कोजागर व्रतम्। सा पूर्व त्रैव निशीथव्याप्तौ पूर्वा।।

इस वर्ष पूर्णिमा तिथि 6 अक्तूबर, 2025 ई. को पूर्णतया निशीथ (अर्धरात्रि) एवं प्रदोष को व्याप्त कर रही है। दूसरे दिन 7 अक्तूबर को तो यह प्रदोष को स्पर्श भी नहीं कर रही। अतः 6 अक्तूबर, 2025 ई. को ही ये दोनों पर्व होंगे।

(17) करक चतुर्थी (करवा-चौथ व्रत) (10 अक्तूबर, शुक्रवार)

करवा-चौथ का व्रत भारतीय संस्कृति के उस पवित्र-बन्धन एवं अखण्ड सौभाग्य हेतु का प्रतीक है, जो पति-पत्नी के बीच प्रेम रूपी डोरी को जोड़ता है। सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा यह व्रत चन्द्रोदय व्यापिनी कार्तिक कृष्ण चतुर्थी को किया जाता है। इस व्रत की तिथि का निर्णायक '**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत**' वाला ही है। शास्त्रानुसार यदि किसी वर्ष तृतीयायुक्त चतुर्थी में चन्द्रोदय न हो और दूसरे दिन भी चतुर्थी में चन्द्रोदय न हो, तो परयुक्ता अर्थात् उदय-व्यापिनी चतुर्थी ग्रहण करें। यदि दोनों दिन चतुर्थी व्यापिनी में चन्द्रोदय हो, तो पहली तृतीयायुक्त लें। परन्तु यदि दोनों दिन चतुर्थी में चन्द्रोदय न हो तो परयुता चतुर्थी ही ग्रहण करें अर्थात् दूसरे दिन ही व्रत करने की शास्त्राज्ञा है–

'करकचतुर्थी चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्या। परदिने एव चन्द्रोदयव्याप्तौ परैव।। उभयदिने चन्द्रोदयव्यापित्वे तृतीया-युतैव ग्राह्या।।' दिनद्वये चन्द्रोदयव्याप्त्यभावे परैव।। (धर्मसिन्धुः)

प्रस्तुतवर्ष 9 अक्तूबर, गुरुवार को तृतीया तिथि रात्रि 22घं.–55मिं. तक व्याप्त रहेगी। चन्द्रोदय लगभग सारे भारत में तृतीया तिथिकालीन 19घं.–15मिं. से 20घं.–00मिं. तक हो जाएगा। परन्तु 10 अक्तूबर, शुक्रवार को चतुर्थी तिथि रात्रि 19घं.–39मिं. तक ही व्याप्त रहेगी। सम्पूर्ण भारत में इसदिन चन्द्रोदय (सुदूर पूर्वी-भारत को छोड़कर) चतुर्थी तिथि की समाप्ति 19घं.–39मिं. के बाद ही होगा। **दोनों दिन चतुर्थी तिथि चन्द्रोदय का स्पर्श नहीं कर रही है। (अर्थात् चन्द्रोदय के समय चतुर्थी तिथि नहीं होगी।) अतः शास्त्रीय-निर्णयानुसार करक-चतुर्थी व्रत (करवा-चौथ) दूसरे दिन ही (अर्थात् 10 अक्तूबर, शुक्रवार) किया जाएगा।**

(18) गोवत्स-द्वादशी (17 अक्तूबर, शुक्रवार)

प्रदोष व्यापिनी कार्तिक कृष्ण द्वादशी में '**गोवत्स-द्वादशी**' मनाई जाती है। इस वर्ष कार्तिक कृष्ण द्वादशी 17 अक्तूबर, 2025 ई. को ही '**प्रदोषव्यापिनी**' है। अतः यह व्रत/पूजन इसीदिन होगा।

(19) दीपावली (महालक्ष्मी-पूजन) निर्णय (21 अक्तूबर, मंगलवार)

कृपया इसका विस्तृत निर्णय हेतु आगामी पृष्ठ नं. 24 का अवलोकन करें।

(20) कार्तिक शुक्ल (हरिप्रबोधिनी) एकादशी व्रत

इस वर्ष कार्तिक शुक्ल द्वादशी का क्षय हुआ है। इस स्थिति में धर्मशास्त्र निर्णयानुसार स्मार्त्त (गृहस्थी) लोगों को पहिली दशमीविद्धा एकादशी वाले दिन 1 नवम्बर, 2025 ई. को तथा वैष्णवों (संन्यासी, विधवा-स्त्री, वानप्रस्थ और वैष्णव सम्प्रदाय वाले) को 2 नवम्बर, 2025 ई. के दिन उपवास करना चाहिए। यहाँ आगे स्पष्टीकरण दे रहे हैं–

'**धर्मसिन्धुकार**' अनुसार एकादशी तिथि मुख्यतः दो प्रकार की होती है–(*i*) विद्धा और (*ii*) शुद्धा। (*i*) सूर्योदयकाल में दशमी का वेध हो अथवा अरुणोदयकाल (सूर्योदय से लगभग 4 घड़ी पूर्व) में एकादशी तिथि दशमी द्वारा विद्धा हो, तो वह (एकादशी) विद्धा कहलाती है। (*ii*) अरुणोदयकाल में दशमी-तिथि के वेध से रहित एकादशी शुद्धा मानी जाती है।

प्रायः सभी शास्त्रों में दशमी से युक्त एकादशी व्रत करने का निषेध माना गया है। परन्तु द्वादशी का क्षय हो जाने पर स्मार्त्तों (गृहस्थियों) को दशमीयुता एवं वैष्णव सम्प्रदाय वालों को द्वादशी-त्रयोदशीयुता एकादशी के दिन व्रत करना चाहिए। पद्मपुराण अनुसार भी–

'एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी।
उपवासं न कुर्वीत पुत्रपौत्रसमन्वितः।।'

उपरोक्त प्रमाणानुसार 11, 12, 13 तिथियों से मिश्रित दिन में स्मार्त्तों (गृहस्थियों) के व्रत का निषेध और वैष्णवों के व्रत का विधान है। '**वृद्धशातातप**' का भी यहाँ वचन है–'**दशम्यैकादशीविद्धा द्वादशी च क्षयं गता। क्षीणा सा द्वादशी ज्ञेया नक्तं तु गृहिणः स्मृतम्।·····गृहिणः पूर्वत्रोपवासः।।'**

ध्यान दें–यहाँ धर्मशास्त्रों में सूर्योदयवेधवती दशमी के दिन स्मार्त्तों को व्रत करने की आज्ञा दी है, जोकि कण्वस्मृति के सामान्य नियम '**उदयोपरि विद्धा तु दशम्यैकादशी यदि। दानवेभ्यः प्रीणनार्थं दत्तवान् पाकशासनः।।**' के बिल्कुल विरुद्ध है। परन्तु शास्त्रों द्वारा स्मार्त्तों के लिए त्रयोदशी में पारणा भी सर्वथा वर्जित मानी गई है। यदि द्वादशी तिथि के क्षय की स्थिति में स्मार्त्तों (गृहस्थियों) तथा वैष्णवों का व्रत एक ही दिन कर दिया जाए तो स्मार्त्तों को भी व्रत की पारणा त्रयोदशी में करने की स्थिति आ पड़ेगी।

इसीलिए निर्णयसिन्धु में '**ऋष्यशृंग**' ने अन्य विकल्प के अभाव में तथा जब स्मार्त्तों को त्रयोदशी में पारणा करने की नौबत आ पड़े तब दशमीमिश्रिता एकादशी में ही व्रत करने की अनुमति दी है–

'पारणाहे न लभ्येत द्वादशी कलयाऽपि चेत्।
तदानीं दशमीविद्धाऽपि-उपोष्यै-एकादशी तिथिः।।' (शेष पृष्ठ 25 पर)

(19) दीपावली (महालक्ष्मी–पूजन) निर्णय (21 अक्तूबर, मंगलवार, 2025 ई.)

गतवर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कार्तिक अमावस्या दो दिन प्रदोष–व्याप्त होने से **'दीपावली (महालक्ष्मी पूजन)'** सम्बन्धी जनमानस में कुछ संशय रहेगा। प्रदोषव्यापिनी (सूर्यास्त के बाद त्रिमुहूर्त्त) कार्तिक अमावस्या के दिन **'दीपावली (महालक्ष्मी–पूजन)'** मनाने की शास्त्राज्ञा है–यह मूल (प्रथम) वचन है। इसवर्ष (वि. संवत् 2082 में) 20 अक्तूबर, 2025 ई. के दिन कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी तिथि का समाप्तिकाल $15^{घं.}$–$45^{मिं.}$ है। अतः चतुर्दशी समाप्ति के साथ ही कार्तिक अमावस्या शुरु होकर अगले दिन (21 अक्तूबर, मंगलवार) सायं $17^{घं.}$–$55^{मिं.}$ तक व्याप्त है। **स्पष्ट है–** अगले दिन (21 अक्तूबर) प्रदोषकाल में अमावस तिथि की व्याप्ति बहुत ही कम समय के लिए है। (क्योंकि पंजाब, हिमाचल, जम्मू आदि राज्यों में सूर्यास्त लगभग $17^{घं.}$–$45^{मिं.}$ पर होगा।), जबकि 20 अक्तूबर, 2025 ई. को अमावस्या पूर्णतया प्रदोष एवं निशीथकाल को व्याप्त कर रही है। परन्तु फिर भी शास्त्रनिर्देशानुसार **'दीपावली पर्व'** (श्रीमहालक्ष्मी पूजन) **21 अक्तूबर, मंगलवार, 2025 ई. को ही मनाना शास्त्रसम्मत होगा।** यथा–21 अक्तूबर, मंगलवार को ही दीपावली पर्व मनाने के पक्ष में निम्न शास्त्रवाक्य उद्धृत हैं–

❑ पूर्वत्रैव व्याप्तिरिति पक्षे परत्र यामत्रयाधिकव्यापिदर्शे दर्शापेक्षया प्रतिपद्वृद्धिसत्त्वे लक्ष्मीपूजादिकमपि परत्रैवेत्युक्तम्। एतन्मते उभयत्र प्रदोषव्याप्ति–पक्षेपि परत्र दर्शस्य सार्धयामत्रयाधिक–व्याप्ति–त्वात्परैव युक्तेति भाति।।

(पुरुषार्थ–चिन्तामणि)

[अर्थात् यदि अमावस्या केवल पहिले दिन ही प्रदोषकाल को व्याप्त हो तथा अगले दिन अमावस्या साढ़े तीन प्रहर से अधिक व्याप्त हो एवं अगले दिन भी प्रतिपदा तिथि वृद्धिगामिनी होकर तीन प्रहर के उपरान्त समाप्त हो रही हो, तो दूसरे दिन अर्थात् अमावस्या के दिन लक्ष्मीपूजन करना चाहिए।]

उपरोक्त शास्त्रनियम के अनुसार 21 अक्तूबर, मंगलवार को अमावस्या सायं $17^{घं.}$–$55^{मिं.}$ तक है, जो स्पष्टतः सूर्यास्त के कुछ मिनटों बाद तक है अर्थात् 3.5 प्रहर से अधिक ही है तथा प्रतिपदा तिथि $20^{घं.}$–$17^{मिं.}$ पर समाप्त होने से वृद्धिगामिनी है। [**देखें–अमावस्या** का कुल मान $26^{घं.}$–$10^{मिं.}$ है तथा **प्रतिपदा** तिथि का कुल मान $26^{घं.}$–$22^{मिं.}$ है।]

अतः धर्मसिन्धु में दिए गए उपरोक्त श्लोक के अनुसार **21 अक्तूबर, मंगलवार को ही लक्ष्मीपूजन शास्त्रसम्मत होगा।**

निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु, पुरुषार्थ–चिन्तामणि, तिथि–निर्णय आदि ग्रन्थों में दिए गए शास्त्रवचनों के अनुसार दोनों दिन प्रदोषकाल में अमावस्या की व्याप्ति कम या अधिक होने पर दूसरे दिन ही अर्थात् सूर्योदय से सूर्यास्त (प्रदोषकाल व्याप्त) वाली अमावस्या के दिन ही लक्ष्मीपूजन करना युक्तिसंगत होगा।

अतएव सभी शास्त्र–वचनों के अनुशीलन के पश्चात् हमारे मतानुसार 21 अक्तूबर, 2025 ई., मंगलवार को ही दीपावली पर्व तथा श्रीलक्ष्मीपूजन करना शास्त्रसम्मत होगा। सम्पूर्ण भारत में यह पर्व इसीदिन होगा। यही निर्णय भारत के अधिकतर पंचांगकारों को मान्य है। परम्परानुसार तथा गत अनेक उदाहरण भी इसी मत की पुष्टता करते हैं। [देखें–वि. संवत् २०१९, २०२० तथा २०८१]

[**ध्यान दें,** कुछ पंचांगकारों के मतानुसार पश्चिमी राजस्थान, गुजरात, पश्चिमी महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरला आदि राज्यों में जहाँ अमावस्या तिथि प्रदोषकाल से पूर्व ही समाप्त (अर्थात् जहाँ सूर्यास्त $17^{घं.}$–$55^{मिं.}$ के बाद होगा] हो जाएगा, वहाँ दीपावली पर्व 20 अक्तूबर, सोमवार को करना चाहिए, तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि]–

'यां तिथिं समनुप्राप्य उदयं याति भास्करः।
सा तिथि सकला ज्ञेया स्नान–दान–व्रतादिषु।।'

इस शास्त्रवचनानुसार इसी दिन (21 अक्तूबर, 2025 ई.) प्रदोषकाल में साकल्यापादित अमावस तो विद्यमान् रहेगी ही। इसका अभिप्राय यह भी है कि भले ही गणितागत तिथि किसी दिन कर्मकाल के एक ही पल को व्याप्त क्यों न करे, उसका पूर्ण कर्मकाल धर्मशास्त्रानुसार साकल्यापादिता तिथि से व्याप्त होने के कारण व्रत–पूजानुष्ठान के योग्य होता है। अतः इन प्रदेशों (स्थलों) में भी गतवर्ष की भान्ति लक्ष्मी–पूजन 21 अक्तूबर, मंगलवार के दिन सूर्यास्त बाद प्रदोषकाल (2 घंटे 24 मिनट की अवधि के भीतर) में किया जाएगा।

अतः अन्तिम निर्णय यही है कि 21 अक्तूबर, मंगलवार को ही धर्मनिष्ठ लोग सूर्यास्त के पश्चात् अल्पकालिक प्रदोषकाल–व्याप्त अमावस्या के बावजूद सायाह्नकाल से प्रदोषकाल समाप्ति तक अर्थात् सूर्यास्त से आधा घण्टा पहिले से सूर्यास्त के बाद लगभग $2^{घं.}$–$24^{मिं.}$ तक की कालावधि में निःसन्देह होकर लक्ष्मीपूजन कर सकते हैं।

(पृष्ठ 23 से आगे)

इस प्रकार उपरोक्त शास्त्र-विवेचन से पाठक समझ गए होंगे कि इस वर्ष एकादशी-द्वादशी-त्रयोदशी-इन तिथियों का एकत्र (एक ही वार में संगम) होने के कारण स्मार्तों (गृहस्थियों) का 'देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत' विशेष नियमानुसार **1 नवम्बर, 2025 ई.** को सूर्योदय-वेधवती दशमी के दिन शनिवार को लिखा गया है, जो सर्वथा शास्त्रीय है, जबकि वैष्णवों का व्रत **2 नवम्बर, रविवार** को होगा।

(21) भीष्मपंचक प्रारम्भ/समाप्त (1 से 5 नवम्बर)

कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक का काल (अवधि) '**भीष्मपंचक**' कहलाता है। शास्त्रों में भीष्मपंचक व्रत का अनुष्ठान केवल पाँच दिन (का. शु. ११ से पूर्णिमा तक) निर्दिष्ट है। इन पाँच दिनों में व्रताचरणपूर्वक पूर्वाह्ण में विष्णुपूजा और मध्याह्न में भीष्मपितामह के लिए एकोद्दिष्ट श्राद्ध किया जाता है। यदि शुद्धा एकादशी से उदयकालिक पूर्णिमा तक की अवधि में कोई तिथि क्षय हो जाए और भीष्मपंचकों के दिनों की संख्या चार ही रह जाए, तब शास्त्रकारों ने यह परामर्श दिया है कि दशमीविद्धा एकादशी से ही यह व्रत प्रारम्भ करके शुद्ध (जिसमें चतुर्दशी का वेध न हो) उदयकालिक पूर्णिमा के दिन ही इसे समाप्त कर लेना चाहिए। इसी प्रकार, यदि इन पाँच तिथियों में से किसी एक तिथि की वृद्धि हो जाने से भीष्मपंचकों के 6 दिन बनते हो, तो शुद्ध एकादशी वाले दिन से प्रारम्भ करके चतुर्दशी-विद्धा, पूर्णिमा के दिन ही भीष्मपंचकों को समाप्त करना चाहिए। इस बारे '**धर्मसिन्धु**' का वचन है-

''एकादश्यादि-दिनपंचके भीष्मपंचकव्रतमुक्तम्। तच्च शुद्धैकादश्यामारम्य चतुर्दश्यविद्धौदयिक-पौर्णमास्यां समापनीयम्। यदि शुद्धैकादश्यमारम्भे क्षयवशेन पौर्णमास्यां पंचदिनात्मकव्रतसमाप्तिर्न घटते, तदा विर्द्धेकादश्यामपि आरम्भः।।''

इस वर्ष कार्तिक शुक्लपक्ष में द्वादशी का क्षय हो जाने से भीष्मपंचक के दिन केवल चार ही बच रहे हैं। अतः उपरोक्त नियमानुसार यहाँ दशमीविद्धा एकादशी (**1 नवम्बर, 2025 ई.**) से **भीष्मपंचक का आरम्भ** माना गया है। स्पष्ट है, इससे पूर्णिमा तक के दिन पाँच हो गए हैं।

(22) तुलसी विवाह (2 नवम्बर, रविवार)

कार्तिक शुक्ल एकादशी (हरिप्रबोधिनी एकादशी) की पारणा वाले दिन प्रबोधोत्सव मनाया जाता है। इसी दिन अथवा इससे अग्रिम चार (द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा वाले) दिनों में किसी भी दिन विवाह-नक्षत्र में तुलसी विवाह किया जा सकता है-ऐसा शास्त्रविधान है-

एकादश्यादि पूर्णिमान्ते यत्र क्वापि दिने कार्तिक शुक्लान्तर्गत-विवाह-नक्षत्रेषु वा विधानादनेक कालत्वं तथापि पारणाहे प्रबोधोत्सव कर्मणा सह....।।

परन्तु प्रबोधोत्सव के साथ एकादशी व्रत-पारणा वाले दिन पूर्वरात्रि में (अर्धरात्रि से पहिले ही रात्रिकाल में) तुलसी विवाह करने की परम्परा है-ऐसा '**धर्मसिन्धुकार**' का निर्देश है-

'**रात्रि प्रथमभागे प्रशस्तः।**' यदि पारणा के दिन पूर्वरात्रिकाल में विवाह-नक्षत्र न हो तो दिन के समय प्राप्त विवाहनक्षत्र में, यदि वहाँ भी न मिले तो उसके बिना भी पूर्वरात्रि में तुलसी-विवाह पारणा के दिन कर लेना चाहिए।

इस वर्ष 2 नवम्बर, 2025 ई. को प्रबोधोत्सव है। इसदिन पूर्वरात्रि में विवाह-नक्षत्र उ.भा. भी है। अतः इसदिन '**तुलसी-विवाह**' शास्त्रविहित है।

नोट-ध्यान रहे-कुछ शास्त्रकार व्यतीपात/वैधृति योग में, द्वादशी तिथि एवं रविवार को तुलसी-दल का स्पर्श एवं तोड़ने का निषेध मानते हैं-

वैधृतौ च व्यतीपाते भौमभार्गवभानुषु।
पर्व द्वये च संक्रान्तौ द्वादश्यां सूतके द्वयोः।। (निर्णयसिन्धु)

अतएव हमारे विचारानुसार श्री तुलसी विवाह उत्सव 3 नवम्बर, सोमवार को मनाना अधिक शास्त्र सम्मत होगा। क्योंकि यहाँ प्रदोष में विवाह नक्षत्र रेवती भी विद्यमान होगा।

(23) वैकुण्ठ-चतुर्दशी (3 नवम्बर, सोमवार)

कार्तिक शुक्ल-चतुर्दशी को '**वैकुण्ठ-चतुर्दशी**' मनाई जाती है। इसे मनाने की दो परम्पराएं प्रचलित हैं-

(1) कुछ श्रद्धालु जन इसदिन उपवास रखकर रात्रि में जागरण करके विष्णु की पूजा करते हैं। ये लोग निशीथव्यापिनी चतुर्दशी स्वीकार करते हैं। इनके लिए निशीथव्यापिनी चतुर्दशी में ही इस पर्व को मनाने का मुख्य विधान (*Criteria*) है। यदि दोनों दिन चतुर्दशी निशीथव्यापिनी हो तो प्रदोष और निशीथ-दोनों कालों में चतुर्दशी जिस दिन व्याप्त हो, उसी दिन (अर्थात् दूसरे दिन) विष्णुपूजक भक्त वैकुण्ठ चतुर्दशी मनाते हैं-

'**केचित्तु विष्णुपूजायामियं निशीथव्यापिनी ग्राह्या, दिनद्वये तद्व्याप्तौ निशीथ-प्रदोषोमय व्यापिनी ग्राह्येत्याहुः।।**' -(धर्मसिन्धुः)। चतुर्दशी यदि दोनों दिन निशीथ का स्पर्श न करे तो भी यह व्रत दूसरे दिन ही होगा।

(2) दूसरी परम्परा के अनुसार-पहले दिन उपवास करके अरुणोदय-व्यापिनी चतुर्दशी में शिवपूजा करके बाद में अरुणोदय के समय पूजा, फिर पारणा करने का विधान है। इस मत के अनुयायी लोग अरुणोदय-व्यापिनी चतुर्दशी जिस अहोरात्र में हो, उस दिन उपवास करते हैं, वे उसी दिन वैकुण्ठ चतुर्दशी मनाते हैं। चतुर्दशी दोनों दिन अरुणोदय-व्यापिनी हो तो पहले दिन उपवास और दूसरे दिन अरुणोदय में पूजा करनी चाहिए। यदि चतुर्दशी दोनों दिन अरुणोदय का स्पर्श न करे तो चतुर्दशी तिथि

वाले दिन अहोरात्र में अरुणोदय के समय पूजा करें और पूजा से पहले इसी अहोरात्र में उपवास करना चाहिए। '**धर्मसिन्धु**'

इस वर्ष यह चतुर्दशी 3/4 नवम्बर, 2025 ई. (सोमवार) को अरुणोदय व्यापिनी है, अतः यह पर्व इसी दिन लिखा गया है। इसीलिए 3 नवम्बर, सोमवार को उपवास रखकर 4 नवम्बर, मंगलवार को सूर्योदय से पहिले अरुणोदयकाल में भगवान् शिव/विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

(24) पद्मक योग (6 नवम्बर, 2025 ई.)

विशाखा नक्षत्र में सूर्य के संचारकालीन जब चन्द्रमा कृतिका नक्षत्र में हो तब '**पद्मक योग**' होता है। किसी भी तीर्थस्थल, परन्तु विशेष रुप से तीर्थराज पुष्कर (राजस्थान) में इस योग में स्नान-दान-स्तोत्र का पाठ का विशेष माहातम्य माना जाता है।

विशाखासु यदा भानुः कृतिकासु च चन्द्रमा।
स योगः पद्मको, नाम पुष्करे स्वाति दुर्लभः।। (पद्मपुराण)

इस योग में सूर्य-स्तोत्र, गुरु-स्तोत्र, सूर्य गायत्री, गुरु गायत्री मन्त्रों का पाठ तथा दोनों ग्रहों सम्बन्धी यथाशक्ति दान, जप तथा कृतिका स्वामी (विश्वस्वामी सूर्य) के दर्शन किए जाएँ तो ब्राह्मण सात जन्म तक वेद-परायण और धनाढ्य होता है।

वि. संवत् 2082 में कार्तिक पूर्णिमा के आगामी दिवस 6 नवम्बर, 2025 ई. को सूर्य के विशाखा नक्षत्र में दोपहर 14घं.-51मिं. से प्रवेश करते ही यह (पद्मक) योग प्रारम्भ हो जाएगा। सायं प्रदोषकाल तक इसका विशेष माहात्म्य रहेगा।

(25) पुत्रदा एकादशी व्रत (पौष शुक्ल एकादशी)

इस वर्ष पौष शुक्ल एकादशी का क्षय है अतः स्मार्त्तों को एकादशी व्रत (पुत्रदा एकादशी व्रत) दशमीविद्धा एकादशी में ही करना होगा, क्योंकि ऐसा न करने पर (द्वादशी के दिन वैष्णवों के व्रत के साथ ही व्रत करने पर) उनको पारणा त्रयोदशी में करनी पड़ेगी, जोकि उनके लिए सर्वथा निषिद्ध है, इसीलिए निर्णयसिन्धु में इस स्थिति में '**ऋष्यश्रृंग**' का विशेष वचन है–

''पारणाहे न लभ्येत द्वादशी कलयाऽपि चेत्।
तदानीं दशमीविद्धाऽप्युपोष्यैकादशी तिथिः।।''

इसीलिए इस वर्ष यह पुत्रदा एकादशी व्रत स्मार्त्तों के लिए 30 दिसम्बर, 2025 ई. को तथा वैष्णवों के लिए 31 दिसम्बर, 2025 ई. के दिन लिखा गया है।

(26) श्रीसत्यनारायण व्रत (पौष-पूर्णिमा) (2 जनवरी, 2026 ई.)

शास्त्रानुसार श्रीसत्यनारायण व्रत प्रदोषव्यापिनी एवं चन्द्रोदय-व्यापिनी पूर्णिमा के दिन किया जाता है। इस वर्ष पौष पूर्णिमा 3 जनवरी, 2026 ई. को दोपहर बाद 15घं.-33मिं. पर समाप्त हो रही है, जिस कारण यह इसदिन (सूर्यास्त से पहिले) प्रदोष व्यापिनी नहीं होगी। इस दिन या एक दिन पहिले (2 जनवरी) को पंजाब, हिमाचल, जम्मू आदि पश्चिमोत्तर प्रान्तों में प्रदोषकाल लगभग 17घं.-33मिं. से 20घं.-21मिं. तक रहेगा।

ता. 2 जनवरी, 2026 ई. को पूर्णिमा 18घं.-54मिं. से प्रारम्भ हो रही है, जिससे इसीदिन प्रदोष एवं रात्रि-व्यापिनी (चन्द्रोदय) पूर्णिमा होगी। अतएव इस मास का श्रीसत्यनारायण व्रत 2 जनवरी, 2026 ई., शुक्रवार को ही रखना शास्त्रसम्मत होगा।

(27) भीष्म-द्वादशी (29 जनवरी, 2026 ई.)

माघ शुक्ल द्वादशी को '**भीष्म-द्वादशी**' मनाई जाती है। इसमें व्रत को ब्रह्मार्पण करके ब्राह्मणों को भोजन कराकर पारणा करें। युग्मवाक्य के अनुसार यह द्वादशी एकादशी-विद्धा ही ली जाती है।–'**द्वादशी तु एकादशीविद्धा ग्राह्या।।**'

इसीलिए '**भीष्म-द्वादशी**' 29 जनवरी, 2026 ई. को लिखी गई है।

(28) होलिका-दहन का समय (2 मार्च, सोमवार, 2026 ई.)

प्रदोषकाल-व्यापिनी फाल्गुन पूर्णिमा के दिन भद्रा-रहितकाल में होलिका-दहन किया जाता है। यथा–**सा प्रदोषव्यापिनी भद्रारहित ग्राह्या।।** (धर्मसिन्धुः)

यदि पूर्णिमा दोनों दिन प्रदोषव्यापिनी हो अथवा दूसरे दिन वह प्रदोष से पूर्व (सूर्यास्त से पहिले) ही समाप्त हो जाए, तब पहिले ही दिन भद्रामुख को छोड़कर अथवा भद्रापुच्छ में, निशीथकाल से पहिले ही भद्रा समाप्त हो जाए तो भद्रा की समाप्ति पर '**होलिका-दहन**' करना चाहिए।–ऐसी शास्त्राज्ञा है।

यथा–(1) यदि दूसरे दिन पूर्णिमा प्रदोषकाल को न स्पर्श करे तथा पहले दिन प्रदोषकाल में भद्रा विद्यमान हो तथा साथ ही दूसरे दिन पूर्णिमा '**सार्ध-त्रियाम-व्यापिनी**' (साढ़े तीन प्रहर या इससे अधिक काल तक व्याप्त हो) एवम् अगले दिन प्रतिपदा तिथि '**वृद्धिगामिनी**' (फाल्गुन पूर्णिमा के भोगकाल से अधिक भोगवाली) हो, तब अगले दिन प्रदोष-व्यापिनी प्रतिपदा में ही (अथवा सायाह्नकाल में) '**होलिका-दहन**' किया जाता है।

(2) यदि यहाँ पूर्णिमा चाहे '**सार्ध-त्रियाम-व्यापिनी**' (साढ़े तीन प्रहर से अधिक) हो, परन्तु यहाँ प्रतिपदा तिथि '**ह्रासगामिनी**' (प्रतिपदा का भोगकाल पूर्णिमा के कुल भोग से न्यून हो) हो जाए तो पहिले दिन ही भद्रा आक्रान्त प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा में ही भद्रा के पुच्छकाल में अथवा भद्रा-मुखकाल को छोड़कर '**होलिका-दहन**' किया जाता है। यदि यहाँ निशीथ के बाद भद्रा की समाप्ति हो तो भद्रामुख को छोड़कर भद्रा में ही '**होलिका-दहन**' किया जाए-ऐसा शास्त्रनिर्देश है।

..........'**निशीथोत्तरं भद्रासमाप्तौ भद्रामुखं त्यक्त्वा भद्रायामेव।।**'

(3) यदि प्रदोषकाल में भद्रामुख हो तो भद्रा के बाद अथवा प्रदोष के बाद होलिका-दहन किया जाए। यदि दोनों दिन पूर्णिमा प्रदोष को स्पर्श न करे तो पहिले

दिन भद्रापुच्छ में '**होलिका-दहन**' हो। यदि यहाँ भद्रापुच्छ भी न मिले तो भद्रा में ही प्रदोष के अनन्तर होलिकादीपन करें।

फा. पूर्णिमा की **भद्रा के मुख** एवम् **पुच्छ** का निर्णय इस प्रकार किया जाएगा– *भद्रा के कुल मान में से तृतीय चरण का समाप्तिकाल ज्ञात करें। यह भद्रा के पुच्छ की समाप्ति और मुख का प्रारम्भकाल है। तृतीय चरण (प्रहर) के समाप्तिकाल (26घं.-38मिं.) में कुल मान का षष्ठांशतुल्य (1घं.-56मिं.) जमा करने पर भद्रामुख (26:38 से 28:34 तक) का काल तथा तृतीयचरण के समाप्ति में से दशमांशतुल्य (1घं.-10मिं.) घटाने से भद्रापुच्छ (24घं.-50मिं. से 26घं.-00मिं. तक) का काल निकल जाएगा।*

इस वर्ष (वि. संवत् 2082 में) फाल्गुन पूर्णिमा केवल 2 मार्च, 2026 ई. को ही प्रदोषव्यापिनी है। ता. 3 मार्च को तो वह प्रदोष को बिल्कुल स्पर्श नहीं कर रही। ता. 2 मार्च, 2026 ई. को प्रदोषकाल जोकि लगभग 18घं.-22मिं. से 20घं.-53मिं. तक रहेगा, भद्रा से व्याप्त है और भद्रा निशीथ (अर्द्धरात्रि) से कहीं आगे जाकर अगले दिन प्रात: 5:32 (29:32) तक जाकर समाप्त हो रही है। अत: उपरोक्त शास्त्र निर्देशानुसार इस वर्ष होलिकादहन 2 मार्च, 2026 ई. को भद्रा के मुख को त्यागकर भद्रा में ही करना होगा। इसदिन भद्रा का मुख 26घं.-38मिं. से 28घं.-34मिं. तक है। इस प्रकार स्पष्ट है, इसदिन भद्रामुख प्रदोष से बहुत दूर अर्धरात्रि के भी बाद विद्यमान् है। **अत: 2 मार्च, 2026 ई. को भद्रामुख/पुच्छ का विचार न करके भद्रा में ही प्रदोषकाल में 'होलिका-दहन' करना शास्त्रसम्मत ही होगा।**

(29) श्रीसत्यनारायण व्रत (फाल्गुन पूर्णिमा)

इस वर्ष 2 मार्च, 2026 ई. को पूर्णिमा सूर्यास्त के बाद प्रदोषकाल को व्याप्त है, जबकि 3 मार्च को वह सूर्यास्त (प्रदोषारम्भ-काल) से काफी पहिले ही समाप्त हो जाएगी अत: यह व्रत, जो नक्तव्रत माना गया है, 2 मार्च, 2026 ई. को ही माना जाएगा।

(30) वासन्त (चैत्र) नवरात्रारम्भ (वि. संवत् 2083 प्रा.)
(19 मार्च, 2026 ई., गुरुवार)

वि. संवत् 2083 में चैत्र (वासन्त) नवरात्रों का प्रारम्भ 19 मार्च, 2026 ई. को ही हो जाएगा, क्योंकि यहाँ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि का क्षय हुआ है। प्रतिपदा के क्षय की स्थिति में नव चान्द्र विक्रमी संवत् एवं नवरात्र-आरम्भ अमावस-युक्त प्रतिपदा से ही किए जाएंगे। इसदिन प्रात: 6 बजकर, 53 मिनट तक अमावस, तदुपरान्त चैत्र नवरात्रों का प्रारम्भ होगा। '**निर्णयसिन्धुः' का वचन है–''(नवरात्रारम्भ) परदिने प्रतिपदोऽत्यन्ताऽसत्त्वे तु दर्शयुतापि पूर्वैव (प्रतिपद्) ग्राह्या।।''**

विस्तृत विवेचन, शास्त्रप्रमाण तथा दुर्गा-पूजन, घटस्थापन के समय-आदि आगामी वर्ष (वि. संवत् 2083) के '**पंचांगदिवाकर**' में दिए जाएंगे।

नव सम्वत्सर का फल और माहात्म्य

भारत की गौरवमयी सभ्यता एवं संस्कृति में **सम्वत्सर** का विशेष महत्त्व है। हिन्दुओं के प्राय: सभी शुभ **संस्कारों (विवाह-मुण्डनादि)** एवं **मन्त्र-जपादि अनुष्ठानों में संकल्पादि के समय सम्वत् के नाम का प्रयोग प्रमुखता से किया जाता है।** चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवीन सम्वत् का प्रारम्भ होता है। सत्ययुग का आरम्भ भी इसी दिन हुआ माना जाता है तथा ब्रह्मा जी ने सृष्टि का आरम्भ भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को किया था। ''**चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा संसर्ज प्रथमेऽहनि (ब्रह्मपुराण)।**'' सम्भवत: इसी कारण **इसे स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त** माना जाता है। इस दिन किए गए जप-दानादि शुभ कर्मों के प्रभाव से वर्ष भर धन-सम्पदा एवं सुख-शान्ति बनी रहती है। संवत् 2082 में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, 30 मार्च, 2025 ई., रविवार से '**सिद्धार्थी**' नामक नया संवत्सर प्रारम्भ होगा।

नव सम्वत्सर के आगमन पर प्रात: तैलाभ्यंग, नित्य कर्मों से निपटकर आसन, पाद्य, अर्घ्य, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप-दीप, ताम्बुल, नैवेद्य, फल, आदि से सम्वत्सर पूजन एवं फल श्रवणादि, नवरात्र घटस्थापन, मिट्टी के पात्र में रखी रेत-मिट्टी में जौं-गेहूँ आदि के बीज बोना, ओंकार सहित श्री गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, शिव एवं श्री दुर्गा-इन पंचदेवों तथा नवग्रहों की स्वयं अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मणों द्वारा पूजार्चना करवा कर उन्हें क्षीर सहित सात्त्विक भोजन करवाकर उनका '**पंचांगदिवाकर**' सहित यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, फल एवं धनादि देकर सत्कार करना चाहिए।

पूजन के समय भगवान् ब्रह्मा एवं विष्णु की मूर्तियों के समक्ष पुष्पाक्षत, नैवेद्य, अर्घ्य गंगा जल आदि लेकर निम्न मन्त्र पढ़ें–

ॐ ब्रह्मणे नमः से **ब्रह्मा जी का आवाहन तथा बहुरूपाय विष्णवे परमात्मने नमः परमात्म-विष्णुमावाहयामि स्थापयामि च।** फिर सम्वत्सर की मूर्त्ति अथवा प्रतीक रूप में सुपारी रखकर निम्न मन्त्रों से पूजन एवं प्रार्थना करें–

''भगवंतस्त्वत्प्रसादेन वर्षं क्षेममिहास्तु मे। संवत्सरोपसर्गा मे विलयं यान्त्वशेषतः।''

ॐ सम्वत्सराय नमः, चैत्राय नमः, वसन्ताय नमः। आदि नाम-मन्त्रों से पूजन करके विद्वान् ब्राह्मण का अर्चन करें। तथा क्षीर सहित भोजन करवाकर यथाशक्ति वस्त्र, फलों नया पंचाँग दिवाकर आदि का दान करें।

तदुपरान्त स्वास्ती वाचन, शान्ति पाठ आदि मांगलिक मन्त्रों का पाठ करने के पश्चात् सूर्य देव को ताम्र बर्तन से मन्त्र-पूर्वक तीन बार अर्घ्य देकर **गायत्री मन्त्र** का जाप करना चाहिए। तत्पश्चात् दिवाकर पंचाँग में किसी ब्राह्मण के श्री मुख से **सम्वत् का नाम**, सम्वत् **का वास**, **सवारी राजा, मन्त्री आदि का फल श्रवण करना** चाहिए चैत्र, प्रतिपदा से लेकर नवमी तक भगवान्-विष्णु, शिव एवं श्री दुर्गा के समक्ष नित्य ज्योति जलाकर श्रद्धानुसार श्री दुर्गासप्तशती का जप पाठ करने का विधान है।

➘ **चैत्र प्रतिपदा से नवमी तक** प्रतिदिन प्रात: कटु नीम की कोमल पत्तियाँ व पुष्पों का चूर्ण बनाकर, उसमें काली मिर्च, हींग, सेंधा नमक, ईमली, अजवायन, जीरा तथा शक्कर या चीनी बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण बनाकर भगवान् को भोग लगाकर ग्रहण करने से वर्षभर आरोग्यता बनी रहती है तथा रक्त विकार, त्वचा, कुष्ठ आदि रोगों का भय नहीं रहता॥

विस्तृत 'ग्रहण-विवरण' (वि. संवत् २०८२)

परिलेख–
–पं. विवेक शर्मा

वि. संवत् २०८२ (सन् 2025–26 ई.) में पृथ्वी (भूलोक) पर चार ग्रहण दिखाई देंगे–

(1) **खग्रास चन्द्रग्रहण** (7/8 सितम्बर, 2025 ई., रवि/सोम) (भारत में दृश्य)
(2) **खण्डग्रास सूर्यग्रहण** (21 सितम्बर, 2025 ई., रविवार) (भारत में अदृश्य)
(3) **कंकण सूर्यग्रहण** (17 फरवरी, 2026 ई., मंगलवार) (भारत में अदृश्य)
(4) **खग्रास चन्द्रग्रहण** (3 मार्च, 2026 ई., मंगलवार) (भारत में दृश्य)

इनमें से (1) तथा (4) नं. वाले दोनों चन्द्रग्रहण भारत में दिखाई देंगे, जबकि (2) तथा (3) नं. वाले दोनों सूर्यग्रहण भारत में दिखाई नहीं देंगे।

भारत में अदृश्य (दिखाई न देने वाले) ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण

(1) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (21 सितम्बर, 2025 ई., रविवार)–

यह खण्डग्रास सूर्यग्रहण आश्विन अमावस, रविवार को भा.स्टैं.टा. अनुसार रात्रि 22$^{घं.}$–59$^{मिं.}$ से 27$^{घं.}$–23$^{मिं.}$ तक दिखाई देगा। यह ग्रहण अन्टार्कटिका, केवल ऑस्ट्रेलिया के दक्षिण भागों (New South Wales, Queensland, Tasmania, Victoria आदि), न्यूज़ीलैण्ड तथा फिजी आदि कुछ देशों में ही दिखाई देगा। भारत में यह ग्रहण कहीं भी दिखाई नहीं देगा। भा.स्टैं.टा. के अनुसार इस ग्रहण का प्रारम्भ एवं समाप्ति इस प्रकार से हैं–

N W E S
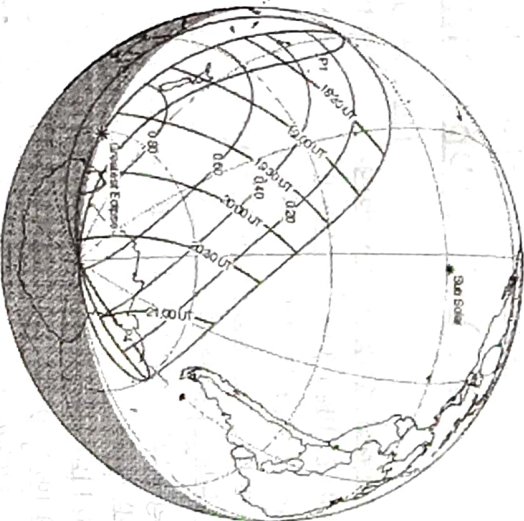
यह ग्रहण भारत में अदृश्य है।

ग्रहण प्रारम्भ	22$^{घं.}$–59$^{मिं.}$	21 सितम्बर, 2025 ई. (भा.स्टैं.टा. अनुसार)
ग्रहण मध्य	25$^{घं.}$–11$^{मिं.}$	
ग्रहण समाप्त	27$^{घं.}$–23$^{मिं.}$	

ग्रहण का ग्रासमान = 0.855, **ग्रहण की अवधि** = 4$^{घं.}$–24$^{मिं.}$

ऑस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैण्ड के कुछ एक-दो नगरों का स्थानीय समयानुसार विवरण लिखे दे रहे हैं, जहाँ यह खण्ड सूर्यग्रहण दिखाई देगा–

Austrialia & Newzealand	ग्रहण प्रारम्भ	ग्रहण मध्य	ग्रहण समाप्त	ग्रहण ग्रासमान
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	प्रतिशत
Hobart (Aus.)	6-03	6-03	6-09	0.082
New Castle (Aus.)	5-45	5-45	5-49	0.042
Sydney (Aus.)	5-48	5-48	5-51	0.039
Suva (FIJI Isl.)	7-58	8-23	9-19	0.394
Auckland (NZ)	6-13	6-55	8-05	0.696
Christchurch (NZ)	6-22	7-08	8-19	0.766
Wellington (NZ)	6-14	7-04	8-15	0.742

22 सितम्बर 2025 ई. की प्रातः (स्थानीय समयानुसार)

(2) कंकण सूर्यग्रहण (17 फरवरी, 2026 ई., मंगलवार)–

यह कंकण सूर्यग्रहण फाल्गुन अमावस मंगलवार को भा.स्टैं.टा. अनुसार दोपहर 15$^{घं.}$–26$^{मिं.}$ से रात्रि 19$^{घं.}$–57$^{मिं.}$ तक दिखाई देगा। यह कंकण सूर्यग्रहण दक्षिण अफ्रीका के दक्षिण देशों–साऊथ अफ्रीका, ज़िबांम्बवे, बोत्सवाना, मोज़म्बीक, जाम्बिया, तंज़ानिया, नाम्बीया, मारिशस आदि देशों, अन्टार्कटिका तथा दक्षिणी अमेरिका के दक्षिणी देशों (दक्षिण अर्न्जटीना, चिली आदि देशों) में दिखेगा। **भारत में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा।** भा.स्टैं.टा. अनुसार इसके स्पर्शादि-काल इस प्रकार हैं–

ग्रहण प्रारम्भ	15$^{घं.}$–26$^{मिं.}$	17 फरवरी, 2026 ई. (भा.स्टैं.टा. अनुसार)
कंकण प्रारम्भ	17$^{घं.}$–12$^{मिं.}$	
परमग्रास	17$^{घं.}$–43$^{मिं.}$	
कंकण समाप्त	18$^{घं.}$–11$^{मिं.}$	
ग्रहण समाप्त	19$^{घं.}$–57$^{मिं.}$	

यह ग्रहण भारत में अदृश्य है।

भारत में दृश्य ग्रहणों का विस्तृत विवरण

(1) खग्रास चन्द्रग्रहण (7 सितम्बर, 2025 ई., रविवार)–

यह ग्रहण भाद्रपद पूर्णिमा को 7 एवं 8 सितम्बर, 2025 ई. की मध्यगत रात्रि को सम्पूर्ण भारत में खग्रास रूप में दिखाई देगा। इस ग्रहण का स्पर्श-मोक्षादि काल (भा.स्टैं.टा.) इस प्रकार होगा–

ग्रहण स्पर्श (प्रारम्भ)	21-57	7/8 सितम्बर, 2025 ई. की मध्यगत रात्रि (भा.स्टैं.टा. अनुसार)
खग्रास प्रारम्भ	23-01	
ग्रहण मध्य	23-42	
खग्रास समाप्त	24-23	
ग्रहण समाप्त	25-26	

ग्रहण की अवधि = $3^{घं.}$-$29^{मिं.}$, **ग्रासमान** = 1.362 **प्रतिशत**

चन्द्र मालिन्यारम्भ (Enters Penumbra) = $20^{घं.}$-$58^{मिं.}$

चन्द्र क्रान्ति निर्मल (Moon Leaves Penumbra) = $26^{घं.}$-$25^{मिं.}$

स्पर्श-मोक्षादि दिशाएँ

उ. खग्रास प्रा. खग्रास समा. प. पू. मोक्ष स्पर्श द.

भारत में जब 7 सितम्बर, 2025 ई. की रात्रि 9 बजकर, 57 मिनट पर चन्द्रग्रहण शुरु होगा अथवा $20^{घं.}$-$58^{मिं.}$ पर चन्द्र मालिन्य आरम्भ होगा, उस समय से बहुत पहले ही सम्पूर्ण भारत में चन्द्र-उदय हो चुका होगा। भारत के सभी नगरों/ग्रामों में 7 सितम्बर को सायं 6:00 से 7:00 तक चन्द्रोदय हो जाएगा तथा यह खग्रास चन्द्रग्रहण 7 सितम्बर की रात्रि $21^{घं.}$-$57^{मिं.}$ से प्रारम्भ होकर रात्रि $25^{घं.}$-$26^{मिं.}$ (अर्थात् 1 बजकर 26 मिनट) पर समाप्त (मोक्ष) होगा। भारत के सभी नगरों में इसका प्रारम्भ, मध्य तथा मोक्ष रूप देखा जा सकेगा।

इस ग्रहण में चन्द्रबिम्ब पश्चिम-दक्षिण की ओर से ग्रसित होकर उत्तर-पूर्व की ओर से मुक्त होगा। इस ग्रहण की स्पर्श-मोक्ष की दिशाएं, परमग्रासमान तथा विश्व में कहाँ-कहाँ दिखाई देगा, आगामी पृष्ठ- पर दिए गए चित्र में देखिए।

भारत के अतिरिक्त दिखाई देने वाले क्षेत्र (देश)

भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण सम्पूर्ण यूरोप, सम्पूर्ण एशिया के देशों, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड, अफ्रीका, पश्चिमी उत्तरी-अमेरिका तथा दक्षिणी अमरीका के पूर्वी क्षेत्रों (केवल ब्राज़ील के पूर्वी क्षेत्रों) में दिखाई देगा।
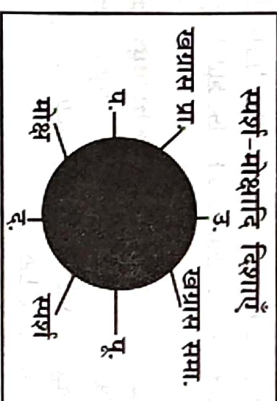
यूरोप के लगभग सभी देशों (इंग्लैण्ड, इटली, जर्मनी, फ्रांस आदि), अफ्रीका के अधिकतर देशों में इस ग्रहण का प्रारम्भ चन्द्रोदय के बाद देखा जा सकेगा अर्थात् जब इन क्षेत्रों में चन्द्रोदय होगा, तब ग्रहण प्रारम्भ हो चुका होगा। (ग्रस्तोदय रूप में दिखाई देगा)

जबकि दक्षिणी-पूर्वी ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड, फिजी आदि में इस ग्रहण की समाप्ति चन्द्रास्त के समय देखी जा सकेगी अर्थात् जब ग्रहण घटित हो रहा होगा, तो चन्द्रास्त हो जाएगा। (8 सितम्बर की सुबह)-(ग्रस्तास्त होगा।)

भारत तथा सम्पूर्ण एशिया में इस ग्रहण का दृश्य प्रारम्भ से समाप्ति तक देखा जा सकेगा।

ग्रहण का सूतक–इस ग्रहण का सूतक 7 सितम्बर, 2025 ई. को दोपहर 12घं.-57मिं. (भा.स्टैं.टा.) पर प्रारम्भ हो जाएगा।

ग्रहण–काल तथा बाद में क्या करें–क्या न करें?

ग्रहण के सूतक तथा ग्रहणकाल में स्नान, दान, जप-पाठ, मन्त्र, स्तोत्र-पाठ, मन्त्र-सिद्धि, तीर्थस्नान, ध्यान, हवनादि शुभ कृत्यों का सम्पादन करना कल्याणकारी होता है। धर्मनिष्ठ लोगों को ग्रहणकाल अथवा 7 सितम्बर को सूर्यास्त से पूर्व ही अपनी राश्यानुसार अन्न, जल, चावल, सफेद वस्त्र, फल (ऋतु अनुसार) आदि अथवा ब्राह्मण के परामर्शानुसार दान योग्य वस्तुओं का संग्रह करके संकल्प कर लेना चाहिए तथा अगले दिन 8 जुलाई को प्रातः सूर्योदय के समय पुनः स्नान करके संकल्पपूर्वक सामग्री/वस्तुएँ योग्य ब्राह्मण को दान देनी चाहिएं।

पुत्रजन्मनि यज्ञे च तथा सङ्क्रमणे रवेः।
राहोश्च दर्शने कार्यं प्रशस्तं नान्यथा निशि।। (वसिष्ठ)

अर्थात् पुत्र की उत्पत्ति, यज्ञ, सूर्य-संक्रान्ति और सूर्य-चन्द्र के ग्रहण में रात्रि में भी स्नान करना चाहिए।

सूतक एवं ग्रहण-काल में मूर्त्ति स्पर्श करना, अनावश्यक खाना-पीना, मैथुन, निद्रा, नाखुन-काटना, तैलाभ्यंग वर्जित है। झूट-कपटादि, वृथा-अलाप, मूत्र-पुरीषोत्सर्ग से परहेज करना चाहिए। वृद्ध, रोगी, बालक एवं गर्भवती स्त्रियों को यथानुकूल भोजन या दवाई आदि लेने में कोई दोष नहीं। गर्भवती महिलाओं को ग्रहणकाल में सब्ज़ी काटना, पापड़ सेंकना आदि उत्तेजित कार्यों से परहेज़ करना चाहिए तथा धार्मिक ग्रन्थ का पाठ करते हुए प्रसन्नचित्त रहे। इससे भावी सन्तति स्वस्थ एवं सद्गुणी होती है। हरिद्वार, प्रयाग, वाराणसी, अयोध्या आदि तीर्थों पर स्नानादि का विशेष माहात्म्य होगा।

ग्रहणस्पर्शकाले स्नानं मध्ये होमः सुराचर्नम्।
श्राद्धं च मुच्यमाने दां मुक्ते स्नानमिति क्रमः।। (धर्मसिन्धुः)

अर्थात् ग्रहण में स्पर्श के समय स्नान, मध्य में होम और देवपूजन तथा ग्रहणमोक्ष के समय श्राद्ध और अन्न, वस्त्र, धनादि का दान और सर्वमुक्त होने पर स्नान करें-यह क्रम है।

ग्रहण/सूतकाल से पहिले ही दूध/दही, आचार, चटनी, मुरब्बा में कुशातृण रख देना श्रेयस्कर होता है। इससे ये दूषित नहीं होते। सूखे खाद्य-पदार्थों में कुशा डालने की आवश्यकता नहीं।

ग्रहण का राशियों पर प्रभाव–यह खग्रास चन्द्रग्रहण पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र तथा कुम्भ राशि में घटित हो रहा है। इसलिए इस राशि तथा नक्षत्र में उत्पन्न जातकों को विशेष रूप से चन्द्र-राहु तथा राशिस्वामी शनि का जप, दान करना कल्याणकारी रहेगा। जन्म या नामराशि आधारित बारह राशि वालों के लिए इस ग्रहण का फल इस प्रकार होगा–

जन्म/नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	धन-लाभ, उन्नति	रोग, शरीर पीड़ा	सन्तान सम्बन्धी गुप्त चिन्ता	शत्रुभय, साधारण लाभ, खर्च	स्त्री/पति सम्बन्धी परेशानी	रोग, गुप्त चिन्ता, संघर्ष	खर्च अधिक, कार्य विलम्ब	कार्य-सिद्धि, लाभ	धन-लाभ, उन्नति	धन-हानि, व्यर्थ-यात्रा	दुर्घटना, शरीर कष्ट, शत्रुता	धन हानि, चिन्ता

जिस राशि के लिए ग्रहण का फल अशुभ लिखा है, वह यथाशक्ति जप-पाठ, ग्रह-शान्ति (चन्द्रमा एवं राशिस्वामी शनि की) एवं दानादि द्वारा ग्रहण के अनिष्ट प्रभाव को क्षीण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त ग्रहणोपरान्त औषधि-स्नान करने से भी अनिष्ट की शान्ति, होती है। रोग शान्ति के लिए ग्रहणकाल में '**श्रीमहामृत्युञ्जय-मन्त्र**' का जप करना शुभ होता है।

प्रयोग–काँसे की कटोरी में घी भरकर उसमें ताम्रादि का सिक्का डालकर अपना मुँह देखकर छायापात्र मन्त्र पढ़ें और ग्रहण-समाप्ति पर वस्त्र, फल व दक्षिणा सहित ब्राह्मण को दान करने से क्लिष्ट रोग से निवृत्ति होती है।

ग्रहण का लोक–भविष्य एवं प्रभाव

(i) ग्रहण का राशि/नक्षत्र फल–चन्द्रग्रहण कुम्भ राशि एवं पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में घटित होने से पश्चिमी प्रदेशों के पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वालों, पशु पालने वालों, हिंसा, चोरी तथा नीच प्रकृति वाले लोगों को कष्ट एवं पीड़ा होगी।

कुम्भोपरागे पीडयन्तेगिरिजाः पश्चिमाजनाः।''''''''''''''''''''''''।।

(ii) ग्रहण का मास-फल–यह खग्रास चन्द्रग्रहण भाद्रपद मास में घटित होने से उड़ीसा, उत्तरी आंध्रा-प्रदेश, बंगाल, सौराष्ट्र (महाराष्ट्र), मुस्लिम देशों में उपद्रव, युद्धजन्य घटनाएं घटित होंगी। स्त्रियों के गर्भ नाश, परन्तु कृषि-उत्पादन श्रेष्ठ हो तथा सुभिक्ष रहे।

(iii) ग्रहण का वार-फल–चन्द्रग्रहण रविवार को घटित होने से वर्षा की कमी, धान्य (चावल) का उत्पादन कम, गायों में दुग्ध की कमी, राजाओं (शासकों) में युद्ध, उड़ीसा में उपद्रव, घी, तेल आदि बेचने से लाभ प्राप्त हो।

(iv) ग्रहण योग-फल–ग्रहण धृति-योग में होने से गाने-बजाने, नृत्य करने वाले, सिनेमा-संगीत से जुड़े हुए लोग, लकड़ी का काम करने वालों को कष्ट होगा।

(v) ग्रहणकालीन चन्द्र पर ग्रहदृष्टिफल–ग्रहण के समय कुम्भ राशिस्थ चन्द्र का राहु से सन्निकर्ष एवं सूर्य-बुध-केतु ग्रहों के साथ समसप्तक योग बना हुआ है। कहीं अग्निकाण्ड, उपद्रव, युद्धभय, प्रजा को रोग व प्राकृतिक प्रकोपों से कष्ट, वर्षा से हानि तथा आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि होगी। परन्तु '**चन्द्र-राहु**' पर गुरु की दृष्टि रहने से शीघ्र ही परिस्थितियां अनुकूल हो जाएंगी।

(2) खग्रास (ग्रस्तोदय) चन्द्रग्रहण (3 मार्च, 2026 ई., मंगलवार)–

यह ग्रहण फाल्गुनी-पूर्णिमा, मंगलवार को 3 मार्च, सन् 2026 ई. के दिन सम्पूर्ण भारत में ग्रस्तोदय रूप में दिखाई देगा। अर्थात् भारत के किसी भी नगर में जब चन्द्रोदय होगा, उससे काफी पहले ही यह खग्रास चन्द्रग्रहण प्रारम्भ हो चुका होगा। **भारत के किसी भी क्षेत्र में इस खग्रास चन्द्रग्रहण का प्रारम्भ, खग्रास प्रारम्भ तथा ग्रहण-मध्य (परमग्रास) नहीं देखा जा सकेगा।**

भारत के केवल सुदूर पूर्वी राज्यों (बंगाल के उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों, नागालैण्ड, मिज़ोरम, असम, मणिपुर, अरु.प्रदेश आदि) में इस ग्रहण की खग्रास समाप्ति तथा ग्रहण समाप्ति देखी जा सकती है। शेष भारत में तो जब चन्द्रोदय होगा, तब तक खग्रास समाप्त हो चुका होगा तथा **केवल ग्रहण समाप्ति ही दृष्टिगोचर होगी।** भूगोल पर इस ग्रहण के स्पर्शादि काल (भा.स्टैं.टा.) इस प्रकार हैं–

	घं. मिं.	
ग्रहण (स्पर्श) प्रारम्भ	**15-20**	**3 मार्च, 2026 ई. (भा.स्टैं.टा.)**
खग्रास प्रारम्भ	**16-34**	
ग्रहण-मध्य	**17-04**	
खग्रास-समाप्त	**17-33**	
ग्रहण समाप्त (मोक्ष)	**18-47**	

[चंद्र मालिन्य प्रारम्भ (Enters Penumbra)) = 14घं.-14मिं.
[चंद्र क्रान्ति निर्मल (Leaves Penumbra) = 19घं.-53मिं.

परमग्रासमान 1.151

पर्वकाल = 3घं.-27मिं. ; खग्रासकाल = 59 मिन्ट

भारत में स्थानीय चन्द्रोदय से ही इस ग्रहण का आरम्भ माना जाएगा, क्योंकि भारत में मुख्यतः चन्द्रोदय के बाद इस ग्रहण की समाप्ति ही देखी जा सकेगी।

आगामी पृष्ठ पर दिया गया ग्रहणचित्र देखें–इसमें इस ग्रहण के दिन भारत के विभिन्न भागों में चन्द्रोदयकाल एवं उस समय ग्रहण का ग्रासमान दिखाया गया है। चित्र में दी गई तिरछी रेखाओं के ऊपर प्रान्त में चन्द्रोदयकाल और इनके निचले भाग में कोष्टक (ब्रेकेट) के भीतर तात्कालिक (परमग्रास) प्रतिशत ग्रासमान दिया गया है। इसी चित्र में दी गई '**A-B**' रेखा से दायीं ओर के नगरों/क्षेत्रों में इस खग्रास चन्द्रग्रहण की खग्रास समाप्ति तथा ग्रहण समाप्ति देखी जा सकेगी अर्थात् जिन नगरों में चन्द्रोदय 17घं.-33मिं. से पहले होगा, वहाँ

खग्रास समाप्ति तथा ग्रहण समाप्ति दिखाई देगी। **'A-B'** रेखा से बायीं ओर शेष भारत में केवल ग्रहण-समाप्ति ही दृश्य होगी अर्थात् इन नगरों में चन्द्रोदय 17घं.-33मिं. (खग्रास समाप्ति) के बाद होगा। 'C-D' रेखा के बायीं ओर स्थित सुदूर पश्चिमी भारत (पश्चिमी राजस्थान, पश्चिमी गुजरात के कुछ क्षेत्र) में इस ग्रहण की समाप्ति भी नहीं देखी जा सकेगी अर्थात् इन क्षेत्रों में चन्द्रोदय ग्रहण समाप्ति (18घं.-47मिं.) के बाद होगा। भारत में यह **'खग्रास चन्द्रग्रहण'** ग्रस्तोदय रुप में होगा, क्योंकि इस ग्रहण का प्रारम्भ, खग्रास प्रारम्भ, तथा ग्रहण-मध्य (परमग्रास) तो भारत के किसी भी नगर में दृश्य नहीं होगा।

आगे पृष्ठ 32-33 पर दिए गए कोष्ठक में इस ग्रहण के दिन (3 मार्च, 2026 ई. को) भारत के प्रसिद्ध 200 से भी अधिक नगरों का चन्द्रोदयकाल तथा ग्रहण का पर्वकाल (चन्द्रोदय से ग्रहणसमाप्ति तक का काल) दिया गया हैं।

पृष्ठ 34 पर भारत के कुछ नगरों में ग्रहण की चन्द्रोदयकालिक ग्रासाकृतियां तथा ग्रहण के स्पर्शादि की दिशाएं दर्शाई गई हैं।

ग्रहण-सूतक–इस ग्रहण का सूतक 3 मार्च, 2026 ई. को प्रात: 6घं.-20मिं. (भा.स्टैं.टा.) से ही प्रारम्भ हो जाएगा। शुद्ध (ग्रहण-मोक्ष) चन्द्र-बिम्ब के दर्शन एवं तर्पण करने के बाद ही सभी धार्मिक कार्य करने चाहिए।

भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण कहाँ दिखाई देगा?

यह खग्रास चन्द्रग्रहण लगभग सम्पूर्ण एशिया (पश्चिमी एशिया के देशों जैसे-पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, ईराक आदि को छोड़कर), ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड, अण्टार्कटिका, उत्तरी एवं दक्षिणी अमरीका तथा रूस में भी दृश्य होगा।

पुन: स्पष्ट कर दें कि भारत के अधिकतर क्षेत्रों में (पंजाब, जम्मू-काश्मीर, हि.प्र., हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, म.प्र., उ.प्र.) यह ग्रहण ग्रस्तोदय होकर समाप्त होता हुआ ही दृश्य होगा। ग्रहण चित्र में **'C-D'** रेखा से दायीं ओर जितना अधिक हटा होगा, वहाँ ग्रहण का ग्रास उतना ही अधिक दिखेगा। **'A-B'** रेखा से दायीं ओर चन्द्रोदय के समय ग्रहण का खग्रास रूप समाप्ति की ओर देखा जा सकता है।

ग्रहण का पर्वकाल–आगे पृष्ठ 32-33 पर भारत के प्रसिद्ध 200 नगरों के 3 मार्च को चन्द्रोदयकाल (भा.स्टैं.टा.) तथा ग्रहण का पर्वकाल भी दिया गया है। चन्द्रग्रहण में स्नानदान, जपादि का विशेष माहात्म्य होता है। ग्रस्तोदय ग्रहण में चन्द्रोदय से ग्रहण समाप्ति तक के काल को **'पर्वकाल'** माना जाता है। धर्मपरायण लोगों को चन्द्रोदय को ही ग्रहण आरम्भ मानकर सभी धार्मिक क्रियाओं का सम्पादन व अनुष्ठान करना चाहिए।

ग्रहण का राशिफल–यह चन्द्रग्रहण पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र तथा सिंह राशिकालीन घटित हो रहा है। अतएव इस नक्षत्र एवं सिंह राशि वालों को इस ग्रस्तोदय ग्रहण का फल विशेष रूप से अशुभ एवं कष्टकारी होगा। जिस राशि के लिए ग्रहण का फल अशुभ लिखा है, उसे
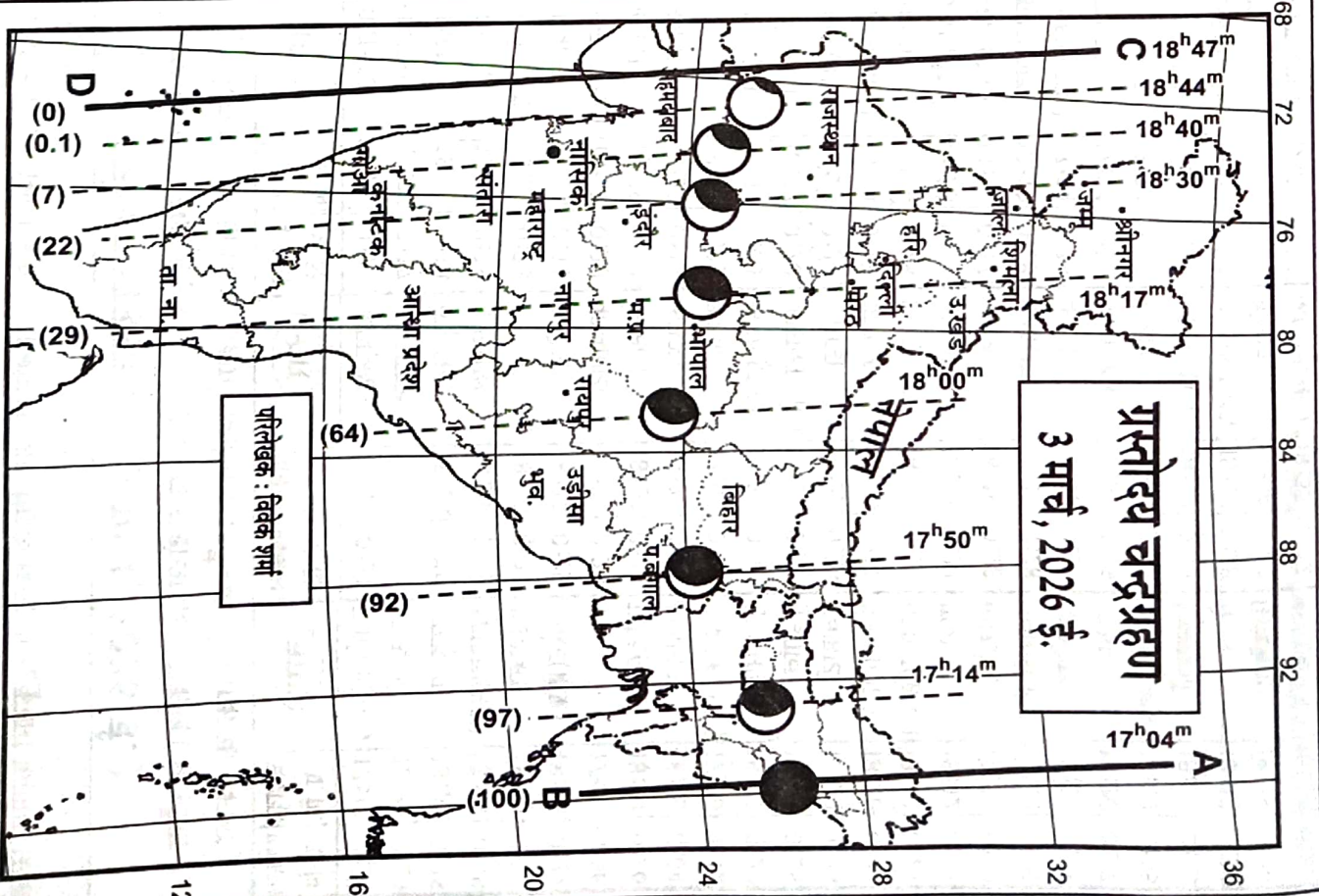
यथाशक्ति जप-पाठ, ग्रह-राशि (चन्द्रमा एवं राशिस्वामी सूर्य की) एवं दानादि द्वारा अशुभ प्रभाव को क्षीण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त ग्रहण-उपरान्त औषधि स्नान करने से भी अनिष्ट की शान्ति होती है। सभी राशियों के लिए इस ग्रहण का फल इस प्रकार होगा–

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	खर्च अधिक, भागदौड़ अधिक	कार्य सिद्धि, धन लाभ	प्रगति, उत्साह एवं पुरुषार्थ वृद्धि	धन हानि, खर्च अधिक, यात्रा	शरीर कष्ट, चोटभय, धन-क्षय	धन हानि, परेशानी	धन एवं सुख, लाभ	रोग-कष्ट, चिन्ता-भय, संघर्ष	सन्तान सम्बन्धी चिन्ता	शत्रु व दुर्घटना भय, खर्च अधिक	स्त्री/पति सम्बन्धी कष्ट	रोग, गुप्त चिन्ता, कार्य-विलम्ब

जिस राशि में सूर्य या चन्द्रग्रहण होता है, उस राशि वाले व्यक्तियों को निश्चय ही कष्ट होने की सम्भावना बन जाती है। इसलिए इस क्षति को न होने देने के लिए ऋषियों ने शान्ति, दानादि करने को कहा है। इसका विधिपूर्वक एवं संकल्पपूर्वक दान, अनुष्ठान करने से अरिष्ट दूर होता है। ऋषियों ने गायत्री जप, सुवर्ण या गाय का दान आदि अनेक शान्ति विधान बताएं हैं।

ग्रहणकाल तथा ग्रहण-पश्चात् क्या करें–क्या न करें ?

ग्रहण के सूतक एवं ग्रहणकाल में स्नान, दान, जप-पाठ, मन्त्र एवं स्त्रोत-पाठ, मन्त्र-सिद्धि, तीर्थस्नान, ध्यान, हवन-कीर्तनादि शुभ कृत्यों का सम्पादन करना कल्याणकारी होता है। धार्मिक/आस्थावान लोगों को 3 मार्च, सूर्यास्त से पूर्व अपनी राश्यानुसार अथवा ब्राह्मण परामर्शानुसार दान योग्य वस्तुओं का संग्रह करके संकल्प कर लेना चाहिए तथा ग्रहणमोक्ष ($18^{घं.}$–$47^{मिं.}$) के बाद अथवा अगले दिन 4 मार्च, 2026 ई. को प्रात: सूर्योदय के समय पुन: स्नान करके संकल्पपूर्वक योग्य ब्राह्मण को दान देना चाहिए।

सूतक एवं ग्रहणकाल में नाखुन काटना, मूर्त्ति स्पर्श करना, अनावश्यक खाना-पीना, मैथुन, निद्रा, तैलाभ्यंग वर्जित है। झूट, कपटादि वृथा-अलाप, मूत्र-पुरीषोत्सर्ग से परहेज़ करना चाहिए। सूतककाल में बाल, वृद्ध, रोगी एवं गर्भवती को यथानुकूल भोजन या दवाई आदि लेने में कोई दोष नहीं।

ग्रहण/सूतक से पहले ही दूध/दही, आचार, चटनी, मुरब्बा में कुशातृण रख देना श्रेयस्कर होता है। इससे ये दूषित नहीं होते। सूखे खाद्य पदार्थों में कुशा डालने की आवश्यकता नहीं।

ग्रहण का लोक–भविष्य एवं प्रभाव

(i) ग्रहण का मास-फल–यह चन्द्रग्रहण फाल्गुन मास में घटित होने से नाचने, गाने-वालों, संगीत से जुड़े व्यक्तियों, श्रेष्ठ स्त्रियों, क्षत्रियों तथा तपस्या करने वालों को पीड़ा एवं कष्ट हो।

(ii) ग्रहण का वार-फल–ग्रहण मंगलवार को घटित होने से दुर्भिक्ष का भय, चोरों-अग्निकाण्ड से भय तथा उपद्रव रहे। पश्चिमी म.प्र., पूर्वी राजस्थान के कुछ क्षेत्र में उपद्रव हो।

(iii) ग्रहण का राशि/नक्षत्र फल–यह चन्द्रग्रहण पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र एवं सिंह राशि में घटित होने से शिल्प कला से सम्बन्धित, क्रय-विक्रय करने वाले, कुमारी कन्याएं, स्त्रियों को पीड़ा हो।

ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण (3 मार्च, 2026 ई.)

भारत के प्रसिद्ध नगरों में 3 मार्च, 2026 ई. को चन्द्रोदय तथा पर्वकाल (भा.स्टैं.टा.)

[पर्वकाल = चन्द्रोदय से ग्रहण समाप्ति ($18^{घं.}$–$47^{मिं.}$) तक का काल]

नगर	चन्द्रोदय घं. मिं.	पर्वकाल घं. मिं.	नगर	चन्द्रोदय घं. मिं.	पर्वकाल घं. मिं.	नगर	चन्द्रोदय घं. मिं.	पर्वकाल घं. मिं.
अगरतला	17:26	1:21	ऋषिकेश	18:16	0:31	कोहिमा(ना.)	17:13	1:34
अमृतसर	18:30	0:17	औरंगाबाद	18:35	0:12	खन्ना(पं.)	18:24	0:23
अबोहर	18:33	0:14	कपूरथला	18:28	0:19	खरड़(पं.)	18:22	0:25
अम्ब (हि.प्र.)	18:22	0:25	करतारपुर	18:28	0:19	खण्डवा(म.प्र.)	18:29	0:18
अर्की (हि.प्र.)	18:21	0:26	करसोग	18:20	0:27	गढ़शंकर	18:24	0:23
अम्बाला	18:36	0:11	कसौली	18:22	0:25	गगरेट(हि.प्र.)	18:25	0:22
अनन्तनाग(का.)	18:27	0:20	कण्डाघाट(हि.प्र.)	18:21	0:26	गया	17:51	0:56
अखनूर	18:29	0:18	करनाल	18:22	0:25	गाज़ियाबाद	18:21	0:26
अजमेर	18:33	0:14	कठुआ	18:26	0:21	गाँधीनगर	18:43	0:04
अलवर	18:25	0:22	कटक	17:50	0:57	गंगटोक(सि.)	17:35	1:12
अहमदाबाद	18:44	0:03	कन्याकुमारी	18:30	0:17	गुरदासपुर	18:27	0:20
अकोला(म.)	18:27	0:20	कालका(हरि.)	18:22	0:25	गुड़गांव	18:22	0:25
आनन्दपुर सा.	18:23	0:24	काँगड़ा	18:22	0:25	गुवाहाटी	17:22	1:25
आदमपुर(पं.)	18:24	0:23	कानपुर	18:10	0:37	गोराया(पं.)	18:26	0:21
आगरा	18:19	0:28	किश्तवाड़	18:25	0:22	गोहाना(हरि.)	18:23	0:24
इन्दौरा(हि.प्र.)	18:26	0:21	कुराली	18:23	0:24	गोवा	18:42	0:05
इन्दौर(म.प्र.)	18:30	0:17	कुल्लू	18:19	0:28	गोरखपुर	17:57	0:50
इलाहाबाद	18:19	0:28	कुमारसेन	18:19	0:28	घुमारवीं(हि.प्र.)	18:22	0:25
इम्फाल(मणि.)	17:14	1:33	कुरुक्षेत्र	18:22	0:25	चण्डीगढ़	18:22	0:25
ईटानगर	17:14	1:33	कूचबिहार	17:32	1:15	चम्बा	18:20	0:27
ऊना (हि.प्र.)	18:24	0:23	कैथल	18:24	0:23	चमौली(उ.खण्ड)	18:12	0:35
ऊधमपुर(का.)	18:28	0:19	कोटकपूरा(पं.)	18:30	0:17	चिन्तपूर्णी	18:24	0:23
उदयपुर(राज.)	18:38	0:09	कोटखाई(हि.प्र.)	18:19	0:28	चेन्नई	18:17	0:30
उज्जैन	18:30	0:17	कोलकाता	17:38	1:09	छिन्दवाड़ा	18:18	0:29
एज़वाल(मिज़ो)	17:20	1:27	कोचीन(के.)	18:35	0:12	जलालाबाद(पं.)	18:24	0:23

ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण (3 मार्च, 2026 ई.)

भारत के प्रसिद्ध नगरों में 3 मार्च, 2026 ई. को चन्द्रोदय तथा पर्वकाल (भा.स्टैं.टा.) [पर्वकाल = चन्द्रोदय से ग्रहण समाप्ति (18 घं.–47 मिं.) तक का काल]

नगर	चन्द्रोदय घं. मिं.	पर्वकाल घं. मिं.	नगर	चन्द्रोदय घं. मिं.	पर्वकाल घं. मिं.	नगर	चन्द्रोदय घं. मिं.	पर्वकाल घं. मिं.	नगर	चन्द्रोदय घं. मिं.	पर्वकाल घं. मिं.	नगर	चन्द्रोदय घं. मिं.	पर्वकाल घं. मिं.	नगर	चन्द्रोदय घं. मिं.	पर्वकाल घं. मिं.
जस्सूर(हि.प्र.)	18:25	0:22	दीनानगर	18:27	0:20	पठानकोट	18:26	0:21	बसौली(का.)	18:25	0:22	राजपुरा(पं.)	18:23	0:24	संगरूर	18:26	0:21
जगाधारी	18:21	0:26	दुर्ग(छत्तीसगढ़)	18:09	0:38	परवाणू(हि.प्र.)	18:21	0:26	बनारस(वाराणसी)	17:59	0:48	राजकोट(गु.)	18:52	---	सरहिन्द	18:24	0:23
जम्मू	18:29	0:18	देहरादून	18:17	0:30	पणजी(गोआ)	18:42	0:05	बड़ौदा	18:42	0:05	राहों(पं.)	18:25	0:22	समाना(पं.)	18:25	0:22
जयपुर	18:28	0:19	दौलतपुर(हि.प्र.)	18:23	0:24	पंचकूला	18:22	0:25	बिलासपुर(हि.प्र.)	18:22	0:25	रामपुरबुशैहर	18:18	0:29	सपाटू (हि.प्र.)	18:21	0:26
जबलपुर(म.प्र.)	18:13	0:34	धर्मपुर	18:21	0:26	पालमपुर	18:22	0:25	बीकानेर	18:38	0:09	राजौरी (का.)	18:31	0:16	सरकाघाट	18:22	0:25
जलगांव(महा.)	18:32	0:15	धारीवाल	18:28	0:19	पानीपत	18:22	0:25	बुलन्दशहर	18:19	0:28	रामबन (का.)	18:27	0:20	सहारनपुर	18:19	0:28
जालन्धर	18:27	0:20	धूरी(पं.)	18:26	0:21	पुँछ(जं.का.)	18:31	0:16	बैजनाथ(हि.प्र.)	18:22	0:25	रायगढ़(छत्तीसगढ़)	18:10	0:37	साम्बा(का.)	18:28	0:19
जीन्द	18:25	0:22	नकोदर	18:27	0:20	पूना	18:41	0:06	बैंगलुरु	18:28	0:19	रायपुर(छत्तीसगढ़)	18:07	0:40	सागर(म.प्र.)	18:18	0:29
जोधपुर	18:40	0:07	नवांशहर	18:25	0:22	पोर्ट–ब्लेयर	17:27	1:20	बठिण्डा	18:30	0:17	राँची	17:51	0:56	सिरमौर	18:19	0:28
जोरहाट(आ.)	17:12	1:35	नंगल	18:23	0:24	फरीदकोट	18:31	0:16	भद्रवाह(का.)	18:25	0:22	रिवाड़ी(हरि.)	18:24	0:23	सिलचर(आ.)	17:19	1:28
जोगिन्द्रनगर	18:21	0:26	नगरोटा(हि.प्र.)	18:24	0:23	फगवाड़ा	18:26	0:21	भिवानी	18:26	0:21	रियासी(का.)	18:29	0:18	सिरसा (हरि.)	18:30	0:17
ज्वाली(हि.प्र.)	18:25	0:22	नवलगढ़(राज.)	18:30	0:17	फतेहगढ़ सा.	18:27	0:20	भुन्तर(हि.प्र.)	18:20	0:27	रुड़की(उ.खंड)	18:12	0:35	सिलीगुड़ी	17:36	1:11
झाँसी	18:19	0:28	नाभा	18:22	0:25	फतेहाबाद(हरि.)	18:28	0:19	भुवनेश्वर	18:03	0:44	रोपड़(पं.)	18:23	0:24	सीकर(रा.)	18:30	0:17
झुंझुनूं	18:29	0:18	नादौन	18:23	0:24	फरीदाबाद	18:21	0:26	भोपाल	18:24	0:23	रोहड़ू(हि.प्र.)	18:18	0:29	सुनाम(पं.)	18:27	0:20
टोहाना	18:26	0:21	नाहन	18:20	0:27	फाज़िल्का	18:34	0:13	मलेरकोटला	18:26	0:21	रोहतक	18:24	0:23	सुन्दरनगर	18:21	0:26
डल्हौज़ी	18:24	0:23	नालागढ़	18:22	0:25	फिल्लौर	18:26	0:21	मण्डी (हि.प्र.)	18:21	0:26	रोयिंग(अरु.प्र.)	17:04	1:43	सुजानपुर टिहरा	18:23	0:24
डिब्रूगढ़(आ.)	17:08	1:39	नारकण्डा	18:19	0:28	फिरोज़पुर	18:31	0:16	मनाली	18:19	0:28	लखनऊ	18:07	0:40	सूरत	18:44	0:03
डोडा (का.)	18:26	0:21	नारनौल(हरि.)	18:26	0:21	बरनाला(पं.)	18:27	0:20	महेन्द्रगढ़	18:26	0:21	लाडवा(हरि.)	18:27	0:20	सोलन	18:21	0:26
तरनतारन	18:29	0:18	नागपुर	18:18	0:29	बटाला	18:26	0:21	मथुरा	18:21	0:26	लुधियाना	18:26	0:21	सोनीपत	18:22	0:25
तलवाड़ा	18:26	0:21	नासिक	18:40	0:07	बंगा	18:25	0:22	मानसा(पं.)	18:28	0:19	विशाखापट्टनम्	18:02	0:45	हमीरपुर(हि.प्र.)	18:23	0:24
तेजू(अरु.प्र.)	17:03	1:44	नूरमहल(पं.)	18:27	0:20	बलाचौर(पं.)	18:24	0:23	मुकेरिया	18:26	0:21	विकासनगर	18:18	0:29	हनुमानगढ़	18:33	0:14
त्रिवन्तपुरम(के.)	18:33	0:14	नूरपुर(हि.प्र.)	18:25	0:22	बड़सर(हि.प्र.)	18:23	0:24	मुक्तसर	18:32	0:15	शाहकोट(पं.)	18:28	0:19	हरिद्वार	18:17	0:30
दमन	18:44	0:03	नैनादेवी	18:21	0:26	बनीखेत(हि.प्र.)	18:20	0:27	मुम्बई	18:45	0:02	शाहाबाद(हरि.)	18:22	0:25	हाजीपुर(पं.)	18:26	0:21
दार्जिलिंग	17:36	1:11	नैनीताल	18:12	0:35	बल्लभगढ़	18:20	0:27	मुज़फ्फरनगर	18:19	0:28	शाहदरा(दिल्ली)	18:21	0:26	हाँसी(हरि.)	18:26	0:21
द्वारिका	18:59	---	पटना	17:50	0:57	बहादुरगढ़(हरि)	18:23	0:24	मेरठ	18:19	0:28	शिमला	18:20	0:27	हिसार	18:27	0:20
दिल्ली	18:21	0:26	पटियाला	18:24	0:23	बनिहाल(का.)	18:27	0:20	मोगा(पं.)	18:29	0:18	शिलांग(मे.)	17:22	1:25	हैदराबाद	18:22	0:25
									मोहाली	18:22	0:25	श्रीनगर(का.)	18:28	0:19	होशियारपुर	18:25	0:22
									यमुनानगर	18:20	0:27	श्रीगंगानगर	18:35	0:12			

शनि की साढ़ेसाती, ढैय्या एवं सुवर्णादि पाया फल विचार-सं. २०८२ (सन् 2025-26 ई.)

गत विक्रमी संवत् 2081 के अन्तिम दिन–29 मार्च, 2025 ई. को शनिदेव ने रात्रि के समय (21^घं.-44^मि.) मीन राशि में प्रवेश किया है।

आगामी वि. संवत् 2082 (सन् 2025-26 ई.) की मध्यावधि में शनिदेव मुख्यत: पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र तथा मीन राशि में ही संचार करेंगे। इस अवधि में 13 जुलाई, 2025 ई. को वक्री होकर इसी राशि में 28 नवम्बर, 2025 ई. से मार्गी होकर संचार करेंगे।

ध्यान दें–शनि, मंगल आदि क्रूर ग्रह जब किसी राशि में गोचरवश वक्री होकर संचार करते हैं, तो और भी अधिक क्रूर एवं अशुभ फलदायक बन जाते हैं, जबकि गुरु-शुक्र आदि सौम्य ग्रह अपनी राशि में वक्री होने पर और भी अधिक शुभ फल प्रदान करते हैं–

यदा क्रूर ग्रहो वक्री अतिचारी तु सौम्यकः।
पीडा व्याधि भयं तत्र दुर्भिक्षं राज्य विग्रहम्।।

फलस्वरुप शनिदेव जब गोचरवश वक्री अवस्था में संचार करेंगे, तो जातक/जातिका को मानसिक व शारीरिक कष्ट, आर्थिक परेशानियां व उथल-पुथल, रोगादि प्रकट होने लगते हैं। समाज में भी कहीं राजनीतिक टकराव, अव्यवस्था, अत्यधिक महँगाई, राजनैतिक उलट-फेर, क्लिष्ट रोगों का फैलाव व भय, उपद्रव, हिंसक घटनाएँ, अस्थिरता, असन्तोष, बाढ़, दुर्भिक्ष, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोपों का भय एवं असुरक्षा का वातावरण बनता है।

इसके अतिरिक्त जन्मपत्री एवं जन्मकुण्डली में शनि तथा अन्य ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति एवं दशा-अन्तर्दशा का सूक्ष्म विचार करने के उपरान्त ही शनि-साढ़ेसाती अथवा अढैय्या आदि के अनिष्ट अथवा शुभाशुभ फल का अन्तिम निर्णय करना चाहिए।

शनि-साढ़ेसाती–गोचरवश जब शनि किसी जातक की जन्म-राशि (अथवा नाम-राशि) से द्वादश, प्रथम अथवा द्वितीय स्थान में हो, तो शनि की प्रस्तुत गोचर-स्थिति '**शनि-साढ़ेसाती**' कहलाती है। शनि प्रत्येक राशि में लगभग अढ़ाई वर्ष तक संचार करता है। शनि की वक्री-मार्गी गति के कारण अढ़ाई वर्षों के काल में न्यून-अधिकता भी होती रहती है। शनि जिस राशि पर संचरित होता है, उससे पहले (प्रथम), बारहवें (12वें) और दूसरे (द्वितीय) भावों में स्थित राशियों को विशेषत: प्रभावित करता है। इसी को **शनि की साढ़ेसाती** (साढ़ेसात-वर्षीय) कहा जाता है।

द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः।
सार्धानि सप्तवर्षाणि तदा दुखैः युतो भवेत्।।

वि. संवत् 2082 में मीन राशि में संचारकालीन मेषादि राशियों पर शनि-साढ़ेसाती, ढैय्या एवं सुवर्णादि पाया फल इस प्रकार से होगा–

कुम्भ, मीन एवं **मेष** राशि वालों को '**शनि-साढ़ेसाती**' का अशुभ प्रभाव आगामी वर्ष (30 मार्च, 2025 ई. से 19 मार्च, 2026 ई. तक) रहेगा।

'**शनि-साढ़ेसाती**' के प्रभावस्वरूप जातक/जातिका को शरीर-कष्ट, मानसिक तनाव, गृह कलह-क्लेश, धन सम्बन्धी आर्थिक उलझनें, आय सीमित तथा खर्चों की अधिकता रहेगी। बनते कार्यों में विघ्न-बाधाएं, रोग व शत्रु-भय, सन्तान एवं परिवार सम्बन्धी परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

➔**कुम्भ राशि** पर शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव अभी (29 मार्च, 2025 ई. से) लगभग 2 वर्ष, 2 मास, 6 दिन तक रहेगा।

➔**मीन राशि** पर शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव अभी लगभग 4 वर्ष, 4 मास, 11 दिन तक रहेगा।

➔**मेष राशि** पर शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव अभी 7 वर्ष, 2 मास, 3 दिन तक शेष होगा।

शनि की ढैय्या-(लघु कल्याणी)–गोचरवश शनि जब चन्द्रराशि (या नामराशि) से चौथे या आठवें स्थान पर संचार करता है, तब '**शनि की ढैय्या**' कहलाती है। यह लगभग अढ़ाई (2½) वर्ष के लिए होती है। इसका प्रभाव भी अशुभ माना गया है–

''लघु कल्याणी (ढैय्या) प्रददाति वै रविसुतोः राशे चतुर्थाष्टमे,
व्याधिं बन्धु विरोधं विदेशगमनं, क्लेशं च चिन्ताधिकम्।।''

अर्थात् शनि की ढैय्या के प्रभावस्वरूप जातक/जातिका को वृथा दौड़धूप, अनावश्यक खर्च, गुप्त चिन्ताएं, रोग, शोक, कलह-क्लेश, धन-हानि, बन्धु-विरोध, कार्यों में विघ्न-बाधाओं एवं आर्थिक उलझनों का सामना करना पड़ता है।

ध्यान दें–मीन राशिस्थ शनि के संचारकालीन 'सिंह राशि' तथा '**धनु राशि**' वालों को '**शनि की ढैय्या**' का अशुभ प्रभाव रहेगा।

शनि पाया (पाद) विचार–शनि-देव के राशि प्रवेश के समय यदि चन्द्र 1, 6, 11वें भाव (स्थान) में हो तो **स्वर्ण-पाद**; यदि 2, 5, 9वें भाव में हो तो **रजत-पाद**; यदि 3, 7, 10वें भाव में हो तो **ताम्र-पाद** तथा यदि चन्द्र 4, 8, 12वें स्थान में हो तो **लौह-पाद** होता है।

पाद (पाया) फल विचार–

''लौहे धनविनाशः स्यात् सर्वं दुःखं च काञ्चने।
ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं च राजते भवेत्।।''

(क) सोने का पाया हो, तो जातक को उस अवधि में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे। पारिवारिक एवं व्यवसायिक उलझनें अधिक होंगी। शत्रु एवं रोग-भय, मानसिक तनाव अधिक रहे। वृथा खर्च एवं कलह-क्लेश अधिक रहे।

(ख) चाँदी (रजत) का पाया हो, तो जातक को गत समय में किए गए प्रयासों में धीरे-धीरे सफलता मिलती है। आकस्मिक धन-लाभ, उच्च-प्रतिष्ठा, पदोन्नति, स्त्री-सन्तान एवं भूमि, वाहनादि सुखों की प्राप्ति होती है।

(ग) ताम्र-पाया–का शुभ फल प्राप्त होता है। कार्य-व्यवसाय में लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होते हैं। पुराने सम्बन्धियों तथा उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनते हैं। उच्च-विद्या में सफलता, विवाह एवं पारिवारिक सुखों की प्राप्ति, सवारी (वाहनादि) आदि सुख-

सुविधाओं की भी प्राप्ति सम्भव होती है। देश-विदेश की यात्राओं के भी अवसर प्राप्त होते हैं।

(घ) लौह का पाया हो, तो जातक को आर्थिक व पारिवारिक परेशानियां अधिक होती हैं। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियां, तनाव एवं उलझनें बढ़ती हैं। दुर्घटना में चोटादि का भय, व्यवसाय में विघ्न-बाधाएं रहें, प्रयास करने पर भी लाभ कम व खर्च अधिक रहे।

सुवर्णादि पाया-निर्णय—गत विक्रमी संवत् 2081 में 29 मार्च, 2025 ई. को रात्रि 21घं.-44मि. पर मीन राशिस्थ चंद्रकालीन शनिदेव ने मीन राशि में प्रवेश किया है। तदनुसार मेषादि राशियों पर सुवर्णादि पाया इस प्रकार रहेगा। यथा-

(1) **मेष, सिंह** तथा **धनु** राशियों पर लौह-पाद अशुभ फलदायक रहेगा।
(2) **मिथुन, कन्या** तथा **मकर** राशियों पर ताम्र का पाया (पाद) शुभ होगा।
(3) **वृष, तुला** तथा **मीन** राशियों पर सुवर्ण-पाद (पाया) मिश्रित फलदायक होगा।
(4) **कर्क, वृश्चिक** तथा **कुम्भ** राशियों पर रजत का पाद (पाया) शुभ रहेगा।
तदनुसार गत पृष्ठ में लिखा गया पाया-फल जानें।

शनि संचार फल—शनि के राशि परिवर्तन होने पर मेषादि विभिन्न राशियों पर उसका प्रभाव भी अलग-अलग होता है-

भ्रंशं क्लेशं च शत्रु प्रवृद्धिं पुत्रसौख्यं सौख्यवृद्धिं च दोषम्।
पीडा सौख्यं निर्धनत्वं धनाप्तिं नानानर्थं भानुसूनु-स्तनोति।।

अर्थात् गोचर में शनि जन्मराशि से पहले स्थान में हो तो मानसिक व्यथा एवं स्थान-हानि, दूसरे में कलह-क्लेश, तीसरे में पराक्रम एवं सुख में वृद्धि, चौथे में शत्रु वृद्धि, पंचम में सन्तान सम्बन्धी दुःख, षष्ठ में सुख-साधनों में वृद्धि, सप्तम में रोग व शत्रु-भय, अष्टम में दुःख-पीड़ा, नवम में सुख, दशम में धन-हानि, एकादश में धन-लाभ तथा 12वें शनि आए तो अनेक प्रकार के अनर्थ होते हैं।

मीन राशिस्थ शनि-साढ़ेसाती फल विचार

(1) **कुम्भ राशि** वाले जातक/जातिकाओं को साढ़ेसाती पाँव पर उतरती हुई अर्थात् अन्तिम चरण में होगी।

(2) **मीन राशि** वालों को शनि-साढ़ेसाती हृदय पर चढ़ती हुई अर्थात् मध्य अवस्था में होगी।

(3) **मेष राशि** वालों को शनि-साढ़ेसाती सिर पर चढ़ती अर्थात् प्रारम्भिक अवस्था में होगी।

एक मतानुसार मेष राशि वालों को मध्य के अढ़ाई वर्ष, कुम्भ राशि वालों को आदि एवं अन्त के पाँच वर्ष, उसमें विशेषत: अन्त के अढ़ाई वर्ष अधिक अशुभ होते हैं। **मीन** राशि वालों को पूरे साढ़ेसात वर्ष कष्टकारी रहें, उनमें भी अन्त के अढ़ाई वर्ष विशेष कष्ट देने वाले होते हैं।

✪ मीन राशिस्थ शनि का द्वादश राशियों पर गोचरफल ✪

(संवतारम्भ 30 मार्च, 2025 ई. से संवतान्त-19 मार्च, 2026 ई. तक)

✤ **मेष राशि**—से शनि द्वादशस्थ होने से '**शनि-साढ़ेसाती**' का अशुभ प्रभाव रहेगा। पारिवारिक व्यवसाय सम्बन्धी विघ्न-बाधाएँ, निकट बन्धुओं से विरोध व मानसिक अशान्ति रहे। पारिवारिक एवं व्यवसायिक जीवन में बड़ी उथल-पुथल वाली परिस्थितियां बनेंगी। इस राशि को पाया भी **लौह** रहने से किसी रोग विशेष के कारण शरीर-कष्ट, अचानक खर्चों में वृद्धि आदि अशुभ फल ही रहेंगे।

✤ **वृष राशि**—से शनि एकादश भावस्थ होने से धर्म-कर्म में रूचि बढ़ेगी। सुख के साधन बढ़ेंगे। विद्या में सफलता, घर-परिवार में कोई शुभ कार्य सम्पन्न होगा। पाया **सुवर्ण** होने से कुछ घरेलु उलझनें, वृथा दौड़-धूप अधिक एवं मानसिक तनाव रहेगा।

✤ **मिथुन राशि**—दशमस्थ शनि भी शुभ है। मनोवांछित योजनाओं में सफलता प्राप्त होगी। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों तथा पुराने सम्बन्धियों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। सुख-साधन एवं आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। शनि का पाया भी '**ताम्र**' होने से गत बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार, शुभ कार्यों की ओर रूचि तथा पदोन्नति के भी योग बनेंगे। व्यवसाय/कारोबार में भी वृद्धि होगी।

✤ **कर्क राशि**—को शनि नवमस्थ होने से भाग्योन्नति में विघ्न एवं विलम्ब पैदा होंगे। व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहेगी। अत्यन्त संघर्ष के पश्चात् कार्यों में आंशिक सफलता प्राप्त होगी। मानसिक तनाव व अशान्ति अधिक रहे। परन्तु शनि का पाया '**रजत**' होने से अकस्मात् धन लाभ व उन्नति के चाँस बनेंगे।

✤ **सिंह राशि**—पर शनि की ढैय्या तथा पाया **लौह** होने से आय के साधन सीमित तथा खर्च अधिक रहेंगे। आर्थिक परेशानियां, घरेलु कलह-क्लेश तथा दौड़-धूप अधिक रहे। वर्ष के उत्तरार्द्ध भाग में स्वास्थ्य सम्बन्धी सावधानी बरतें। हड्डीयों मांसपेशियों तथा त्वचा सम्बन्धी रोगों का भय रहेगा।

✤ **कन्या राशि**—पर शनि की सप्तम दृष्टि रहेगी। ता. 18 मई तक केतु का भी संचार रहने से वर्ष के पूर्वार्द्ध (पहिले) भाग में अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे। आय कम व खर्च अधिक रहे, दिमागी तनाव व उलझनें अधिक रहें। शनि का पाया **ताम्र** होने से उत्तरार्द्ध भाग में कुछ बिगड़े काम बनेंगे।

✤ **तुला राशि**—से षष्ठभावस्थ शनि शुभ रहेगा। अचानक धन-लाभ व पदोन्नति के अवसर मिलेंगे। अथवा विदेश यात्रा की योजना बनेगी। सुख-साधनों में वृद्धि होगी। शनि का पाया **सुवर्ण** होने से उत्तरार्द्ध भाग में बनते कार्यों में विघ्न-बाधाएं उत्पन्न होंगी। घरेलु उलझनों के कारण मन चिन्तित रहे। खर्च अधिक रहे।

✤ **वृश्चिक राशि**—शनि पंचमस्थ पूज्य रहेगा। सोची हुई योजनाओं में विघ्न-बाधाएं होंगी। परन्तु शनि का पाया **रजत (चाँदी)** होने से संघर्ष एवं कठिनाईयों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। उच्चाधिकारियों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे।

✤ **धनु राशि**—को शनि चतुर्थ होने से *शनि की ढैय्या का दुष्प्रभाव रहेगा। जिससे धन-*

हानि, वृथा कलह–क्लेश, खर्च आदि रहेंगे। शनि का पाया भी **'लौह'** *होने से गुप्त चिन्ताएँ, अकारण क्रोध, शरीर कष्ट तथा निकट सम्बन्धियों से तनाव एवं अचानक खर्च होने के संकेत हैं।*

✤ **मकर राशि**–तृतीयस्थ शनि शुभ है। धन लाभ एवं अन्य सुख–साधनों में विस्तार होगा। गृह में कोई मंगल कार्य सम्पन्न होगा। शुभ यात्रा के योग हैं। शनि का पाया भी **ताम्र** होने से भी नौकरी में पदोन्नति व कार्य–व्यवसाय में लाभ के चाँस बनते रहेंगे। शुभ कार्यों पर व्यय भी होंगे।

✤ **कुम्भ राशि**–द्वितीयस्थ शनि पूज्य रहेगा। शनि–साढ़ेसाती उतरती हुई अवस्था में अर्थात् अन्तिम चरण में होगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक एवं पारिवारिक समस्याओं के कारण कठिन एवं संघर्षपूर्ण हालात बनेंगे। शनि का पाया **रजत** (चाँदी) होने से रुकावटों के बावजूद कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा तथा निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे।

✤ **मीन राशि**–को लग्न भाव पर ही शनि–साढ़ेसाती तथा शनि का पाया **सुवर्ण** होने से घरेलु एवं आर्थिक उलझनें, धन का खर्च अधिक रहे। अत्यधिक संघर्ष के बावजूद बीच–बीच में धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। परन्तु ता. 18 मई तक इस राशि पर राहु का संचार रहने से कुछ पेचीदा समस्याएं अचानक उभरेंगी।

शनि–साढ़ेसाती एवं ढैय्या सम्बन्धी विशेष उपाय

शनि साढ़ेसाती अथवा शनि ढैय्या का फल सदा अनिष्टकारी ही होगा–ऐसा आवश्यक नहीं। **ध्यान रहे,** शनि सभी राशियों पर एक जैसा प्रभाव नहीं करता है, बल्कि स्वराशि, उच्च–मित्रादि स्थिति से एवं शुभाशुभ दृष्टियों के प्रभावस्वरूप इसके फल में न्यूनाधिक अन्तर पड़ना भी सम्भव है। जन्मकुण्डली एवं नवांश में शनि की स्थिति अच्छी हो एवं जातक की ग्रह–दशा भी शुभ हो, तो शनि की साढ़ेसति या ढैय्या का अशुभ प्रभाव भी अपेक्षाकृत कुछ कम होगा। इसके अतिरिक्त वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ राशि पर शनि की स्थिति या दृष्टि शुभ, लाभदायक एवं योगकारक भी हो सकती है। किसी विशेष राशि पर शनि साढ़ेसाती का विचार करते समय उस राशि पर अन्य ग्रहों की स्थिति, दृष्टि आदि का प्रभाव, सुवर्णादि पाया का अवश्य विचार करना चाहिए। कुण्डली में शनि की स्थिति एवं दशाऽन्तर्दशा शुभ होने पर क्रय–विक्रय विशेषकर लोहे, तेल के कार्य–व्यवसाय में विशेष लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

उपाय–शास्त्रों में प्रतिपादित उपायों को विधिपूर्वक करने से अवश्य लाभ पहुँचेगा–

(1) प्रत्येक शनिवार को शनि के बीज मन्त्र का संकल्पपूर्वक पाठ करें–

'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः'

कम–से–कम 3 माला अवश्य करें। पाठ उपरान्त निम्न शनि स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा–
नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च। नमः कालाग्निरूपाय कृतान्ताय च वै नमः॥

(2) शनिवासरी अमावस्या हो, तो उस दिन सायं, सूर्यास्त के बाद शनि पूजन, मन्त्र–जाप एवं स्तोत्र पाठ करना विशेष लाभकारी होगा।

विधि–सायं सूर्यास्त के बाद, स्नानादि उपरान्त पश्चिम दिशा की ओर मुख करके काले रेशमी आसन (कम्बलादि) पर बैठ जाएँ। सामने स्टील की थाली में लगभग 100 ग्राम जौं, 100 ग्राम काले तिल, काले वर्ण के कुछ फूल, 1 मुट्ठी चावल, 5 साबुत सुपारी, मौली, धूपबत्ती, रोली, लाल चंदन, काली मिठाई जैसे–गुलाब जामुन भी रख लें।

स्टील की कटोरी में सरसों के तेल का दीपक जलाकर रखें। सामने एक नारियल तिलक लगाकर, स्टील का लोटा शुद्ध जल भरकर रखें। शनि के बीज मन्त्र की 1 या 3 माला करके उसे पूजन सामग्री के साथ बहते पानी में विसर्जित कर देवें।

(3) शनिवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ या श्रवण करना शुभ होगा।

(4) श्रवण नक्षत्र में शनिवार के दिन काले रंग के धागे में शमी की अभिमंत्रित जड़ धारण करने से, शनि से सम्बन्धित वस्तुएं तथा तेल, लोहा, काले–तिल, कुलथी या काली मसूर की दाल, काला जूता, कस्तूरी आदि दान करने से भी शनि के अशुभ फल में कमी आती है।

(5) पक्षियों को दाना चुगाना, अपनी छाया (परछाई) देखकर शनिवार के दिन तेल का दान, महामृत्युञ्जय मंत्र का शुद्ध उच्चारण के साथ निष्ठापूर्वक जाप, निम्न शनि लघु स्तोत्र का पाठ तथा **'शनि वज्र–पञ्जर कवच'** का पाठ सर्वाधिक उपयुक्त माना गया है।

शनि साढ़ेसाती, ढैय्या एवं शनि पाया के अशुभ फल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र की 23 हज़ार की संख्या में विधिपूर्वक जप करना, तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना या करवाना कल्याणकारी रहता है। शनिवार का व्रत रखना, उड़द, सप्तधान्यादि दान, कृष्ण वस्त्र, शिव उपासना, शनि स्तोत्र तथा शनि से सम्बन्धित अन्य वस्तुओं का दान करने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त शुभ मुहूर्त्त में नीलम एवं विधिपूर्वक निर्मित **शनि यन्त्र** धारण करना भी लाभप्रद रहता है।

शनि का बीज मन्त्र–***''ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।।''***

शनि का वैदिक मन्त्र–

''ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शं योरभिस्रवन्तु नः॥ शं नमः॥''

शनि लघु स्तोत्र–(धर्मसिन्धु)

**''ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तुते॥
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते शौरये विभो॥
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥''**

प्रतिदिन प्रातःकाल भगवान शिव की पूजनोपरान्त पीपल वृक्ष के समीप इस स्तोत्र का पाठ करके कच्ची लस्सी में काले तिल डालकर वृक्ष के मूल में लस्सी चढ़ाना तथा सायंकाल को तैल का दीपक जलाकर प्रार्थना करने से शनि–जनित अरिष्टों की शान्ति होती है।

शनि सम्बन्धित अधिक उपायों एवं जानकारी के लिए पं. पन्ना लाल ज्योतिषी कृत **'अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय'** पुस्तक मंगवाकर पढ़ें। **मूल्य–250 रु.**

✤ गुरु का शुभाशुभ गोचरफल–संवत् २०८२ ✤

गत विक्रमी संवत् 2081 मध्ये 1 मई, 2024 ई. से गुरु (बृहस्पति) वृष राशि में संचार कर रहे हैं। आगामी वि. संवत् 2082 के आरम्भ (30 मार्च, 2025 ई.) से 13 मई, 2025 ई. तक गुरु वृष राशि में ही संचार करेंगे।

ता. 14 मई, बुधवार 2025 ई. को गुरु शीघ्र गति से **रात्रि 22घं.–33मिं. पर मिथुन राशि में प्रवेश करेंगे।** अधिक समय तक शीघ्र गति से संचार के कारण गुरु 18 अक्तूबर, 2025 ई. को अपनी उच्च राशि '**कर्क**' में रात्रि 19घं.–46मिं. पर प्रवेश करेंगे।

ता. 11 नवम्बर, 2025 ई. को वक्री होकर 5 दिसम्बर, 2025 ई. को ही पुनः '**मिथुन राशि**' में प्रवेश करेंगे। ता. 11 मार्च, 2026 ई. से मार्गी होकर संवतान्त (19 मार्च, 2026 ई.) तक मिथुन राशि में ही संचार करेंगे।

वक्री-मार्गी—गुरु-देव 11 नवम्बर, 2025 ई. से 10 मार्च, 2026 ई. तक वक्री अवस्था में संचार करेंगे।

ध्यान रहे ! वक्री, अस्त एवं शीघ्रातिचार अवस्था में गुरु कुछ जातक/जातिकाओं को अशुभ फलप्रदायक होता है। अतः इस वक्री अवस्था के कालखण्ड में देश में दुर्भिक्ष (अकाल) एवं अराजकता का माहौल बनेगा। अर्थात् उपभोग्य वस्तुओं की कमी हो, आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक तेजी, लोगों में क्लिष्ट रोगों का भय, अशान्ति एवं दुःखों का बाहुल्य रहे। कहीं राज्य में छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), उपद्रव, लूटमार एवं हिंसक घटनाएँ घटित होने का भय रहे—

यदा क्रूर ग्रहो वक्री ह्यतिचारी तु सौम्यकः। पीडा व्याधि भयं तत्र दुर्भिक्ष राज्य विग्रहम्।।

वि. संवत् 2082 मध्ये ता. 6 मई, 2025 ई. से 10 अगस्त, 2025 ई. के मध्य गुरु शीघ्र गति से संचार करने तथा 11 नवम्बर, 2025 ई. से 10 मार्च, 2026 ई. तक वक्री रहने से दुर्भिक्ष अथवा राजनैतिक अराजकता का माहौल बनेगा। राजनैतिक विद्वेष, केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों को उपद्रव, हिंसा, आन्दोलनादि गतिरोध का सामना करना पड़ेगा। शास्त्रों में भी मिथुन राशिगत गुरु के वक्री काल में पशुधन के मूल्यों में विशेष वृद्धि होने की बात कही गयी है—

मिथुनस्थः सुरगुरुः विकारंकुरुतेयदा।
अष्टमासी—भवेत् क्रूरा—चतुष्पदमहर्घता।।

एवं च, मार्गशीर्ष-पौषादि मासों में वस्त्रादि सस्ते हों, लोगों का स्वास्थ्य अच्छा रहे तथा कुछ दुर्भिक्ष रहे।

✤ वृष राशि में गुरु संचार फल ✤

(संवतारम्भ से 13 मई, 2025 ई. तक)

'वृषराशौ यदा जीवो वैशाख संवत्सरः तदा।
नंदशालाः भवेद् मेघः सर्वधान्य—समर्घता।।'

अर्थात् गुरु जब वृष राशि में आए तो '**वैशाख**' संवत्सर होता है और उसमें '**नंदशाल**' नामक मेघ वर्षा करते हैं। सभी प्रकार की रसदार वस्तुएं, गन्ना, अन्य रसदार फल सस्ते हो जाएंगे। वैशाख और आश्विन महीनों में स्त्रियों तथा हाथियों को पीड़ा हो अर्थात् उन पर अत्याचार बढ़ेंगे। नेताओं में परस्पर वैर-विरोध रहे। गेहूँ, चावल, चने, मूँग, उड़द, तिल आदि श्रावण तथा ज्येष्ठ मास में विशेष महँगे होंगे। वर्षा कम होगी। विश्व में किसी देश की सीमाओं में बदलाव हो अर्थात् देशभंग हो। चौपायों में रोग फैले तथा उनकी मृत्यु हो, आषाढ़-श्रावण में वर्षा होगी, परन्तु भाद्रपद में अभाव रहेगा।

✤ मिथुन राशि में गुरु संचार फल ✤

(14 मई, 2025 ई. से 17 अक्तूबर, 2025 ई. तक)

[पुनः 5 दिसम्बर, 25 ई. से संवतान्त 19 मार्च, 2026 ई. तक]

'मिथुने संगते जीवे ज्येष्ठाख्यो—वत्सरो भवेत्।
बालानां दोषमश्वानां खण्डवृष्टिः तदावदेत्।।'

अर्थात् जब गुरु मिथुन राशि में आए तो '**ज्येष्ठ**' नामक वर्ष होता है और उसमें कर्कोटक नामक मेघ वर्षा करते हैं। खण्ड वृष्टि होती तथा बालकों, घोड़ों, भैंसों तथा हाथियों को पीड़ा तथा लोग चोरों से पीड़ित रहते हैं। सफेद वस्त्र, कांसी, कपूर, चन्दन, मजीठ, नारियल, सुपारी, सोना और चाँदी—ये पहले सस्ते होकर, फिर महँगे होंगे। राजा लोग स्वस्थ रहेंगे, प्रजा में वृद्धि हो। तेल, खाण्ड-शक्कर और धातु सस्ते होंगे।

अपि च, मिथुने च गुरुर्याति तत्राब्दे दारुणं भयम्।
नृपाणां विग्रहस्तत्र स्वल्पं तोयं भविष्यति।।

अर्थात् जिस वर्ष मिथुन राशि में गुरु (बृहस्पति) होवे, उस वर्ष देश में भय एवं परेशानीकारक घटनाएँ घटित होंगी। राजाओं (प्रशासकों) में पारस्परिक टकराव तथा सीमाओं पर विग्रह अर्थात् युद्ध जैसे हालात बनेंगे। उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी अर्थात् अनुपयोगी वर्षा के कारण बाढ़ादि का प्रकोप रहेगा।

✤ कर्क राशि में गुरु संचार का फल ✤

(18 अक्तूबर से 5 दिसम्बर, 2025 ई. तक)

बृहस्पतिर्यदा कर्के स्वल्पमेघः प्रवर्षति। राजभिर्विग्रहश्चैव दुर्भिक्षं तत्र जायते।। (अर्घ प्रकाश)

अर्थात् बृहस्पति जब कर्क राशि में प्रविष्ट हो, तो उस वर्ष भी अनुकूल वर्षा की कमी होती है। कहीं दुर्भिक्ष अर्थात् खाद्यान्न के उत्पादन में कमी हो, राजाओं अर्थात् राष्ट्राध्यक्षों में परस्पर टकराव एवं युद्ध का माहौल बनेगा। गेहूँ, धान्य, तेल, चावल, घी, नमक, उड़द, लौंग, मिर्च, दालचीनी, इलायची, जायफल आदि महँगे होंगे। इन वस्तुओं को शीतकाल में संग्रह करके वैशाख, ज्येष्ठ में बेचने में दोगुना लाभ हो, वर्षा ऋतु में बहुत वर्षा होने से धान्यादि की कृषि अच्छी होगी।

विशेष ध्यातव्य—'मिथुन' राशि पर संचार-कालीन गुरु की इस राशि पर शत्रुगत स्थिति, धनु राशि पर सप्तम स्वगृही दृष्टि परन्तु तुला व कुम्भ राशि पर क्रमशः शत्रु एवं सम दृष्टि रहेगी। फलस्वरूप धनु व कुम्भ राशि वालों को विद्या में सफलता विवाह-सन्तान सम्बन्धी सुख, धार्मिक/आध्यात्मिक कार्यों में रूचि आदि शुभ फल प्राप्त होने की सम्भावनाएँ बनेंगी। परन्तु तुला राशि वालों को गुरु की शत्रु दृष्टि के कारण विद्या में यथेष्ठ सफलता न मिलना, प्रियजन वियोग, स्वास्थ्य कष्ट, निकटस्थ बन्धुओं के साथ मतभेद आदि अशुभ फल घटित होने की सम्भावनाएं रहेंगी।

♣ वृष राशिगत गुरु का शुभाशुभ गोचरफल ♣
[संवतारम्भ 30 मार्च, 2025 ई. से 14 मई, 2025 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से मेल हो, दीर्घ यात्रा के योग धन लाभ, शुभ कार्यों पर खर्च हो।	लग्नस्थ गुरु पूज्य है, आय कम खर्च अधिक होंगे। धर्म पालन करने से लाभ के चाँस बनेंगे।	द्वादशस्थ गुरु होने से आय अल्प व खर्च अधिक रहेंगे। घरेलु व व्यवसाय सम्बन्धी उलझनों का सामना रहे।	लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त हों, धन-भूमि-सवारी आदि सुखों में वृद्धि हो, कार्यों में सफलता प्राप्त हो।	दशमस्थ गुरु होने से संघर्ष के बाद धन लाभ व्यवसाय में विघ्न, आय से खर्च अधिक रहेंगे। स्वास्थ्य कष्ट, गायत्री जप करना शुभ होगा।	भाग्य स्थान में गुरु शुभ फल देगा उच्च-विद्या एवं कैरियर में सफलता धर्म-कर्म में रुचि बढ़े।	आय कम व खर्च अधिक रहेंगे, घरेलु व व्यवसाय में उलझनें बढ़ेंगी, मानसिक तनाव व गुप्त चिन्ता रहे।	विशेष परिश्रम के बाद निर्वाह योग्य धन मिले, सवारी सुख मिले, परन्तु स्वास्थ्य संबंधी सावधानी बरतें।	व्यय अधिक रहे, ऋण-रोग व शत्रु भय हो, बनते कामों में अड़चनें रहें। भाग-दौड़ अधिक रहे।	गृह में किसी शुभ कार्य पर खर्च हो, विद्या-भूमि व वाहन संबंधी सुख मिलें। भाग्य उन्नति हो।	आराम कम व संघर्ष अधिक, धन-वाहन संबंधी परेशानी, तनाव व अशांति बढ़ें। खर्चों में विशेष वृद्धि हो।	आय कम व आकस्मिक खर्च, शरीर-कष्ट व घरेलु उलझनों के कारण तनाव बढ़ेंगे।

♣ मिथुन राशिगत गुरु का शुभाशुभ गोचरफल-सं.२०८२ ♣
[14 मई, 2025 ई. से 18 अक्तूबर, 2025 ई. तक, पुनः 5 दिसम्बर, 2025 ई. से 10 मार्च, 2026 तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
स्थान परिवर्तन, धन का अपव्यय बढ़े, परन्तु आय सीमित रहे, ईष्टजनों से वियोग कार्यों में विघ्न, मित्रों से विरोध रहे।	धर्म कार्यों की ओर रुचि, उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे, धन लाभ एवं सवारी आदि सुखों की प्राप्ति हो।	लग्नस्थ गुरु शत्रु राशिस्थ होने से अत्यन्त संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। धर्म-कर्म की ओर रुचि बढ़ेगी।	द्वादशस्थ गुरु होने से आय कम एवं खर्च अधिक रहेंगे। बनते कामों में विघ्न पैदा होंगे, वर्षारम्भ से पहले शुभ कार्यों पर खर्च अधिक होंगे।	धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। भूमि, वाहनादि सुखों की प्राप्ति विघ्नों के बाद होगी। कोई शुभ कार्य हो।	कार्य-व्यवसाय में उलझनों के बाद धन प्राप्ति हो, खर्च भी अधिक रहें। तनाव के कारण स्वास्थ्य खराब हो।	गुरु नवम स्थान में होने से कार्यों में सफलता लाभ व उन्नति के मौके प्राप्त होंगे। धर्म-कर्म की ओर रुचि बढ़ेगी।	अष्टमस्थ गुरु होने से क्लिष्ट रोग का भय, आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। घरेलु उलझनें, यात्रा व तनाव बढ़ेंगे।	सप्तमस्थ गुरु होने से धन-लाभ एवं सवारी आदि सुखों की प्राप्ति होगी। विशेष संघर्ष के बाद लाभ के चाँस होंगे।	छटे गुरु होने से खर्च बढ़ेंगे, रोग एवं गुप्त शत्रुओं का भय रहेगा। निकट बन्धु से वृथा तकरार पैदा हो, तनाव बढ़े।	पंचमस्थ गुरु होने से उच्च विद्या में सफलता, विवाह आदि सुखों की प्राप्ति श्रेष्ठजनों से सम्पर्क, लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे।	चतुर्थस्थ गुरु होने से साधनों में वृद्धि परन्तु सुख में कमी हो, तनाव व अशांति बढ़े, सवारी से चोटादि का भय, खर्चों में वृद्धि हो।

♣ कर्क राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल ♣
[18 अक्तूबर, 2025 ई. से 5 दिसम्बर, 2025 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
चतुर्थस्थ गुरु होने से साधनों में वृद्धि परन्तु सुख मे कमी हो, तनाव व अशांति बढ़े, सवारी से चोटादि का भय, गृह में कलह-क्लेश हो।	तृतीयस्थ गुरु होने से धन लाभ अच्छा परन्तु आकस्मिक खर्च, निकट भाई-बन्धु को शरीर कष्ट, घरेलु उलझनें रहें।	उच्च प्रतिष्ठित लोगों से मेल हो, दीर्घ यात्रा के योग, धन लाभ, शुभ कार्यों पर खर्च भी हो। धार्मिक कार्यों की ओर रुचि रहे।	लग्नस्थ गुरु पूज्य है। यद्यपि संघर्ष देता है, परन्तु यहाँ उच्च राशिगत होने से उलझनों एवं संघर्ष के बाद धन लाभ एवं कार्य प्रशस्त होंगे।	द्वादश गुरु होने से आय कम व खर्च अधिक रहेंगे, बनते कार्यों में विघ्न, धर्म कार्यों में प्रवृत्ति, शुभ कार्यों पर खर्च अधिक होंगे।	धन-सम्पदा व सवारी आदि का सुख हो, भाग्य में उन्नति प्रिय-मिलन, व्यय अधिक, कार्यों में सफलता प्राप्त हो।	दशमस्थ गुरु होने से कार्य-व्यवसाय में रुकावटों के बाद धन प्राप्ति, आय कम, खर्च अधिक, तनाव व चिन्ता के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।	गुरु भाग्यस्थ होने से बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार, भूमि, वाहनादि का सुख मिले, किसी प्रिय-बन्धु से मिलाप, सन्तान संबंधी सुख मिले।	अष्टमस्थ गुरु होने के आय कम व खर्च अधिक रहेंगे, ऋण, रोग व शत्रुभय, घरेलु उलझनें बढ़ेंगी।	सप्तमस्थ गुरु होने से विघ्नों के बाद कार्य-सिद्धि, धन-लाभ, भाग्य में उन्नति के योग हैं। यात्रा का विचार बने।	छटे गुरु होने से व्यय अधिक रहे, ऋण-रोग व शत्रु भय हो, निकट बन्धु से विरोध रहे।	पंचमस्थ गुरु होने से भूमि-वाहनादि सुख हो, उच्च विद्या में सफलता, विवाद आदि सुखों की प्राप्ति, श्रेष्ठजनों के सम्पर्क से लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।

ध्यान रहे—जन्म राशि अथवा नाम-राशि से गुरु 1, 3, 4, 6, 8 या 12वें स्थान पर हो, तो व्याधि (रोग) भय, मान-सम्मान में कमी, उच्च-विद्या में असफलता, धन-हानि, परदेश-गमन तथा मित्रों से विरोध रहे—

'द्वादश दशम चतुर्थे जन्मनि षष्ठाष्टगे, तृतीये च।
व्याधिर्विदेशगमन-धन-हानि, मित्रविरोधं सुरगुरुः कुरुते।।'

गुरु का कारकत्व—गुरु पति-सुख, धर्म-आध्यात्म, सन्तान, पुत्र, विद्या, विवेक-बुद्धि, बड़ा भाई, सुवर्ण, ज्योतिष आदि विद्याओं का कारक माना जाता है। शरीर में लिवर, हृदयकोश, पाचन प्रक्रिया, कान आदि का भी कारक माना जाता है। कुण्डली में गुरु अशुभ हो अथवा अशुभ ग्रह द्वारा दृष्ट या युक्त हो, तो गुरु सम्बन्धित सुख में कमी करता है। अधिक जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से छपी **'ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) भाग-1'** में गोचर विचार पढ़ना चाहिए।

गुरु के अशुभ फल की शान्ति के लिए दान—गुरु की शुभता बढ़ाने के लिए वृद्ध ब्राह्मण को भोजन कराना, गुरुवासरी अमावस्या तथा गुरुवार का व्रत रखना, पुखराज धारण करना, पीले वस्त्र, चने की दाल, कांस्य पात्र, सुवर्ण, शक्कर, केले, लड्डुओं, धार्मिक ग्रन्थ आदि का दान यथाशक्ति करने तथा गुरु के बीज मन्त्र अथवा गुरु गायत्री मंत्र का जाप 19,000 की संख्या में विधिपूर्वक करना शुभ एवं फलदायक रहेगा। गुरु धनु और

मीन राशि का स्वामी है। पति सौख्य की प्राप्ति के लिए स्त्रियों को गुरु के बीज मंत्र, बृहस्पति अष्टोत्तर शतनाम, बृहस्पतिवार का व्रत, पुखराज धारण तथा यथाशक्ति दान करना लाभदायक रहता है। प्रत्येक गुरुवार केसर का तिलक भी लगाना चाहिए।

बृहस्पति शान्ति हेतु स्नान योग्य वस्तुएँ–गुरु की अनिष्ट शान्ति (वैवाहिक विलम्ब, विद्या प्राप्ति, पदोन्नति में बाधाएं, पितृदोष आदि दूर करने हेतु) के लिए चमेली पुष्प, पीली सरसों, शहद, गुलर, दमयन्ती, मुलट्ठी, हरिद्रा, मालती पुष्प, सुगन्धबाला, श्वेत आक के नवीन पत्ते एवं गंगाजल आदि स्नान-औषधियों में से यदि कोई वस्तु प्राप्त न हो सके, तो जितनी प्राप्त हो, उन्हीं से स्नान करना चाहिए।

विशेष–औषध-स्नान के दिन साबुन, शैम्पू आदि को लगाने से पूरी तरह परहेज़ करना चाहिए। सभी गुरु-औषधि को गंगाजल में मिश्रित शुद्ध जल डालकर पूर्वाभिमुख होकर गुरु के बीजमंत्र से मंत्रपूर्वक स्नान करने से गुरु कृत अनिष्ट प्रभाव से निवृत्ति होती है। औषध स्नान के उपरान्त गुरु के बीज मंत्र का कम-से-कम 3 माला का जप (जप में हरिद्रा की माला या रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करना) करके ब्राह्मण-दम्पत्ति को मीठा भोजन, पीले वस्त्र एवं अन्य गुरु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करना चाहिए।

गुरु गायत्री मन्त्र–

''ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।।''

गुरु बीज मन्त्र–''ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।।''

गुरु का वैदिक मन्त्र–ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।। (जप संख्या १९०००)

पुराणोक्त गुरु मन्त्र– ॐ देवानां च मुनीनां च गुरु कांचनसंनिभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

राहु-केतु का शुभाशुभ गोचरफल-वि. संवत् २०८२

वि. संवत् 2080 मध्ये 30 अक्तूबर, 2023 ई. से राहु मीन राशि में तथा केतु कन्या राशि में संचार कर रहे हैं।

आगामी वि. संवत् 2082 के प्रारम्भ 30 मार्च, 2025 ई. से **18 मई, 2025 ई. तक** राहु मीन राशि तथा केतु कन्या राशि में संचार करेंगे।

ता. 18 मई, 2025 ई. की रात्रि 19घं.–35मिं. पर **राहु कुम्भ राशि** में तथा **केतु सिंह राशि** में प्रवेश करेंगे तथा संवतान्त (19 मार्च, 2026 ई. तक) तक इन्हीं राशियों में संचार करेंगे। मीन राशिस्थ राहु तथा कन्या राशिस्थ केतु का फल पुनः लिख रहे हैं। तदुपरान्त कुम्भ राशिस्थ राहु एवं सिंह राशिस्थ केतु का फल लिखा है–

✤ मीन राशिस्थ राहु का गोचरफल–सं. २०८२ ✤

[संवतारम्भ 30 मार्च, 2025 ई. से 18 मई, 2025 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अपव्यय, व्यर्थ की भाग-दौड़ अधिक, बनते कार्यों में विलम्ब, किसी अप्रिय घटना के कारण मन अशान्त रहे।	गत किए हुए प्रयासों में सफलता, वाहन सुख, बिगड़े कार्य बने, विदेश या दीर्घ यात्रा का विचार बने।	वृथा दौड़-धूप अधिक रहे, बनते कार्यों में अड़चनें पैदा हो, घरेलु उलझनों के कारण अशांति हो।	घरेलु उलझनों के बावजूद गुजारे योग्य आय केसाधन बनते रहें, वाहनादि सुखों की प्राप्ति, खर्चों में विशेष वृद्धि, बन्धु-विरोध हो।	आय कम व संघर्ष अधिक रहे। शरीर कष्ट व शत्रु भय हो। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करें।	आय संबंधी परेशानी, शरीर कष्ट, बनते कार्यों में अड़चनें, मानसिक तनाव, परिवार या पति/पत्नी में मन-मुटाव हो।	विगत किए गए प्रयासों में सफलता, अचानक धन-लाभ, शुभ यात्रा एवं परिवार से मेल-मिलाप हो।	आर्थिक उलझनों के कारण घरेलु परेशानियां, रोग भय व गुप्त चिन्ता हो। सन्तान एवं विद्या संबंधी कार्यों में विघ्न-बाधाएं हों।	व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष के बाद गुज़ारे योग्य आय के साधन प्राप्त होंगे। विदेश गमन की योजना बनेगी।	कोई खुश-खबरी मिलेगी, धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। विदेश गमन की योजना बनेगी।	धन प्राप्ति में विघ्नों का सामना रहे। अचानक लाभ तथा अचानक हानि का भय, मानसिक तनाव रहे।	पारिवारिक कलह-क्लेश, वृथा दौड़-धूप बनते कार्यों में अड़चनें, शरीर कष्ट, खर्च भी अधिक रहें।

✤ कुम्भ राशिस्थ राहु का गोचरफल–सं. २०८२ ✤

[18 मई, 2025 ई. से संवतान्त-19 मार्च, 2026 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
धन लाभ व उन्नति का चाँस बनेंगे, पर खर्च भी बहुत बढ़ेंगे, विदेश यात्रा का विचार बनेगा।	आय अल्प, किन्तु खर्च बहुत हों, कार्य-व्यवसाय एवं घरेलु उलझनों के कारण तनाव बढ़ें, कार्यों में विघ्न।	बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार, वाहनादि सुखों की प्राप्ति बड़ी कठिनता से निर्वाह योग्य आय बने।	शरीर कष्ट, संघर्ष अधिक, लाभ कम हो प्रिय बन्धु से मेल हो, कुछ बिगड़े काम बनेंगे।	बनते कार्यों में बाधाएं, धन-लाभ कम खर्च अधिक रहे, परिवार में तनाव भरा माहौल रहेगा।	स्वास्थ्य हानि, विशेष परिश्रम के बाद भी आय कम व खर्च अधिक होंगे। आर्थिक परेशानियां तथा शत्रु भय हो।	निकटस्थ संबंधी से कलह-क्लेश, रोग व शत्रु भय, खर्च व चिन्ता बढ़े, सन्तान/विद्या संबंधी कार्यों में विघ्न।	किसी निकटस्थ बन्धु से क्लेश, लाभ कम व खर्चों में वृद्धि हो, वृथा दौड़-धूप बढ़े। व्यवसाय में संघर्ष रहे।	पराक्रम व उत्साह में वृद्धि, शुभ यात्रा, धन-लाभ व पदोन्नति के अवसर बनेंगे। विदेश यात्रा की भी योजना बने।	घरेलु व व्यवसाय में तनावपूर्ण परिस्थितियां रहें, वृथा खर्च बढ़े, शरीर कष्ट, रोग व मानसिक परेशानियां रहें, ऋण न लें तथा न ही दें।	शरीर कष्ट, तनाव अधिक रहे। बनते कामों में अड़चनें पड़े, खर्चों की भी अधिकता रहे।	सामान्य आय के साथ-साथ खर्च भी बहुत अधिक रहेंगे। किसी अप्रिय घटना के कारण मन अशान्त रहे।

✤ कन्या राशिस्थ केतु का गोचरफल–सं. 2082 ✤

[संवतारम्भ 30 मार्च, 2025 ई. से 18 मई, 2025 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
विघ्नों के बाद लाभ व उन्नति के योग बिगड़े कार्यों में सुधार, शुभ समाचार मिले।	लाभ कम व खर्च अधिक हों। किसी मंगल कार्य पर खर्च हो। विदेश यात्रा का योग बनेगा।	विशेष भाग-दौड़ के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे, भूमि, सवारी सुख की प्राप्ति परन्तु घरेलु झंझट व अशांति रहे।	गत किए कार्यों में सफलता प्राप्ति हो, धन लाभ के अवसर प्राप्त हों, किसी मित्र की सहायता से बिगड़ा कार्य बने।	वृथा दौड़-धूप एवं खर्च अधिक रहे। अचानक धन-हानि, शरीर कष्ट व घरेलु उलझनें बढ़ेंगी।	प्रत्येक कार्य में रुकावटें एवं विलम्ब हो, आय कम व खर्च अधिक रहे। स्वास्थ्य विकार, क्रोध अधिक रहे।	शत्रु-भय, अपव्यय रोग-शोक हो। बनते कामों में अड़चनें, तनाव से स्वास्थ्य विकार, क्रोध अधिक रहे।	भूमि-वाहनादि भौतिक सुख-साधनों में वृद्धि, यश-लाभ, धन लाभ साधारण, परन्तु संघर्ष भी रहे।	अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। खर्चों में वृद्धि, रोग व शत्रु भय, उलझनें बढ़ेंगी।	धन लाभ अल्प, आराम कम, संघर्ष अधिक, दुर्घटना से चोटादि का भय वाहनादि पर खर्च हो।	धन-हानि, रोग व शत्रुभय, विद्या में विघ्न, सन्तान-परिवार व सेहत संबंधी चिन्ता, खर्च अधिक रहे।	खर्च अधिक, लाभ कम हो। घरेलु उलझनों के कारण तनाव तथा अशान्ति बढ़ेगी। बनते कार्यों में रुकावटें रहें।

✤ सिंह राशिस्थ केतु का गोचरफल–सं. 2082 ✤

[18 मई, 2025 ई. से संवतान्त-ता. 19 मार्च, 2026 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घरेलु कलह-क्लेश से मन अशान्त व परेशान, लाभ कम व खर्च अधिक, सन्तान संबंधी चिन्ता रहे।	आर्थिक परे-शानियों के कारण घरेलु झंझट व अशांति रहे। गुज़ारे योग्य आय ही होगी।	आशा-अनुकूल सफलता बिगड़े हुए कार्यों में कुछ नुकसान होने का भय रहे। शरीर कष्ट व तनाव बढ़े।	वृथा दौड़-धूप अधिक हो, लाभ कम खर्च अधिक, व हानि होने का भय रहे। गुज़ारे योग्य आय ही होगी।	आर्थिक परेशानी, बनते कार्यों में विघ्न व शरीर कष्ट, तनाव रहे। निकटस्थ से झगड़े तथा खर्च भी अधिक हों।	रोग-शोक व शत्रुभय, अपने भी परायों जैसा व्यवहार रखें, खर्च अधिक व गुप्त परेशानी रहे।	भूमि-वाहनादि सुख-साधनों में वृद्धि, यश-लाभ, धन लाभ साधारण, परन्तु संघर्ष भी रहे।	पुरुषार्थ में वृद्धि, कोई मंगल कार्य हो, लाभ की अपेक्षा खर्च अधिक रहे, विदेश यात्रा का योग बने।	भाग्य-उन्नति में विघ्न, वृथा खर्च बढ़े, दुर्घटना से चोटादि का भय, वाहनादि पर खर्च हो।	अचानक धन लाभ अथवा धन-हानि होगी। रोग-भय, गुप्त शत्रु हानि पहुँचा सकता है। सट्टे से लाभ हो।	स्त्री व पारि-वारिक चिन्ता, किसी से वैमनस्य निकटस्थ से धोखा मिलने का भय है।	निज पराक्रम से धन लाभ हो, बिगड़े कार्यों में सुधार, शुभ समाचार मिले।

अनिष्ट राहु की शान्ति हेतु तिल, तेल, भूरे रंग का वस्त्र, कम्बल, नारियल, सप्तधान्य, सतनाजा, कृष्ण पुष्प आदि का दक्षिणा सहित दान करना कल्याणकारी रहता है। जन्मपत्री अनुशीलन के बाद गोमेध भी धारण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त राहु के बीज मन्त्र **'ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः'** का 18 हज़ार की संख्या में जाप करें। **गजेन्द्र मोक्ष** स्तोत्र का पाठ भी शुभ है। राहु का गायत्री मन्त्र–

ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥

केतु के अरिष्ट की शान्ति हेतु लोहा, सप्तधान्य, लाल-काला वस्त्र, नारियल, कम्बल, कस्तूरी, बेल, कुष्ठाश्रम आदि में भोजन, क्षीर का दान तथा जन्मपत्री विश्लेषण के पश्चात् लहसनिया नग धारण करना कल्याणकारी रहता है। केतु के बीज मन्त्र **'ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः'** की 17 हज़ार की संख्या में जाप करना तथा **संकटनाशक श्रीगणेश स्तोत्र** एवं **अपराजिता स्तोत्र** का पाठ करना शुभ है। केतु की शान्ति के लिए गायत्री मन्त्र–

ॐ पद्म पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात्॥

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के सम्बन्ध में और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी प्रकाशित पुस्तक **अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय/टोटके** मँगवाकर पढ़ें। **मूल्य–250/–**

नक्षत्रानुसार पाया फल जानना

✷ आर्द्रा, पुर्न., पुष्य, अश्ले., मघा, पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वाती–इन दश नक्षत्रों के मध्य किसी जातक का जन्म हो, तो चान्दी का पाया।

✷ विशा., अनु., ज्ये., मूल, पू.षा., उ.षा., श्रवण, धनि., शतभिषा के मध्य जन्म हो, तो ताम्बे का पाया।

✷ रेवती, अश्वि, भर., कृति, रोह, मृग = सोना (सुवर्ण)

✷ पू.भा., उ.भा. = लौह पाया

आर्द्रा दश रूपाणां, विशाखा नवताम्रका। रेवती षट् हेमश्च, शेषा द्वौ लौह-प्रकीर्तिता।।

चान्दी एवं ताम्र के पाया शुभ एवं लाभदायक तथा सुवर्ण एवं लौह के पाया धन हानि एवं कष्टकारी फल देते हैं।

कुछ विद्वानों एवं मुहूर्त्त ग्रन्थों अनुसार जन्म-राशि से चन्द्रस्थिति तक गणना करने पर विभिन्न स्थानों के अनुसार चन्द्रमा के सुवर्णादि पाद का विचार किया जाता है। यथा–

स्थान	1,6,11	2,5,9	3,7,10	4,8,12
चन्द्रपाद	स्वर्ण	रजत	ताम्र	लौह
फल	सौभाग्य	शुभत्व	दारिद्रय	मृत्यु

जन्मराशि से इन्हीं स्थानों पर अन्य ग्रहों के भी चरणों का विचार किया जाता है परन्तु फल भिन्न-भिन्न रहता है–**''सौरी लोहे शुभः प्रोक्तो हेमपादे च वै गुरुः। रजते चंद्रशुक्रौ च, ग्रहाश्चान्ये च ताम्रके।।''**

अर्थात् शनि का लौह पाद, बृहस्पति का सुवर्णपाद, चंद्र-शुक्र का रजत पाद तथा अन्य ग्रहों (सू.मं.बु.श.के.) के ताम्र पाद श्रेष्ठ होते हैं।

सूर्यादि ग्रहों के अनिष्टफल की शान्ति हेतु दान एवं जपादि मन्त्र

ग्रह													जप संख्या	जपकाल	जपनीय बीजमन्त्राः	हवन समिधा
सूर्य	कनक	माणिक्य	तांबा	सोना	लाल गाय	गुड़	घी	कमलादि	रक्तवस्त्र	लालचंदन	मूंगा	केशर	7000	सूर्योदय	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	आक् काष्ठ
चन्द्र	चावल	मोती	चांदी	सोना	श्वेत बैल	मिश्री	दही	श्वेत पुष्प	श्वेतवस्त्र	श्वेतचंदन	शंख	कपूर	11000	संध्याकाले	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	पलाश
मंगल	मसूर	मूंगा	तांबा	सोना	लाल बैल	गुड़	घी	लाल कनेर	लालवस्त्र	लाल चंदन	केशर	कस्तूरी	10000	सू.उ. २।१५	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	खैर
बुध	मूंग	पन्ना	कांस्य	सोना	शस्त्र	शक्कर	घी	सर्व रंग पु.	हरावस्त्र	अनेक फल	हाथीदांत	कपूर	9000	सू.उ. ५ घड़ी	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	अपामार्ग
गुरू	पीतधान्य	पुखराज	कांस्यपात्र	सोना	अश्व	लवण श	घी	पीले पुष्प	पीतवस्त्र	पीला फल	धर्मग्रंथ	लवणशहद	19000	संध्याकाले	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	पीपल
शुक्र	चावल	हीरा	चांदी	सोना	श्वेत घोड़ा	मिसरी	दूध	श्वेत पुष्प	सफेदवस्त्र	सफेद चंदन	दही	सुगन्धित द्रव्य	16000	सू. उ. काल	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	गूलर
शनि	उड़द	नीलम	लोहा	सोना	काली गाय	कुलथी	तैल	काले पुष्प	कालावस्त्र	काले जूते	भैंस	कस्तूरी	23000	संध्याकाल	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	शमी
राहु	सप्तधान्य	गोमेद	सीसा	सोना	काला घोड़ा	ताम्र पात्र	तैल	कृष्ण पुष्प	नीलवस्त्र	नारियल	कंबल	खड्ग	18000	रात्रि	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	दूर्वा
केतु	सप्तधान्य	लसनिया	लोहा	सोना	बकरा	नारियल	तेल	धूम्र पुष्प	कालावस्त्र	शस्त्र ध्वज	कंबल	कस्तूरी	17000	रात्रि	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	कुशा
मुंथा	चावल	मोती	कांस्यपात्र	सोना	श्वेतचंदन	ऋतुपुष्प	घृत	श्वेतपुष्प	श्वेतवस्त्र	हाथीदांत	मुंथेश ग्रह.	ग्रह अनुसार	मुंथेश ग्रहानुसार	प्रातः	मुन्था स्वामी मन्त्र	

विशेष—ध्यान रहे, प्रत्येक ग्रह के दान के साथ यथाशक्ति दक्षिणा भी अवश्य देनी चाहिए। **सप्तधान्य**—गेहूँ, उड़द, मूंगी, चने, जौं, कंगनी और धान्य, चावल।

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारण हेतु औषधि स्नान

सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मन:शिला	पंचगव्य	बिल्व छाल	गोबर	चमेलीपुष्प	पिपरामूल	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गोदूध	लाल पुष्प	अक्षत	पुष्प	जायफल	सूरमा	तारपीन	तारपीन
देवदारू	गोबर	हींग	मोती	श्वेत सरसों	केशर	लोबान	मोथा	तिलपत्र
केशर	गजमद	गोदनी	शहद	शहद	मूली बीज	सौंफ	गजदंत	गजदंत
खस	शंख सीप	जटामांसी	सुवर्ण	गुलर	मन:शिल	खस	कस्तूरी	छागमूत्र
रक्तपुष्प	गंगाजल	मौलसिरी	जायफल	दमयंती	इलायची	खिल्ला	बिल्वपत्र	लाल चंदन
रक्तचंदन	श्वेत चंदन	सिगरफ	पिपरामूल	मुलट्ठी	श्वेतचंदन	शतकुसुम	गंगाजल	गंगाजल
कनेर पुष्प	स्फटिक	मालकंगनी	नागकेशर	नवीनपत्ते	गंगाजल	गाँदमिश्रित	लालचंदन	कस्तूरी
मि. गंगाजल	गोमूत्र	गंगाजल	गंगाजल	गंगाजल	श्वेतकमल			

होमादि में अग्नि वास जानना

जिस दिन को होम/हवन करना हो, उस दिन की तिथि और वार की संख्या को जोड़कर 1 जमा करें फिर कुल जोड़ को 4 द्वारा भाग देवें। यदि शेष शून्य (0) अथवा 3 बचें, तो **अग्नि का वास पृथ्वी** पर होगा। इस दिन होम करना कल्याणकारक होता है। यदि शेष 2 बचें तो अग्नि का वास **पाताल में** होता है। इसी दिन होम करने से धन का नुक्सान होता है। यदि 4 का भाग देने से 1 शेष बचे तो आकाश में अग्नि का वास होगा, इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है। **वार** की गणना **रविवार** से तथा तिथि की गणना **शुक्ल प्रतिपदा** से करनी चाहिए। तदुपरान्त ग्रह के मुख आहुति चक्र का विचार करना चाहिए।

ग्रहों के मुख में आहुति चक्र

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से यदि ३ या ३ से कम की संख्या आए तो होमाहुति सूर्य के मुख में जाने, तीन से आगे की संख्या से ६ तक की संख्या में मिले, तो बुध के मुख में आहुति जानें। इसी प्रकार, निम्न क्रमानुसार सब ग्रहों में होमाहुति जानें।

ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चंद्र	मंग.	गुरु	राहु	केतु
नक्षत्र	3	3	3	3	3	3	3	3	3
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

नवग्रहों के जपनीय होमार्थ (हवन) मन्त्र

सूर्य मन्त्र—अर्क (आक) समिधा द्वारा "ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम॥१॥

चन्द्रमा मन्त्र—(पलाश या ढाक समिधा के साथ)—"ॐ इमं देवाऽसपत्न Ω सुवध्वम् महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां Ω राजा। ॐ सोमाय स्वाहा॥ इदं चन्द्रमसे न मम॥२॥

भौम मन्त्र—(खैर की लकड़ी से) "ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा Ω रेता Ω सि जिन्वति स्वाहा। ॐ भौमाय स्वाहा॥ इदं भौमाय इदं न मम॥"

बुध मंत्र—(अपामार्ग की समिधा से) ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्वमिष्टापूर्ते स Ω सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय इदं न मम॥

गुरू मन्त्र—(पीपल) ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ बृहस्पतये स्वाहा॥ इदं बृहस्पतये, इदं न मम।

शुक्र मन्त्र—(गूलर) ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं पिवानं Ω शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ ॐ शुक्राय स्वाहा॥ इदं शुक्राय, न मम।

शनि मन्त्र—(शमी की समिधा) ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः। ॐ शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनैश्चराय, इदं न मम्॥

राहु मन्त्र—(दूर्वा) ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ॐ राहवे स्वाहा॥ इदं राहवे इदं न मम॥

केतु मन्त्र—(कुशा से) ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजा यथाः। ॐ केतवे स्वाहा॥ इदं केतवे, इदं न मम॥

ग्रहों के गुण, वर्ण, स्वभाव, उच्च-नीच, स्व-गृही राशि आदि चक्र

नाम ग्रह	स्व-ग्रही राशि	मूल त्रिकोण	गुण	चरादि	वर्ण जाति	रंग	उच्च राशि	नीच राशि	पुरुष स्त्री	तत्त्व	कारक	संबंध	स्व-भाव	प्रकृति	धातु	रस	शरीरांग	दिशा	दृष्टि विशेष	भाग्योदय काल
सूर्य Sun	सिंह	सिंह	सत्त्व	स्थिर	क्षत्रिय	रक्त वर्ण	मेष	तुला	पुरुष	अग्नि	आत्मा	पिता	क्रूर	पित्त	सोना	तिक्त	शिर, नेत्र	पूर्व	7	22 से 24
चन्द्र Moon	कर्क	वृष	सत्त्व	चंचल	वैश्य	श्वेत	वृष	बृश्चि.	स्त्री	जल	मन	माता	सौम्य	वातश्ले	चांदी	क्षार	बुद्धि, रक्त	पश्चि. उत्तर	7	24 से 25
मंगल Mars	मेष, वृश्चिक	मेष	तम	चर	क्षत्रिय	लाल	मकर	कर्क	पुरूष	अग्नि	बल	भाई	क्रूर	पित्त	ताम्र	कटु	मज्जा	दक्षिण	7,4,8	28 से 32
बुध Merc	मिथुन, कन्या	कन्या	रज	द्विस्वभा	वैश्य	हरा	कन्या	मीन	नपुंसक	पृथ्वी	वाणी	बंधु/मित्र	मिश्र	त्रिधातु	कांस्य	मिश्र	त्वचा, मुख	उत्तर	7	32 से 36
गुरू Jup.	धनु, मीन	धनु	सत्त्व	स्थिर	ब्राह्मण	पीला	कर्क	मकर	पुरूष	आकाश	विद्या	संतान	शुभ	कफ	सोना	मधुर	चर्बी	ईशान	5,7,9	16 से 24
शुक्र Ven.	वृष, तुला	तुला	रज	चर	वैश्य	सफेद	मीन	कन्या	स्त्री	जल	काम	स्त्री	शुभ	वात, कफ	चांदी	अम्ल	वीर्य	दक्षि., पूर्व	7	26 से 28
शनि Sat.	मकर, कुम्भ	कुम्भ	तम	स्थिर	शुद्र	नीला काला	तुला	मेष	नपुंसक	वायु	संघर्ष	भृत्य	क्रूर	वात, श्ले	लोहा	कषाय	स्नायु	पश्चि.	3,7,10	36 से 42
राहु Rahu	कन्या	कर्क	तम	चर	अत्यज	धूम्र	वृष	बृश्चि.	पुरुष	छाया	दुःख	शत्रु	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	हड्डी	दक्षिण	7	44 से 50
केतु Ketu	मीन	मकर	तम	चर	शूद्र	धूम्र	बृश्चि.	वृष	पुरुष	छाया	कष्ट	बाधा	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	चर्म	उत्तर	7	48 से 50

राशियों के गुण-स्वभाव तत्त्व, शुभ रत्नादि चक्र

राशि	स्वा. ग्रह	अंग्रेज़ी नाम	वर्ण	जाति	क्रूरादि	चरादि	तत्त्व	गुण	जीवादि	समादि	दिशा	शुभ रत्न	बल समय	शरीरांग	दीर्घादि	नरादि	प्रकृति	गुण	पृष्ठोदय आदि
मेष	मंगल	Aries	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	चर	अग्नि	रज	धातु	विषम	पूर्व	मूंगा	रात्रि	शिर	ह्स्व	पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
वृष	शुक्र	Taurus	श्वेत	वैश्य	सौम्य	स्थिर	पृथ्वी	तम	मूल	सम	दक्षिण	हीरा	रात्रि	नेत्र	ह्स्व	पशु	वात	शांत	पृष्ठोदय
मिथुन	बुध	Gemini	हरा	शूद्र	क्रूर	द्वि. स्व.	वायु	सत	जीव	विषम	पश्चि.	पन्ना	रात्रि	भुजाएँ, गला	सम	नर	वात	चंचल	शीर्षोदय
कर्क	चंद्र	Cancer	श्वेत	विप्र	सौम्य	चर	जल	रज	धातु	सम	उत्तर	मोती	रात्रि	वक्ष, फेफड़े	सम	जल चर	कफ	शांत	पृष्ठोदय
सिंह	सूर्य	Leo	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	स्थिर	अग्नि	तम	मूल	विषम	पूर्व	माणक	दिन	मेरू, रक्त, हृदय	दीर्घ	पशु	पित्त	उष्ण	शीर्षोदय
कन्या	बुध	Virgo	मिश्रित	वैश्य	सौम्य	द्वि. स्व.	पृथ्वी	सत	जीव	सम	दक्षिण	पन्ना	दिन	पेट, नाभि	दीर्घ	नर	त्रिदोष	शीत	शीर्षोदय
तुला	शुक्र	Libra	नीला	शूद्र	क्रूर	चर	वायु	रज	धातु	विषम	पश्चि.	हीरा	दिन	गुर्दे, कमर	दीर्घ	नर	वात	उष्ण	शीर्षोदय
बृश्चिक	मंगल	Scorpio	ताम्र	विप्र	सौम्य	स्थिर	जल	तम	मूल	सम	उत्तर	मूंगा	दिन	गुप्तांग	दीर्घ	कीट	कफ	शीत	शीर्षोदय
धनु	गुरु	Sagittarius	पीला	क्षत्रिय	क्रूर	द्वि. स्व.	अग्नि	सत	जीव	विषम	पूर्व	पुखराज	रात्रि	जंघा	सम	नर पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
मकर	शनि	Capricor	भूरा	वैश्य	सौम्य	चर	पृथ्वी	रज	धातु	सम	दक्षिण	नीलम	रात्रि	घुटने	सम	जल पशु	वात	शीत	पृष्ठोदय
कुम्भ	शनि	Aquarius	काला	शूद्र	क्रूर	स्थिर	वायु	तम	मूल	विषम	पश्चि.	नीलम	दिन	पिंडली	लघु	जल चर	त्रिदोष	उष्ण	शीर्षोदय
मीन	गुरु	Pisces	पीला	विप्र	सौम्य	द्वि. स्वा.	जल	सतो	जीव	सम	उत्तर	पुखराज	दिन	पाँव दोनों	लघु	जल चर	कफ	शीत	उभयोदय

चर, शीर्षोदयादि राशियों का महत्त्व—उपरोक्त राशियों के **गुण, स्वभाव, तत्वादि** का फलित ज्योतिष में विशेष महत्त्व होता है। संक्षेप में, **चर** का अर्थ है चलित अर्थात् जिसमें कार्य जल्दी हो। यात्रा करें, तो शीघ्र वापिस आ जावे। स्थिर लग्न राशि में कार्य करने से स्थायी प्रभाव होता है। मकान, दुकान, व्यवसायादि में प्रवेश करे, तो बहुत वर्षों तक रहे। द्वि-स्वभाव राशि में मिला-जुला प्रभाव होता है। अर्थात् पहिला आधा भाग स्थिर प्रभाव दिखाता है, अन्तिम आधा भाग 'चर' का प्रभाव दिखाता है। इसी भान्ति धातु का अर्थ है, सोना, चाँदी, लोहा, भूमि, सवारी धनादि पदार्थ। **'मूल'** का अर्थ है, फल, वृक्ष, अनाजादि भोग्य पदार्थ। **'जीव'** का अर्थ प्राणी-स्त्री, पुत्र, पौत्र, भाई आदि। **उदाहरणार्थ**—मान लीजिए, सौम्य राशि **मीन** में यदि कोई सौम्य ग्रह (शुक्र) बैठा है, तो प्रश्नकर्त्ता को स्त्री, संतानादि का सुख लाभ होगा (क्योंकि मीन राशि जीव सम्बन्धी राशि है) और यदि कोई अशुभ या क्रूर ग्रह स्थित हो, तो स्त्री, संतानादि सुख सम्बन्धी हानि होगी। ऐसा कहना चाहिए। इसी भान्ति, राशियों की दिशा बताने का तात्पर्य यह है कि जिस राशि में कारक ग्रह बैठे हो, उस राशि की दिशा में भाग्योदय होता है। **उदाहरण** के लिए किसी की जन्म कुण्डली में लग्नेश एवं नवमेश ग्रह वृष राशि में हो, तो जातक का भाग्योदय जन्म से दक्षिण दिशा में होगा-ऐसा कहना चाहिए। जैसे-यदि **कन्या लग्न** हो, तो बुध लग्नेश, दशमेश होगा। द्वितीयेश व नवमेश शुक्र, बुध (लग्नेश) सहित नवम् (भाग्य) स्थान पर इकट्ठे हों, तो वृष राशि (दक्षिण) में भाग्योदय होगा।

अनिष्ट ग्रहों के उपायों सम्बन्धी विशेष विवरण

ज्योतिष शास्त्र में अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए अनेक प्रकार के उपाय बतलाए गए हैं। यथा सुनिश्चित संख्या में मन्त्र जाप, यथासामर्थ्य दान, हवन, जड़ी-बूटी धारण, ग्रह औषधि स्नान, व्रत-जप-तप करना, उचित नग एवं विधिपूर्वक ग्रह यन्त्र को धारण करना इत्यादि शास्त्रोक्त उपायों को अपना करके मनुष्य ग्रह जनित कष्टों का समाधान करके प्रतिकूल परिस्थितियों को भी स्वयं के अनुकूल एवं समृद्ध बना सकते हैं।

||||||||||||||||| सूर्य शान्ति के लिए उपाय |||||||||||||||||

सूर्यार्घ्य मन्त्र–

एहि सूर्य ! सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्पय ! मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

सूर्यार्घ्य का लघु मन्त्र–"ॐ घृणिः सूर्याय नमः"॥

सूर्य दान योग्य वस्तुएँ–गेहूँ, गुड़, लाल वस्त्र, घी, लाल वर्ण की सवत्सा गाय, सुवर्ण, माणक, ताम्र बर्तन, मिष्ठान्न, नारियल सहित लाल फल, ब्राह्मण भोजन एवं च सुनिश्चित पाठोपरान्त दशमांश हवन करना शुभ रहता है।

उपाय–(1) तांबे की अँगूठी में माणिक्य अथवा विधिवत् तैयार किया हुआ सूर्य-यन्त्र (ताम्र पत्र पर) धारण करें।

(2) खाना खाते समय सोने अथवा तांबे के चम्मच का प्रयोग करना तथा 11 रविवार तक सूर्य स्नान करना। जब जन्म या वर्ष कुण्डली में सूर्य अशुभ हो तो–

(3) 108 रविवार तक अथवा प्रतिदिन नियमित रूप से ताम्र बर्तन में शुद्ध जल, लाल चन्दन मिलाकर सूर्य को अर्घ्य देकर सूर्य स्तोत्र का पाठ करना शुभ है।

(4) रविवार को नमक से परहेज़ रखें। लवणरहित सादा भोजन करें। ग्यारह रविवार पर्यन्त केवल दही और चावल का सेवन करना चाहिए।

(5) जिन जातकों का सूर्य नीच का हो, उन्हें '**कार्तिक माहात्म्य**' का कार्तिकमास में नित्यप्रति पाठ करके तुलसी के पौधे पर दीपक प्रज्वलित करना चाहिए।

||||||||||| चन्द्रमा शान्ति के लिए उपाय |||||||||||

चन्द्रमा शत्रु एवं क्रूर ग्रह से दृष्ट, युत एवं नीच राशि (वृश्चिक), अथवा 4, 6, 8, 12वें भावों में स्थित चन्द्रमा अशुभ माना जाता है।

चन्द्र अर्घ्य मन्त्र–ॐ सोम् सोमाय नमः॥

चन्द्र की शुभता बढ़ाने के लिए दान योग्य पदार्थ :–चावल, सफेद चन्दन, शंख कर्पूर, दही, दूध घी, चीनी या मिश्री, क्षीर, श्वेत वस्त्र, सफेद चन्दन, चाँदी या कांसे का पात्र, चाँदी के वर्क लगी बर्फी। **बलान्वित चन्द्रमा** मन, बुद्धि, रक्त, स्त्री एवं माता, धन-सम्पदादि सुखों में वृद्धिकारक होता है।

उपाय–(1) चांदी के बर्तनों का प्रयोग करना एवं चारपाई के पायों में चांदी के कील ठुकवाना।

(2) सफेद मोतियों की माला अथवा चांदी की अँगूठी में मोती एवं चांदी का कड़ा धारण करना।

यदि कुण्डली में चन्द्र अशुभ हो, तो चन्द्रमा के अशुभत्व के निवारण हेतु उपाय–

(3) शीशे के गिलास में दूध, पानी आदि पीने से परहेज़ रखना शुभ होगा।

(4) पानी में कच्चा दूध मिलाकर चन्द्रमा का बीज मन्त्र पढ़ते हुए पीपल को डालना।

(5) लगातार 16 सोमवार व्रत रखकर सायंकाल सफेद वस्तुओं का दान करना चाहिए तथा पाँच छोटी कन्याओं को क्षीर सहित भोजन कराना चाहिए।

||||||||||| मंगल शान्ति के लिए उपाय |||||||||||

भौमशान्ति हेतु दान योग्य वस्तुएँ–गेहूँ, मसर की दाल, घी, गुड़, सुवर्ण, कनेर के पुष्प, लाल वस्त्र, लाल चन्दन, केशर, नारियल, सेब आदि लाल फल, मूंगा, सोना, ताम्र बर्तन, गुड़ से बने मीठे चावल या मीठी चापातियां, ब्राह्मण भोजन आदि करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है। मंगल ग्रह पराक्रम, साहस, भूमि, भाई, पुत्र, रक्त-बलादि का भी कारक है। यदि अशुभ हो तो रक्त दोष, भ्रातृ कष्ट, आकस्मिक दुर्घटना, वृथा विवाद करवाता है।

उपाय–जब कुण्डली में मंगल शुभ एवं योगकारक होता हुआ भी फल न करता हो तो निम्नलिखित उपाय शुभ होंगे–

(1) तांबे की अँगूठी में मूँगा धारण करना अथवा तांबे का कड़ा पहनना।

(2) मंगलवार को घर में गुलाब का पौधा लगाना तथा 108 दिन तक रात को तांबे के बर्तन में पानी सिरहाने रखकर घर में लगाए हुए गुलाब के पौधे को वहीं पानी डालना।

(3) मंगलवार का व्रत रखकर 27 मंगल किसी अपाहज को मीठा विशेषकर गुड़ से निर्मित भोजन खिलाना।

(4) नारियल को तिलक करके तथा लाल कपड़े में लपेटकर लगातार 3 मंगलवार चलते पानी में बहाएँ।

(5) लाल रंग की गाय या लाल वर्ण के कुत्ते को भोजन खिलाना शुभ होगा।

(6) मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। विशेषकर उन कन्याओं को जिनकी कुण्डली में मंगल मंगलीक योग बनकर विवाह में बाधा, विलम्ब उत्पन्न कर रहा हो–उन्हें मंगलागौरी का व्रत लगातार 7 मंगलवार रखना चाहिए।

||||||||||| बुध शान्ति के लिए उपाय |||||||||||

बुध ग्रह कुण्डली में ४, ६, ८, १२वें भावों में स्थित अथवा शुभ ग्रह द्वारा दृष्ट या युक्त बुध अशुभ फलदायक होता है। बुध शुभ हो, तो वाणी, बुद्धि, विद्या, संतान, व्यापार आदि में लाभकारक होता है। अशुभ बुध बुद्धि में विभ्रम, त्वचा रोग, वाणी विकार, सन्तान को कष्ट रहता है। बुध की शुभता बढ़ाने के लिए निम्नलिखित उपाय करने चाहिएँ।

बुध के दान की वस्तुएँ–मूंगी साबुत, चीनी, छोटी इलायचियाँ, षडरसों से युक्त भोजन, हरी सब्ज़ियां, पन्ना नग, कांस्य पात्र, हरे पुष्प, हरे फल, हाथी दाँत, हरा गर्म अथवा रेशमी वस्त्र, ब्राह्मण भोजन दक्षिणा सहित दान करना कल्याणप्रद रहता है।

उपाय–कुंडली में बुध शुभ होता हुआ भी फलकारक न हो तो निम्न उपाय शुभ होंगे–

(1) हरे रंग का पन्ना बुधवार को सोने की अँगूठी में धारण करना। हरे रंग के वस्त्रों को पहनना तथा हरे रंग के पर्दे लगाना शुभ होगा।

(2) बुधवार को चाँदी या कांस्य के गोल टुकड़े को हरे रंग के कपड़े में लपेट कर जेब में रखें या भुजाओं के साथ बांधें।

यदि बुध अशुभ हो तो–(3) हरे रंग के वस्त्र एवं हरे रंग की गाड़ी आदि का प्रयोग न करें।

(4) हरे रंग के वस्त्र (परिधान) किसी हिजड़े को बुधवार के दिन शुभ होगा।

(5) बुधवार के दिन 6 इलायची हरे रूमाल में लपेटकर अपने पास रखें तथा इसके पश्चात् एक इलायची व तुलसीपत्र का सेवन करना शुभ रहेगा।

|||||||||||| गुरु शान्ति के लिए उपाय ||||||||||||

गुरू की दान योग्य वस्तुएँ–पीले चावल, चने की दाल, हल्दी, शहद, पीला वस्त्र, पपीता, आम, केले आदि पीले फल, सवत्सा गाय, पीला कम्बल, बेसन के लड्डू, ताम्र एवं कांस्य पात्र, शक्कर, रामायण आदि धार्मिक ग्रंथ केशर इत्यादि वस्तुओं का दान शुभ रहता है।

उपाय–जन्म कुंडली में बृहस्पति शुभ व योगकारक होता हुआ भी शुभ फल प्रकट न कर रहा हो तो निम्नलिखित उपाय करें–

(1) सोने या चांदी की अँगूठी में तर्जनी अंगुली में तथा शुभ मुहूर्त्त में पुखराज धारण करें।

(2) 27 गुरुवार केसर का तिलक लगाना तथा केसर की पुड़िया पीले रंग के कपड़े या कागज़ में अपने पास रखना शुभ होगा।

गुरु के अशुभ प्रभाव के निवारण हेतु निम्नलिखित उपाय करें–

(3) चलते पानी में बादाम एवं नारियल पीले कपड़े में लपेटकर बहाना शुभ होगा।

(4) पीपल के वृक्ष को गुरुवार एवं शनिवार को गुरु का बीज मन्त्र एवं गुरु गायत्री मन्त्र पढ़ते हुए जल दें।

(5) वृद्ध ब्राह्मण को यथाशक्ति पीली वस्तुएँ, जैसे–चने की दाल, लड्डू, पीले वस्त्रों, शहदादि का दान करना चाहिए।

|||||||||||| शुक्र शान्ति के लिए उपाय ||||||||||||

शुक्र दान की वस्तुएँ–चाँदी, चावल, मिश्री, दूध एवं दूध से निर्मित क्षीर, बर्फी आदि, श्वेत चन्दन, श्वेत गाय, श्वेत पुष्प, श्वेत वस्त्र, श्वेत फल एवं सुगन्धित पदार्थों आदि का दान करने से शुक्र की शुभता में वृद्धि होती है।

उपाय–कुंडली में यदि शुक्र शुभ एवं योगकारक होता हुआ भी फलीभूत न हो रहा हो तो निम्न उपाय कल्याणकारी रहेंगे–

(1) चाँदी की कटोरी में सफेद चन्दन, मुश्कपूर, सफेद पत्थर का टुकड़ा रखकर सोने वाले कमरे में रखे चन्दन की अगरबत्ती जलाना शुभ होगा।

(2) घर में तुलसी का पौधा लगाना, सफेद गाय रखना, सफेद पुष्प लगवाना शुभ होगा तथा क्रीम रंग के रेशमी कपड़े में चाँदी के चौरस टुकड़े पर शुक्र यन्त्र खुदवाकर विधिपूर्वक अपने पास रखें।

शुक्र अशुभ प्रभावी होने की स्थिति में नीचे लिखे उपाय कल्याणकारी होंगे–

(3) शुक्रवार को श्री दुर्गा पूजन, 5 कन्या पूजन उन्हें खीरादि श्वेत वस्तुएँ देना तथा गौशाला में शुक्रवार से शुरु करके सात दिन तक गाय को हरा चारा, शक्कर एवं चरी डालना।

(4) सफेद रंग के पत्थर पर चन्दन का तिलक लगाकर चलते पानी में बहा देना या चांदी के टुकड़े पर शुक्र यन्त्र खुदवा कर रेशमी क्रीम रंग के वस्त्र में लपेट कर शुक्रवार को नीम के वृक्ष के नीचे दबाना।

|||||||||||| शनि शान्ति के लिए उपाय ||||||||||||

शनि की दान योग्य वस्तुएँ–उड़द, काले तिल, काले चने, सरसों का तेल, काली गाय, काला वस्त्र, लोहे का बर्तन, काले जूते, भैंस, कुलथी, कस्तूरी, नीलम, नारियल, काले एवं नीले पुष्प, ग़रीब वृद्ध व्यक्ति को भोजन कराना शुभ होता है। शनि का दान सायंकाल को करना प्रशस्त माना जाता है।

उपाय–शनि शुभ होता हुआ भी शुभफल प्रकट न कर रहा हो तो निम्न उपाय शुभ होंगे–

(1) घर में नीले रंग के पर्दे तथा नीले रंग की चादरों का प्रयोग करना और स्वयं भी बहुधा नीले रंग के वस्त्रों का प्रयोग करना शुभ होगा। जब कुण्डली में शनि नीच या अरिष्टकर फल प्रकट कर रहा हो तो निम्न उपाय करें–

(2) स्टील या लोहे की कटोरी में तेल का छाया-पात्र करके तेल पाँच शनिवार तक आक के पौधे पर अथवा **'शनि मन्दिर'** में डालना शुभ होगा। 5वें शनिवार को तेल चढ़ाने के बाद तेल वाली कटोरी को वही दबा देना या वही चढ़ा देना शुभ होगा। तेल चढ़ाते समय शनि का बीज मन्त्र पढ़ें।

(3) अष्टम भाव में शनि अशुभ एवं रोगकारक हो, तो संकटनाशन श्री गणेशस्तोत्र का पाठ एवं श्री गणेश चतुर्थी का व्रत रखना चाहिये।

|||||||||||| राहु शान्ति के लिए उपाय ||||||||||||

राहु दान योग्य वस्तुएँ–सप्तधान्य (सतनाजा), गोमेद, सीसा, काला घोड़ा, तिल, तैल, काले पुष्प, नीला वस्त्र, उड़द, खड्ग (चाकू इत्यादि), कम्बल, बिल पत्र, मौसमी फल, कस्तूरी आदि। राहु का दान रात्रि कालीन करना प्रशास्त माना जाता है।

उपाय–अशुभ राहु या राहु की महादशा या अन्तर्दशा में निम्नलिखित उपाय करें–

(1) काले व नीले वस्त्र पहनने से परहेज़ करें तथा चाँदी की चेनी व लॉकेट पहनना शुभ होगा।

(2) चापाती को खीर लगाकर कौओं को एवं काले रंग की गाय को खिलाएँ।

(3) काले तिल, कच्चा कोयला, नीले रंग के ऊनी कपड़े में बाँधकर शनिवार अथवा राहु के नक्षत्रों में घर के आंगन में दबाना शुभ होगा। अथवा नीले वस्त्र के बांधे रूमाल को राहु मन्त्र पढ़ते हुए जल में प्रवाह कर देवें।

|||||||||||| केतु शान्ति के लिए उपाय ||||||||||||

केतु-दान योग्य, वस्तुएं–लहसुनिया, लोहा, बकरा, नारियल, तिल, सप्तधान्य, धूम्र (धुएँ जैसे) वर्ण का वस्त्र, कस्तूरी, लौह, चाकू, कपिला गाय, दक्षिणा सहित। केतु का दान रात्रिकालीन प्रशस्त माना जाता है।

उपाय–(1) केतु की शान्ति के लिए श्री गणेश चतुर्थी का व्रत रखें तथा श्रीगणेश पूजन तथा लड्डुओं का भोग लगाना शुभ होगा।

(2) काले वस्त्र में बाँधकर काले व सफेद तिल चलते पानी में बहाना।

(3) रंग-बिरंगी (चितकबरी) गाय की सेवा करना एवं रंग-बिरंगे कुत्ते को दूध व चापाती (Bread) डालना। **शास्त्रोक्त एवं लाल किताब सम्बन्धी** अधिक जानकारी एवं उपायों के लिए हमारी पुस्तक **'अरिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय एवं टोटके'** मंगवाकर पढ़ें।

सन्तान सुख बाधाकारक योग एवं निवारण

ज्योतिष शास्त्र में संतान सम्बन्धी विशेष योग एवं विचार के लिए पति-पत्नी दोनों की वृहद-जन्मपत्रियों का होना आवश्यक है। दोनों की जन्मकुंडली, चंद्रकुंडली के पंचम स्थान से विचार किया जाता है। इसके अतिरिक्त ग्रहमैत्री, नवमांश, चलित की स्थिति, सप्तमांश कुंडली, पंचम भावस्थ ग्रह, पंचमेश एवं पंचम भावस्थ ग्रह के राशिस्वामी आदि ग्रहों एवं उनकी दृष्टियों अष्टकवर्ग में ग्रहों के बलाबल का विचार करना आवश्यक होता है।

विशेष रूप से बृहस्पति को संतानकारक ग्रह माना गया है। पंचम भाव, पंचमेश, ग्रह एवं बृहस्पति का जन्म कुंडली में स्थान आदि से सन्तान सम्बन्धी विशेष योग आदि का निर्णय किया जाता है। ज्योतिषशास्त्रीय दृष्टि से नीचे दिए गए योग जातक/जातिका की जन्मकुंडली में हो तो सन्तान योग बनता है।

जन्म कुण्डली में पितृ आदि दोष

किसी जातक की जन्म कुण्डली के विश्लेषण से कई बार अनुभव में आता है कि यदि किसी जातक की कुण्डली में पितृ दोष विद्यमान् हो तो कुण्डली में चाहे कितने ही अच्छे ग्रह योग क्यों न हों तो भी उनका पूर्णफल नहीं मिल पाता। जातक को मातृ-पितृ आदि दोषों के कारण अनेक प्रकार के शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक कष्टों का सामना रहता है। परिवारिक मतान्तर एवं विरोध, आर्थिक तंगी, स्त्री से अनबन, पुत्र आदि सन्तति का अभाव, कार्य व्यवसाय में मन्दी आदि अनेक प्रकार के अवरोधों का सामना रहता है। मातृ-पितृ शान्ति के पश्चात् ही आर्थिक एवं घरेलु परेशानियों से छुटकारा, परिवार में समरसता एवं पुत्रादि सन्तान सुखों की प्राप्ति होती है।

(1) जब लग्न के प्रथम भाव में सूर्य-राहु, सूर्य-शनि अथवा चन्द्र-राहु का योग बना हो तो जातक को पितृ दोष के कारण शारीरिक एवं मानसिक कष्टों का सामना रहता है। यदि लग्नेश ग्रह छटे, सप्तम आठवें या बारहवें भाव में राहु युक्त होकर पड़ा हो तो भी पितृ-दोष के कारण शरीरकष्ट या दुर्घटना आदि का भय होता है।

(2) कुण्डली के दूसरे भाव में गुरू-राहु, चन्द्र-राहु, शनि-चन्द्र, सूर्य-राहु, सूर्य-शनि, बुध-शुक्रादि विरूद्ध ग्रहों अथवा द्वितीयेश राहु युक्त होकर 6, 7, 8 या 12वें भाव में हो, तो जातक को पितृदोष के कारण परिवारिक मतभेद, आय कम व खर्चों की अधिकता एवं आर्थिक परेशानियों का सामना रहेगा। इसी भान्ति किसी भी भाव में अशुभ एवं शत्रु ग्रह पड़े हों एवं उस भाव का स्वामी भी राहु, शनि, मंगल आदि क्रूर ग्रहों से युक्त होकर पड़ा हो तो जातक को उस भाव के विषय में सुख की कमी या अभाव होगा। उस अभाव या कमी का मुख्य कारण पितृ श्राप या पितृ दोष माना जाता है। अन्य सभी भावों में पितृ-दोष के फल के बारे में हमारी प्रकाशित पुस्तक **'अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय'** नामक पुस्तक देखें।

पितृ आदि दोषों के कारण सन्तानाभाव

आचार्यों ने कुण्डली में सन्तान अभाव या सन्तान कष्टों का होना के कुछ प्रमुख कारणों में पितृ-मातृ श्राप या पितृ-दोष आदि दोषों को भी प्रमुख कारण माना है।

(1) किसी जातक की जन्म कुण्डली में मातृ-पितृ आदि अशुभ योग तभी प्रकट होते हैं जब उस जातक द्वारा इह जन्म में अथवा पिछले जन्म में अपने पितरों का विधिवत् श्राद्ध, तर्पण एवं ब्राह्मण भोजन, दान दक्षिणा आदि न किए जा सके हों।

(2) जान-बूझकर अथवा अज्ञानतावश अपने माता-पिता, दादा-दादी एवं पूज्यजनों की अवमानना अर्थात् उपेक्षा करना।

(3) साँप, नाग आदि भूचरों की हत्या करना या करवाना।

(4) अपने इष्ट देवता, कुलदेवी-देवताओं तथा अपनी कुल मर्यादाओं को विस्मृत कर भौतिक सुखों में आसक्त होना।

(5) अण्डा, माँस-मदिरा आदि तामसिक पदार्थों का सेवन करना तथा अपने पारम्परिक धर्म से विमुख होना।

(6) संक्रान्ति, एकादशी, अमावस, पूर्णिमा दशहरा, दिवाली एवं नवरात्रों आदि पावन पर्वों के दिन स्त्री प्रसंग करना।

(7) पर्व तिथियों पर अपने इष्ट देवी-देवताओं की पूजार्चन, मन्त्र जप एवं यज्ञ-हवनादि की आहुतियाँ देना तथा पितरों के निमित्त पिण्डदान, श्राद्ध कर्म एवं दक्षिणा सहित विधिवत् ब्राह्मण भोजन करवाने से पितृ शान्ति होती है। ध्यान शान्तिकृत पितर अपने पुत्र-पौत्र द्वारा किए गए तिल, जलादि द्रव्यों से तर्पणादि से तृप्त होकर अपने परिवार को दीर्घायु, पुत्रसन्तति सुख, धन-विद्या सौभाग्य सुखों का आशीर्वाद देते हैं-

आयु प्रजां धनं विद्यां स्वर्ग मोक्षं सुखानि च। प्रयच्छन्ति तथा राज्यं प्रीता नृणां पितामहाः।।

प्रेत श्राप के कारण सन्तान हानि

कई बार ज्ञात-अज्ञात कारणों से विकट परिस्थितिवश जीव की सद्गति न होने से प्रेत की अवज्ञा एवं श्राप से सन्तान हानि हो जाती है। जन्म कुण्डली में ग्रहों के संकेत निम्न प्रकार होते हैं।

(1) लग्न भाव में राहु एवं पंचम भाव में शनि हो तथा पंचमेश (पंचम भाव का कारक) गुरू अष्टम भाव में हो तो भी प्रेत श्राप से सन्तान कष्ट या अभाव होता है-

लग्नो राहु समायोगे पुत्रस्थे भानुनन्दने। कारके नाथः अष्टमस्थे प्रेतशापात्सुतक्षयः।।

(2) कुण्डली के पंचम भाव में शनि–रवि और सप्तम भाव में क्षीण चन्द्र हो, लग्न भाव में राहु तथा बारहवें भाव में गुरू हो तो **प्रेत श्राप** के कारण वंशवृद्धि में बाधाएं होती हैं।

(3) यदि पंचम भाव में शनि–सूर्य हों तथा क्षीण चन्द्रमा सप्तम में हो एवं लग्न में राहु तथा व्यय भाव में गुरू हो तो प्रेत श्राप के कारण सन्तान अभाव होता है–

पुत्रस्थितौ मन्दसूर्यो क्षीण चन्द्रस्तु सप्तमे। लग्ने राहुः व्यये जीवो प्रेतशापात्सुतक्षयः।।

(4) लग्न में शनि और पंचम भाव में राहु हो और अष्टम भाव में सूर्य हो तथा व्यय भाव में मंगल हो तो भी प्रेतशाप से पुत्र हानि होती है।

लग्नभावे मन्दः सुते राहु, रन्ध्रेभानु समान्विते। व्यये भौमः समायोगे प्रेतशापात्सुतक्षयः।।

(5) यदि लग्न में राहु तथा मंगल से युक्त या दृष्ट हो अथवा शनि, पंचम भाव में हो तो प्रेत शाप से पुत्र हानि होती है।

सर्प के शाप से पुत्र हानि के योग

शास्त्रनुसार सर्प को मारने से सर्प श्राप का दोष लगता है। सर्प दोष के कारण पुत्र सन्तान की हानि होती है।

(1) **पुत्रेशे राहु सँयुक्ते पुत्रस्थे भानुनन्दनः।**
चन्द्रदृष्टे युते वाऽपि सर्पशापात्सुतक्षयः।।

अर्थात् पंचमेश राहु से युक्त हो और पंचम भाव में शनि, चन्द्रमा से दृष्ट या युक्त हो तो सर्पशाप से सन्तान नष्ट होती है।

(2) **कारके राहु सँयुक्ते पुत्रेशः बलविवर्जिते।**
विलग्नेश भौमयुते सर्पशापात्सुत क्षयः।।

अर्थात् पुत्र कारक गुरु राहु से युक्त हो तथा पंचमेश निर्बल हो और लग्नेश ग्रह मंगल से युक्त हो, तो सर्पशाप के कारण सन्तान नष्ट होती है।

(3) पंचम भाव में राहु यदि मंगल से दृष्ट अथवा युक्त हो अथवा पंचम स्थान में मेष या बृश्चिक राशि पर राहु की स्थिति हो, तो सर्पशाप से पुत्र सन्तति की हानि होगी।

(4) **लग्नेश राहु सँयुक्ते, पुत्रेश भौमसँयुक्ते।**
कारकः राहु संदृश्टे सर्पशापात्सुतक्षयः।।

अर्थात् लग्नेश राहु से युक्त हो पंचमेश ग्रह मंगल से युक्त हो, पुत्रकारक गुरू राहु से युक्त हो, तो सर्प के शाप से सन्तान की हानि होती है।

(5) यदि पंचम भाव में मेष या बृश्चिक राशि का राहु व बुध दोनों ग्रह बैठे हों अथवा पंचमस्थ राहु पर बुध की दृष्टि पड़ रही हो, तब सर्प दोष वश सन्तानोत्पति में बाधा पड़ती है।

(6) गुरु मंगल से युक्त हो, लग्न में राहु हो और पंचमेश त्रिक्भाव (6, 8 या 12वें) भाव में हो तो सर्प के शाप से सन्तान हानि होती है।

(7) पंचम भाव में राहु या केतु से युक्त हो, पंचमेश (पंचम भाव का स्वामी) भी बलहीन होकर पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो सर्प दोष से पुत्र का क्षय होगा–

राहु–केतु युते दृष्टे पंचमे बलवर्जिते।
तदीशे वा तथा प्राप्ते सर्पदोषात्सुतक्षयः।। जातक पारिजात

➡ उपाय हेतु नाग मन्दिर में दूध व चीनी, आटा, फल व वस्त्रों का दान करना तथा हर सोमवार, पंचमी तिथि एवं चतुर्दशी के दिन भगवान् शिवलिङ्ग का बिल्व–पत्र सहित दूध का अभिषेक और नाग स्तोत्र का पाठ करना चाहिए और अधिक उपायों हेतु '**सुतभाव प्रकाश**' पुस्तक का अवलोकन करना चाहिए।

पितृदोष (या पितृशाप) से पुत्र हानि के योग

(1) किसी जातक की जन्म कुण्डली के लग्न में पापग्रह हो, पँचमेश राहु से युक्त हो, अष्टम भाव में सूर्य स्थित हो और शनि पंचम भाव में स्थित हो तो पितृशाप से पुत्र की हानि होती है।

लग्नात् अष्टमगे भानु पुत्रस्थे भानुनन्दने।
पुत्रेशे राहु संयुक्ते लग्ने पापे सुतक्षयः पितृशापात्।।

(2) यदि गुरू सिंह राशि में हो और पंचम भाव एवं लग्न भाव में पाप ग्रह स्थित हो तथा पंचमेश ग्रह सूर्य या राहु से युक्त हो, तो भी पितृ शाप से पुत्र हानि होती है।

भानुराशि स्थिते जीवे पुत्रेषु भानुसंयुते। पुत्र लग्ने पापयुते पितृशापात्सुतक्षयः।।

(3) यदि दशम भाव का स्वामी पंचम स्थान में हो और पंचमेश भी पंचम स्थान में हो तथा लग्न या पंचम भाव में राहु आदि पाप ग्रह भी हो तो भी पितृशाप से पुत्र सन्तति की हानि होती है। उदाहरण स्वरूप संलग्न कुण्डली देखें–इसमें कर्क लग्न उदित है। दशमेश मंगल पंचम भाव में राहु–युक्त होकर स्थित है। प्रस्तुत जन्म कुण्डली के जातक के यहाँ विवाह के 11 वर्ष तक भी पितृदोष के कारण सन्तति सुख प्राप्त नहीं हुआ।

उदा.कुं.18 दिसम्बर, 1974 ई. 9-45 PM, जालन्धर

5 | श. 3 | 2 के. | 6 | 4 | 7 | 1 | 8 मं. रा. | 10 चं. | 12 | 9 सू.बु.शु. | 11 गुरु

(3b) दशम भाव का स्वामी मंगल हो और वह पंचमेश से युक्त हो, पंचम भाव में कोई अन्य राहु आदि क्रूर ग्रह भी हो या क्रूर ग्रह की दृष्टि हो, तो भी पितृशाप से पुत्र हानि जानें। उदाहरण कुण्डली नियम (3) वाली देखें।

(4) यदि नवम भाव में पाप ग्रह हों और पंचमेश शनि से युक्त हो तथा गुलिक* त्रिकोण में हो तो पिता के शाप से पुत्र सन्तति की हानि जानें।

नवमे पापसंयुक्ते मन्दयुक्ते सुताधिपे।
त्रिकोणे मान्दि संयुक्ते पितृदोषात्सुतक्षयः।। (जातक पारिजात्)

*__गुलिक__–गुलिक एवं मान्दी एक ही बात है। दिनमान के आठ भाग करने पर प्रत्येक वार को गुलिक का प्रारम्भ होता है। प्रत्येक वार में भिन्न–भिन्न घड़ियों के बाद गुलिक या मान्दी का प्रारम्भ होता है। जैसे रविवार को 26 घड़ी बाद, सोमवार को 22, मंगलवार को 18, बुध को 14, गुरु को 10, शुक्र को 6 एवं शनिवार को सूर्योदय से 2 घड़ी बाद गुलिक (मान्दी) होगा। प्राचीन आचार्य गुलिक को भी एक प्रकार से उपग्रह मानते हैं।

लग्नेशे दुर्बले पुत्रे पुत्रेशे भानुसंयुते।
पुत्रे लग्ने वा पापयुते दृष्टे वा, पितृशापात्सुतक्षयः।।

पितृ दोष के कारण सन्तानऽभाव कुण्डली
28 अग., 1933 ई.
10-55 PM जालन्धर

(5) यदि किसी लग्न का स्वामी नीच, अस्तादि होकर पंचम भाव में हो तथा पंचमेश सूर्य से युक्त एवं पंचम और लग्न भाव में पापग्रह हों अथवा लग्न पाप ग्रह से दृष्ट हो तो भी पितृदोष के कारण सन्तान अभाव होता है। साथ में दी गई कुण्डली का जातक उच्च प्रतिष्ठित संस्थान से रिटायर्ड प्रिंसिपल हैं। यह चार भाईयों में सबसे बड़े हैं। इनके यहाँ 50 वर्ष पर्यन्त वैवाहिक जीवन के बाद भी कोई सन्तान नहीं हुई। नियम (5) के अनुसार लग्नेश शुक्र पंचम भाव में नीच राशिस्थ होकर बैठा है। साथ में गुरू भी शत्रु राशिगत है। पंचमेश बुध सूर्य के साथ अस्तंगत होकर अपने भाव से द्वादशस्थ होकर पड़ा है। लग्न पर पापग्रह मंगल की आठवीं दृष्टि पड़ रही है। इस कारण जातक के यहाँ पितृ दोष के कारण संन्तानऽभाव रहा।
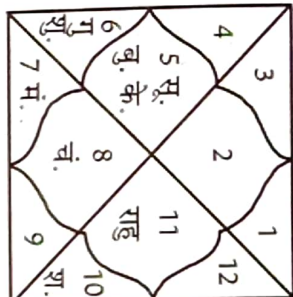
(6) यदि सूर्य पंचम भाव का स्वामीी होकर त्रिकोण भावों (5, 9) में हो और वह शनि भौमादि पाप ग्रहों से युक्त हो तथा वह (पंचमेश) पाप ग्रहों के मध्य (आक्रान्त) हो तो पितृशाप से पुत्र हानि होती है।

(7) यदि व्यय स्थान का स्वामी लग्न में हो और आठवें स्थान का स्वामी (अष्टमेश) पंचम भावस्थ हो तथा दशम् स्थान का स्वामी अष्टम भाव में हो तो पितृ श्राप से पुत्र-सन्तान की हानि होगी।

व्ययेशे लग्न भावस्थे रन्ध्रेशे पुत्रराशिगे।
पुत्रस्थानाधिपे रन्ध्रे पितृशापात्सुत क्षयः।।

(8) दशम स्थान का स्वामी पंचम भाव में हो और पंचमेश भी पंचम भाव में हो तथा लग्न और पंचम भावों में पाप ग्रह स्थित हों तो भी पितृशाप से पुत्र हानि होती है।

(9) (क) तुला अर्थात् नीच राशि का सूर्य पंचम भाव में, पाप ग्रहों से आक्रान्त हो तथा नवांश कुं. में सूर्य शनि की राशि में हो तो पितृशाप से पुत्र हानि होगी।

(ख) नीच राशि का सूर्य पंचम भाव में (राहु या शनि के साथ (युक्त) हो, तो पंचम भाव पाप ग्रह मध्य आक्रान्त होने से पितृदोष के कारण सन्तान कष्ट होता है।

पुत्रस्थानगते भानौ नीचे, मन्दांशकः स्थिते।
पार्श्वेयोः क्रूर सम्बन्धे पितृशापात्सुतर्क्षयः।।

(10) यदि दशम स्थान का स्वामी दुःस्थान (6, 8, 12) में स्थित हो और पुत्रकारक ग्रह गुरु नीचस्थ या पापग्रह की राशि में हो तथा लग्नेश पापग्रह होकर पंचम स्थान में हो तो भी पितृश्राप से पुत्र कष्ट या अभाव होता है।

पितृस्थानाधिपे दुःस्थे कारके पापराशिगे।
सः पापे पुत्र लग्नेशे पितृशापात्सुत क्षयः।।

मातृश्राप के कारण सन्तान हानि

जातक द्वारा अपनी माता को या माता तुल्य स्त्री के मन को दुखाने या परेशान करने एवं उनकी बद-दुआओं के कारण मातृ-दोष होता है। इसी पुस्तक में दिए गए उपायों का सम्पादन करने से सन्तति लाभ प्राप्त करना सम्भव है। आगामी पृष्ठों पर मातृ श्राप सम्बन्धी कुछ प्रमुख ज्योतिषीय योग दिए जाते हैं-

(1) पंचम भाव का स्वामी छठे, आठवें या बारहवें भाव में हो, लग्न का स्वामी ग्रह अपनी नीच राशि में हो तथा चन्द्रमा भी नीच राशिस्थ हो तो जातक को मातृश्राप के कारण पुत्र सन्तान हानि होती है।

सन्तानऽभाव उदा. कुंडली
16-1-1985 ई.
टा. 19-10 PM अनुराधा
जालन्धर

पुत्र स्थानाधिपे दुःस्थे चन्द्रे पापांशयुते।
लग्ने पुत्रे पापयुते मातृशापात्सुतक्षयः।।

उदाहरणार्थ, साथ दी गई जन्म कुण्डली को दस वर्ष विवाह के पश्चात् भी 2018 ई. तक सन्तान सुख नहीं प्राप्त हुआ। कुण्डली में पंचमेश मंगल अष्टमभाव में शत्रु राशिगत है। लग्नेश तथा चन्द्रमा दोनों नीच राशिस्थ हैं।

(2) शनि लाभ स्थान में हो तथा चतुर्थ स्थान में पाप ग्रह हों और पंचम भाव में चन्द्रमा नीच राशिस्थ हो तो मातृशाप से पुत्र हानि होती है-

लाभे भानुसुतयोगे मातृस्थाने शुभेतरे।
नीचे पंचमगे चन्द्रे मातृशापात्सुतक्षयः।
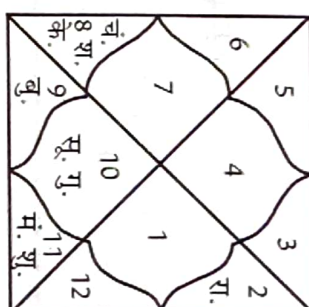
(3) छठे, आठवें भाव का स्वामी लग्न भाव में हो तथा चतुर्थ भाव का स्वामी व्यय स्थान में हो और चन्द्र एवं पुत्रकारक गुरू पाप ग्रहों से युक्त हो तो मातृ शाप से पुत्र हानि होती है-

षष्ठाष्टमेशी लग्नस्थाने व्ययेमांत्राधिपे सुते। चन्द्र जीवे पाप युते मातृशापात्सुतक्षयः।।

(4) यदि चन्द्रमा पंचमेश होकर नीच राशि में हो एवं पाप ग्रहों के मध्य हो तथा चतुर्थ और पंचम भावों में पाप ग्रह हों, तो भी मातृशाप से पुत्र सन्तति की हानि होती है।

(5) सुख भाव में पाप ग्रह हो और पंचमेश ग्रह शनि से युक्त हो तथा अष्टम व व्यय भावों में पाप ग्रह हों तो भी मातृ दोष से पुत्रहानि होती है.

(6) यदि मंगल चतुर्थेश होकर शनि, राहु से युक्त हो और सूर्य, चन्द्रमा-ये दोनों पंचम में या दोनों लग्न में एक साथ हों तो मातृ शाप से सन्तान हानि होती है।

(7) अष्टमेश नवम भाव में हो और पंचमेश अष्टम स्थान में हो तथा चन्द्रमा एवं चतुर्थेश दुःस्थानों 6, 8, 12वें स्थान में स्थित हो तो मातृशाप से पुत्र हानि होती है।

उपाय-(क) गायत्री मन्त्र का विधिपूर्वक जप 11000 से लेकर सवा लाख की सँख्या तक अपनी सामर्थ्यानुसार करवाएँ। तत्पश्चात् ब्राह्मण-ब्राह्मणी को क्षीर एवं दक्षिणा सहित

भोजन करवाएँ। दक्षिणा में वस्त्र, फल तथा चाँदी की कटोरी चावल भरकर भी देवें। इसके अतिरिक्त पुस्तक के उत्तरार्ध भाग में लिखे गए उपायों का अवलोकन करें।

(ख) किसी ब्राह्मण द्वारा **श्री सूक्त एवं पुरूषसूक्त 21 पाठ** करवाकर तथा पाठोपरान्त **अश्वत्थ (पीपल) की 21 बार प्रदक्षिणा करके पूजन** करना चाहिए। इससे पितृ एवं स्त्री शाप से मुक्ति होकर सुपुत्र लाभ होता है।

ब्राह्मण के शाप से सन्तान हानि योग

जिस मनुष्य ने धन, पद, विद्या या बाहुबल के अहंकारवश इस जन्म में या पिछले जन्म में तिरस्कार किया हो, उस दोष रूपी ब्राह्मण शाप से सन्तान सम्बन्धी कष्ट होता है।

(1) सुतभाव को कोई पाप ग्रह देखता हो तो देवशाप से पुत्र सन्तति की हानि कहे। तथा सुतभाव षष्ठेश (छटे भाव के स्वामी) से युक्त या दृष्ट हो तो ब्राह्मण के शाप से पुत्र हानि जानें–

पाप ग्रहेण संदृष्टे देवशापात्सुतक्षयः। षष्ठाधिपयुते दृष्टे विप्रशापात्सुतक्षयः।। जातक पारि.

(2) नवम् का स्वामी पँचम में हो और पंचम भाव का स्वामी अष्टम में हो तथा गुरू, मंगल, राहु ग्रह भी अष्टम भाव में हो तो भी ब्राह्मण के शाप से पुत्र सन्तति का क्षय होता है।

(3) नवमेश ग्रह नीच राशिगत हो तथा व्ययेश राहु से युक्त या दृष्ट होकर पंचम भाव में हो तो भी ब्राह्मण के शाप से पुत्र सन्तति की हानि होती है।

धर्माधिपे नीचगते व्ययेशे पुत्रराशिगे। राहु युक्ते क्षिते वापि ब्रह्मशापात्सुतक्षयः।।

(4) यदि राहु गुरु की राशि (धनु या मीन) में स्थित हो तथा गुरु, मंगल व शनि ग्रह पंचम भाव में हो तथा नवमेश ग्रह अष्टम में हो तो ब्राह्मण के शाप से पुत्र हानि होती है।

गुरु क्षेत्रे यदा राहुः सुते च जीवऽगांरक सौरिश्च। धर्म स्थानाधिपः मृत्युस्थे ब्रह्मशापात्सुतक्षयः।।

(5) पाप युक्त शनि लग्न में हो तथा नवम भाव में राहु हो और व्यय भाव में गुरू हो तो भी ब्राह्मण शाप से पुत्र सन्तति की हानि होती है।

(6) यदि गुरू शनि के नवांश में स्थित होकर मंगल, शनि से युक्त हो तथा पंचमेश व्यय भाव में हो तो ब्राह्मण के शाप के कारण पुत्र संतान की हानि होती है।

उपाय–ब्राह्मण शाप के दोष की शान्ति के लिए चान्द्रायण व्रत अथवा 16 सत्यनारायण व्रत रखकर उद्यापन करे। उद्यापन के दिन दम्पत्ति सुपात्र ब्राह्मण को बछड़े वाली गाय का दान पंचरत्न, वस्त्र, फल, भोजन, दक्षिणा सहित करें। इसके अतिरिक्त पंचमस्थ राशि स्वामी ग्रह के वार तथा पंचमेश ग्रहस्थित राशि के वार को गौशाला में गौओं की सेवा हेतु चारा, चापातियां, गुड़ादि का दान करना चाहिए।

कुल देवता के दोष से सन्तान हानि के योग

(1) यदि लग्न भाव पाप ग्रह से दृष्ट हो तथा शनि छटे भावस्थ होकर सूर्य, चन्द्र एवं बुध ग्रहों को विशेष दृष्टि से देखता हो तो कुलदेवता के शाप से पुत्र हानि होती है।

(2) यदि पंचमेश पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो अथवा पंचमेश षष्ठेश से युक्त या दृष्ट हो तो कुल देवता के शाप से पुत्र हानि हो।

(3) यदि पंचमेश गुरू से युक्त और सप्तमेश मंगल से युक्त हो तो कुल देवता के कोप से सन्तति की हानि होती है।

(4) यदि पंचमेश मंगल से युक्त होकर षष्ठेश से युक्त या दृष्ट हो तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो गुप्त शत्रु के षडयन्त्र से सन्तान हानि होती है।

(5) सूर्य शनि की राशि (मकर या कुम्भ) में बैठकर पाप ग्रहों से युत या दृष्ट अथवा लग्न में पापग्रह हों तो भी दैवीय प्रकोप से सन्तान हानि होती है।

(6) शनि व बुध छठे भाव में हों तथा लग्नस्थ सूर्य, चन्द्र पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो भी कुल देवता अर्थात् दैवीय शाप के कारण सन्तान कष्ट होता है।

विशेष उपाय

सन्तान सम्बन्धी अनिष्ट ग्रहों का निर्णय करने के उपरान्त ही निम्न उपायों में से चयन करके शुभ मुहूर्त्त एवं शुभ मास आदि में विधिपूर्वक व्रत-अनुष्ठान, मंत्र जपादि करना विशेष कल्याणकारी रहेगा।

1. **सन्तान गोपाल स्तोत्र**, श्री गोपाल सहस्त्रणाम एवं **श्री हरिवंश पुराण** का विधिपूर्वक पाठ करके सवत्सा गाय का दान करना।
2. पुत्रदा एकादशी व्रत पति-पत्नी द्वारा करना।
3. सोमवती अमावस्या एवं अमावस्या को तीर्थ स्नान, गंगा-प्रयागादि में स्नानोपरान्त पितृ-तर्पण, ब्राह्मण भोजन एवं अन्य शुभ कार्य करने का विधान है।
4. श्री महालक्ष्मी व्रत (भाद्र. शु० अष्टमी) करना, विधिपूर्वक 16 दिनों का अनुष्ठान करके श्री महालक्ष्मी जी का पूजन करना सन्तान सुख में वृद्धि करता है।
5. वंशवृद्धि के लिए श्री वंशकवच एवं स्तोत्र का पाठ विधिपूर्वक करना।
6. सन्तान रक्षा एवं वृद्धि के लिए सन्तान गणपति स्तोत्र का पाठ तथा श्री गणेश चतुर्थी व्रत करना।
7. वेदोक्त श्री चरणव्यूह का पाठ भी शुभ रहता है।
8. सन्तान प्राप्ति हेतु षष्ठी देवी स्तोत्र का पूजन एवं नित्य पाठ करना शुभ है।

इसके अतिरिक्त विशेष जानकारी के लिए हमारी पुस्तक **'अनिष्ट ग्रह और उपाय'** तथा **'सुतभाव-प्रकाश'** का अवलोकन करें एवं अपनी समस्या के लिए समाधान हेतु विशेष परामर्श प्राप्त करें।

सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, गुरुपुष्य-आदि योग-वि. संवत् २०८२ (सन् 2025-2026 ई.)

दैनिक जीवन में आने वाले महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए शीघ्र ही सर्वांगशुद्ध मुहूर्त का अभाव हो, तथा इन शुभ मुहूर्त्तों की प्रतीक्षा में अधिक दिनों तक रुका न जा सकता हो, तो इन सुयोग वाले मुहूर्त्तों को सरलता से ग्रहण किया जा सकता है। इनसे प्राप्त होने वाले अभीष्ट शुभ फल के विषय में संशय नहीं करना चाहिए। ये सुयोग हैं—सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, रवियोग, सिद्धि, रत्नांकुर एवं प्रशस्तादि योग। **'यथा नाम तथा गुणा'** उक्ति के अनुसार सर्वाङ्गीण सिद्धिकारक हैं।

(1) सर्वार्थ सिद्धि योग—महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक कार्य जैसे—कोई व्यापारिक या राजकीय अनुबन्ध (कान्ट्रेक्ट) करना, परीक्षा, नौकरी अथवा चुनाव आदि के लिए आवेदन करना, क्रय-विक्रय करना, यात्रा या मुकद्दमा करना, भूमि, सवारी, वस्त्र-आभूषणादि का क्रय करने के लिए शीघ्रतावश गुरु-शुक्रास्त, अधिमास एवं वेधादि का विचार सम्भव न हो, तो ये सर्वार्थसिद्धि योग ग्रहण किए जा सकते हैं।

(2) अमृतसिद्धि योग—में स. सि. योगों वाले कृत्यों के अतिरिक्त प्रेम-विवाह करना, विदेश-यात्रा, किसी कार्य सिद्धि हेतु सुकाम अनुष्ठान करना आदि कृत्य किए जा सकते हैं। **अमृसिद्धि योग संज्ञा वाले सर्वार्थसिद्धि योग विशेष शुभ फलदायक माने गए हैं।** परन्तु अमृतसिद्धि योग के दिन कुछ तिथियां त्याज्य मानी गयी हैं। रविवार से शनिवार क्रमशः 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11 तिथियां वर्जित हैं। **उदाहरण**—जैसे रविवार को हस्त नक्षत्र हो, तो अमृतसिद्धि योग बना है, परन्तु यदि उस दिन पंचमी तिथि आ पड़े तो उस तिथि काल में स.सि. एवं अमृतसिद्धि योग दूषित होगा। अतः इस काल को त्याग देना चाहिए।

(3) रविपुष्य योग—में जड़ी-बूटी तोड़ना तथा तोड़कर औषधि तैयार करना, किसी विशेष रोग में रोगी को औषधि देना शुभ होता है। यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि प्रयोगों में भी यह योग विशेष शुभ होता है।

(4) गुरुपुष्य योग— गुरु अथवा पिता, दादा या श्रेष्ठ व्यक्ति से मन्त्र, तन्त्र या किसी विशिष्ट विषय के सम्बन्ध में उच्च-विद्या ग्रहण करना, धन, भूमि-विद्या एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना, कोई धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ करना, गुरु धारण करना, विदेश-यात्रा आरम्भ करना शुभ होता है। परन्तु **'विवाह'** सर्वथा त्याज्य है।

उपरोक्त सभी योगों में से कोई योग विशेष ग्रहण करने से पूर्व तिथि एवं चन्द्रमा का बल भी ध्यान में रख लेवें, तो अत्यन्त लाभदायक होगा। (अर्थात् कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा पर्यन्त चन्द्रमा निर्बल माना जाता है।) इनके अतिरिक्त गुरु-शुक्र ग्रहों के अस्त काल, अधिक मास, ग्रहण काल, श्राद्ध पक्ष आदि का भी ध्यान कर लेना शुभ होगा। **विवाह, मुण्डन, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश आदि कार्य निर्धारित मुहूर्त्तों** में ही करने **शुभ होंगे। ध्यान रहे,** इस वर्ष शुक्र 12 दिसम्बर, 2025 ई. से 30 जनवरी, 2026 ई. तक अस्त रहेगा। जबकि गुरु 10 जून से 6 जुलाई, 2025 ई. तक अस्त रहेगा।

—पण्डित आदित्य शर्मा, गणितकर्ता

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2025 ई.	घं. मिं.	2025 ई.	घं. मिं.
30 मार्च	16 35	31 मार्च	सू. उ.
1 अप्रै.	11 07	3 अप्रै.	सू. उ.
5 अप्रै.	5 21	5 अप्रै.	सू. उ.
6 अप्रै.	सू. उ.	7 अप्रै.	6 25
8 अप्रै.	सू. उ.	8 अप्रै.	7 55
16 अप्रै.	सू. उ.	17 अप्रै.	5 55
20 अप्रै.	11 49	21 अप्रै.	सू. उ.
21 अप्रै.	12 37	22 अप्रै.	सू. उ.
27 अप्रै.	सू. उ.	27 अप्रै.	24 39
29 अप्रै.	सू. उ.	29 अप्रै.	18 47
30 अप्रै.	सू. उ.	1 मई	सू. उ.
2 मई	13 04	3 मई	सू. उ.
4 मई	सू. उ.	4 मई	12 54
11 मई	3 15	11 मई	सू. उ.
14 मई	सू. उ.	14 मई	11 47

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2025 ई.	घं. मिं.	2025 ई.	घं. मिं.
18 मई	सू. उ.	18 मई	18 53
19 मई	सू. उ.	19 मई	19 30
23 मई	16 03	24 मई	सू. उ.
25 मई	सू. उ.	25 मई	11 12
27 मई	सू. उ.	27 मई	5 33
28 मई	सू. उ.	28 मई	24 29
29 मई	22 39	30 मई	21 29
5 जून	3 36	5 जून	सू. उ.
7 जून	9 40	8 जून	सू. उ.
9 जून	15 31	10 जून	सू. उ.
14 जून	24 22	15 जून	सू. उ.
19 जून	23 17	21 जून	सू. उ.
23 जून	15 17	24 जून	सू. उ.
25 जून	सू. उ.	25 जून	10 41

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2025 ई.	घं. मिं.	2025 ई.	घं. मिं.
26 जून	8 47	27 जून	7 22
2 जुला	11 08	3 जुला	सू. उ.
5 जुला	सू. उ.	5 जुला	16 50
7 जुला	सू. उ.	7 जुला	25 12
12 जुला	6 36	13 जुला	सू. उ.
17 जुला	सू. उ.	18 जुला	26 14
21 जुला	सू. उ.	22 जुला	सू. उ.
24 जुला	सू. उ.	25 जुला.	सू. उ.
30 जुला	सू. उ.	30 जुला	21 53
4 अग.	सू. उ.	4 अग.	9 13
8 अग.	14 28	9 अग.	14 24
12 अग.	11 52	13 अग.	सू. उ.
14 अग.	सू. उ.	15 अग.	7 36
17 अग.	4 39	17 अग.	सू. उ.

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2025 ई.	घं. मिं.	2025 ई.	घं. मिं.
18 अग.	सू. उ.	18 अग.	26 06
21 अग.	सू. उ.	21 अग.	24 09
24 अग.	26 06	25 अग.	सू. उ.
5 सितं.	सू. उ.	5 सितं.	23 39
9 सितं.	सू. उ.	9 सितं.	18 07
11 सितं.	सू. उ.	11 सितं.	13 58
13 सितं.	10 12	14 सितं.	सू. उ.
15 सितं.	सू. उ.	15 सितं.	7 32
18 सितं.	सू. उ.	18 सितं.	6 33
21 सितं.	9 32	22 सितं.	सू. उ.
26 सितं.	22 09	27 सितं.	सू. उ.
29 सितं.	3 55	29 सितं.	सू. उ.
3 अक्तू	सू. उ.	3 अक्तू	9 35
6 अक्तू	6 16	6 अक्तू	सू. उ.

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2025 ई.	घं. मिं.	2025 ई.	घं. मिं.
7 अक्तू	25 28	8 अक्तू	सू. उ.
11 अक्तू	सू. उ.	11 अक्तू	15 20
17 अक्तू	13 58	18 अक्तू	सू. उ.
19 अक्तू	सू. उ.	20 अक्तू	सू. उ.
24 अक्तू	4 51	25 अक्तू	सू. उ.
26 अक्तू	10 47	27 अक्तू	सू. उ.
2 नवं.	17 04	3 नवं.	सू. उ.
4 नवं.	12 35	5 नवं.	सू. उ.
6 नवं.	6 34	6 नवं.	सू. उ.
10 नवं.	18 49	11 नवं.	सू. उ.
11 नवं.	18 18	12 नवं.	सू. उ.
14 नवं.	सू. उ.	14 नवं.	21 21
16 नवं.	सू. उ.	16 नवं.	26 11
20 नवं.	10 59	21 नवं.	13 56
23 नवं.	सू. उ.	23 नवं.	19 28

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2025 ई.	घं.	मिं.	2025 ई.	घं.	मिं.
30 नवं.	सू.	उ.	30 नवं.	25	11
2 दिसं.	सू.	उ.	2 दिसं.	20	52
3 दिसं.	18	00	4 दिसं.	सू.	उ.
8 दिसं.	4	12	8 दिसं.	26	53
9 दिसं.	सू.	उ.	9 दिसं.	26	23
14 दिसं.	सू.	उ.	14 दिसं.	8	19
17 दिसं.	17	12	18 दिसं.	20	07
22 दिसं.	3	36	22 दिसं.	सू.	उ.
23 दिसं.	5	32	23 दिसं.	सू.	उ.
28 दिसं.	सू.	उ.	28 दिसं.	8	44
31 दिसं.	3	59	1 जन.	सू.	उ.
(सन् 2026 ई०)					
4 जन.	15	12	5 जन.	13	25
6 जन.	सू.	उ.	6 जन.	12	18
14 जन.	सू.	उ.	14 जन.	27	04
18 जन.	10	14	19 जन.	सू.	उ.
19 जन.	11	53	20 जन.	सू.	उ.
25 जन.	13	36	26 जन.	सू.	उ.
27 जन.	11	09	29 जन.	सू.	उ.
31 जन.	3	28	31 जन.	सू.	उ.
1 फर.	सू.	उ.	1 फर.	23	58
7 फर.	26	29	8 फर.	सू.	उ.
11 फर.	सू.	उ.	11 फर.	10	53
15 फर.	सू.	उ.	15 फर.	19	48
16 फर.	सू.	उ.	16 फर.	20	48
20 फर.	20	08	21 फर.	सू.	उ.
22 फर.	सू.	उ.	22 फर.	17	55
24 फर.	सू.	उ.	24 फर.	15	07
25 फर.	सू.	उ.	26 फर.	सू.	उ.
27 फर.	10	49	28 फर.	सू.	उ.
1 मार्च	सू.	उ.	1 मार्च	8	35
7 मार्च	11	16	8 मार्च	सू.	उ.
9 मार्च	16	12	10 मार्च	सू.	उ.
15 मार्च	4	49	15 मार्च	सू.	उ.
20 मार्च	4	05	20 मार्च	सू.	उ.

अमृत सिद्धि योग

विशेष—कुछ विद्वान स.सि.यो. में अमृत-सिद्ध योग का संयोग अशुभ मानते हैं, जबकि नवीन मतानुसार कुछ विशेष तिथियां एवं घटिकाएं ही त्याज्य मानी गई हैं। **यथा**-रविवार से शनिवार तक क्रमश: 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11 तिथियां एवं प्रारम्भ की 6 घड़ियां ही विषाक्त एवं त्याज्य मानी गई हैं।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2025 ई.	घं.	मिं.	2025 ई.	घं.	मिं.
16 अप्रै. बुध	सू.	उ.	17 अप्रै.	5	55
14 मई बुध	सू.	उ.	14 मई	11	47
23 मई शुक्र	16	03	24 मई	सू.	उ.
20 जून शुक्र	सू.	उ.	20 जून	21	45
21 जुला चंद्र	21	07	22 जुला	सू.	उ.
24 जुला गुरु	16	44	25 जुला	सू.	उ.
16 अग. शनि	28	39	17 अग.	सू.	उ.
18 अग. चंद्र	सू.	उ.	18 अग.	26	06
21 अग. गुरु	सू.	उ.	21 अग.	24	09
13 सितं. शनि	10	12	14 सितं.	सू.	उ.
15 सितं. चंद्र	सू.	उ.	15 सितं.	7	32
18 सितं. गुरु	सू.	उ.	18 सितं.	6	33
7 अक्तू मंग	25	28	8 अक्तू.	सू.	उ.
11 अक्तू शनि	सू.	उ.	11 अक्तू.	15	20
19 अक्तू रवि	17	50	20 अक्तू	सू.	उ.
4 नवं. मंग	12	35	5 नवं.	सू.	उ.
16 नवं. रवि	सू.	उ.	16 नवं.	26	11
2 दिसं. मंग	सू.	उ.	2 दिसं.	20	52
14 दिसं. रवि	सू.	उ.	14 दिसं.	8	19
17 दिसं. बुध	17	12	18 दिसं.	सू.	उ.
(सन् 2026 ईसवी में)					
14 जन. बुध	सू.	उ.	14 जन.	27	04
11 फर. बुध	सू.	उ.	11 फर.	10	53
20 फर. शुक्र	20	08	21 फर.	सू.	उ.

रवि योग-संवत् २०८२ वि.

रवि योग तिथि, वार, नक्षत्रादि से सम्बन्धित कुयोगों के दोषों को दूर कर देता है। सामान्यत: अन्नदान, गोदान, भूदान एवं सरकारी क्षेत्रों में सेवाओं (जैसे- प्रतिष्ठित पद ग्रहण आदि) के लिए इनका उपयोग किया जाता है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2025 ई.	घं.	मिं.	2025 ई.	घं.	मिं.
1 अप्रै.	11	07	2 अप्रै.	8	50
3 अप्रै.	7	03	4 अप्रै.	5	51
6 अप्रै.	5	32	8 अप्रै.	7	55
10 अप्रै.	12	25	11 अप्रै.	15	10
19 अप्रै.	10	21	20 अप्रै.	11	49
30 अप्रै.	16	18	1 मई	14	21
2 मई	13	04	3 मई	12	34
5 मई	14	01	7 मई	18	17
9 मई	24	09	11 मई	3	15
11 मई	13	17	12 मई	6	17
18 मई	18	53	19 मई	19	30
29 मई	22	39	30 मई	21	29
31 मई	21	08	1 जून	21	37
3 जून	24	59	6 जून	6	34
9 जून	15	31	10 जून	18	02
16 जून	25	14	17 जून	25	02
28 जून	6	36	29 जून	6	34
30 जून	7	21	1 जुला	8	54
3 जुला	13	51	5 जुला	19	52
6 जुला	5	47	6 जुला	22	42
9 जुला	3	15	10 जुला	4	50
16 जुला	5	47	17 जुला	4	51
27 जुला	16	23	28 जुला	17	36
29 जुला	19	28	30 जुला	21	53
2 अग.	3	41	3 अग.	4	07
3 अग.	6	35	5 अग.	11	23
7 अग.	14	01	8 अग.	14	28
14 अग.	9	06	15 अग.	7	36
26 अग.	3	50	27 अग.	6	04
28 अग.	8	44	29 अग.	11	39
1 सितं.	19	55	3 सितं.	23	09
5 सितं.	23	39	6 सितं.	22	56
12 सितं.	11	59	13 सितं.	10	12
13 सितं.	15	40	14 सितं.	8	41
24 सितं.	16	17	25 सितं.	19	09

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2025 ई.	घं.	मिं.	2025 ई.	घं.	मिं.
26 सितं.	22	09	27 सितं.	7	06
27 सितं.	25	08	29 सितं.	3	55
1 अक्तू	8	06	3 अक्तू	9	35
5 अक्तू	8	01	6 अक्तू	6	16
12 अक्तू	13	37	13 अक्तू	12	27
24 अक्तू	4	51	24 अक्तू	6	39
25 अक्तू	7	52	26 अक्तू	10	47
27 अक्तू	13	28	28 अक्तू	15	45
30 अक्तू	18	34	1 नवं.	18	21
3 नवं.	15	06	4 नवं.	12	35
10 नवं.	18	49	11 नवं.	18	18
23 नवं.	19	28	24 नवं.	21	54
25 नवं.	23	58	26 नवं.	25	33
28 नवं.	26	50	30 नवं.	25	11
2 दिसं.	20	52	2 दिसं.	25	14
3 दिसं.	18	00	4 दिसं.	14	54
9 दिसं.	26	23	10 दिसं.	26	45
23 दिसं.	5	32	24 दिसं.	7	08
25 दिसं.	8	19	26 दिसं.	9	01
28 दिसं.	8	44	29 दिसं.	6	30
29 दिसं.	7	41	31 दिसं.	3	59
(सन् 2026 ईसवी में)					
1 जन.	22	49	2 जन.	20	04
8 जन.	12	25	9 जन.	13	41
21 जन.	13	58	22 जन.	14	27
23 जन.	14	33	24 जन.	10	49
24 जन.	14	16	25 जन.	13	36
27 जन.	11	09	29 जन.	7	32
31 जन.	3	28	31 जन.	25	34
7 फर.	26	29	9 फर.	5	03
20 फर.	20	08	21 फर.	19	07
22 फर.	17	55	23 फर.	16	34
25 फर.	13	39	27 फर.	10	49
1 मार्च	8	35	2 मार्च	7	52
9 मार्च	16	12	10 मार्च	19	05

यमघण्टक योग
(सन् 2025-26 ई.)

यमघण्टक योग अशुभ माने गए हैं। इन योगों में मंगल-शुभ कार्यों के सम्पादन का निषेध माना गया है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
12 अप्रै.	सू.	उ.	12 अप्रै.	18	08
12 मई	6	17	13 मई	सू.	उ.
1 जून	21	37	2 जून	सू.	उ.
9 जून	सू.	उ.	9 जून	15	31
11 जून	20	11	12 जून	सू.	उ.
29 जून	6	34	30 जून	सू.	उ.
9 जुला	सू.	उ.	10 जुला	4	50
27 जुला	सू.	उ.	27 जुला	16	23
6 अग.	सू.	उ.	6 अग.	13	00
19 अग.	सू.	उ.	19 अग.	25	08
16 सितं.	सू.	उ.	16 सितं.	6	46
9 अक्तू	20	03	10 अक्तू	सू.	उ.
10 अक्तू	17	32	11 अक्तू	सू.	उ.
6 नवं.	सू.	उ.	7 नवं.	3	28
7 नवं.	सू.	उ.	7 नवं.	24	34
15 नवं.	23	35	16 नवं.	सू.	उ.
4 दिसं.	सू.	उ.	4 दिसं.	14	54
5 दिसं.	सू.	उ.	5 दिसं.	11	46
13 दिसं.	सू.	उ.	14 दिसं.	सू.	उ.
(सन् 2026 ई०)					
10 जन.	सू.	उ.	10 जन.	15	40
12 जन.	21	06	13 जन.	सू.	उ.
9 फर.	सू.	उ.	10 फर.	सू.	उ.
9 मार्च	सू.	उ.	9 मार्च	16	12
11 मार्च	22	00	12 मार्च	सू.	उ.

शत्रु इतना अनिष्ट नहीं करता जितना कुपथगामी मन अनिष्ट करता है। इसलिए इसे सत्पथ पर लगाओ।

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग (2025–26 ई.)

(गाड़ी, आभूषणादि बहुमूल्य वस्तुएँ खरीदने हेतु विशेष मुहूर्त्त)

'द्विपुष्कर योग' द्विगुणित और **'त्रिपुष्कर योग'** त्रिगुणित **लाभ-हानिकारक होता है।** यदि इन योगों में कोई अनिष्ट हो जाए या हानि हो जाए तो भी दुगुनी अथवा त्रिगुणित हानि होने की सम्भावना बन जाती है। इसी प्रकार इन योगों में यदि कोई शुभ कार्य आरम्भ या सम्पन्न किया जाए अथवा किसी प्रकार की वस्तु का क्रय किया जाए तो भविष्य में उसका द्विगुणित या त्रिगुणित होने की सम्भावना बन जाती है। इसलिए इन योगों में **बहुमूल्य एवं उपयोगी पदार्थ,** वस्तुएँ **जैसे**—ज़मीन-जायदाद, हीरे-जवाहरात, स्वर्ण-चाँदी के आभूषण, कार, ट्रक, स्कूटर, गाय-भैंस क्रय करना, नवीन उद्योग की स्थापना आदि करना लाभदायक रहता है।

परिहार—द्विपुष्कर/त्रिपुष्कर योगों में यदि किसी की मृत्यु हो जाए या किसी अन्य वस्तु के नष्ट होने पर शान्ति करवानी चाहिए। त्रिपुष्कर दोष की शान्ति के लिए तीन गौओं के मूल्य का धन तथा द्विपुष्कर के लिए दो गौओं के मूल्य का धन तथा तिलों द्वारा निर्मित पीठी का दान करना शुभ होगा। (वसिष्ठ)

द्विपुष्कर योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2025-26	घं.	मिं.	2025-26	घं.	मिं.
20 मई	सू.	उ.	20 मई	5	52
28 मई	5	03	28 मई	सू.	उ.
7 जून	सू.	उ.	7 जून	9	40
22 जुला	सू.	उ.	22 जुला	7	06
10 अग.	12	11	10 अग.	13	53
23 सितं.	13	40	24 सितं.	4	52
4 अक्तू	सू.	उ.	4 अक्तू	9	10
17 नव.	2	11	17 नव.	4	48
6 दिसं.	सू.	उ.	6 दिसं.	8	49
(सन् 2026 ई. में)					
20 जन.	13	07	20 जन.	26	43
16 मार्च	5	56	16 मार्च	सू.	उ.

रविपुष्य योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
6 अप्रै.	सू.	उ.	7 अप्रै.	सू.	उ.
4 मई	सू.	उ.	4 मई	12	54
8 दिसं.	4	12	8 दिसं.	सू.	उ.
(सन् 2026 ई. में)					
4 जन.	15	12	5 जन.	सू.	उ.
1 फर.	सू.	उ.	1 फर.	23	58
1 मार्च	सू.	उ.	1 मार्च	8	35

गुरुपुष्य योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
24 जुला	16	44	25 जुला	सू.	उ.
21 अग.	सू.	उ.	21 अग.	24	09
18 सितं.	सू.	उ.	18 सितं.	6	33

त्रिपुष्कर योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2025-26	घं.	मिं.	2025-26	घं.	मिं.
15 अप्रै.	सू.	उ.	15 अप्रै.	10	56
20 अप्रै.	11	49	20 अप्रै.	19	01
29 अप्रै.	सू.	उ.	29 अप्रै.	17	32
3 मई	7	53	3 मई	12	34
17 जून	25	02	18 जून	सू.	उ.
22 जून	17	39	22 जून	25	23
1 जुला	10	21	2 जुला	सू.	उ.
6 जुला	21	16	6 जुला	22	42
12 जुला	सू.	उ.	12 जुला	6	36
19 अग.	25	08	20 अग.	सू.	उ.
24 अग.	26	06	25 अग.	सू.	उ.
30 अग.	सू.	उ.	30 अग.	14	38
13 सितं.	7	24	13 सितं.	10	12
28 अक्तू	15	45	29 अक्तू	सू.	उ.
2 नवं.	7	32	2 नवं.	17	04
16 दिसं.	14	10	16 दिसं.	23	58
27 दिसं.	सू.	उ.	27 दिसं.	9	10
31 दिसं.	5	01	31 दिसं.	सू.	उ.
(सन् 2026 ईसवी में)					
4 जन.	12	31	4 जन.	15	12
28 फर.	सू.	उ.	28 फर.	9	35

● ज्वालामुखी योग ●

(अशुभ-योग) वि. संवत् २०८२

ज्वालामुखी योग का फल अशुभ माना गया है। इस योग में आरम्भ किया हुआ कार्य पूर्णतया सिद्ध नहीं हो पाता अथवा बार-बार विघ्न-बाधाएं होती हैं। इस योग में शुभ कार्य आरम्भ नहीं करने चाहिए। दुष्ट शत्रुओं पर प्रयोग करने के लिए यह मुहूर्त्त अच्छा समझा जाता है।

जब प्रतिपदा को मूल नक्षत्र, पंचमी को भरणी, अष्टमी को कृतिका, नवमी को रोहिणी अथवा दशमी को आश्लेषा नक्षत्र आता है, तो ज्वालामुखी योग बनता है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
7 अप्रै.	6	25	7 अप्रै.	20	01
11 जून	20	11	12 जून	14	28
16 अग.	6	06	16 अग.	21	35
17 अग.	4	39	17 अग.	19	25
11 सितं.	13	58	12 सितं.	9	59
15 अक्तू	12	00	16 अक्तू	10	36
20 दिसं.	7	13	20 दिसं.	25	22
(सन् 2026 ई.)					
24 फर.	7	03	24 फर.	15	07
25 फर.	4	52	25 फर.	13	39

वि. संवत् 2082 में लाभ-हानि चक्र

(विंशोत्तरी मतानुसारेण)

आगामी वर्ष में आपको जिस राशि का लाभ-हानि का विवरण ज्ञात करना हो, तो आप निम्नलिखित चक्र में अपनी राशि के नीचे लिखे लाभ-हानि के अंकों को जमा कर दें, फिर कुल जमा जोड़ में से 1 कम करके जोड़ को 8 से भाग दे देवें। भाग करने के पश्चात् यदि 1 बचे तो आगामी वर्ष में धन लाभ अच्छा रहेगा। मनोवांछित योजनाएं सफल होंगी। मनोरंजक कार्यों की ओर रूचि बढ़ेगी। यदि शेष 2 बचे तो, धन लाभ मध्यम परन्तु विभिन्न कार्यों पर खर्च अधिक होगा। यदि शेष 3 बचें तो लाभ कम, खर्च (अपव्यय) अधिक रहेगा। व्यर्थ भाग-दौड़ अधिक रहेगी और घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। यदि शेष 4 बचें तो, मानसिक तनाव, शरीर कष्ट और रोगादि पर खर्च हो, घरेलू एवं आर्थिक समस्याएं उत्पन्न होंगी। यदि शेष 5 बचें तो लाभ कम तथा फिजूलखर्ची अधिक रहेगी। बनते कार्यों में विघ्न पड़ेगा। यदि शेष 6 बचें तो, भाग्योन्नति और धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि शेष 7 बचें तो, व्यापार, लॉटरी, सट्टे आदि द्वारा अकस्मात् धन लाभ होगा। ज़मीन-जायदाद आदि कार्यों पर खर्च भी रहेंगे। आय के साधनों में भी वृद्धि होगी। यदि 8 अर्थात् 0 बचे, तो उस वर्ष लाभ कम व खर्च अधिक रहेगा, मानसिक परेशानियाँ भी बढ़ने के संकेत हैं।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	14	8	14	8	11	14	8	14	11	5	5	11
हानि	11	5	2	14	11	2	5	11	2	5	5	2

तिथि, वार, नक्षत्रादि जनित अशुभ योगों का परिहार

(1) दुष्ट योगों के समय कोई शुभ योग भी हो, तो दुष्ट योग का परिहार हो जाता है–**अयोगो सुयोगोऽपि चेत् स्यात्तदानीमयोगं निहत्यैष सिद्धिं तनोति। परे लग्नशुद्ध्या कुयोगादिनाशं दिनार्द्धोत्तरं विष्टिपूर्वं च शस्तम्।।** अन्यत्रऽपि–**अयोगः सिद्धियोगश्च द्वावेतौ भवतो यदि। अयोगो हन्यते तत्र, सिद्धियोगः प्रवर्त्तते।।** (राजमार्तण्ड)

अर्थात् कुयोग के समय कोई अन्य सिद्धयादि सुयोग भी वर्तमान हो, तो सुयोग की विजय होकर कुयोग अकर्मण्य हो जाता है।

(2) वसिष्ठ जी अनुसार सामान्य दुष्टयोगों का अनिष्ट प्रभाव केवल दिन को ही होता है, रात्रि को नहीं। **'दिवामृत्युप्रदाः पापा दोषाः तु ऐते न रात्रिषु।।** (वसिष्ठ)

(3) मंगलवार और अश्विनी नक्षत्र के संयोग से 'सिद्धि योग' गृहप्रवेश में, शनिवार व रोहिणी नक्षत्र के संयोग से 'सिद्धियोग' यात्रा में तथा गुरुपुष्य जनित **'सिद्धियोग' पाणिग्रहण** (विवाह) में सर्वथा त्याज्य है–**भौमाश्विनीं प्रवेशे च, प्रयाणे शनिरोहिणीम्। गुरुपुष्यं विवाहे च, सर्वथा परिवर्जयेत्।।** (राजमार्तण्ड)

सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश, वक्री-मार्गी एवं उदयास्त (घं. मिं.) (सन् 2025-26 ई.)

सूर्य राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
14 जन.	मकर	8:55	16 सितं.	कन्या	25:47
12 फर.	कुम्भ	21:56	17 अक्तू.	तुला	13:45
14 मार्च	मीन	18:50	16 नवं.	वृश्चिक	13:36
13 अप्रैल	मेष	27:21	15 दिसं.	धनु	28:19
14 मई	वृष	24:11	14 जन.(26)	मकर	15:06
15 जून	मिथुन	6:44	12 फर.	कुम्भ	28:08
16 जुला.	कर्क	17:30	14 मार्च	मीन	25:01
16 अग.	सिंह	25:52			

मंगल राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मिथुन में)

2 अप्रै.	कर्क	25:24	27 अक्तू.	वृश्चिक	15:41
6 जून	सिंह	26:10	7 दिसं.	धनु	20:15
28 जुला.	कन्या	19:57	15 जन.(26)	मकर	28:27
13 सितं.	तुला	21:21	23 फर.(26)	कुम्भ	11:49

बुध राशि प्रवेश (संवतारम्भ में वक्री मीन में)

7 अप्रै.	मार्गी	16:40	24 अक्तू.	वृश्चिक	12:36
6 मई	मेष	28:06	9 नवं.	वक्री	24:29
23 मई	वृष	13:00	23 नवं.	व. तुला	20:26
6 जून	मिथुन	9:27	29 नवं.	मार्गी	23:07
22 जून	कर्क	21:32	6 दिसं.	वृश्चिक	20:31
18 जुला.	वक्री	10:12	29 दिसं.	धनु	7:23
11 अग.	मार्गी	12:57	17 जन.(26)	मकर	10:23
30 अग.	सिंह	16:41	3 फर.(26)	कुम्भ	21:51
15 सितं.	कन्या	11:08	26 फर.(26)	वक्री	12:16
2 अक्तू.	तुला	27:43	20 मार्च(26)	मार्गी	25:02

गुरु राशि प्रवेश (संवतारम्भ में वृष में)

14 मई	मिथुन	22:33	5 दिसं.	व. मिथुन	17:25
18 अक्तू.	कर्क	19:46	11 मार्च(26)	मार्गी	8:56
11 नवं.	वक्री	22:10			

शुक्र राशि प्रवेश (संवतारम्भ में वक्री-मीन में)

13 अप्रै.	मार्गी	6:34	29 जून	वृष	14:08
31 मई	मेष	11:32	26 जुला.	मिथुन	8:56

—शुक्र राशि प्रवेश—

20 अग.	कर्क	25:19
14 सितं.	सिंह	24:16
9 अक्तू.	कन्या	10:48
2 नवं.	तुला	13:15
26 नवं.	वृश्चिक	11:21
20 दिसं.	धनु	7:44
12 जन.(26)	मकर	27:57
5 फर.(26)	कुम्भ	25:10
1 मार्च(26)	मीन	24:56

—शनि राशि प्रवेश—

(संवतारम्भ में मीन में)

29 मार्च	मीन	21:44
13 जुला.	वक्री	9:40
28 नवं.	मार्गी	9:21

संवतान्त तक मीन राशि में ही रहेगा।

मध्यम राहु राशि प्रवेश

(संवतारम्भ में मीन में)

18 मई	कुम्भ	19:35

मध्यम केतु राशि प्रवेश

(संवतारम्भ में कन्या में)

18 मई	सिंह	19:35

यूरेनस

(संवतारम्भ में वृष में)

सारा संवत् वृष राशि में ही संचार करेगा।

नैपच्यून

सारा संवत् मीन राशि में संचार करेगा।

प्लूटो

सारा संवत् मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रहों का वक्री-मार्गी

मंगल

सारा संवत् मार्गी अवस्था में रहेगा।

बुध

7 अप्रै.	मार्गी	16:40
18 जुला.	वक्री	10:12
11 अग.	मार्गी	12:57
9 नवं.	वक्री	24:29
29 नवं.	मार्गी	23:07
26 फर(26)	वक्री	12:16
20मार्च(26)	मार्गी	25:02

गुरु

11 नवं.	वक्री	22:10
11 मार्च(26)	मार्गी	8:56

शुक्र

13 अप्रै.	मार्गी	6:34

शनि

13 जुला.	वक्री	9:40
28 नवं.	मार्गी	9:21

यूरेनस

6 सितं.	वक्री	10:20
4 फर.(26)	मार्गी	8:05

नैपच्यून

4 जुला.	वक्री	27:05
10 दिसं.	मार्गी	17:36

प्लूटो

4 मई	वक्री	20:52
14 अक्तू.	मार्गी	8:20

ग्रहों का उदय-अस्त (वि. संवत् २०८२)

मंगल

5 नवं. पश्चिम में अस्त 27:10

बुध

(संवतारम्भ में व. पश्चिम में अस्त)

31 मार्च व. पूर्व में उदय	20:48
18 मई पूर्व में अस्त	27:25
10 जून पश्चिम में उदय	19:33
24 जुला. व. पश्चिम में अस्त	19:50
9 अग. व. पूर्व में उदय	4:52
30 अग. पूर्व में अस्त	26:10
30 सितं. पश्चिम में उदय	28:47
14 नवं. व. पश्चिम में अस्त	26:13
26 नवं. व. पूर्व में उदय	6:10
29 दिसं. पूर्व में अस्त	29:14

(सन् 2026 ई.)

8 फर. पश्चिम में उदय 27:40

बुध

28 फर. व. पश्चिम में अस्त	20:20
14 मार्च व. पूर्व में उदय	18:33

गुरु

10 जून पश्चिम में अस्त	19:29
6 जुला. पूर्व में उदय	29:20

शुक्र

12 दिसं. पूर्व में अस्त 26:10

(सन् 2026 ई.)

31 जन. पश्चिम में उदय 7:05

शनि

29 मार्च पूर्व में उदय 22:37

(सन् 2026 ई.)

8 मार्च पश्चिम में अस्त 18:29

संवतान्त तक अस्त रहेगा।

ग्रहों की मध्यम, शीघ्र, अतिचारी गति

ग्रह	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मध्यम	31′-26″	59′-08″	5′-00″	59′-08″	2′-00″
शीघ्र	39′-01″	104′-46″	12′-22″	73′-43″	5′-27″
परमशीघ्र	46′-11″	113′-32″	14′-04″	75′-42″	7′-45″

ध्यान दें !—मध्यम गति से कम गति हो तो मन्द गति, शीघ्र गति से कम हो तो मध्यम गति, परमशीघ्र गति से कम हो तो शीघ्र गति एवं परमशीघ्र गति से अधिक गति हो तो ग्रह '**अतिचारी**' कहलाता है। यहाँ '**गति**' से अभिप्राय ग्रह की दैनिक गति से है। 24 घण्टे में ग्रह जितना आगे या पीछे चलता है, उसे ग्रह की '*दैनिक गति*' कहते हैं।

सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश, वक्री-मार्गी एवं उदयास्त (घं. मिं.) (सन् 2025-26 ई.)

सूर्य राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
14 जन.	मकर	8:55	16 सितं.	कन्या	25:47
12 फर.	कुम्भ	21:56	17 अक्तू.	तुला	13:45
14 मार्च	मीन	18:50	16 नवं.	वृश्चिक	13:36
13 अप्रैल	मेष	27:21	15 दिसं.	धनु	28:19
14 मई	वृष	24:11	14 जन.(26)	मकर	15:06
15 जून	मिथुन	6:44	12 फर.	कुम्भ	28:08
16 जुला.	कर्क	17:30	14 मार्च	मीन	25:01
16 अग.	सिंह	25:52			

मंगल राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मिथुन में)

2 अप्रै.	कर्क	25:24	27 अक्तू.	वृश्चिक	15:41
6 जून	सिंह	26:10	7 दिसं.	धनु	20:15
28 जुला.	कन्या	19:57	15 जन.(26)	मकर	28:27
13 सितं.	तुला	21:21	23 फर.(26)	कुम्भ	11:49

बुध राशि प्रवेश (संवतारम्भ में वक्री मीन में)

7 अप्रै.	मार्गी	16:40	24 अक्तू.	वृश्चिक	12:36
6 मई	मेष	28:06	9 नवं.	वक्री	24:29
23 मई	वृष	13:00	23 नवं.	व. तुला	20:26
6 जून	मिथुन	9:27	29 नवं.	मार्गी	23:07
22 जून	कर्क	21:32	6 दिसं.	वृश्चिक	20:31
18 जुला.	वक्री	10:12	29 दिसं.	धनु	7:23
11 अग.	मार्गी	12:57	17 जन.(26)	मकर	10:23
30 अग.	सिंह	16:41	3 फर.(26)	कुम्भ	21:51
15 सितं.	कन्या	11:08	26 फर.(26)	वक्री	12:16
2 अक्तू.	तुला	27:43	20 मार्च(26)	मार्गी	25:02

गुरु राशि प्रवेश (संवतारम्भ में वृष में)

14 मई	मिथुन	22:33	5 दिसं.	व. मिथुन	17:25
18 अक्तू.	कर्क	19:46	11 मार्च(26)	मार्गी	8:56
11 नवं.	वक्री	22:10			

शुक्र राशि प्रवेश (संवतारम्भ में वक्री-मीन में)

13 अप्रै.	मार्गी	6:34	29 जून	वृष	14:08
31 मई	मेष	11:32	26 जुला.	मिथुन	8:56

—शुक्र राशि प्रवेश—

20 अग.	कर्क	25:19
14 सितं.	सिंह	24:16
9 अक्तू.	कन्या	10:48
2 नवं.	तुला	13:15
26 नवं.	वृश्चिक	11:21
20 दिसं.	धनु	7:44
12 जन.(26)	मकर	27:57
5 फर.(26)	कुम्भ	25:10
1 मार्च(26)	मीन	24:56

—शनि राशि प्रवेश—
(संवतारम्भ में मीन में)

29 मार्च	मीन	21:44
13 जुला.	वक्री	9:40
28 नवं.	मार्गी	9:21

संवतान्त तक मीन राशि में ही रहेगा।

मध्यम राहु राशि प्रवेश
(संवतारम्भ में मीन में)

18 मई	कुम्भ	19:35

मध्यम केतु राशि प्रवेश
(संवतारम्भ में कन्या में)

18 मई	सिंह	19:35

यूरेनस
(संवतारम्भ में वृष में)

सारा संवत् वृष राशि में ही संचार करेगा।

नैपच्यून

सारा संवत् मीन राशि में संचार करेगा।

प्लूटो

सारा संवत् मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रहों का वक्री-मार्गी

मंगल

सारा संवत् मार्गी अवस्था में रहेगा।

बुध

7 अप्रै.	मार्गी	16:40
18 जुला.	वक्री	10:12
11 अग.	मार्गी	12:57
9 नवं.	वक्री	24:29
29 नवं.	मार्गी	23:07
26 फर(26)	वक्री	12:16
20मार्च(26)	मार्गी	25:02

गुरु

11 नवं.	वक्री	22:10
11 मार्च(26)	मार्गी	8:56

शुक्र

13 अप्रै.	मार्गी	6:34

शनि

13 जुला.	वक्री	9:40
28 नवं.	मार्गी	9:21

यूरेनस

6 सितं.	वक्री	10:20
4 फर.(26)	मार्गी	8:05

नैपच्यून

4 जुला.	वक्री	27:05
10 दिसं.	मार्गी	17:36

प्लूटो

4 मई	वक्री	20:52
14 अक्तू.	मार्गी	8:20

ग्रहों का उदय-अस्त (वि. संवत् २०८२)

मंगल

5 नवं. पश्चिम में अस्त 27:10

बुध

(संवतारम्भ में व. पश्चिम में अस्त)

31 मार्च व. पूर्व में उदय	20:48
18 मई पूर्व में अस्त	27:25
10 जून पश्चिम में उदय	19:33
24 जुला. व. पश्चिम में अस्त	19:50
9 अग. व. पूर्व में उदय	4:52
30 अग. पूर्व में अस्त	26:10
30 सितं. पश्चिम में उदय	28:47
14 नवं. व. पश्चिम में अस्त	26:13
26 नवं. व. पूर्व में उदय	6:10
29 दिसं. पूर्व में अस्त	29:14

(सन् 2026 ई.)

8 फर. पश्चिम में उदय 27:40

बुध

28 फर. व. पश्चिम में अस्त	20:20
14 मार्च व. पूर्व में उदय	18:33

गुरु

10 जून पश्चिम में अस्त	19:29
6 जुला. पूर्व में उदय	29:20

शुक्र

12 दिसं. पूर्व में अस्त 26:10

(सन् 2026 ई.)

31 जन. पश्चिम में उदय 7:05

शनि

29 मार्च पूर्व में उदय 22:37

(सन् 2026 ई.)

8 मार्च पश्चिम में अस्त 18:29

संवतान्त तक अस्त रहेगा।

ग्रहों की मध्यम, शीघ्र, अतिचारी गति

ग्रह	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मध्यम	31′-26″	59′-08″	5′-00″	59′-08″	2′-00″
शीघ्र	39′-01″	104′-46″	12′-22″	73′-43″	5′-27″
परमशीघ्र	46′-11″	113′-32″	14′-04″	75′-42″	7′-45″

ध्यान दें !—मध्यम गति से कम गति हो तो मन्द गति, शीघ्र गति से कम हो तो मध्यम गति, परमशीघ्र गति से कम हो तो शीघ्र गति एवं परमशीघ्र गति से अधिक गति हो तो ग्रह **'अतिचारी'** कहलाता है। यहाँ **'गति'** से अभिप्राय ग्रह की दैनिक गति से है। 24 घण्टे में ग्रह जितना आगे या पीछे चलता है, उसे ग्रह की **'दैनिक गति'** कहते हैं।

ग्रहों का नक्षत्र-चरण प्रवेश—संवत् २०८२ वि. (सन् 2025-26 ई.)

सूर्य नक्षत्र प्रवेश (संवतारम्भ में उ.भा. (4) में)

2025 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
31 मार्च	रेव.(1)	13:59
3 अप्रै.	रेव.(2)	23:04
7 अप्रै.	रेव.(3)	8:17
10 अप्रै.	रेव.(4)	17:44
13 अप्रै.	अश्वि.(1)मेष	27:21
17 अप्रै.	अश्वि.(2)	13:06
20 अप्रै.	अश्वि.(3)	22:59
24 अप्रै.	अश्वि.(4)	8:59
27 अप्रै.	भर.(1)	19:09
1 मई	भर.(2)	5:27
4 मई	भर.(3)	15:55
7 मई	भर.(4)	26:31
11 मई	कृति.(1)	13:17
14 मई	कृति.(2)वृष	24:11
18 मई	कृति.(3)	11:12
21 मई	कृति.(4)	22:19
25 मई	रोहि.(1)	9:30
28 मई	रोहि.(2)	20:48
1 जून	रोहि.(3)	8:11
4 जून	रोहि.(4)	19:42
8 जून	मृग.(1)	7:17
11 जून	मृग.(2)	18:59
15 जून	मृग.(3)मिथुन	6:44
18 जून	मृग.(4)	18:30
22 जून	आर्द्रा(1)	6:19
25 जून	आर्द्रा(2)	18:08
29 जून	आर्द्रा(3)	5:59
2 जुला.	आर्द्रा(4)	17:52
6 जुला.	पुन.(1)	5:47
9 जुला.	पुन.(2)	17:43
13 जुला.	पुन.(3)	5:38
16 जुला.	पुन.(4)कर्क	17:30
20 जुला.	पुष्य(1)	5:22
23 जुला.	पुष्य(2)	17:08
27 जुला.	पुष्य(3)	4:51

2025 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
30 जुला.	पुष्य(4)	16:31
2 अग.	आश्ले. (1)	28:07
6 अग.	आश्ले. (2)	15:42
9 अग.	आश्ले. (3)	27:12
13 अग.	आश्ले. (4)	14:36
16 अग.	मघा(1)सिंह	25:52
20 अग.	मघा(2)	13:00
23 अग.	मघा(3)	24:02
27 अग.	मघा(4)	10:55
30 अग.	पू.फा.(1)	21:44
3 सितं.	पू.फा.(2)	8:25
6 सितं.	पू.फा.(3)	18:58
10 सितं.	पू.फा.(4)	5:24
13 सितं.	उ.फा.(1)	15:40
16 सितं.	उ.फा.2कन्या	25:47
20 सितं.	उ.फा.(3)	11:42
23 सितं.	उ.फा.(4)	21:29
27 सितं.	हस्त(1)	7:06
30 सितं.	हस्त(2)	16:35
3 अक्तू.	हस्त(3)	25:58
7 अक्तू.	हस्त(4)	11:09
10 अक्तू.	चित्रा(1)	20:11
14 अक्तू.	चित्रा(2)	5:04
17 अक्तू.	चित्रा 3 तुला	13:45
20 अक्तू.	चित्रा(4)	22:17
24 अक्तू.	स्वा.(1)	6:39
27 अक्तू.	स्वा.(2)	14:56
30 अक्तू.	स्वा.(3)	23:00
3 नवं.	स्वा.(4)	6:59
6 नवं.	विशा.(1)	14:51
9 नवं.	विशा.(2)	22:36
13 नवं.	विशा.(3)	6:10
16 नवं.	विशा.4 वृश्चिक	13:36
19 नवं.	अनु.(1)	20:55
23 नवं.	अनु.(2)	4:07
26 नवं.	अनु.(3)	11:14

2025 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
29 नवं.	अनु.(4)	18:16
2 दिसं.	ज्ये.(1)	25:14
6 दिसं.	ज्ये.(2)	8:07
9 दिसं.	ज्ये.(3)	14:56
12 दिसं.	ज्ये.(4)	21:40
16 दिसं.	मूल(1)धनु	04:19
19 दिसं.	मूल(2)	10:55
22 दिसं.	मूल(3)	17:28
25 दिसं.	मूल(4)	23:59
29 दिसं.	पू.षा.(1)	6:30
(सन् 2026 ई.)		
1 जन.	पू.षा.(2)	13:01
4 जन.	पू.षा.(3)	19:33
7 जन.	पू.षा.(4)	26:04
11 जन.	उ.षा.(1)	8:35
14 जन.	उ.षा.2 मकर	15:06
17 जन.	उ.षा.(3)	21:37
21 जन.	उ.षा.(4)	4:12
24 जन.	श्रव.(1)	10:49
27 जन.	श्रव.(2)	17:31
30 जन.	श्रव.(3)	24:17
3 फर.	श्रव.(4)	7:08
6 फर.	धनि.(1)	14:03
9 फर.	धनि. (2)	21:04
12 फर.	धनि.3 कुम्भ	28:08
16 फर.	धनि.(4)	11:17
19 फर.	शत.(1)	18:32
22 फर.	शत.(2)	25:55
26 फर.	शत.(3)	9:26
1 मार्च	शत.(4)	17:06
4 मार्च	पू.भा.(1)	24:52
8 मार्च	पू.भा.(2)	8:48
11 मार्च	पू.भा.(3)	16:51
14 मार्च	पू.भा.4 मीन	25:01
18 मार्च	उ.भा.(1)	9:20

मंगल नक्षत्र प्रवेश

[संवतारम्भ में पुन. 3 में]

2025 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
2 अप्रै.	पुन.4 कर्क	25:24
12 अप्रै.	पुष्य(1)	6:06
20 अप्रै.	पुष्य(2)	12:21
28 अप्रै.	पुष्य(3)	4:21
5 मई	पुष्य(4)	10:09
12 मई	आश्ले.(1)	8:34
18 मई	आश्ले.(2)	25:17
25 मई	आश्ले.(3)	13:19
31 मई	आश्ले.(4)	21:25
6 जून.	मघा(1)सिंह	26:10
13 जून	मघा(2)	04:10
19 जून	मघा(3)	3:43
24 जून	मघा(4)	25:03
30 जून	पू.फा.(1)	20:17
6 जुला.	पू.फा.(2)	13:44
12 जुला.	पू.फा.(3)	5:32
17 जुला.	पू.फा.(4)	19:50
23 जुला.	उ.फा.(1)	8:36
28 जुला.	उ.फा.2कन्या	19:57
3 अग.	उ.फा.(3)	6:02
8 अग.	उ.फा.(4)	14:51
13 अग.	हस्त(1)	22:31
19 अग.	हस्त(2)	5:01
24 अग.	हस्त(3)	10:23
29 अग.	हस्त(4)	14:38
3 सितं.	चित्रा(1)	17:51
8 सितं.	चित्रा(2)	20:06
13 सितं.	चित्रा(3)तुला	21:21
18 सितं.	चित्रा(4)	21:36
23 सितं.	स्वा.(1)	20:56
28 सितं.	स्वा.(2)	19:18
3 अक्तू.	स्वा.(3)	16:49
8 अक्तू.	स्वा.(4)	13:27
13 अक्तू.	विशा.(1)	9:17
18 अक्तू.	विशा.(2)	4:14
22 अक्तू.	विशा.(3)	22:21
27 अक्तू.	विशा.4 वृश्चि.	15:41
1 नवं.	अनु.(1)	8:16

2025 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
5 नवं.	अनु.(2)	24:07
10 नवं.	अनु.(3)	15:18
15 नवं.	अनु.(4)	5:44
19 नवं.	ज्ये.(1)	19:29
24 नवं.	ज्ये.(2)	8:34
28 नवं.	ज्ये.(3)	21:03
3 दिसं.	ज्ये.(4)	8:55
7 दिसं.	मूल(1)धनु	20:15
12 दिसं.	मूल(2)	7:03
16 दिसं.	मूल(3)	17:16
20 दिसं.	मूल(4)	26:59
25 दिसं.	पू.षा.(1)	12:14
29 दिसं.	पू.षा.(2)	21:03
(सन् 2026 ई.)		
3 जन.	पू.षा.(3)	5:28
7 जन.	पू.षा.(4)	13:30
11 जन.	उ.षा.(1)	21:08
15 जन.	उ.षा.2 मकर	28:27
20 जन.	उ.षा.(3)	11:27
24 जन.	उ.षा.(4)	18:09
28 जन.	श्रव.(1)	24:36
1 फर.	श्रव.(2)	6:54
6 फर.	श्रव.(3)	12:59
10 फर.	श्रव.(4)	18:52
14 फर.	धनि.(1)	24:36
19 फर.	धनि.(2)	6:15
23 फर.	धनि.3 कुम्भ	11:49
27 फर.	धनि.(4)	17:22
3 मार्च	शत.(1)	22:53
7 मार्च	शत.(2)	28:25
12 मार्च	शत.(3)	10:00
16 मार्च	शत.(4)	15:38
20 मार्च	पू.भा.(1)	21:20

बुध नक्षत्र प्रवेश

[संवतारम्भ में व उ.भा. 1 में]

2025 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
3 अप्रै.	व.पू.भा.(4)	18:42
7 अप्रै.	**मार्गी**	16:40
11 अप्रै.	उ.भा.(1)	17:28
17 अप्रै.	उ.भा.(2)	17:03
21 अप्रै.	उ.भा.(3)	14:01

2025 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
24 अप्रै.	उ.भा.(4)	19:05
27 अप्रै.	रेव.(1)	15:30
30 अप्रै.	रेव.(2)	6:13
2 मई	रेव.(3)	16:34
4 मई	रेव.(4)	23:42
6 मई	अश्वि.1 मेष	28:06
9 मई	अश्वि.(2)	6:11
11 मई	अश्वि.(3)	6:13
13 मई	अश्वि.(4)	4:25
14 मई	भर.(1)	25:01
16 मई	भर.(2)	20:10
18 मई	भर.(3)	14:01
20 मई	भर.(4)	6:43
21 मई	कृति.(1)	22:17
23 मई	कृति.(3)वृष	13:00
24 मई	कृति.(3)	26:57
26 मई	कृति.(4)	16:15
28 मई	रोहि.(1)	5:05
29 मई	रोहि.(2)	17:36
31 मई	रोहि.(3)	5:58
1 जून.	रोहि.(4)	18:21
3 जून	मृग.(1)	6:56
4 जून	मृग.(2)	19:55
6 जून	मृग.(3)मिथुन	9:27
7 जून	मृग.(4)	23:44
9 जून	आर्द्रा(1)	14:57
11 जून	आर्द्रा(2)	7:15
12 जून	आर्द्रा(3)	24:54
14 जून	आर्द्रा(4)	20:06
16 जून	पुन.(1)	17:03
18 जून	पुन.(2)	16:01
20 जून	पुन.(3)	17:24
22 जून	पुन.(4)कर्क	21:32
25 जून	पुष्य(1)	5:03
27 जून	पुष्य(2)	17:03
30 जून	पुष्य(3)	10:44
3 जुला.	पुष्य(4)	12:59
7 जुला.	आश्ले.(1)	5:46
12 जुला.	आश्ले.(2)	13:22
18 जुला.	**वक्री**	10:12
24 जुला.	व.आश्ले.(1)	5:58

बुध नक्षत्र प्रवेश

2025 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
29 जुला.	व. पुष्य(4)	16:25
3 अग.	व. पुष्य(3)	5:52
11 अग.	मार्गी	12:57
18 अग.	पुष्य(4)	24:14
21 अग.	आश्ले.(1)	28:20
24 अग.	आश्ले.(2)	16:01
26 अग.	आश्ले.(3)	20:08
28 अग.	आश्ले.(4)	19:48
30 अग.	मघा(1)सिंह	16:41
1 सितं.	मघा(2)	11:51
3 सितं.	मघा(3)	6:00
4 सितं.	मघा(4)	23:26
6 सितं.	पू.फा.(1)	16:42
8 सितं.	पू.फा.(2)	10:02
9 सितं.	पू.फा.(3)	27:35
11 सितं.	पू.फा.(4)	21:33
13 सितं.	उ.फा.(1)	16:02
15 सितं.	उ.फा.2 कन्या	11:08
17 सितं.	उ.फा.(3)	6:55
18 सितं.	उ.फा.(4)	27:30
20 सितं.	हस्त(1)	24:52
22 सितं.	हस्त(2)	23:07
24 सितं.	हस्त(3)	22:12
26 सितं.	हस्त(4)	22:11
28 सितं.	चित्रा(1)	23:06
30 सितं.	चित्रा(2)	24:57
2 अक्तू.	चित्रा (3)तुला	27:43
5 अक्तू.	चित्रा(4)	7:30
7 अक्तू.	स्वा.(1)	12:18
9 अक्तू.	स्वा.(2)	18:09
11 अक्तू.	स्वा.(3)	25:09
14 अक्तू.	स्वा.(4)	9:23
16 अक्तू.	विशा.(1)	19:05
19 अक्तू.	विशा.(2)	6:27
21 अक्तू.	विशा.(3)	20:04
24 अक्तू.	विशा.4वृश्चिक	12:36
27 अक्तू.	अनु.(1)	9:31
30 अक्तू.	अनु.(2)	13:59
3 नवं.	अनु.(3)	11:07
9 नवं.	वक्री	24:29
15 नवं.	व.अनु.(2)	17:30
18 नवं.	व.अनु.(1)	16:28
21 नवं.	व.विशा.(4)	4:15
23 नवं.	व.विशा.3 तुला	20:26
28 नवं.	व.विशा.(2)	15:41

2025 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
29 नवं.	मार्गी	23:07
1 दिसं.	विशा.(3)	8:49
6 दिसं.	विशा.(4)वृश्चि.	20:31
9 दिसं.	अनु.(1)	26:30
12 दिसं.	अनु.(2)	21:10
15 दिसं.	अनु.(3)	10:46
17 दिसं.	अनु.(4)	21:22
20 दिसं.	ज्ये.(1)	6:08
22 दिसं.	ज्ये.(2)	13:36
24 दिसं.	ज्ये.(3)	20:11
26 दिसं.	ज्ये.(4)	26:04
29 दिसं.	मूल(1)धनु	7:23
31 दिसं.	मूल(2)	12:12
(सन् 2026 ई.)		
2 जन.	मूल(3)	16:35
4 जन.	मूल(4)	20:31
6 जन.	पू.षा.(1)	24:00
8 जन.	पू.षा.(2)	27:03
11 जन.	पू.षा.(3)	5:38
13 जन.	पू.षा.(4)	7:43
15 जन.	उ.षा.(1)	9:19
17 जन.	उ.षा.2 मकर	10:23
19 जन.	उ.षा.(3)	10:55
21 जन.	उ.षा.(4)	10:56
23 जन.	श्रव.(1)	10:24
25 जन.	श्रव.(2)	9:21
27 जन.	श्रव.(3)	7:48
29 जन.	श्रव.(4)	5:34
30 जन.	धनि.(1)	27:24
1 फर.	धनि.(2)	24:42
3 फर.	धनि.3 कुम्भ	21:51
5 फर.	धनि.(4)	19:02
7 फर.	शत.(1)	16:30
9 फर.	शत.(2)	14:40
11 फर.	शत.(3)	14:07
13 फर.	शत.(4)	15:53
15 फर.	पू.भा.(1)	21:41
18 फर.	पू.भा.(2)	11:36
21 फर.	पू.भा.(3)	23:34
26 फर.	वक्री	12:16
2 मार्च	व. पू.भा.(2)	27:34
6 मार्च	व. पू.भा.(1)	24:07
10 मार्च	व. शत. (4)	7:57
14 मार्च	व. शत.(3)	5:24
20 मार्च	मार्गी	25:02

गुरु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में रोहिणी 4 में)

2025 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
10 अप्रै.	मृग.(1)	18:50
28 अप्रै.	मृग.(2)	18:05
14 मई	मृग.(3)मिथुन	22:33
30 मई	मृग.(4)	4:42
13 जून	आर्द्रा(1)	23:28
28 जून	आर्द्रा(2)	14:06
13 जुला.	आर्द्रा(3)	7:02
28 जुला.	आर्द्रा(4)	8:55
13 अग.	पुन.(1)	5:03
30 अग.	पुन.(2)	10:40
19 सितं.	पुन.(3)	13:10
18 अक्तू.	पुन. 4 कर्क	19:46
11 नवं.	वक्री	22:10
5 दिसं.	व. पुन.3मिथुन	17:25
(सन् 2026 ई.)		
4 जन.	व. पुन.(2)	18:42
30 जन.	व.पुन.(1)	11:54
11 मार्च	मार्गी	8:56

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में व. उ.भा. 1 में)

2025 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
31 मार्च	व. पू.भा.(4)	28:47
13 अप्रै.	मार्गी	6:34
25 अप्रै.	उ.भा.(1)	23:31
2 मई	उ.भा.(2)	11:34
7 मई	उ.भा.(3)	16:47
12 मई	उ.भा.(4)	7:19
16 मई	रेव.(1)	12:46
20 मई	रेव.(2)	12:07
24 मई	रेव.(3)	7:03
27 मई	रेव.(4)	22:35
31 मई	अश्वि.(1)मेष	11:32
3 जून	अश्वि.(2)	22:22
7 जून	अश्वि.(3)	7:28
10 जून	अश्वि.(4)	14:56

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2025 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
13 जून	भर.(1)	21:12
16 जून	भर.(2)	26:19
20 जून	भर.(3)	6:28
23 जून	भर.(4)	9:45
26 जून	कृति.(1)	12:17
29 जून	कृति.(2)वृष	14:08
2 जुला.	कृति.(3)	15:26
5 जुला.	कृति.(4)	16:09
8 जुला.	रोहि.(1)	16:24
11 जुला.	रोहि.(2)	16:10
14 जुला.	रोहि.(3)	15:29
17 जुला.	रोहि.(4)	14:23
20 जुला.	मृग.(1)	12:55
23 जुला.	मृग.(2)	11:05
26 जुला.	मृग.(3)मिथुन	8:56
29 जुला.	मृग.(4)	6:28
31 जुला.	आर्द्रा(1)	27:44
3 अग.	आर्द्रा(2)	24:43
6 अग.	आर्द्रा(3)	21:27
9 अग.	आर्द्रा(4)	17:55
12 अग.	पुन.(1)	14:07
15 अग.	पुन.(2)	10:05
18 अग.	पुन.(3)	5:49
20 अग.	पुन.(4)कर्क	25:19
23 अग.	पुष्य(1)	20:36
26 अग.	पुष्य(2)	15:41
29 अग.	पुष्य(3)	10:34
1 सितं.	पुष्य(4)	5:19
3 सितं.	आश्ले.(1)	23:51
6 सितं.	आश्ले.(2)	18:13
9 सितं.	आश्ले.(3)	12:24
12 सितं.	आश्ले.(4)	6:25
14 सितं.	मघा(1)सिंह	24:16
17 सितं.	मघा(2)	17:57
20 सितं.	मघा(3)	11:30
23 सितं.	मघा(4)	4:54
25 सितं.	पू.फा.(1)	22:10
28 सितं.	पू.फा.(2)	15:19

2025 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
1 अक्तू.	पू.फा.(3)	27:50
3 अक्तू.	पू.फा.(4)	25:16
6 अक्तू.	उ.फा.(1)	18:05
9 अक्तू.	उ.फा.2कन्या	10:48
11 अक्तू.	उ.फा.(3)	27:25
14 अक्तू.	उ.फा.(4)	19:54
17 अक्तू.	हस्त(1)	12:19
20 अक्तू.	हस्त(2)	4:38
22 अक्तू.	हस्त(3)	20:53
25 अक्तू.	हस्त(4)	13:04
28 अक्तू.	चित्रा(1)	5:10
30 अक्तू.	चित्रा(2)	21:14
2 नवं.	चित्रा(3)तुला	13:15
5 नवं.	चित्रा(4)	5:12
7 नवं.	स्वा.(1)	21:06
10 नवं.	स्वा.(2)	12:59
13 नवं.	स्वा.(3)	4:47
15 नवं.	स्वा.(4)	20:34
18 नवं.	विशा.(1)	12:18
20 नवं.	विशा.(2)	28:00
23 नवं.	विशा.(3)	19:41
26 नवं.	विशा.4 वृश्चिक	11:21
28 नवं.	अनु.(1)	27:00
1 दिसं.	अनु.(2)	18:39
4 दिसं.	अनु.(3)	10:15
6 दिसं.	अनु.(4)	25:52
9 दिसं.	ज्ये.(1)	17:28
12 दिसं.	ज्ये.(2)	9:03
14 दिसं.	ज्ये.(3)	24:38
17 दिसं.	ज्ये.(4)	16:11
20 दिसं.	मूल(1)धनु	7:44
22 दिसं.	मूल(2)	23:18
25 दिसं.	मूल(3)	14:51
28 दिसं.	मूल(4)	6:24
30 दिसं.	पू.षा.(1)	21:59
(सन् 2026 ई.)		
2 जन.	पू.षा.(2)	13:34
5 जन.	पू.षा.(3)	5:09

2026 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
7 जन.	पू.षा.(4)	20:45
10 जन.	उ.षा.(1)	12:21
13 जन.	उ.षा.(2)मकर	3:57
15 जन.	उ.षा.(3)	19:34
18 जन.	उ.षा.(4)	11:11
20 जन.	श्रव.(1)	26:49
23 जन.	श्रव.(2)	18:29
26 जन.	श्रव.(3)	13:59
28 जन.	श्रव.(4)	25:52
31 जन.	धनि.(1)	17:36
3 फर.	धनि.(2)	9:23
5 फर.	धनि.3 कुम्भ	25:10
8 फर.	धनि.(4)	17:00
11 फर.	शत.(1)	8:51
13 फर.	शत.(2)	24:44
16 फर.	शत.(3)	16:39
19 फर.	शत.(4)	8:37
21 फर.	पू.भा.(1)	24:36
24 फर.	पू.भा.(2)	16:40
27 फर.	पू.भा.(3)	8:46
1 मार्च	पू.भा.4 मीन	24:56
4 मार्च	उ.भा.(1)	17:09
7 मार्च	उ.भा.(2)	9:25
9 मार्च	उ.भा.(3)	25:46
12 मार्च	उ.भा.(4)	18:11
15 मार्च	रेव.(1)	10:38
17 मार्च	रेव.(2)	27:09
20 मार्च	रेव.(3)	19:42

शनि नक्षत्र प्रवेश

[संवतारम्भ में पू.भा. 4 मीन में]

तारीख	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
29 मार्च	पू.भा.(4)मीन	21:44
28 अप्रै.	उ.भा.(1)	6:17
7 जून	उ.भा.(2)	14:36
13 जुला.	वक्री	9:40
18 अग.	व. उ.भा.(1)	13:09
3 अक्तू.	व.पू.भा.(4)	23:44

शनि नक्षत्र प्रवेश

2025 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
28 नवं.	मार्गी	9:21
(सन् 2026 ई.)		
20 जन.	उ.भा.(1)	10:46
22 फर.	उ.भा.(2)	3:09

राहु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में पू.भा. 4 में)

18 मई	पू.भा.3 कुम्भ	19:35
20 जुला.	पू.भा.(2)	17:12
21 सितं.	पू.भा.(1)	14:51
23 नवं.	शत.(4)	12:22
(सन् 2026 ई.)		
25 जन.	शत.(3)	10:07

केतु नक्षत्र प्रवेश

[संवतारम्भ में उ.फा. 2 में]

18 मई	उ.फा. 1 सिंह	19:35
20 जुला.	पू.फा.(4)	17:12
21 सितं.	पू.फा.(3)	14:51
23 नवं.	पू.फा.(2)	12:22
(सन् 2026 ई.)		
25 जन.	पू.फा.(1)	10:07

यूरेनस नक्षत्र प्रवेश

[संवतारम्भ में कृति. 2 में]

22 मई	कृति.(3)	11:50
30 जुला.	कृति.(4)	22:42
6 सितं.	वक्री	10:20
14 अक्तू.व.	कृति.(3)	7:55
(सन् 2026 ई.)		
0 जन. व.	कृति.(2)	9:02
4 फर.	मार्गी	8:05
फर.	कृति.(3)	5:28

नैपच्यून नक्षत्र प्रवेश

[संवतारम्भ में उ.भा. (1) में]

2025 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
24 अप्रै.	उ.भा.(2)	8:50
4 जुला.	वक्री	27:05
19 सितं. व.	उ.भा.(1)	5:17
10 दिसं.	मार्गी	17:36
(सन् 2026 ई.)		
24 फर.	उ.भा.(2)	21:29

प्लूटो नक्षत्र प्रवेश

[संवतारम्भ में उ.षा. 4 में]

4 मई	वक्री	20:52
14 अक्तू.	मार्गी	8:20
(सन् 2026 ई.)		
18 फर.	श्रव.(1)	9:13

शास्त्र-वाक्य

➥आसन—बिना आसन पर बैठ कर किए गए जप, तप, पाठ एवं मन्त्र आदि अनुष्ठान पूर्ण फल प्रदायक नहीं होते। कुश, कम्बल, मृगचर्म एवं रेशम का आसान जपादि के लिए श्रेष्ठ कहे गए हैं। संतानवान गृहस्थी तो मृगचर्म पर भी न बैठे।

ग्रहों की अंशात्मक युतियां

(सन् 2025-26 ई.)

2 अप्रै. ➥ शुक्र-राहु (मीन)
7 अप्रै. ➥ शुक्र-शनि (मीन)
14 अप्रै. ➥ शनि-राहु (मीन)
25 अप्रै. ➥ शुक्र-शनि (मीन)
30 मई ➥ सूर्य-बुध (मीन)
24 जून ➥ सूर्य-गुरु (मिथुन)
1 अग. ➥ सूर्य-बुध (कर्क)
12 अग. ➥ गुरु-शुक्र (मिथुन)
10 सितं. ➥ सूर्य-केतु (सिंह)
11 सितं. ➥ बुध-केतु (सिंह)
13 सितं. ➥ सूर्य-बुध (सिंह)
3 अक्तू. ➥ शुक्र-केतु (सिंह)
20 अक्तू. ➥ मंग.-बुध (तुला)
13 नवं. ➥ मंग.-बुध (वृश्चिक)
20 नवं. ➥ सूर्य-बुध (वृश्चिक)
25 नवं. ➥ बुध-शुक्र (तुला)

(सन 2026 ई.)

6 जन. ➥ सूर्य-शुक्र (धनु)
8 जन. ➥ मंग.-शुक्र (धनु)
9 जन. ➥ सूर्य-मंग. (धनु)
18 जन. ➥ मंग.-बुध (मकर)
21 जन. ➥ सूर्य-बुध (मकर)
29 जन. ➥ बुध-शुक्र (मकर)
18 फर. ➥ शुक्र-राहु (कुम्भ)
28 फर. ➥ बुध-शुक्र (कुम्भ)
7 मार्च ➥ सूर्य-बुध (कुम्भ)
8 मार्च ➥ शुक्र-शनि (मीन)
15 मार्च ➥ मंग.-बुध (कुम्भ)

पं. देवीदयालु संस्थान का कर्मकाण्ड सम्बन्धी नवीन प्रकाशन

'वार्षिक (एकोद्दिष्ट) एवं चातुर्वार्षिक श्राद्ध पद्धति'

[देवर्षि-पितृ-तर्पण, शय्या दान, गोदान, बलिवैश्वदेव विधि, पितृस्तोत्र, पितृसूक्त आदि सहित]

[लेखक/सम्पादक :-पं. विवेक शर्मा (पंचांगकर्त्ता)]

द्विग्रही-योग—वि. संवत् २०८२ (सन् 2025-26 ई.)

सूर्य-बुध ➥ 29 मार्च से 13 अप्रै. (मीन)
सूर्य-शुक्र ➥ 29 मार्च से 13 अप्रै. (मीन)
सूर्य-राहु ➥ 29 मार्च से 13 अप्रै. (मीन)
बुध-राहु ➥ 29 मार्च से 13 अप्रै. (मीन)
शुक्र-राहु ➥ 29 मार्च से 13 अप्रै. (मीन)
सूर्य-शनि ➥ 29 मार्च से 13 अप्रै. (मीन)
शनि-राहु ➥ 29 मार्च से 18 मई (मीन)
शुक्र-शनि ➥ 29 मार्च से 31 मई (मीन)
शुक्र-राहु ➥ 29 मार्च से 18 मई (मीन)
बुध-गुरु ➥ 6 जून से 22 जून (मिथुन)
मंग-केतु ➥ 6 जून से 28 जुला. (सिंह)
सूर्य-गुरु ➥ 15 जून से 15 जुला. (मिथुन)
सूर्य-बुध ➥ 16 जुला. से 16 अग. (कर्क)
गुरु-शुक्र ➥ 26 जुला. से 20 अग. (मिथुन)
सूर्य-केतु ➥ 16 अग. से 16 सितं. (सिंह)
बुध-शुक्र ➥ 20 अग. से 30 अग. (कर्क)
शुक्र-केतु ➥ 14 सितं. से 9 अक्तू. (सिंह)
मंग.-बुध ➥ 2 अक्तू. से 24 अक्तू. (तुला)
सूर्य-मंग. ➥ 17 अक्तू. से 27 अक्तू. (तुला)
मंग.-बुध ➥ 27 अक्तू. से 23 नवं. (वृश्चिक)
सूर्य-शुक्र ➥ 2 नवं. से 16 नवं. (वृश्चिक)
सूर्य-मंग. ➥ 16 नवं. से 7 दिसं. (वृश्चिक)
सूर्य-शुक्र ➥ 26 नवं. से 15 दिसं. (वृश्चिक)
सूर्य-मंग. ➥ 15 दिसं. से 14 जन. (धनु)

(सन 2026 ई.)

सूर्य-मंग. ➥ 15 जन. से 12 फर. (मकर)
शुक्र-शनि ➥ 1 मार्च से 19 मार्च (मीन)
सूर्य-शुक्र ➥ 14 मार्च से 19 मार्च (मीन)
सूर्य-शनि ➥ 14 मार्च से 19 मार्च (मीन)

तीनग्रही-योग—(संवत् २०८२)

शु.+श.+रा. ➥ 29 मार्च से 31 मई (मीन)
सू.+बु.+के. ➥ 30 अग. से 15 सितं. (सिंह)
सू.+मं.+बु. ➥ 17 अक्तू. से 24 अक्तू. (तुला)
सू.+मं.+बु. ➥ 16 नवं. से 23 नवं. (वृश्चिक)
सू.+मं.+शु. ➥ 26 नवं. से 7 दिसं. (वृश्चिक)
सू.+मं.+बु. ➥ 6 दिसं. से 7 दिसं. (वृश्चिक)

तीनग्रही-योग—(संवत् २०८२)

सू.+बु.+शु. ➥ 6 दिसं. से 15 दिसं. (वृश्चिक)
सू.+मं.+शु. ➥ 20 दिसं. से 14 जन. (धनु)

(सन 2026 ई.)

सू.+मं.+शु. ➥ 15 जन. से 5 फर. (मकर)
बु.+शु.+रा. ➥ 5 फर. से 1 मार्च (कुम्भ)
मं.+बु.+रा. ➥ 23 फर. से 19 मार्च (कुम्भ)
सू.+शु.+श. ➥ 14 मार्च से 20 मार्च (मीन)

चतुर्ग्रही योग-सं. २०८२

बु.+शु.+श.+रा. ➥ 13 अप्रै. से 6 मई (मीन)
सू.+मं.+बु.+शु. ➥ 29 दिसं. से 12 जन. (धनु)

(सन 2026 ई.)

सू.+मं.+बु.+शु. ➥ 17 जन. से 3 फर. (मकर)
सू.+बु.+शु.+रा. ➥ 12 फर. से 1 मार्च (कुम्भ)
सू.+मं.+बु.+रा. ➥ 23 फर. से 14 मार्च (कुम्भ)

पंचग्रही योग

सू.+बु.+शु.+श.+रा. ➥ 29 मार्च से 13 अप्रै. (मीन)

(सन 2026 ई.)

सू.+मं.+बु.+शु.+रा. ➥ 23 फर. से 1 मार्च (कुम्भ)

षडाष्टक योग

मंग.+शनि ➥ 6 जून से 28 जुला. (सिंह-मीन)

समसप्तक योग-संवत् २०८२

मंग.-शनि ➥ 28 जुला. से 13 सिंह. (कन्या-मीन)
सूर्य-शनि ➥ 16 सितं. से 16 अक्तू. (कन्या-मीन)
शुक्र-शनि ➥ 9 अक्तू. से 1 नवं. (कन्या-मीन)
मंग.-गुरु ➥ 7 दिसं. से 14 जन. (मिथुन-धनु)
गुरु-शुक्र ➥ 20 दिसं. से 12 जन. (मिथुन-धनु)

नवपंचक योग

गुरु-शुक्र ➥ 5 फर. से 1 मार्च(26) (मिथुन-कुम्भ)

कालसर्प योग

20 अप्रैल से 23 जुलाई, 2025 ई. तक पुनः, 13 मार्च, 2026 ई. से संवतान्त तक

वि. संवत् २०८२, चैत्र शुक्ल पक्ष शाकः १९४७

सन् 2025 ई. (ता. 30 मार्च से 12 अप्रैल तक), हिजरी सन् 1446
सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ऋतु:

29 मार्च से शनि तथा 31 मार्च से बुध प्रातः पूर्वक्षितिज में दिखाई देगा। शुक्र भी इस समय पूर्व में ही होगा। सायं गुरु पश्चिमकपाल में तथा मंगल याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	तारीखें चैत्र शक	रमज़ान मु.	मार्च	चैत्र प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३०:४८	१	रवि	१६:०८	रेव.	२५:३०	ऐन्द्र	२८:४८	ब	१६:०८	9	29	30	१७	मे.२५:३०	'**सिद्धार्थी**' नाम नव **वि. संवत् २०८२ प्रारम्भ, चैत्र** (वासन्त) **नवरात्र (A)**	11:15:21:55	6:23	18:42
३०:५०	२	चन्द्र	७:०५	अश्वि	१८:२८	वैधृ	१८:३०	कौ	७:०५	10	शव्वाल	31	१८	मेष	**श्रीमत्स्य जयन्ती, गणगौरी तृतीया,** सूर्य रेवती में १९:०३ (13:59),**(B)**	11:16:21:11	6:22	18:42
अवम्	३	चन्द्र	५८:२३	०	००	०	००	०	००	०	०	०	०	००	**तृतीया तिथि का क्षय** ००० ००० ०००	००००	० ०	० ०
३०:५५	४	मंग	५०:३०	भर.	११:५५	विष्क प्रीति	८:३८ ५९:३५	व	२४:२८	11	2	अप्रै	१९	वृ.२५:२३	भ. २४:२८ से ५०:३० तक, दमनक चतुर्थी, अप्रैल मास प्रारम्भ	11:17:20:24	6:21	18:43
३१:०३	५	बुध	४३:४८	कृति.	६:१८	आयु	५१:१८	ब	१७:०९	12	3	2	२०	वृष	**श्री (लक्ष्मी) पंचमी, मंगल कर्क में** ४७:४३ (25:24), **नाग-पंचमी**, हय-व्रत	11:18:19:32	6:19	18:44
३१:०५	६	गुरु	३८:३०	रोह. मृग.	१:५३ ५८:५३	सौभा	४४:२०	कौ	११:०९	13	4	3	२१	मि.३०:१०	**स्कन्द षष्ठी व्रत,** वक्री बुध पू.भा. ४ में ३१:०० (18:42)	11:19:18:42	6:18	18:44
३१:१०	७	शुक्र	३४:५०	आर्द्रा	५७:४०	शोभ	३८:४०	ग	६:४०	14	5	4	२२	मिथुन	भ. ३४:५० से,	11:20:17:48	6:17	18:45
३१:१५	८	शनि	३२:५८	पुन.	५८:१०	अति	३४:२८	वि	३:५४	15	6	5	२३	क.४२:५३	भ. ३:५४ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति,** अशोककालिका प्राशन, **(C)**	11:21:16:53	6:16	18:46
३१:२०	९	रवि	३२:५५	पुष्य	६०:००	सुक	३१:४३	बा	२:५७	16	7	6	२४	कर्क	**श्रीदुर्गा-नवमी, नवरात्र-समाप्त, श्रीरामनवमी**	11:22:15:51	6:14	18:46
३१:२५	१०	चन्द्र	३४:३०	पुष्य	०:३०	धृति	३०:१५	तै	३:४३	17	8	7	२५	कर्क	**बुध मार्गी** २६:०८ (16:40), नवरात्र व्रत पारणा, गण्डमूल 6:25 से	11:23:14:51	6:13	18:47
३१:३०	११	मंग	३७:३५	आश्ले	४:१८	शूल	२९:५५	व	६:०३	18	9	8	२६	सिं. ४:१८	भ. ६:०३ से ३७:३५ तक, **कामदा एकादशी व्रत,** लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव**(D)**	11:24:13:48	6:12	18:48
३१:३३	१२	बुध	४१:५३	मघा	९:२५	गण्ड	३०:३५	ब	९:४४	19	10	9	२७	सिंह	श्रीविष्णु दमनोत्सव, गण्डमूल 9:57 तक,	11:25:12:43	6:11	18:48
३१:३८	१३	गुरु	४७:०८	पू.फा.	१५:३८	वृद्धि	३२:०३	कौ	१४:३१	20	11	10	२८	कं.३२:१८	**प्रदोष व्रत,** गुरु मृग. १ में ३१:४० (18:50), **अनङ्ग त्रयोदशी, श्रीमहावीर(E)**	11:26:11:35	6:10	18:49
३१:४५	१४	शुक्र	५३:०५	उ.फा.	२२:३५	ध्रुव	३४:०३	ग	२०:०७	21	12	11	२९	कन्या	भ. ५३:०५ से, श्रीशिव-दमनोत्सव, मंगल पुष्य में ५९:५५ (30:06), बुध **(F)**	11:27:10:23	6:08	18:50
३१:४८	१५	शनि	५९:२३	हस्त	३०:०३	व्या.	३६:२३	वि	२६:१४	22	13	12	३०	कन्या	भ. २६:१४ तक, **चैत्र पूर्णिमा,** वैशाखस्नान प्रारम्भ, **श्रीहनुमान-जयन्ती (G)**	11:28:09:12	6:07	18:50

'सिद्धार्थी' संवत्सर (देखें पृष्ठ 82)

(A) प्रारम्भ, घटस्थापन, पंचक समाप्त २५:३० (16:35), **चन्द्रदर्शन,** मु. ३०, **संवत्सरफल-श्रवण,** ध्वजारोहण, तैलाभ्यंग, श्रीदुर्गा-पूजा, गुड़ी-पड़वा, गण्डमूल विचार **(B)** वक्री बुध पूर्व में उदय ३६:०५ (20:48), वक्री शुक्र पू.भा. ४ में ५६:०३ (28:47), आन्दोलन तृतीया, गण्डमूल 13:45 तक, शव्वाल (मु.)मास प्रारम्भ **(C)** अशोकाष्टमी, **मेला बाहूफोर्ट (जम्मू)-कांगड़ादेवी-नैनादेवी** (हि.प्र.), अन्नपूर्णा-पूजन **(D)** गण्डमूल विचार **(E)** जयन्ती (जैन) **(F)** उ.भा. में २८:२० (17:28) **(G) (दक्षिण-भारत), श्रीसत्यनारायण व्रत**

शनौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 5 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
11	2	3	11	1	11	11	11	5
21	20	0	2	22	1	0	2	2
15	5	44	53	24	43	45	18	18
00	29	45	40	12	31	24	34	34
59 3	793 28	21 10	10 50	9 48	18 19	7 5	3 11	3 11
रेव. 2	पुन. 1	पुन. 4	पूभा 4	रोहि 4	पूभा 4	पूभा 4	पूभा 4	उफा 2
०	०	मा	व	मा	व	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
मित्र	मित्र	नीच	नीच	शत्रु	उच्च	सम	सम	मित्र

कुण्डली सूर्योदय, 5 अप्रै.

1; 2 गु.; 3 चं.; 4 मं.; 5; 6 के.; 7; 8; 9; 10; 11; 12 सू. बु. शु. श.रा.

शनौ पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 12 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
11	5	3	11	1	11	11	11	5
28	17	3	3	23	0	1	1	1
7	5	19	30	35	26	34	56	56
41	53	25	20	0	11	25	19	19
58 49	710 43	23 15	25 10	10 30	1 18	6 53	3 11	3 11
रेव 4	हस्त 3	पुन 4	उभा 1	मृग 1	पूभा 4	पूभा 4	पूभा 4	उफा 2
०	०	मा	मा	मा	व	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
मित्र	मित्र	नीच	नीच	शत्रु	उच्च	सम	सम	मित्र

कुं. सूर्योदय, 12 अप्रैल

1; 2 गु.; 3; 4 मं.; 5; 6 चं.के.; 7; 8; 9; 10; 11; 12 सू. बु. शु. श. रा.

चैत्र शुक्ल पक्षफल–

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (30 मार्च, 2025 ई., रविवार) से '**शिवविंशति**' का '**सिद्धार्थी**' नाम का नया वि. संवत् 2082 प्रारम्भ होगा। आगामी संवत्काल में व्रतानुष्ठान, होम-दानादि शुभ कार्यों के संकल्पादि में इसी नाम का प्रयोग होगा। नव सम्वत् का राजा सूर्य तथा मन्त्री भी सूर्य है। जब राजा और मन्त्री के पद एक ही ग्रह के पास हो (विशेषकर क्रूर ग्रह हो), तो समाज एवं लोगों में आवेश एवं क्रोध के कारण हिंसक एवं उपद्रव की घटनाएँ अधिक होंग। राजनेताओं के मध्य टकराव एवं परस्पर अविश्वास, क्लिष्ट रोग-भय, पीड़ा, चोरी, पित्त-रोगों की बहुलता, भीषण अग्निकाण्ड, वाहन दुर्घटनाएँ अधिक हों–"**स्वयं राजा स्वयं मन्त्री जनेषु रोगपीड़ा, चौराग्नि, शंका-विग्रह भयं च नृपाणाम्।।**" प्रतिपदा को शुभ मुहूर्त्त में सम्वत्सर पूजन, घटस्थापन (प्रातः 10:23 बजे तक अथवा अभिजित मुहूर्त्त में), ताम्र या मिट्टी के पात्र में जौं, गेहूँ आदि के बीज बोना, ॐकार सहित श्रीगणेश, विष्णु, श्रीदुर्गादि पंचदेवों की पूजार्चना करनी चाहिए। ब्राह्मणमुख से संवत्-राजादि के फलश्रवण के बाद श्रीदुर्गा/गणेश प्रतिमा के सम्मुख प्रतिपदा से नवमी तक अखण्ड दीप-ज्योति प्रज्वलित करके संकल्पपूर्वक नित्य श्रीदुर्गा-सप्तशती का पाठ करने का विधान है। पूजनोपरान्त ब्राह्मण को भोजन तथा यथाशक्ति पंचांगादि धर्मग्रन्थ, फल, वस्त्र, मिष्ठान्नादि का दान करना शुभ होता है। अन्तिम नवरात्र (या दशमी) के दिन हरी दूर्वा को पूजार्चन के पश्चात् नदी/नहर में विसर्जन करने की परम्परा है। **लोक-भविष्य**–29 मार्च से 13 अप्रैल के मध्य मीन राशि में '**पंचग्रही योग**' बनने से देश एवं विश्व में कहीं भूकम्पादि प्राकृतिक प्रकोपों से जन, धन एवं कृषि की हानि तथा उपद्रव, आतंकवादी घटनाएँ, छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) आदि आकस्मिक घटनाएँ घटित हों। चान्द्र चैत्र मास में पाँच शनिवार होने से भी भूस्खलन, भूकम्प, ज़मीन का फटना, बाढ़ादि प्राकृतिक आपदाओं के संकेत हैं।

वि. संवत् २०८२, वैशाख कृष्ण पक्ष शाक : १९४७

सन् 2025 ई. (ता. 13 से 27 अप्रैल तक), हिजरी सन् 1446
सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त–ग्रीष्म ऋतु :

प्रातः बुध पूर्वक्षितिज में, शुक्र–शनि पास–पास पूर्वक्षितिज से ऊपर दिखाई देंगे। सायं गुरु पश्चिमकपाल में तथा मंगल खमध्यासन्न होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	तारीखें चैत्र शक	शव्वा. मु.	अप्रैल	वैशा. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	जालन्धर सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.
३१:५३	१	रवि	६०:००	चित्रा	३७:४३	हर्ष	३८:५३	बा	३२:३८	23	14	13	वै.	तु. ३:५३	**सूर्य** अश्वि. १ **मेष में ५३:०८** (27:21), **वैशाख संक्रान्ति**, मु. १५, **(A)**	11:29:07:58	6:06	18:51
३१:५८	१	चन्द्र	५:५३	स्वा.	४५:२३	वज्र	४१:२३	कौ	५:५३	24	15	14	२	तुला	**पुण्यकाल वैशाख संक्रान्ति प्रातः 9:45 तक**, डॉ० अम्बेदकर जयन्ती	0:00:06:43	6:05	18:52
३२:००	२	मंग	१२:१०	विशा.	५२:४८	सिद्धि	४३:४३	ग	१२:१०	25	16	15	३	वृ.३५:५८	भ. ४५:०९ से,	0:01:05:25	6:04	18:52
३२:०५	३	बुध	१८:०८	अनु.	५९:४०	व्य.	४५:३८	वि	१८:०८	26	17	16	४	वृश्चिक	भ. १८:०८ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12)	0:02:04:06	6:03	18:53
३२:१३	४	गुरु	२३:२८	ज्ये.	——	वरी	४७:०३	बा	२३:२८	27	18	17	५	वृश्चिक	सती अनुसूइया जयन्ती, गण्डमूल प्रातः 5:55 से,	0:03:02:42	6:01	18:54
३२:१५	५	शुक्र	२७:५०	ज्ये.	५:५३	परि	४७:३८	तै	२७:५०	28	19	18	६	ध. ५:५३	गण्डमूल विचार, गुड फ्राइडे (क्रिश्चियन)	0:04:01:20	6:00	18:54
३२:२०	६	शनि	३१:००	मूल	१०:५५	शिव	४७:१३	व	३१:००	29	20	19	७	धनु	भ. ३१:०० से, सूर्य सायन वृष में 25:26, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, गण्डमूल 10:21 तक	0:04:59:54	5:59	18:55
३२:२५	७	रवि	३२:३८	पू.षा.	१४:३८	सिद्ध	४५:३८	वि	१:४९	30	21	20	८	म.३०:१८	भ. १:४९ तक, अगस्त्य–अस्त, मासिक कालाष्टमी	0:05:58:28	5:58	18:56
३२:२८	८	चन्द्र	३२:३५	उ.षा.	१६:४०	साध्य	४२:३८	बा	२:३७	वै.	22	21	९	मकर	शक वैशाख प्रारम्भ	0:06:57:00	5:57	18:56
३२:३३	९	मंग	३०:४३	श्रव.	१७:००	शुभ	३८:१३	तै	१:३९	2	23	22	१०	कुं.४६:२८	भ. ५८:५३ से, **पंचक प्रारम्भ** ४६:२८ (24:31)	0:07:55:30	5:56	18:57
३२:३८	१०	बुध	२७:०३	धनि.	१५:३३	शुक्ल	३२:२०	वि	२७:०३	3	24	23	११	कुम्भ	भ. २७:०३ तक,	0:08:53:58	5:55	18:58
३२:४३	११	गुरु	२१:३८	शत.	१२:१८	ब्रह्म	२५:०५	बा	२१:३८	4	25	24	१२	मी.५३:५०	**वरूथिनी एकादशी व्रत**, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती	0:09:52:26	5:54	18:58
३२:४५	१२	शुक्र	१४:४०	पू.भा.	७:३३	ऐन्द्र	१६:३५	तै	१४:४०	5	26	25	१३	मीन	**प्रदोष व्रत**, शुक्र उ.भाद्रपद में ४४:०५ (23:31)	0:10:50:52	5:53	18:59
३२:५०	१३	शनि	६:३०	उ.भा. रेव.	१:२८ ५४:२८	वैधृ. विष्क	७:०३ ५६:४८	व	६:३०	6	27	26	१४	मे.५४:२८	भ. ६:३० से ३१:५८ तक, **पंचक समाप्त** ५४:२८ (27:39), मासशिवरात्रि **(B)**	0:11:49:15	5:52	19:00
अवम्	१४	शनि	५७:२५	००	०	०	००	०	००	०	०	०	०	००	**चतुर्दशी तिथि का क्षय** ०० ००	० ० ० ०	० ०	० ०
३२:५३	३०	रवि	४७:५५	अश्वि	४७:००	प्रीति	४६:१०	च	२२:४०	7	28	27	१५	मेष	**वैशाख अमावस**, सूर्य भरणी में ३३:१५ (19:09), बुध रेवती में **(C)**	00:12:47:38	5:51	19:00

(A) पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रातः 9:45 तक, **मेला वैशाखी (पंजाब)**, **शुक्र मार्गी १:१०** (6:34) **(B)** व्रत, गण्डमूल 6:27 से **(C)** २४:०८ (15:30), गण्डमूल 24:39 तक, मेला पिंजौर (कालका, हरियाणा)

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 21 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
0	9	3	11	1	11	11	11	5
6	6	6	9	25	1	2	1	1
55	8	58	39	12	36	35	27	27
54	19	3	21	55	26	0	42	42
58 33	789 16	25 31	58 9	11 19	18 21	6 32	3 11	3 11
अश्वि 3	उषा 3	पुष्य 2	उभा 2	मृग 1	पूभा 4	पूभा 4	पूभा 4	उफा 2
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
उच्च	सम	नीच	नीच	शत्रु	उच्च	सम	सम	मित्र

कुण्डली सूर्योदय, 21 अप्रै.

- 1 सू.
- 2 गु.
- 3
- 4 मं.
- 5
- 6 के.
- 7
- 8
- 9
- 10 चं.
- 11 श.12 शु. बु.रा.

रवौ अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 27 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
0	0	3	11	1	11	11	11	5
12	1	9	16	26	3	3	1	1
46	10	34	9	22	53	13	8	8
47	31	28	14	0	26	32	38	38
58 23	914 55	26 49	73 50	11 47	28 39	6 16	3 11	3 11
अश्वि 4	अश्वि 1	पुष्य 2	उभा 4	मृग 1	उभा 1	पूभा 4	पूभा 4	उफा 2
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
उच्च	सम	नीच	नीच	शत्रु	उच्च	सम	सम	मित्र

कुण्डली सूर्योदय, 27 अप्रैल

- 1 सू. चं.
- 2 गु.
- 3
- 4 मं.
- 5
- 6 के.
- 7
- 8
- 9
- 10
- 11 श.12 श. बु.रा.

वैशाख कृष्ण पक्षफल–

वैशाख मास (चैत्र-पूर्णिमा से वैशाख पूर्णिमा तक) में प्रतिदिन प्रातः सूर्योदय से पूर्व किसी तीर्थस्थान अथवा अपने निवास पर ही गंगाजल मिश्रित पवित्र जल से स्नान करके भगवान् लक्ष्मीनारायण की तुलसीदल सहित पूजार्चन करके नित्य श्रीविष्णु-सहस्रनाम, वैशाख माहात्म्य तथा '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**' आदि नाम मन्त्रों तथा '**पापप्रशमन स्तोत्र**' का पाठ करना चाहिए। वै. पूर्णिमा एवं अमावस के दिन ब्राह्मण को यथाशक्ति वस्त्र, ऋतु-फल, अनाजादि का दान करने से सौभाग्य एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है। **ग्रह-गोचर**–ता. 13 अप्रै. से 6 मई के मध्य मीन राशि में '**चतुर्ग्रही योग**' विश्व तथा देश-विदेश में राजनीतिक दृष्टि से एवं प्राकृतिक प्रकोप आदि कारणों से विषम परिस्थितियों का संकेत दे रहा है। व्यापक जन-धन की हानि होगी। **लोक-भविष्य**–चान्द्र वैशाख मास में पाँच रविवार तथा ता. 13 अप्रै. को रविवासरी वैशाख संक्रान्ति होने से कहीं अनाज की कमी, अत्यधिक महँगाई, दुर्भिक्ष अथवा अकाल जैसी स्थिति बनेगी और सामान्य लोगों में भय अधिक रहे। कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) के भी चाँस बनेंगे। **वैशाख संक्रान्ति**–ता. 13 अप्रैल, रविवार को अर्द्धरात्रि के बाद 3 बजकर 21 मिनट पर (27:21) कुम्भ लग्न में प्रविष्ट होगी। १५ मुहू. इस सं. का पुण्यकाल अगले दिन प्रातः 9:25 बजे तक होगा। वारानुसार घोरा तथा नक्षत्रानुसार महोदरी नामक यह सं. चोर तथा बेईमान लोगों के लिए लाभदायक रहेगी। नीच प्रवृत्ति वाले लोगों के लिए सुखकर रहेगी। **आकाश-लक्षण**–इस पक्ष में गर्मी का प्रभाव बढ़ने लगेगा। पूर्वार्द्ध में उत्तरी तथा पहाड़ी क्षेत्रों में तेज हवाओं के साथ खण्ड वर्षा के योग हैं। **संक्रान्ति राशिफल**–वैशाख सं. मेष, वृष, मिथुन, सिंह, तुला, वृश्चिक, धनु राशि वालों के लिए शुभ समाचार लेकर आएगी।

वि. संवत् २०८२, वैशाख शुक्ल पक्ष शाकः १९४७

सन् 2025 ई. (ता. 28 अप्रैल से 12 मई तक), हिजरी सन् 1446
सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतुः

प्रातः बुध पूर्वक्षितिज में, शुक्र-शनि पूर्व में ही इससे ऊपर होंगे। सायं गुरु पश्चिमी क्षितिज के पास तथा मंगल याम्योत्तर-वृत्तासन्न होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.प.	योग	समाप्तिकाल घ.प.	करण	समाप्तिकाल घ.प.	वैशा.शक	शव्वाल मु.	अप्रैल	वैशा.प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	जालन्धर सूर्योदय घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.
३२:५८	१	चन्द्र	३८:२३	भर.	३९:३०	आयु	३५:३०	किं	१३:०९	8	29	28	१६	वृ.५२:४०	गुरु मृग. २ में ३०:३८ (18:05), शनि उ.भाद्रपद 1 में १:०८ (6:17)	0:13:45:58	5:50	19:01
३३:०३	२	मंग	२९:१८	कृति.	३२:२५	सौभा	२५:१३	बा	३:५१	9	30	29	१७	वृष	**चन्द्रदर्शन**, मु. ४५, श्रीशिवाजी-जयन्ती, **भगवान् परशुराम जन्मोत्सव (A)**	0:14:44:17	5:49	19:02
३३:०५	३	बुध	२१:०३	रोहि.	२६:१५	शोभ	१५:३५	ग	२१:०३	10	जि	30	१८	मि.५३:३८	भ. ४७:३३ से, **अक्षय-तृतीया**, जिल्काद (मु.) मास प्रारम्भ, **केदार-(B)**	0:15:42:33	5:48	19:02
३३:१०	४	गुरु	१४:०३	मृग.	२१:२५	अति सुक	६:५८ ५९:४०	वि	१४:०३	11	2	मई	१९	मिथुन	भ. १४:०३ तक, मई मास प्रारम्भ, श्रम-दिवस	0:16:40:48	5:47	19:03
३३:१५	५	शुक्र	८:४३	आर्द्रा	१८:१५	धृति	५३:५५	बा	८:४३	12	3	2	२०	मिथुन	**आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती**	0:17:39:02	5:46	19:04
३३:१८	६	शनि	५:२०	पुन.	१७:०३	शूल	४९:५०	तै	५:२०	13	4	3	२१	क. २:१०	**श्रीगङ्गा-जयन्ती** (मध्याह्न-व्यापिनी, देखें पृष्ठ 18), श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती	0:18:37:12	5:45	19:04
३३:२३	७	रवि	४:००	पुष्य	१७:५५	गण्ड	४७:२५	व	४:००	14	5	4	२२	कर्क	भ. ४:०० से ३४:२२ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी**, गण्डमूल 12:54 से	0:19:35:21	5:44	19:05
३३:२८	८	चन्द्र	४:४३	आश्ले	२०:४५	वृद्धि	४६:३३	ब	४:४३	15	6	5	२३	सिं.२०:४५	**जानकी (सीता) जयन्ती** (देखें पृष्ठ 18), **श्रीबगुलामुखी जयन्ती (C)**	0:20:33:27	5:43	19:06
३३:३०	९	मंग	७:२०	मघा	२५:२३	ध्रुव	४६:५८	कौ	७:२०	16	7	6	२४	सिंह	बुध अश्वि 1 **मेष में ५५:५८** (28:06), गण्डमूल 15:52 तक	0:21:31:33	5:43	19:07
३३:३३	१०	बुध	११:३५	पू.फा.	३१:२८	व्या.	४८:२८	ग	११:३५	17	8	7	२५	कं.४८:१०	भ. ४४:१९ से, श्रीटैगोर जयन्ती	0:22:29:36	5:42	19:07
३३:३८	११	गुरु	१७:०३	उ.फा.	३८:३५	हर्ष	५०:४०	वि	१७:०३	18	9	8	२६	कन्या	भ. १७:०३ तक, **मोहिनी एकादशी व्रत**	0:23:27:39	5:41	19:08
३३:४३	१२	शुक्र	२३:१३	हस्त	४६:१३	वज्र	५३:१५	बा	२३:१३	19	10	9	२७	कन्या	**प्रदोष व्रत**	0:24:25:38	5:40	19:09
३३:४५	१३	शनि	२९:३८	चित्रा	५४:००	सिद्धि	५५:५५	तै	२९:३८	20	11	10	२८	तु.२०:०८		0:25:23:36	5:39	19:09
३३:४८	१४	रवि	३५:५८	स्वा.	--	व्य.	५८:२५	ग	२:४८	21	12	11	२९	तुला	भ. ३५:५८ से, **श्रीनृसिंह जयन्ती** (देखें पृष्ठ 18), सूर्य कृतिका में १९:०५**(D)**	0:26:21:34	5:39	19:10
३३:५३	१५	चन्द्र	४२:००	स्वा.	१:३८	वरी	--	वि	८:५९	22	13	12	३०	वृ.५२:०५	भ. ८:५९ तक, **वैशाख पूर्णिमा, श्रीबुद्ध-जयन्ती**, वैशाखस्नान समाप्त **(E)**	0:27:19:27	5:38	19:11

(A) (देखें पृष्ठ 18) **(B) बद्रीनाथ यात्रा प्रारम्भ (C)** (अर्द्धरात्रि-व्यापिनी) **(D)** (13:17), **श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती**
(E) मंगल आश्लेषा में ७:२० (8:34), श्रीबुद्ध-पूर्णिमा, **श्रीसत्यनारायण व्रत**, श्रीकूर्म जयन्ती,, **महर्षि भृगु जयन्ती**

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 5 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
0	3	3	11	1	11	11	11	5
20	25	13	27	27	8	4	0	0
32	31	14	1	58	21	2	43	43
56	34	30	29	9	20	8	12	12
58 8	750 4	28 19	90 56	12 19	38 5	5 49	3 11	3 11
भर. 3	श्ले. 3	पुष्य 3	रेव 4	मृग. 2	उभा 2	उभा 1	पूभा 4	उफा 2
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
उच्च	स्व	नीच	नीच	शत्रु	उच्च	सम	सम	मित्र

कुण्डली सूर्योदय, 5 मई: 1 सू.; 2 गु.; 3; 4 चं. मं.; 5; 6 के.; 7; 8; 9; 10; 11; 12 शु. श. बु. रा.

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 12 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
0	6	3	0	1	11	11	11	5
27	19	16	8	29	13	4	0	0
19	36	36	19	25	16	41	20	20
8	49	14	48	29	32	40	56	56
57 55	714 12	29 26	104 51	12 41	45 56	5 24	3 10	3 10
कृति 1	स्वा. 4	पुष्य 4	अश्वि 3	मृग. 2	उभा 3	उभा 1	पूभा 4	उफा 2
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
उच्च	सम	नीच	सम	शत्रु	उच्च	सम	सम	मित्र

कुण्डली सूर्योदय, 12 मई: 1 सू. बु.; 2 गु.; 3; 4 मं.; 5; 6 के.; 7 चं.; 8; 9; 10; 11; 12 शु. श. रा.

वैशाख शुक्ल पक्षफल–

भगवान् विष्णु के अंशावतार श्रीपरशुराम का जन्म वैशाख शुक्ल तृतीया तिथि की रात्रि के प्रथम प्रहर (प्रदोषकाल) में हुआ था। तदनुसार **29 अप्रैल, मंगलवार** को **भगवान् परशुराम** का **जन्मोत्सव** मनाना शुभ होगा। (देखें पृष्ठ-)। पूर्वाह्न-व्यापिनी '**अक्षय-तृतीया**' का पर्व 30 अप्रैल, बुधवार को होगा। बुधवार तथा रोहिणी नक्षत्र होने से यह तिथि विशेष पुण्यप्रद होगी। इस तिथि की गणना युगादि तिथियों में होती है, त्रेतायुग का प्रारम्भ इसी तिथि से हुआ था। अक्षय तृतीया को दिए गए दान और किए गए स्नान, जप, तप, हवन आदि कर्मों का शुभ और अनन्त गुणा फल होता है। अक्षय-तृतीया व्रत की कथा, माहात्म्यादि का विवरण हमारी प्रकाशित '**दिवाकर जन्त्री**' (**2025 ई.**) में पढ़ें। **श्रीगङ्गा-जयन्ती (3 मई)** को मध्याह्न के समय श्रीगङ्गा जी का अवतरण पृथ्वी पर हुआ था। इस पक्ष व तिथि में हरिद्वार में गंगास्नान, पुण्याक्षत व दीपादि द्वारा गङ्गापूजन, जप-पाठ एवं अन्न, वस्त्र, फलादि दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। **श्रीबगुलामुखी-जयन्ती (5 मई)** को शक्तिस्वरूपा माता बगुलामुखी की पूजार्चना करने से व्यक्ति को ऋण, रोग एवं शत्रुओं का भय नहीं होता। **नृसिंह-जयन्ती (11 मई)** को भगवान् विष्णु अवतार नृसिंह देव की पूजा एवं स्तोत्रपाठ करने से प्रबल शत्रुओं से निर्भयता की प्राप्ति होती है। **वैशाख पूर्णिमा** (12 मई) को तीर्थस्थान पर गंगाजल सहित स्नान करके भगवान् विष्णु का ध्यान, पूजन एवं श्रीविष्णु-सहस्रनाम का पाठ करना चाहिए। **ग्रह गोचर**–ता. 6 मई तक मीन राशि में '**चतुर्ग्रही योग**' विश्व तथा देश में प्राकृतिक प्रकोप, युद्धादि के कारण अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध प्रधानमन्त्री एवं सरकार के सामने असमंजसपूर्ण परिस्थितियां उत्पन्न करेगा। **आकाश-लक्षण**–पक्ष के उत्तरार्द्ध में गर्म हवाओं के कारण उत्तर भारत के अनेक क्षेत्रों में गर्मी का प्रकोप बढ़ेगा। **शकुन**–अक्षय ३ या वै.शु. ५ को बादल चाल बने अथवा बूंदाबांदी हो, तो सर्वप्रकार के अनाज भाद्रपद में तेज होंगे। क्रय करके स्टॉक करना लाभप्रदायक होगा।

वि. संवत् २०८२, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष शाक : १९४७

सन् 2025 ई. (ता. 13 से 27 मई तक), हिजरी सन् 1446
सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु :

प्रातः शुक्र–शनि पूर्व में होंगे। बुध भी पूर्वक्षितिज में होगा जो 18 मई से अदृश्य हो जाएगा। सायं गुरु पश्चिमीक्षितिज में तथा मंगल याम्योत्तरवृत से कुछ पश्चिम में दिखाई देगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	वैशा. शक	जिल्का. मु.	मई	वैशा. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा. स्टैं. टा. जालन्धर सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३३:५५	१	मंग	४७:२८	विशा.	८:५०	वरी	०:४०	बा	१४:४४	23	14	13	३१	वृश्चिक	ज्येष्ठ कृष्णपक्ष प्रारम्भ	0:28:17:20	5:37	19:11
३४:००	२	बुध	५२:१५	अनु.	१५:२८	परि	२:२५	तै	१९:५२	24	15	14	ज्ये.	वृश्चिक	**सूर्य वृष में** ४६:२८ (24:11), **ज्येष्ठ संक्रान्ति**, मु. १५, पुण्यकाल **(A)**	0:29:15:11	5:36	19:12
३४:०३	३	गुरु	५६:०८	ज्ये.	२१:२०	शिव	३:३५	व	२४:१२	25	16	15	२	ध.२१:२०	भ. २४:१२ से ५६:०८ तक, गण्डमूल विचार	1:00:13:03	5:36	19:13
३४:०५	४	शुक्र	५९:०८	मूल	२६:२३	सिद्ध	४:०८	ब	२७:३८	26	17	16	३	धनु	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12), शुक्र रेवती में १७:५८ (12:46), **(B)**	1:01:10:51	5:35	19:13
३४:०८	५	शनि	६०:००	पू.षा.	३०:२३	साध्य	३:५५	कौ	३०:०४	27	18	17	४	म.४६:१३		1:02:08:40	5:35	19:14
३४:१३	५	रवि	१:००	उ.षा.	३३:१८	शुभ	२:५३	तै	१:००	28	19	18	५	मकर	राहु पू.भा. ३ **कुम्भ–केतु** उ.फा. 1 **सिंह में ३५:०३** (19:35), बुध पूर्व **(C)**	1:03:06:27	5:34	19:15
३४:१५	६	चन्द्र	१:३८	श्रव.	३४:५३	शुक्ल ब्रह्म	०:५० ५७:३८	व	१:३८	29	20	19	६	मकर	भ. १:३८ से ३१:१३ तक,	1:04:04:10	5:33	19:15
३४:१८	७	मंग	०:४८	धनि	३४:५८	ऐन्द्र	५३:१३	ब	०:४८	30	21	20	७	कुं. ५:०८	**पंचक प्रारम्भ** ५:०८ (7:36), सूर्य सायन मिथुन में 24:25	1:05:01:56	5:33	19:16
अवम्	८	मंग	५८:२८	०	००	०	००	०	००	०	०	०	०	००	**अष्टमी तिथि का क्षय** ००० ००० ०००	० ० ० ०	००	००
३४:२३	९	बुध	५४:३५	शत.	३३:३५	वैधृ	४७:३८	तै	२६:३२	31	22	21	८	कुम्भ	बुध कृतिका में ४१:५३ (22:17)	1:05:59:39	5:32	19:17
३४:२३	१०	गुरु	४९:१३	पू.भा.	३०:३८	विष्क	४०:४३	व	२१:५४	ज्ये	23	22	९	मी.१६:३०	भ. २१:५४ से ४९:१३ तक, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ	1:06:57:22	5:32	19:17
३४:२८	११	शुक्र	४२:२८	उ.भा.	२६:२०	प्रीति	३२:४३	ब	१५:५१	2	24	23	१०	मीन	**अपरा एकादशी व्रत, मेला भद्रकाली** (कपूरथला, पंजाब), **बुध वृष में(D)**	1:07:55:02	5:31	19:18
३४:३०	१२	शनि	३४:३५	रेव.	२०:४३	आयु	२३:४३	कौ	८:३२	3	25	24	११	मे.२०:४३	**शनि प्रदोष व्रत, पंचक समाप्त** २०:४३ (13:48), गण्डमूल विचार	1:08:52:44	5:31	19:19
३४:३३	१३	रवि	२५:५५	अश्वि	१४:१५	सौभा	१४:००	ग	०:१५	4	26	25	१२	मेष	भ. २५:५५ से ५१:२० तक, सूर्य रोहिणी में १०:०० (9:30), मासशिवरात्रि**(E)**	1:09:50:22	5:30	19:19
३४:३५	१४	चन्द्र	१६:४५	भर.	७:१५	शोभ अति	३:५० ५३:३३	श	१६:४५	5	27	26	१३	वृ.२०:२८	**शनैश्चर जयन्ती** (सायं व्या.), पितृकार्येषु अमावस (12:12 बाद), **(F)**	1:10:48:02	5:30	19:20
३४:३५	३०	मंग	७:३५	कृति रोहि	०:०८ ५३:२३	सुक	४३:३०	ना	७:३५	6	28	27	१४	वृष	**ज्येष्ठ अमावस** (स्नानदानादि प्रातः 8:32 तक), **भौमवती अमावस**, बुध**(G)**	1:11:45:40	5:30	19:20

(A) सं. अगले दिन प्रातः 6:35 तक, बुध भरणी में ४८:३३ (25:01), **गुरु** मृग. ३ **मिथुन में ४२:२३** (22:33), श्रीनारद–जयन्ती, वीणादान, गण्डमूल 11:47 से **(B)** गण्डमूल 16:08 तक **(C)** में अस्त 27:25 **(D)** १८:४३ (13:00), गण्डमूल 16:03 से **(E)** व्रत, गण्डमूल 11:12 तक **(F)** वटसावित्री व्रत (अमावस–पक्ष) **(G)** रोहिणी में 29:05, भावुका अमावस (परविद्धा), करवीर व्रत, श्रीगङ्गा स्नान प्रारम्भ

भौमे सप्तम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 20 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
1	9	3	0	2	11	11	10	4
5	28	20	23	1	19	5	29	29
1	50	35	13	8	45	23	55	55
49	36	45	55	18	43	2	30	30
57 45	807 5	30 33	120 29	13 3	51 48	4 52	3 10	3 10
कृति 3	धनि 2	आर्द्रा 2	भर 3	मृग 3	रेव 1	उभा 1	पूभा 3	उफा 1
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
शत्रु	सम	नीच	सम	शत्रु	उच्च	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 20 मई

1 बु.; 2 सू.; 3 गु.; 4 मं.; 5 के.; 6; 7; 8; 9; 10 चं.; 11 रा.; 12 शु. श.

भौमे अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 27 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
1	1	3	1	2	11	11	10	4
11	9	24	7	2	26	5	29	29
45	58	12	51	40	0	55	33	33
40	26	22	37	26	23	32	15	15
57 37	900 41	31 27	130 36	13 19	55 37	4 20	3 11	3 11
रोहि 1	कृति 4	श्ले. 3	कृति 4	मृग 3	रेव. 3	उभा 1	पूभा 3	उफा 1
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
शत्रु	सम	नीच	मित्र	शत्रु	उच्च	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 27 मई

1; 2 सू. चं. बु.; 3 गु.; 4 मं.; 5 के.; 6; 7; 8; 9; 10; 11 रा.; 12 शु. श.

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षफल–

ज्येष्ठ मास में संक्रान्ति, एकादशी, अष्टमी, गंगा–दशहरा आदि पर्वों पर श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर जलापूरित घड़ा (पात्र), गेहूँ, चावल, सत्तु आदि अनाज, दूध, चीनी, वस्त्र, छाता, पंखा, आम्र, खरबूजे आदि मौसमी फल एवं अन्य ग्रीष्मोपयोगी वस्तुओं के दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। इस मास जितेन्द्रिय रहकर अल्पाहार करते हुए सात्विक भोजन करना चाहिए। '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**' मन्त्र का जाप एवं श्रीविष्णु सहस्रनाम, नारायण कवच आदि स्तोत्रों का पाठ करने से धन–सम्पत्ति, विवाह, सन्तान एवं सौभाग्यादि की प्राप्ति होती है। ता. 26 मई को चतुर्दशी विद्धा अमावस के दिन वैधव्य दोष की शान्ति हेतु स्त्रियों को वटसावित्री का व्रत रखना कल्याणकारी होता है। '**मम वैधव्यादि सकलदोष परिहार्थं ब्रह्मसावित्री प्रीत्यर्थं सत्यवत्सावित्री प्रीत्यर्थं च वटसावित्री व्रतमहं करिष्ये।।**' यह संकल्प करके त्रयोदशी से अमावस्या तक सामर्थ्यानुसार उपवास करके प्रतिपदा को समाप्त करें।

ज्येष्ठ संक्रान्ति–14 मई, बुधवार 2025 ई. को अर्द्धरात्रि 12 बजकर 11 मिनट (24:11) पर मकर लग्न में प्रवेश करेगी। १५ मुहूर्त्ती इस सं. का पुण्यकाल अगले दिन प्रातः 6:35 बजे तक रहेगा। वारानुसार मन्दाकिनी तथा नक्षत्रानुसार राक्षसी नामक यह सं. राजनेताओं तथा दुष्टजनों को लाभप्रद एवं सुखकर रहेगी। **सं. राशिफल**–यह सं. मेष, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर राशि वालों के लिए शुभ समाचार लेकर आएगी। **आकाश–लक्षण**–ज्ये. कृ. ११ को रेवती नक्षत्र का सम्पर्क होने से आगे खण्ड वृष्टि अर्थात् कहीं बहुत अधिक व कहीं अत्यन्त कम वर्षा हो एवं कृषकों को कष्ट रहे।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	ज्ये. शक	जिल्का मु.	मई	ज्ये. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	सन् 2025 ई. (ता. 28 मई से 11 जून तक), हिजरी सन् 1446 सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु : प्रातः शुक्र पूर्व में तथा शनि पूर्वकपाल में दृश्य होगा। सायं पश्चिमक्षितिज में दृश्य गुरु 10 जून से अस्त हो जाएगा। मंगल पश्चिमकपाल की तरफ होगा। ता. 10 जून से बुध भी सायं पश्चिमक्षितिज में दिखेगा।	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा.अं.क.वि.	भा.स्टै.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
अवम्	१	मंग	५८:५३	०	०	०	०	०	०	0	0	0	0	००	**ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा का क्षय** ००० ०००००	० ० ० ०	००	००
३४:४०	२	बुध	५१:०५	मृग.	४७:३०	धृति	३४:१०	बा	२४:५९	7	29	28	१५	मि.२०:२०	**चन्द्रदर्शन, मु. ३०**	1:12:43:15	5:29	19:21
३४:४३	३	गुरु	४४:३५	आर्द्रा	४२:५५	शूल	२५:४५	तै	१७:५०	8	जि.	29	१६	मिथुन	**रम्भा तृतीया व्रत,** महाराणा प्रताप जयन्ती, गुरु मृग. ४ में ५८:०३ (28:42),**(A)**	1:13:40:51	5:29	19:22
३४:४३	४	शुक्र	३९:४५	पुन.	४०:००	गण्ड	१८:४०	व	१२:१०	9	2	30	१७	क.२५:३५	भ. १२:१० से ३९:४५ तक, उमा–अवतार	1:14:38:26	5:29	19:22
३४:४८	५	शनि	३७:००	पुष्य	३९:१०	वृद्धि	१३:०८	ब	८:२३	10	3	31	१८	कर्क	**शुक्र** अश्वि. १ **मेष में १५:१०** (11:32), गण्डमूल 21:08 से,	1:15:35:56	5:28	19:23
३४:४९	६	रवि	३६:२०	आश्ले	४०:२३	ध्रुव	९:१८	कौ	६:४०	11	4	जून	१९	सिं.४०:२३	अरण्य षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा, जून मास प्रारम्भ, गण्डमूल विचार, सन्त **(B)**	1:16:33:29	5:28	19:23
३४:५०	७	चन्द्र	३७:५०	मघा	४३:४०	व्या.	७:१०	ग	७:०५	12	5	2	२०	सिंह	भ. ३७:५० से, गण्डमूल 22:56 तक,	1:17:30:59	5:28	19:24
३४:५१	८	मंग	४१:१३	पू.फा.	४८:४८	हर्ष	६:४०	वि	९:३२	13	6	3	२१	सिंह	भ. ९:३२ तक, बुध मृग. में ३:४० (6:56), **श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयं.(C)**	1:18:28:29	5:28	19:24
३४:५४	९	बुध	४६:१०	उ.फा.	५२:५३	वज्र	७:३५	बा	१३:४२	14	7	4	२२	कं. ५:२०	**गुरू अस्त 10 जून**	1:19:25:55	5:27	19:25
३४:५५	१०	गुरु	५२:०५	हस्त	— —	सिद्धि	९:२८	तै	१९:०८	15	8	5	२३	कन्या	**श्रीगङ्गा दशहरा पर्व** (हरिद्वार आदि)	1:20:23:22	5:27	19:25
३४:५७	११	शुक्र	५८:२५	हस्त	२:४८	व्य.	११:५५	व	२५:१५	16	9	6	२४	तु.३६:४०	भ. २५:१५ से ५८:२५ तक, **निर्जला एकादशी व्रत** (स्मार्त्त), **मंगल (D)**	1:21:20:48	5:27	19:26
३४:५८	१२	शनि	६०:००	चित्रा	१०:३३	वरी	१४:३५	ब	३१:३२	17	10	7	२५	तुला	**निर्जला एकादशी व्रत** (वैष्णव) (देखें पृष्ठ 18), शनि उ. भाद्रपद २ में **(E)**	1:22:18:12	5:27	19:26
३५:००	१२	रवि	४:३८	स्वा.	१८:०८	परि.	१७:०८	बा	४:३८	18	11	8	२६	तुला	**प्रदोष व्रत,** सूर्य मृग. में ४:३५ (7:17), वटसावित्री व्रतारम्भ	1:23:15:36	5:27	19:27
३५:०१	१३	चन्द्र	१०:२३	विशा.	२५:१०	शिव	१९:१५	तै	१०:२३	19	12	9	२७	वृ. ८:३०	बुध आर्द्रा में २३:४५ (14:57)	1:24:12:59	5:27	19:27
३५:०२	१४	मंग	१५:२३	अनु.	३१:२८	सिद्ध	२०:४५	व	१५:२३	20	13	10	२८	वृश्चिक	भ. १५:२३ से ४७:२६ तक, **वटसावित्री व्रत** (पूर्णिमा पक्ष) **(F)**	1:25:10:20	5:27	19:28
३५:०३	१५	बुध	१९:२८	ज्ये.	३६:५०	साध्य	२१:३३	ब	१९:२८	21	14	11	२९	ध.३६:५०	**ज्येष्ठ पूर्णिमा, सन्त कबीर जयन्ती** (627वीं), ज्येष्ठी योग, गण्डमूल विचार	1:26:07:41	5:27	19:28

(A) जिल्हिजा (मु.) मास प्रारम्भ **(B)** टेऊँराम पुण्यतिथि **(C)** मेला क्षीर–भवानी (काश्मीर) **(D)** मघा १ **सिंह में ५१:४८** (26:10), **बुध मिथुन में** १०:०० (9:27) **(E)** २२:५३ (14:36), चम्पक द्वादशी, गुरु वार्धक्य प्रारम्भ 19:29 **(F) श्रीसत्यनारायण व्रत,** बुध पश्चिम में उदय 19:33, **गुरु पश्चिम में अस्त** 19:29, गण्डमूल 18:02 से,

भौमे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 3 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
1	4	3	1	2	0	11	10	4
18	16	27	23	4	2	6	29	29
28	43	54	12	14	38	24	10	10
34	55	56	9	8	53	12	0	0
57 28	733 11	32 15	130 12	13 29	58 32	3 46	3 11	3 11
रोहि 3	पूफा 2	श्ले. 4	रोहि 4	मृग. 4	अश्वि 1	उभा 1	पूभा 3	उफा 1
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
शत्रु	मित्र	नीच	मित्र	शत्रु	सम	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 3 जून

4 मं. | 3 गु. | 2 सू. बु. | 1 शु. | 12 श. | 11 रा. | 10 | 9 | 8 | 7 | 6 | 5 चं. के.

बुधे पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 11 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
1	7	4	2	2	0	11	10	4
26	22	2	9	6	10	6	28	28
7	29	15	51	2	36	51	45	45
48	40	40	32	32	56	57	33	33
57 20	738 28	33 2	116 16	13 38	61 11	3 5	3 11	3 11
मृग. 1	ज्ये. 2	मघा 1	आर्द्रा 1	मृग. 4	अश्वि 4	उभा 2	पूभा 3	उफा 1
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ
शत्रु	नीच	मित्र	स्व	शत्रु	सम	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 11 जून

4 | 3 गु. बु. | 2 सू. | 1 शु. | 12 श. | 11 रा. | 10 | 9 | 8 चं. | 7 | 6 | 5 मं. के.

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की तृतीया तिथि (29 मई) को रम्भा देवी का विधिपूर्वक व्रत–दान करने से स्त्रियों को विवाह, सन्तान एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है। **अष्टमी तिथि** (3 जून) को माता खीर (क्षीर) भवानी का मेला जम्मू–कश्मीर एवं दिल्ली के मन्दिरों में खीर, मेवे आदि का भोग लगाकर श्रद्धा से मनाया जाता है। **'श्रीगङ्गा–दशहरा'** पर्व (5 जून) पर गङ्गा–स्नान एवं श्रीगङ्गा जी का अक्षत, द्रव्यों, नारियलादि सहित पूजार्चना एवं यथाशक्ति दानादि कर्म करने से मनुष्य के कायिक, वाचिक और मानसिक–दस प्रकार के पापों का नाश होता है। इसीलिए इसे दशहरा कहा जाता है। इसदिन गंगा–स्तोत्रादि का पाठ करें तथा निम्न मन्त्र से आवाहन व प्रार्थना करें–**'ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गङ्गायै नमः।'** द्वादशी तिथि की वृद्धि होने से स्मार्त (गृहस्थी) लोग निर्जला एकादशी का व्रत 6 जून को, जबकि वैष्णव लोग (सन्यासी, दीक्षित, विधवा आदि) 7 जून को रखेंगे (देखें पृष्ठ 18)। अमावस्या की भान्ति पूर्णिमा को (चतुर्दशीविद्धा) भी वटसावित्री का व्रत वैधव्यादि दोष निवारण हेतु किया जाता है। **ग्रहगोचर**–चान्द्र ज्येष्ठ मास में पाँच मंगलवारों का समावेश होने से राजनेताओं में विग्रह, छत्रभंग एवं महँगाई, उपद्रव, दंगे–फिसाद आदि के कारण प्रजा में असन्तोष पैदा हो। किसी प्रमुख राजनेता की मृत्यु या अपदस्थ होने के योग हैं। **ज्ये. अमावस** भौमवती **(27 मई)** होने से तिल, तैल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, वनस्पति एवं सब प्रकार की माल पंसारी के भाव तेज होंगे। कुछ राज्यों में शासन–परिवर्तन, अग्निकाण्ड, जल–संकट का भय रहे। ता. 6 जून से मंगल–शनि के मध्य षडाष्टक योग तथा 14 मई से 14 जून के मध्य सूर्य पर शनि की दृष्टि कुछ राज्यों में राजनीतिक षड्यन्त्र तथा पश्चिम–मुस्लिम देशों में युद्धमय वातावरण बनेगा। **आकाश लक्षण**–गर्मी व लू का प्रकोप बढ़ेगा, उत्तर–पश्चिमी राज्यों में गर्म हवाओं के साथ–साथ कहीं–कहीं बौछारें पड़ने के योग हैं।

वि. संवत् २०८२, आषाढ़ कृष्ण पक्ष शाक : १९४७

सन् 2025 ई. (ता. 12 जून से 25 जून तक), हिजरी सन् 1446
सूर्य उत्तर–दक्षिणायन, उत्तर गोल, ग्रीष्म–वर्षा ऋतु :

प्रातः शुक्र पूर्व में, शनि याम्योत्तरवृत्त की ओर (खमध्यासन्न) होगा। सायं मंगल पश्चिमकपाल में तथा बुध पश्चिमक्षितिज में होगा। गुरु अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	शक प्रवि.	हिज. मु.	जून	प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	विवरण	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा.अं.क.वि.	जालन्धर सूर्योदय घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.
३५:०४	१	गुरु	२२:३३	मूल	४१:१५	शुभ	२१:३५	कौ	२२:३३	22	15	12	३०	धनु	आषाढ़ कृष्णपक्ष शुरु, गण्डमूल 21:57 तक **गुरु अस्त है**	1:27:05:01	5:27	19:29
३५:०५	२	शुक्र	२४:४०	पू.षा.	४४:४५	शुक्ल	२०:५३	ग	२४:४०	23	16	13	३१	धनु	भ. ५५:१५ से, गुरु आर्द्रा में ४५:०३ (23:28), शुक्र भर. में ३९:२३ (21:12)	1:28:02:20	5:27	19:29
३५:०६	३	शनि	२५:५०	उ.षा.	४७:१८	ब्रह्म	१९:२५	वि	२५:५०	24	17	14	३२	म. ०:२८	भ. २५:५० तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12)	1:28:59:39	5:27	19:29
३५:०७	४	रवि	२६:०३	श्रव.	४८:५३	ऐन्द्र	१७:१०	बा	२६:०३	25	18	15	आ	मकर	**सूर्य मिथुन में** ३:१३ (6:44), **आषाढ़ संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल **(A)**	1:29:56:57	5:27	19:30
३५:०८	५	चन्द्र	२५:१३	धनि.	४९:२८	वैधृ.	१४:१०	तै	२५:१३	26	19	16	२	कुं.१९:१८	**पंचक प्रारम्भ १९:१८** (13:10), बुध पुन. में २९:०० (17:03)	2:00:54:15	5:27	19:30
३५:०९	६	मंग	२३:२०	शत.	४८:५८	विष्क	१०:१८	व	२३:२०	27	20	17	३	कुम्भ	भ. २३:२० से ५१:५० तक,	2:01:51:33	5:27	19:30
३५:०९	७	बुध	२०:२०	पू.भा.	४७:२०	प्रीति आयु	५:३३ ५९:५७	ब	२०:२०	28	21	18	४	मी.३२:५०		2:02:48:50	5:27	19:30
३५:१०	८	गुरु	१६:१३	उ.भा.	४४:३५	सौभा	५३:१८	कौ	१६:१३	29	22	19	५	मीन	गण्डमूल 23:17 से,	2:03:46:06	5:27	19:31
३५:१०	९	शुक्र	१०:५५	रेव.	४०:४३	शोभ	४५:४८	ग	१०:५५	30	23	20	६	मे.४०:४३	भ. ३७:४७ से, **पंचक समाप्त** ४०:४३ (21:45), गण्डमूल विचार	2:04:43:25	5:28	19:31
३५:१०	१०	शनि	४:३८	अश्वि	३५:५५	अति	३७:३३	वि	४:३८	31	24	21	७	मेष	भ. ४:३८ तक, **योगिनी एकादशी व्रत (स्मार्त्त)**, सूर्य सायन कर्क में **(B)**	2:05:40:42	5:28	19:31
अवम्	११	शनि	५७:३०	०	००	०	००	०	०	०	०	०	०	००	**एकादशी तिथि का क्षय** ००० ००० ०००	० ० ० ०	००	००
३५:०९	१२	रवि	४९:४८	भर.	३०:२८	सुक	२८:४३	कौ	२३:३९	आ	25	22	८	वृ.४४:००	**योगिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)** देखें पृष्ठ 19, सूर्य आर्द्रा में 6:19, **(C)**	2:06:37:58	5:28	19:31
३५:०९	१३	चन्द्र	४१:४५	कृति.	२४:३३	धृति	१९:३३	ग	१५:४७	2	26	23	९	वृष	भ. ४१:४५ से, **सोम प्रदोष व्रत**, मासशिवरात्रि व्रत	2:07:35:14	5:28	19:31
३५:०९	१४	मंग	३३:४८	रोहि.	१८:३३	शूल	१०:१८	वि	७:४७	3	27	24	१०	मि.४५:४३	भ. ७:४७ तक, बुध पुष्य में ५८:५५ (29:03)	2:08:32:33	5:29	19:32
३५:०८	३०	बुध	२६:२३	मृग.	१३:००	गण्ड वृद्धि	१:१८ ५२:५५	ना	२६:२३	4	28	25	११	मिथुन	**आषाढ़ अमावस**	2:09:29:49	5:29	19:32

(A) सं. दोपहरल 13:08 तक **(B)** ६:५० (8:12), सायन दक्षिणायन प्रारम्भ, **वर्षा ऋतु शुरु**, गण्डमूल 19:50 तक **(C) बुध कर्क में ४०:१० (21:32)**, शक आषाढ़ प्रारम्भ

गुरौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 19 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
2	11	4	2	2	0	11	10	4
3	6	6	24	7	18	7	28	28
46	17	42	15	51	54	14	20	20
13	34	29	55	49	9	2	7	7
57 17	842 28	33 45	97 11	13 41	63 17	2 21	3 11	3 11
मृग 4	उभा 1	मघा 3	पुन 2	आर्द्रा 1	भर. 2	उभा 2	पूभा 3	उफा 1
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ
सम	सम	मित्र	स्व	शत्रु	सम	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 19 जून

3 सू. बु. गु. · 4 · 5 मं. के. · 6 · 7 · 8 · 9 · 10 · 11 रा. · 12 चं. श. · 1 शु. · 2

बुधे अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 25 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
2	2	4	3	2	0	11	10	4
9	3	10	3	9	25	7	28	28
29	30	6	21	14	17	26	1	1
51	42	21	33	0	11	40	2	2
57 15	871 47	34 17	82 4	13 43	64 33	1 45	3 10	3 10
आर्द्रा 1	मृग 4	मघा 4	पुष्य 1	आर्द्रा 1	भर. 4	उभा 2	पूभा 3	उफा 1
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ
सम	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 25 जून

3 सू. चं. गु. · 4 बु. · 5 मं. के. · 6 · 7 · 8 · 9 · 10 · 11 रा. · 12 श. · 1 शु. · 2

आषाढ़ कृष्ण पक्षफल–

आषाढ़ मास में भगवान् विष्णु की कृपा प्राप्ति के लिए ब्रह्मचारी रहते हुए स्नानोपरान्त नित्यप्रति लक्ष्मी सहित भगवान् विष्णु की पूजार्चन एवं स्तोत्र पाठ के बाद ब्राह्मण दम्पत्ति को क्षीर सहित भोजन करवाना तथा यथाशक्ति वस्त्र, धन, जूते–आँवले, आम्र, खरबूजे आड़ू आदि ऋतुफल का दान करना तथा स्वयं भी एकभुक्त भोजन करना इत्यादि कृत्यों से जातक को अक्षय पुण्यों की प्राप्ति होती है। **स्वास्थ्य-विचार–** आषाढ़ मास में स्वयं को (विशेषकर सिर को) धूप व गर्मी से बचाना चाहिए। इस मास में शीतल जल, सादा भोजन, छाछ, मौसमी फलों का सेवन स्वास्थ्य के लिए लाभप्रदायक होता है। ब्रह्मपुराणानुसार इस पक्ष में योगिनी एकादशी का व्रत करके भगवान् विष्णु की यथाविधि पूजा करके रात्रि को जागरण करने तथा दूसरे दिन अन्न, वस्त्रादि का दान करने से कुष्ठादि त्वचा रोगों की शान्ति होती है। **आषाढ़ संक्रान्ति**–15 जून, रविवार, सन् 2025 ई. को प्रातः 6 बजकर 44 मिनट पर मिथुन लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहू. इस सं. का पुण्यकाल प्रातः सूर्योदय से दोपहर 13:08 बजे तक रहेगा। वारानुसार घोरा तथा नक्षत्रानुसार महोदरी नामक यह सं. चोरों तथा बेईमान लोगों को कुछ लाभदायक रहेगी। **संक्रां. राशिफल**–यह संक्रान्ति मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु राशि वालों के लिए शुभ समाचार लेकर आएगी। शेष राशि वालों को कुछ शारीरिक कष्ट रहे। **ग्रह-गोचर**–कालसर्प योग तथा मंगल-शनि के मध्य षडाष्टक योग रहने से आगे वर्ष में वर्षा का अभाव (कमी) रहे, दुर्भिक्ष तथा कृषि उत्पादन में कमी रहे। केन्द्रीय मोदी सरकार का विपक्षी पार्टियों द्वारा विरोध तथा नीतिगत फैसलों में अड़चनें उत्पन्न की जाएंगी। **आकाश लक्षण**–पक्ष में भारत के दक्षिणी-पश्चिमी तथा पूर्वी क्षेत्रों में व्यापक तथा उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में खण्ड वर्षा होगी। **शकुन**–सूर्य आर्द्रा प्रवेश के समय (22 जून) यदि वर्षा हो, तो आगे वर्षाकाल में उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी।

वि. संवत् २०८२, आषाढ़ शुक्ल पक्ष — शाक: १९४७

सन् 2025 ई. (ता. 26 जून से 10 जुलाई तक), हिजरी सन् 1446–47
सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु :

प्रातः शुक्र पूर्वक्षितिज में, शनि याम्योत्तरवृत्त में, ता. 7 जुला. से गुरु भी प्रातः पूर्वक्षितिज में शुक्र से नीचे होगा। सायं बुध पश्चिम-क्षितिज में तथा मंगल उससे ऊपर पश्चिमकपाल में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	आषा.शक	जिल्हि.मु.	जून	आषा.प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा.अं.क.वि.	भा.स्टै.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
३५:०८	१	गुरु	१९:५०	आर्द्रा	८:१५	ध्रुव	४५:२८	ब	१९:५०	5	29	26	१२	क.५०:२८	**चन्द्रदर्शन**, मु. ४५, शुक्र कृतिका में १७:०० (12:17), **गुप्त नवरात्र प्रारम्भ**	2:10:27:04	5:29	19:32
३५:०७	२	शुक्र	१४:३८	पुन.	४:४३	व्या.	३९:१३	कौ	१४:३८	6	मु.	27	१३	कर्क	**रथयात्रा–उत्सव** (श्रीजगन्नाथपुरी), मुहर्रम (मुस्लि.) सं. 1447 हिजरी प्रारम्भ	2:11:24:19	5:29	19:32
३५:०६	३	शनि	११:०३	पुष्य	२:४५	हर्ष	३४:२३	ग	११:०३	7	2	28	१४	कर्क	भ. ४०:१३ से, गुरु आर्द्रा २ में 14:06, गण्डमूल 6:36 से	2:12:21:36	5:30	19:32
३५:०५	४	रवि	९:२३	आश्ले	२:४०	वज्र	३१:१३	वि	९:२३	8	3	29	१५	सिं. २:४०	भ. ९:२३ तक, **शुक्र वृष में** २१:३५ (14:08), गण्डमूल विचार	2:13:18:50	5:30	19:32
३५:०४	५	चन्द्र	९:४३	मघा	४:३५	सिद्धि	२९:३५	बा	९:४३	9	4	30	१६	सिंह	**स्कन्द (कुमार) षष्ठी** (पूर्वविद्धा), मंगल पू.फा. में 20:17, सन्त टेऊँराम(A)	2:14:16:06	5:31	19:32
३५:०३	६	मंग	१२:०५	पू.फा.	८:२८	व्य.	२९:३०	तै	१२:०५	10	5	जुला	१७	कं.२४:४३	**विवस्वत सप्तमी** (पूर्वविद्धा) देखें पृष्ठ 19, जुलाई मास प्रारम्भ	2:15:13:19	5:31	19:32
३५:०२	७	बुध	१६:१०	उ.फा.	१४:०३	वरी	३०:४०	व	१६:१०	11	6	2	१८	कन्या	भ. १६:१० से ५०:०४ तक,	2:16:10:32	5:31	19:32
३५:०१	८	गुरु	२३:५८	हस्त	२०:४८	परि	३२:४०	ब	२३:५८	12	7	3	१९	तु.५४:२८	**श्रीदुर्गाष्टमी**	2:17:07:48	5:32	19:32
३५:००	९	शुक्र	२७:३०	चित्रा	२८:१५	शिव	३५:१०	कौ	२७:३०	13	8	4	२०	तुला	भढली नवमी, **गुप्त नवरात्र समाप्त**, मेला शरीक भवानी (काश्मीर)	2:18:05:00	5:32	19:32
३४:५८	१०	शनि	३३:३५	स्वा.	३५:४८	सिद्ध	३७:३८	तै	०:३३	14	9	5	२१	तुला	स.सि.यो.	2:19:02:14	5:33	19:32
३४:५७	११	रवि	३९:१८	विशा.	४२:५३	साध्य	३९:४५	व	६:२७	15	10	6	२२	वृ.२६:१०	भ. ६:२७ से ३९:१८ तक, **हरिशयनी एकादशी व्रत, चातुर्मास्य व्रत**–(B)	2:19:59:26	5:33	19:32
३४:५५	१२	चन्द्र	४४:०३	अनु.	४९:०५	शुभ	४१:१३	ब	११:४१	16	11	7	२३	वृश्चिक	बुध आश्लेषा में ०:३० (5:46), गण्डमूल 25:12 से	2:20:56:40	5:34	19:32
३४:५३	१३	मंग	४७:४३	ज्ये.	५४:१३	शुक्ल	४१:४८	कौ	१५:५३	17	12	8	२४	ध.५४:१३	**भौम प्रदोष व्रत**, शुक्र रोहिणी में २७:०५ (16:24)	2:21:53:51	5:34	19:31
३४:५०	१४	बुध	५०:०५	मूल	५८:०८	ब्रह्म	४१:२५	ग	१८:५४	18	13	9	२५	धनु	भ. ५०:०५ से, मेला ज्वालामुखी (काश्मीर), गण्डमूल 28:50 तक, (C)	2:22:51:06	5:35	19:31
३४:४९	१५	गुरु	५१:२०	पू.षा.	— —	ऐन्द्र	४०:०८	वि	२०:४३	19	14	10	२६	धनु	भ. २०:४३ तक, **आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा**, व्यास–पूजा (D)	2:23:48:17	5:35	19:31

गुरु उदय 7 जुलाई

(A) जयन्ती, गण्डमूल 7:21 तक **(B) नियमादि प्रारम्भ**, सूर्य पुनर्वसु में ०:३५ (5:47), **गुरु पूर्व में उदय 29:20**, श्रीविष्णु–शयनोत्सव (C) गुरु बाल्यत्व समाप्त 29:20
(D) **श्रीसत्यनारायण व्रत**, वायु–परीक्षा (सूर्यास्त समय), शिवशयनोत्सव, कोकिला व्रत

गुरौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 3 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
2	5	4	3	2	1	11	10	4
17	19	14	13	11	3	7	27	27
7	11	42	1	3	58	38	35	35
43	34	56	30	28	34	0	36	36
57 12	713 11	34 56	59 23	13 38	65 56	0 59	3 10	3 10
आर्द्रा 4	हस्त 3	पूफा 1	पुष्य 3	आर्द्रा 2	कृत्ति 3	उभा 2	पूभा 3	उफा 1
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ
सम	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	स्व	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 3 जुला.

4 बु. | 2 शु. | 3 सू. गु. | 1 | 5 मं. के. | 6 चं. | 12 श. | 7 | 9 | 11 रा. | 8 | 10

गुरौ पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 10 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
2	8	4	3	2	1	11	10	4
23	13	18	18	12	11	7	27	27
48	41	48	46	38	43	42	13	13
5	18	59	17	38	14	41	21	21
57 12	764 49	35 26	34 35	13 31	66 58	0 10	3 11	3 11
पुन. 2	पूफा 1	पूफा 2	आश्ले 1	आर्द्रा 2	रोहि 1	उभा 2	पूभा 3	उफा 1
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	स्व	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 10 जुला.

4 बु. | 2 शु. | 3 सू. गु. | 1 | 5 मं. के. | 6 | 12 श. | 7 | 9 चं. | 11 रा. | 8 | 10

आषाढ़ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की **द्वितीया तिथि** (27 जून) को भगवान् श्रीजगन्नाथ की रथयात्रा का भव्य उत्सव बड़ी श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ जगन्नाथपुरी (उड़ीसा) तथा देश के अन्य भागों में भी बड़े उत्साह एवं श्रद्धा से मनाया जाता है। पुष्य-नक्षत्र युक्ता द्वितीया तिथि होने से यह पर्व इस वर्ष विशेष पुण्यप्रदा होगा। **हरिशयनी एकादशी** (6 जुला.) से चातुर्मास्य व्रत, नियमादि प्रारम्भ होंगे, जोकि कार्तिक शुक्ल एकादशी अर्थात् **हरिप्रबोधिनी एकादशी** (2 नवं.) तक की अवधि पर्यन्त रहेंगे। धर्मपरायण तपस्वी लोग यह अवधि चातुर्मास्य व्रतादि नियमों का पालन करते हुए चार मास तक नित्य शतनामादि विष्णुस्तोत्र पाठ सहित भगवान् विष्णु की उपासना की जाती है। भी कभी सोते नहीं, परन्तु प्रबोधिनी एकादशी के दिन भगवान् योगनिद्रा को त्यागकर प्रत्येक प्रकार की क्रिया में प्रवृत्त हो जाते हैं और प्राणी मात्र का पालन-पोषण और संरक्षण करते हैं। पूजनोपरान्त ब्राह्मण-भोजन करवाना चाहिए। यद्यपि भगवान् क्षण भर **गुरु पूर्णिमा** (10 जुलाई) ज्ञान, ध्यान एवं गुरु-भक्ति की तरफ ले जाने वाली होती है। इसदिन परब्रह्म ईश्वर का ध्यान करते हुए ऋषि व्यास, शुक्रदेव आदि ऋषियों का आवाहन-पूजनादि करके अपने इष्ट गुरु का पुष्पाक्षत, मिष्ठान्न, वस्त्र, दक्षिणा द्वारा सम्मान करना चाहिए। **लोक भविष्य**–चान्द्र आषाढ़ मास में पाँचबृहस्पतिवार होने से कुछ प्रदेशों में उपयुक्त वर्षा की कमी रहे, तो कहीं अतिवृष्टि से जन व धन-सम्पदा को क्षति पहुँचे। पश्चिमी देशों-सीरिया, सूडान, ईज़रायल-गाज़ा आदि देशों में कहीं युद्ध एवं फौजी टकराव होने के आसार बनेंगे। केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल में परिवर्तन के संकेत हैं। **ग्रहगोचर**–पक्ष में कालसर्प योग तथा मंगल-शनि के मध्य षडाष्टक योग रहने से राजनीतिक पार्टियों में टकराव व गतिरोध होगा। केन्द्रीय नीतिगत निर्णयों का भयंकर विरोध किया जाएगा। **आकाश लक्षण**–पक्ष के उत्तरार्द्ध भाग में उत्तर-पूर्व में व्यापक वर्षा के योग हैं। **शकुन**–आषाढ़ पूर्णिमा को सायंकाल यदि पूर्व दिशा की वायु चले तो पृथ्वी पर आगे सुभिक्ष के संकेत हैं।

वि. संवत् २०८२, श्रावण कृष्ण पक्ष शाक: १९४७

सन् 2025 ई. (ता. 11 जुलाई से 24 जुलाई तक), हिजरी सन् 1447
सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु :

प्रातः गुरु पूर्वक्षितिज में, उससे कुछ ऊपर शुक्र होगा। शनि याम्योत्तरवृत्तासन्न नजर आएगा। सायं बुध पश्चिमक्षितिज में होगा, जो 24 जुला. को अदृश्य हो जाएगा। मंगल पश्चिमकपाल में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	आषा. शक	मुहर्रम मु.	जुलाई	आषा. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा.अं.क.वि.	जालन्धर सूर्योदय घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.
३४:४८	१	**शुक्र**	५१:२३	पू.षा.	०:५०	वैधृ	३७:५०	बा	२१:२२	20	15	**11**	२७	म.१६:२३	श्रावण कृष्णपक्ष प्रारम्भ	2:24:45:31	5:36	19:31
३४:४५	२	**शनि**	५०:२८	उ.षा.	२:३०	विष्क	३४:५०	तै	२०:५६	21	16	**12**	२८	मकर	अशून्यशयन व्रत	2:25:42:43	5:36	19:30
३४:४३	३	**रवि**	४८:३५	श्रव.	३:१०	प्रीति	३१:००	व	१९:३२	22	17	**13**	२९	कुं.३३:१३	भ. १९:३२ से ४८:३५ तक, **पंचक प्रारम्भ ३३:१३** (18:54), गुरु आर्द्रा ३ **(A)**	2:26:39:58	5:37	19:30
३४:४२	४	**चन्द्र**	४५:५८	धनि.	३:००	आयु	२६:३३	ब	१७:१७	23	18	**14**	३०	कुम्भ	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12), **श्रावण सोमवार व्रत प्रारम्भ**	2:27:37:10	5:37	19:30
३४:३८	५	**मंग**	४२:३५	शत.	२:०३	सौभा	२१:२५	कौ	१४:१७	24	19	**15**	३१	मी.४५:५०	नाग-पंचमी (राजस्थान व बंगाल), मङ्गलागौरी व्रत प्रारम्भ	2:28:34:25	5:38	19:29
३४:३७	६	**बुध**	३८:३०	पू.भा. उ.भा.	०:२३ ५८:०३	शोभ	१५:४८	ग	१०:३३	25	20	**16**	श्रा	मीन	भ. ३८:३० से, **सूर्य कर्क में २९:४०** (17:30), **श्रावण संक्रान्ति** मु. ४५,**(B)**	2:29:31:39	5:38	19:29
३४:३५	७	**गुरु**	३३:४८	रेव.	५५:००	अति	९:३५	वि	६:०९	26	21	**17**	२	मे.५५:००	भ. ६:०९ तक, **पंचक समाप्त ५५:००** (27:39), शीतला सप्तमी	3:00:28:55	5:39	19:29
३४:३०	८	**शुक्र**	२८:२५	अश्वि	५१:२५	सुक धृति.	२:५० ५५:४०	बा	१:०७	27	22	**18**	३	मेष	**बुध वक्री** ११:२० (10:12), गण्डमूल 26:14 तक	3:01:26:13	5:40	19:28
३४:२९	९	**शनि**	२२:३८	भर.	४७:२५	शूल	४८:०८	ग	२२:३८	28	23	**19**	४	मेष	भ. ४९:३१ से, सूर्य पुष्य में ५९:१५ (29:22)	3:02:23:28	5:40	19:28
३४:२५	१०	**रवि**	१६:२३	कृति.	४३:०३	गण्ड	४०:१८	वि	१६:२३	29	24	**20**	५	वृ. १:१८	भ. १६:२३ तक, शुक्र मृग. में १८:०५ (12:55), राहु पू.भा. २-केतु **(C)**	3:03:20:46	5:41	19:27
३४:२४	११	**चन्द्र**	९:५८	रोहि.	३८:३५	वृद्धि	३४:५५	बा	९:५८	30	25	**21**	६	वृष	**कामिका एकादशी व्रत**	3:04:18:03	5:41	19:27
३४:२०	१२	**मंग**	३:३०	मृग.	३४:१८	ध्रुव	२४:३५	तै	३:३०	31	26	**22**	७	मि. ६:२३	भ. ५७:२५ से, **भौम प्रदोष व्रत**, सूर्य सायन सिंह में 18:59	3:05:15:23	5:42	19:26
अवम्	१३	**मंग**	५७:२५	०	००	०	००	०	०	०	०	**०**	०	००	**त्रयोदशी तिथि का क्षय ००० (D)** व्रत (देखें पृष्ठ 182), शक श्रावण प्रारम्भ	० ० ० ०	० ०	० ०
३४:१८	१४	**बुध**	५१:५५	आर्द्रा	३०:३०	व्या.	१७:०८	वि	२४:४०	श्रा	27	**23**	८	मिथुन	भ. २४:४० तक, मंगल उ.फा. में ७:१३ (8:36), **श्रावण शिवरात्रि (D)**	3:06:12:44	5:43	19:26
३४:१५	३०	**गुरु**	४७:२५	पुन.	२७:३३	हर्ष	१०:२०	च	१९:४०	2	28	**24**	९	क.१३:१०	**श्रावण (हरियाली) अमावस, वक्री बुध पश्चिम में अस्त** 19:50	3:07:10:04	5:43	19:25

(A) में ३:३३ (7:02), **शनि वक्री १०:०८** (9:40), कज्जली तीज **(B)** पुण्यकाल सं. प्रातः 11:06 बाद, निरयण दक्षिणायन प्रारम्भ, गण्डमूल 28:51 से **(C)** पू.फा. ४ में २८:४८ (17:12)

शुक्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 18 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
3	0	4	3	2	1	11	10	4
1	1	23	21	14	20	7	26	26
25	5	34	21	26	42	41	47	47
49	18	30	32	14	45	59	55	55
57 15	851 10	36 1	1 29	13 20	68 1	0 32	3 11	3 11
पुन. 4	अश्वि 1	पूफा 4	श्ले 2	आर्द्रा 3	रोहि 4	उभा 2	पूभा 3	उफा 1
०	०	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	स्व	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 18 जुला.

4 सू. बु. | 5 के. मं. | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 रा. | 12 श. | 1 चं. | 2 शु. | 3 गु.

गुरौ अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 24 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
3	2	4	3	2	1	11	10	4
7	26	27	20	15	27	7	26	26
9	48	11	0	45	32	37	28	28
33	12	40	35	48	38	15	50	50
57 19	832 54	36 27	29 22	13 9	68 42	1 9	3 11	3 11
पुष्य 2	पुन 3	उफा 1	श्ले. 2	आर्द्रा 3	मृग. 2	उभा 2	पूभा 2	पूफा 4
०	०	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	स्व	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 24 जुला.

4 सू. बु. | 5 के. मं. | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 रा. | 12 श. | 1 | 2 शु. | 3 गु. चं.

श्रावण कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की चन्द्रोदय-व्यापिनी द्वितीया से लक्ष्मीनारायण की पूजा व स्तोत्र-पाठ करने का विधान है। यह '**अशून्यशयन**' (12 जुलाई) पति-पत्नी में पारस्परिक प्रेम बढ़ाने में विशेष प्रशस्त होता है। यह व्रत मार्ग. कृ. द्वितीया तक किया जाता है। श्रावण मास में प्रतिदिन अथवा प्रति सोमवार को एकभुक्त व्रत रखकर शिवपूजन बिल्वपत्र, दूध, दहीं, ताण्डुल, चीनी, पुष्प, गंगाजल सहित '**ॐ नमः शिवाय**' तथा पंचाक्षरी मन्त्रों के साथ मंत्रपूर्वक अभिषेक करने से मनोवांछित कामनाओं की पूर्ति होती है। **कामिका एकादशी (21 जुला.)** का व्रत रखकर मंजरी सहित तुलसीदल से भगवान् श्रीकृष्ण (या श्रीविष्णु) का पूजन करना चाहिए। **श्रावण संक्रान्ति**–16 जुलाई, बुधवार, सन् 2025 ई. को सायं 5 बजकर 30 मिनट पर धनु लग्न में प्रवेश करेगी। ४५ मुहू. इस सं. का पुण्यकाल प्रातः 11:06 बजे से प्रारम्भ होगा। वारानुसार मन्दाकिनी तथा नक्षत्रानुसार नन्दा नामक यह संक्रांति राजनेताओं, ब्राह्मणों, लेखकों तथा अन्वेषणवादी कार्यों में लगे लोगों के लिए नए अवसर उत्पन्न करेगी। **संक्रांति राशिफल**–यह सं. मेष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मकर राशि वालों के लिए शुभ समाचार लेकर आएगी। शेष राशि वालों को कुछ भागदौड़ रहे। **ग्रहगोचर**–पक्ष में 22 जुलाई तक **कालसर्प दोष** तथा **मंगल-शनि** के मध्य **षडाष्टक योग** सम्बन्ध रहने से राजनीतिक वातावरण बड़ा असमंजसपूर्ण तथा आरोप-प्रत्यारोप भरा रहेगा। कुछ प्रदेशों में आश्चर्यजनक घटनाएँ घटित होंगी। महँगाई भी अपने चरम पर होगी। परन्तु गुरुवार को '**श्रावण**' अमावस होने से अनुकूल वर्षा (वृष्टि) तथा पर्याप्त उत्पादन होगा। अनुकूल वर्षा से प्रजा में आरोग्य एवं रोग नाश होगा–**सदावृष्टि सुभिक्षं च कल्याणं दुःखनाशम्/आरोग्यं च प्रजा स्वस्थागुरुवारे समादिशेत्।।** देश में धर्म-कर्म का आचरण बढ़े। **आकाश लक्षण**–भारत के उत्तर तथा उत्तर-पूर्वी राज्यों में व्यापक वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०८२, श्रावण शुक्ल पक्ष						शाक: १९४७				तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश	सन् 2025 ई. (ता. 25 जुलाई से 9 अगस्त तक), हिजरी सन् 1447 सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु:	सूर्योदय कालिक	भा.स्टै.टा. जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	श्राव. शक	मुहर्रम मु.	जुलाई	श्राव प्रवि.	घड़ी–पल	प्रातः गुरु–शुक्र पास–पास पूर्वक्षितिज में चमकते हुए दिखाई देंगे। शनि याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा। ता. 9 अग. से बुध भी पूर्वक्षितिज में दिखेगा। सायं मंगल पश्चिम में दिखाई देगा।	सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३४:१०	१	शुक्र	४४:१०	पुष्य	२५:४३	वज्र सिद्धि	४:२० ५९:३०	किं	१५:४८	3	29	25	१०	कर्क	श्रावण शुक्लपक्ष प्रारम्भ, **मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी) हि.प्र. शुरु (A)**	3:08:07:25	5:44	19:24
३४:१०	२	शनि	४२:२८	आश्ले	२५:२०	व्य.	५५:५५	बा	१२:४९	4	30	26	११	सिं.२५:२०	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, **शुक्र मिथुन में ८:००** (8:56), गण्डमूल विचार	3:09:04:46	5:44	19:24
३४:०५	३	रवि	४२:२५	मघा	२६:३५	वरी	५३:४०	तै	१२:२७	5	स.	27	१२	सिंह	**मधुस्रवा-हरियाली-सिंघारा तीज**, स्वर्णगौरी व्रत, सफर (मु.) मास प्रारंभ(B)	3:10:02:10	5:45	19:23
३४:००	४	चन्द्र	४४:०८	पू.फा.	२९:३५	परि	५२:५०	व	१३:१७	6	2	28	१३	कं.४५:३५	भ. १३:१७ से ४४:०८ तक, **मंगल कन्या में** ३५:२८ (19:57), गुरु आर्द्रा ४ (C)	3:10:59:34	5:46	19:22
३४:००	५	मंग	४७:३३	उ.फा.	३४:१५	शिव	५३:१८	ब	१५:५१	7	3	29	१४	कन्या	**नाग-पञ्चमी**, वक्री बुध पुष्य ४ में २६:३८ (16:25)	3:11:56:56	5:46	19:22
३३:५५	६	बुध	५२:१८	हस्त	४०:१५	सिद्ध	५४:४३	कौ	१९:५६	8	4	30	१५	कन्या	**श्रीकल्कि-जयन्ती**	3:12:54:20	5:47	19:21
३३:५०	७	गुरु	५७:५८	चित्रा	४७:१५	साध्य	५६:५०	ग	२५:०८	9	5	31	१६	तु.१३:३८	भ. ५७:५८ से, **गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती**, शुक्र आर्द्रा ५४:५० (D)	3:13:51:46	5:48	19:20
३३:४८	८	शुक्र	६०:००	स्वा.	५४:४३	शुभ	५९:१५	वि	३०:५८	10	6	अग.	१७	तुला	भ. ३०:५८ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी, मेला चिन्तपूर्णी-चामुण्डादेवी**(हि.प्र.), (E)	3:14:49:10	5:48	19:19
३३:४५	८	शनि	३:५८	विशा	— —	शुक्ल	— —	ब	३:५८	11	7	2	१८	वृ.४५:१०	सूर्य आश्लेषा में ५५:४५ (28:07)	3:15:46:37	5:49	19:19
३३:४०	९	रवि	९:४३	विशा	१:५३	शुक्ल	१:२५	कौ	९:४३	12	8	3	१९	वृश्चिक		3:16:44:03	5:50	19:18
३३:३८	१०	चन्द्र	१४:४०	अनु	८:२८	ब्रह्म	३:०८	ग	१४:४०	13	9	4	२०	वृश्चिक	भ. ४६:३३ से, गण्डमूल 9:13 से,	3:17:41:29	5:50	19:17
३३:३३	११	मंग	१८:२५	ज्ये.	१३:५०	ऐन्द्र	३:५३	वि	१८:२५	14	10	5	२१	ध.१३:५०	भ. १८:२५ तक, **पवित्रा एकादशी व्रत**, गण्डमूल विचार	3:18:38:58	5:51	19:16
३३:३०	१२	बुध	२०:४५	मूल	१७:५३	वैधृ	३:३८	बा	२०:४५	15	11	6	२२	धनु	**प्रदोष व्रत**, गण्डमूल 13:00 तक,	3:19:36:25	5:51	19:15
३३:२५	१३	गुरु	२१:३०	पू.षा.	२०:२३	विष्क प्रीति	२:०५ ५९:२८	तै	२१:३०	16	12	7	२३	म.३५:४८		3:20:33:55	5:52	19:14
३३:२३	१४	शुक्र	२०:५०	उ.षा.	२१:२८	आयु	५५:४०	व	२०:५०	17	13	8	२४	मकर	भ. २०:५० से ४९:५० तक, वक्री बुध पूर्व में उदय 28:52, श्रीसत्यनारायण(F)	3:21:31:28	5:53	19:14
३३:२०	१५	शनि	१८:५०	श्रव.	२१:१८	सौभा	५०:५५	ब	१८:५०	18	14	9	२५	कुं.५०:४५	**पंचक प्रारम्भ ५०:४५** (26:11), **श्रावण-पूर्णिमा, रक्षाबन्धन (राखी)(G)**	3:22:28:58	5:53	19:13

(A) गण्डमूल 16:01 से, **(B)** गण्डमूल 16:23 तक, **(C)** में १०:२३ (8:55), दूर्वा गणपति व्रत, वरद् चतुर्थी **(D)** (27:44), शीतला सप्तमी **(E)** समाप्त, अगस्त मास प्रारम्भ, लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव **(F)** व्रत, ऋषि-तर्पण (अपराह्ण-काले), हयग्रीव-जयन्ती **(G)** श्रावणी उपाकर्म, ऋक्-उपाकर्म, यजुर्वेदि-अथर्ववेदि उपाकर्म, श्रीगायत्री-जयन्ती, संस्कृत-दिवस, दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा (काश्मीर), कोकिला व्रत पूर्ण

शुक्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 1 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
3	6	5	3	2	2	11	10	4
14	9	2	14	17	6	7	26	26
48	2	5	47	29	45	25	3	3
27	46	9	4	51	7	24	24	24
57 25	711 32	36 59	43 59	12 49	69 29	1 55	3 11	3 11
पुष्य 4	स्वा. 1	उफा 2	पुष्य 4	आर्द्रा 4	आर्द्रा 1	उभा 2	पूभा 2	पूफा 4
०	०	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 1 अगस्त

5 के. | 4 सू. बु. | शु. 3 गु. | 2 | 6 मं. | 1 | 7 चं. | 10 | 8 | 12 श. | 9 | 11 रा.

शनौ पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 9 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
3	9	5	3	2	2	11	10	4
22	18	7	10	19	16	7	25	25
28	20	2	19	10	3	7	37	37
2	53	50	40	58	42	35	58	58
57 30	812 19	37 30	11 54	12 24	70 14	2 37	3 11	3 11
श्ले. 2	श्रव 3	उफा 4	पुष्य 3	आर्द्रा 4	आर्द्रा 3	उभा 2	पूभा 2	पूफा 4
०	०	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	शत्रु

कुं. सूर्योदय, 9 अगस्त

5 के. | 4 सू. बु. | श. 3 गु. | 2 | 6 मं. | 1 | 7 | 10 चं. | 8 | 12 श. | 9 | 11 रा.

श्रावण शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की प्रतिपदा से अष्टमी (25 जुलाई से 1 अग.) तक माता **छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी), ज्वालामुखी एवं चामुण्डा** (कांगड़ा) के दरबार में भगवती जागरण, कीर्तन, लंगर एवं भव्य मेले का आयोजन किया जाता है। ता. 27 **जुलाई को सिंघारा (हरियाली)** तीज के दिन सुहागिन स्त्रियां अपने पीहर जाकर हाथों में मेहंदी रचाकर झूले झूलती हुई श्रावण के मलहार गीत गाती हैं। **नाग-पंचमी (29 जुलाई)** को अपने गृह द्वार की दहलीज़ के दोनों ओर गोबर से सर्पाकृति बनाकर उनका दूध, दूर्वा, कुशा, गन्ध, पुष्प, अक्षत, लड्डुओं आदि से पूजन करके '**ॐ कुरुकुल्ये हुं फट् स्वाहा।**' मन्त्र का 3 माला जप व नागस्तोत्र का पाठ करने से सर्प-विष का भय नहीं रहता। **श्रावण पूर्णिमा (9 अग.)** को भाई-बहिन के पवित्र सम्बन्धों का प्रतीक रक्षाबन्धन का त्यौहार अपराह्न-काल (13घं.-52मिं. से 16घं.-33मिं. तक) में समस्त भारत में मनाया जाएगा। यद्यपि उत्तरी भारत विशेषकर पंजाबादि में प्रातःकाल ही रक्षाबन्धन पर्व मनाने की परम्परा है। **ग्रह गोचर–**28 जुला. से 13 सितं. तक '**मंगल-शनि**' के मध्य समसप्तक योग रहने से राजनीतिक पार्टियों के मध्य विग्रह एवं टकराव की स्थिति रहे। केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल में परिवर्तन के संकेत हैं। केन्द्रीय सरकार द्वारा उद्घोषित किसी विशेष नीति का विरोध किया जाएगा।

लोक भविष्य–चान्द्र श्रावण मास में पाँच शनिवार होने से कहीं भूकम्प, बादल-विस्फोट, यानादि दुर्घटना अथवा अग्निकाण्ड, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोपों से भारी जन-धन हानि होने का भय है। लोगों में क्लिष्ट रोगों का भी भय रहे। कुछ पूर्वी प्रदेशों में सत्ता परिवर्तन हो। **आकाश लक्षण–**वायु वेग के साथ अल्प वर्षा की सम्भावना है। श्रा. शु. ८ को यदि प्रातःकाले बादल आएं, तो आगे अच्छी वर्षा होगी।

वि. संवत् २०८२, **भाद्रपद कृष्ण पक्ष** शाक : १९४७										तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	सन् 2025 ई. (ता. 10 से 23 अगस्त तक), हिजरी सन् 1447 **सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा–शरद् ऋतु :** प्रातः बुध–शुक्र–गुरु क्रमशः पूर्वी आकाश में एक–दूसरे के ऊपर होंगे। शनि याम्योत्तर–वृत्त से पश्चिम में दिखेगा। सायं मंगल पश्चिम में दिखाई देगा।	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट	भा.स्टैं.टा. जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	श्रावण शक	सफर मु.	अगस्त	श्राव. प्रवि			रा.अं.क.वि.	सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
३३:१५	१	रवि	१५:४३	धनि.	१९:५८	शोभ	४५:२०	कौ	१५:४३	19	15	10	२६	कुम्भ	भाद्रपद कृष्णपक्ष प्रारम्भ, **गायत्री जपम्**	3:23:26:30	5:54	19:12
३३:१०	२	चन्द्र	११:३८	शत.	१७:४५	अति	३९:०८	ग	११:३८	20	16	11	२७	कुम्भ	भ. ३९:१७ से, **बुध मार्गी १७:३५** (12:57),	3:24:24:04	5:55	19:11
३३:०८	३	मंग	६:५५	पू.भा.	१४:५३	सुक	३२:२८	वि	६:५५	21	17	12	२८	मी. ०:४०	भ. ६:५५ तक, **अङ्गारकी श्रीगणेश (बहुला) चतुर्थी व्रत**(देखें पृष्ठ 12)**(A)**	3:25:21:37	5:55	19:10
३३:०३	४	बुध	१:४३	उ.भा.	११:३३	धृति	२५:२५	बा	१:४३	22	18	13	२९	मीन	मंगल हस्त में ४१:२८ (22:31)	3:26:19:15	5:56	19:09
अवम्	५	बुध	५६:१०	०	००	०	००	०	००	०	०	०	०	००	**पंचमी तिथि का क्षय** ००० ००० ०००	० ० ० ०	० ०	० ०
३२:५८	६	गुरु	५०:२८	रेव.	७:५३	शूल	१८:०८	ग	२३:१९	23	19	14	३०	मे. ७:५३	भ. ५०:२८ से, **पंचक समाप्त ७:५३** (9:06), **चन्दन षष्ठी व्रत (B)**	3:27:16:53	5:57	19:08
३२:५५	७	शुक्र	४४:४३	अश्वि	४:०८	गण्ड	१०:५०	वि	१७:३६	24	20	15	३१	मेष	भ. १७:३६ तक, **श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त्त)** देखें पृष्ठ 19 **(C)**	3:28:14:30	5:57	19:07
३२:५०	८	शनि	३९:०३	भर. कृति.	०:२० ५६:४३	वृद्धि ध्रुव	३:२८ ५६:१५	बा	११:५३	25	21	16	भा.	वृ.१४:२५	**श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी** (वैष्णव) देखें पृष्ठ 19, **सूर्य** मघा १ **सिंह में** ४९:४५**(D)**	3:29:12:12	5:58	19:06
३२:४८	९	रवि	३३:३८	रोहि.	५३:२०	व्या.	४९:१५	तै	६:२१	26	22	17	२	वृष	**श्रीगुग्गा–नवमी, गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव**	4:00:09:52	5:58	19:05
३२:४३	१०	चन्द्र	२८:३०	मृग.	५०:१८	हर्ष	४२:३३	व	१:०४	27	23	18	३	मि.२१:४५	भ. १:०४ से २८:३० तक, वक्री शनि उ.भा. १ में १७:५५ (13:09)	4:01:07:36	5:59	19:04
३२:३५	११	मंग	२३:५३	आर्द्रा	४७:५०	वज्र	३६:१५	बा	२३:५३	28	24	19	४	मिथुन	**अजा एकादशी व्रत**	4:02:05:22	6:00	19:02
३२:३३	१२	बुध	१९:५८	पुन.	४६:०८	सिद्धि	३०:३५	तै	१९:५८	29	25	20	५	क.३१:३०	**वत्स द्वादशी (पूजा), प्रदोष व्रत, शुक्र कर्क में ४८:१८** (25:19)	4:03:03:07	6:00	19:01
३२:२८	१३	गुरु	१६:५०	पुष्य	४५:२०	व्य.	२५:३३	व	१६:५०	30	26	21	६	कर्क	भ. १६:५० से ४५:४९ तक, बुध आश्लेषा में ५५:४८ (28:20), **अघोरा (E)**	4:04:00:57	6:01	19:00
३२:२३	१४	शुक्र	१४:४८	आश्ले	४५:३८	वरी	२१:२३	श	१४:४८	31	27	22	७	सिं.४५:३८	**पितृकार्येषु अमावस**, पिठोरी अमावस (मध्याह्नकाले) देखें पृष्ठ 21 **(F)**	4:04:58:47	6:02	18:59
३२:२०	३०	शनि	१३:५८	मघा	४७:१३	परि	१८:१५	ना	१३:५८	भा.	28	23	८	सिंह	**भाद्रपद अमावस (देवकार्येषु), कुशाग्रहणी अमावस** (देखें पृष्ठ 21) **(G)**	4:05:56:37	6:02	18:58

(A) गुरु पुनर्वसु १ में 29:03, शुक्र पुनर्वसु में 14:07, **कज्जली तीज** (देखें पृष्ठ19) **(B)** चन्द्रोदय 22:12 (जालन्धर), हल–षष्ठी **(C) भारत स्वतन्त्रता दिवस** (79वाँ), शीतला सप्तमी, गण्डमूल 7:36 तक, पुत्र व्रत **(D)** (25:52), **भाद्रपद संक्रान्ति,** मु. ३०, पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रातः 8:16 तक **(E) चतुर्दशी,** मासशिवरात्रि व्रत, गण्डमूल 24:09 से **(F)** सूर्य सायन कन्या में 26:04, **शरद् ऋतु प्रारम्भ,** लोहार्गल यात्रा (स्नान)–2 दिन **(G)** 'ॐ हुँ फट् स्वाहा' इह मंत्रेण–कुशोत्पाटनम्, **शनैश्चर अमावस,** शुक्र पुष्य में ३६:२५ (20:36), शक भाद्रपद प्रारम्भ, रानी सती मेला (झुंझुनूं) राज.

शनौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 16 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
3	0	5	3	2	2	11	10	4
29	26	11	11	20	24	6	25	25
11	18	26	19	36	17	47	15	15
4	49	41	29	33	16	31	42	42
57 40	851 33	37 57	36 53	11 59	70 52	3 12	3 11	3 11
श्ले. 4	भर. 4	हस्त 1	पुष्य 3	पुन 1	पुन 2	उभा 2	पूभा 2	पूफा 4
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 16 अग.

4 सू. बु. | 5 के. | 3 शु. गु. | 2 | 1 चं. | 12 श. | 11 रा. | 10 | 9 | 8 | 7 | 6 मं.

शनौ अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 23 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
4	4	5	3	2	3	11	10	4
5	2	15	17	21	2	6	24	24
55	51	53	59	58	35	23	53	53
20	5	46	47	57	4	40	27	27
57 51	775 58	38 25	82 00	11 29	71 25	3 41	3 11	3 11
मघा 2	मघा 1	हस्त 2	श्ले. 1	पुन 1	पुन 4	उभा 1	पूभा 2	पूफा 4
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
मूल	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 23 अगस्त

5 सू. चं. के. | 6 मं. | 4 शु. बु. | 3 गु. | 2 | 1 | 12 श. | 11 रा. | 10 | 9 | 8 | 7

भाद्रपद कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष में **श्रीगणेश बहुला चतुर्थी** (12 अग.) तथा **चन्दन षष्ठी** (14 अग.) का व्रत विधिपूर्वक रखकर रात्रि में उदित चन्द्रमा को अर्घ्य देने से कष्टों की निवृत्ति तथा गृहस्थ सुख, सौभाग्य–सन्तति, धन आदि सुखों की प्राप्ति होती है। **पुत्र व्रत**–भाद्र कृ. सप्तमी (15 अग.) को व्रत रखकर भगवान् विष्णु का पूजन करें, दूसरे दिन '**ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा।।**' मन्त्र से तिलों की 108 आहुतियां देकर ब्राह्मणों को भोजन कराकर स्वयं बिल्वपत्र एवं षड्रस सहित भोजन करें। इस प्रकार प्रत्येक कृष्ण–सप्तमी का व्रत करके वर्षान्त में गोदान संकल्पपूर्वक करें। श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी का व्रत 15 अग., शुक्रवार को सप्तमीविद्धा एवं रात्रि 23घं.–50मिं. बाद अर्द्धरात्रि को अष्टमी व्याप्त रहेगी। ता. 16 अग. को श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी उदय–व्यापिनी रात्रि 21घं.–35मिं. तक ही रहेगी, जबकि अर्द्धरात्रि के समय नवमी तिथि व्याप्त होगी। (देखें पृष्ठ 19)। **वत्स द्वादशी** (20 अग.) को प्रातः बछड़े सहित गाय का पूजन करके मूँग–मोठ और बाजरा सहित भोजन का भोग लगाते हैं। **कुशाग्रहणी अमावस** (23 अग.) को वर्षभर देव–पितृ कार्यों के लिए पूर्व या उत्तरमुख होकर दिन के द्वितीय प्रहर में दाएं हाथ से मन्त्रपूर्वक कुशा संग्रह करना चाहिए। **भाद्रपद संक्रान्ति**–ता. 16 अगस्त, शनिवार, 2025 ई. की अर्द्धरात्रि के बाद 1 बजकर 52 मिन्ट (25:52) पर मिथुन लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहू. इस सं. का पुण्यकाल अगले दिन प्रातः 8:16 बजे तक रहेगा। वारानुसार राक्षसी तथा नक्षत्रानुसार मिश्रा नामक यह सं. नीच तथा दुष्ट कर्म करने वालों, पशुओं के लिए सुखकर रहेगी। **संक्रान्ति राशिफल**–यह सं. मेष, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, राशि वालों के लिए लाभदायक रहेगी, शेष राशि वालों को कुछ कष्ट रहे। **आकाश लक्षण**–पक्ष में उत्तरी भारत में अनेक प्रान्तों में तीव्र बौछारों के साथ खण्ड वर्षा के योग हैं। भाद्र. कृ. ८ को यदि मौसम खुश्क रहे, तो अनाज के मूल्यों में तीन मास तक तेजी रहे।

वि. संवत् २०८२, भाद्रपद शुक्ल पक्ष शाक : १९४७

सन् 2025 ई. (ता. 24 अगस्त से 7 सितंबर तक), हिजरी सन् 1447
सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद् ऋतु :
प्रातः पूर्व में दिखाई दे रहा बुध 30 अग. को लुप्त हो जाएगा। शुक्र पूर्वक्षितिज से कुछ ऊपर गुरु पूर्वकपाल में तथा शनि याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा। सायं मंगल पश्चिम में क्षितिज की ओर होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	भाद्र.शाक	सफर मु.	अगस्त	भाद्र प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा.अं.क.वि.	जालन्धर सूर्योदय घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.
३२:१५	१	रवि	१४:२५	पू.फा.	५०:०८	शिव	१६:०८	ब	१४:२५	2	29	24	९	सिंह	भाद्रपद शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन मु. ३०	4:06:54:31	6:03	18:57
३२:१३	२	चन्द्र	१६:२०	उ.फा.	५४:२८	सिद्ध	१५:०८	कौ	१६:२०	3	रबि	25	१०	कं. ६:०५	**श्रीवराह जयन्ती (देखें पृष्ठ 21)**, रवि-उल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ	4:07:52:23	6:03	18:56
३२:०८	३	मंग	१९:३८	हस्त	५९:५८	साध्य	१५:१३	ग	१९:३८	4	2	26	११	कन्या	भ. ५१:५४ से, **हरितालिका तृतीया**, गौरी तृतीया, **सामवेदि उपाकर्म, (A)**	4:08:50:19	6:04	18:55
३२:००	४	बुध	२४:१०	चित्रा	– –	शुभ	१६:१५	वि	२४:१०	5	3	27	१२	तु.३३:१३	भ. २४:१० तक, **सिद्धि विनायक व्रत** (देखें पृष्ठ 22), सम्वत्सरी महापर्व (जैन)(पंचमीपक्ष)	4:09:48:17	6:05	18:53
३१:५८	५	गुरु	२९:४०	चित्रा	६:३८	शुक्ल	१८:०३	बा	२९:४०	6	4	28	१३	तुला	**ऋषि पंचमी व्रत,**	4:10:46:13	6:05	18:52
३१:५३	६	शुक्र	३५:४०	स्वा.	१३:५३	ब्रह्म	२०:१८	कौ	२:४०	7	5	29	१४	तुला	**सूर्य षष्ठी व्रत**	4:11:44:14	6:06	18:51
३१:५०	७	शनि	४१:४३	विशा.	२१:२०	ऐन्द्र	२२:४०	ग	८:४२	8	6	30	१५	वृ. ४:२८	भ. ४१:४३ से, **मुक्ताभरण/सन्तान सप्तमी व्रत,** सूर्य पू.फा. में ३९:०५**(B)**	4:12:42:14	6:06	18:50
३१:४५	८	रवि	४७:०८	अनु.	२८:२०	वैधृ	२४:४०	वि	१४:२६	9	7	31	१६	वृश्चिक	भ. १४:२६ तक, **श्रीराधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ, श्रीदूर्वाष्टमी(C)**	4:13:40:16	6:07	18:49
३१:३८	९	चन्द्र	५१:३०	ज्ये.	३४:२८	विष्क	२६:००	बा	१९:१९	10	8	सितं	१७	ध.३४:२८	**श्रीचन्द-नवमी** (उदासीन-सम्प्रदाय), श्रीभागवत् सप्ताह पाठारम्भ, **(D)**	4:14:38:20	6:08	18:47
३१:३५	१०	मंग	५४:२३	मूल	३९:१८	प्रीति	२६:१८	तै	२२:५७	11	9	2	१८	धनु	गण्डमूल 21:51 तक,	4:15:36:24	6:08	18:46
३१:३०	११	बुध	५५:३३	पू.षा.	४२:३०	आयु	२५:२०	व	२४:५८	12	10	3	१९	म.५८:००	भ. २४:५८ से ५५:३३ तक, **पद्मा एकादशी व्रत,** मंगल चित्रा में २९:१५**(E)**	4:16:34:31	6:09	18:45
३१:२८	१२	गुरु	५५:००	उ.षा.	४३:५८	सौभा	२३:०३	ब	२५:१७	13	11	4	२०	मकर	**श्रीवामन-जयन्ती, अगस्त्य-उदय**	4:17:32:38	6:09	18:44
३१:२०	१३	शुक्र	५२:४०	श्रव.	४३:४३	शोभ	१९:१८	कौ	२३:५०	14	12	5	२१	मकर	**प्रदोष व्रत**	4:18:30:48	6:10	18:42
३१:१५	१४	शनि	४८:४८	धनि.	४१:५३	अति	१४:१३	ग	२०:४४	15	13	6	२२	कुं.१२:५८	भ. ४८:४८ से, **पंचक प्रारम्भ १२:५८** (11:22), **अनन्त चतुर्दशी व्रत,(F)**	4:19:28:59	6:11	18:41
३१:१३	१५	रवि	४३:४०	शत.	३८:४८	सुक	८:००	वि	१६:१४	16	14	7	२३	कुम्भ	भ. १६:१४ तक, **भाद्रपद पूर्णिमा, प्रोष्ठपदी-महालय श्राद्ध प्रारम्भ (G)**	4:20:27:10	6:11	18:40

(A) कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन-निषेध) चन्द्रास्त 21:00 (जालन्धर) देखें पृष्ठ–, पत्थर चौथ, **(B)** (21:44), बुध मघा १ **सिंह में** २६:२८ (16:41), गुरु पुन. २ में ११:२५ (10:40), **बुध पूर्व में अस्त** 26:10 **(C) व्रत,** दधीची जयंती, गण्डमूल 17:27 से **(D)** सितम्बर मास प्रारम्भ **(E)** (17:51), शुक्र आश्लेषा में ४४:१५ (23:51) **(F) मेला बाबा सोढल (जालन्धर)** पं., कदली व्रत-पूजन, बुध पू.फा. में २६:१८ (16:42), ग्रहणवेध-दिन **(G) खग्रास चन्द्रग्रहण**-भारत में दृश्य (देखें पृष्ठ 29), पूर्णिमा का श्राद्ध, **श्रीसत्यनारायण व्रत** (देखें पृष्ठ 22)

रवौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 31 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
4	7	5	4	2	3	11	10	4
13	10	21	0	23	12	5	24	24
38	42	2	58	28	8	52	28	28
47	46	54	25	32	34	32	0	0
58 2	719 51	38 55	111 35	10 49	72 00	4 8	3 10	3 10
पूफा 1	अनु 3	हस्त 4	मघा 1	पुन 2	पुष्य 3	उभा 1	पूभा 2	पूफा 4
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
स्व	नीच	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 31 अग.

6 मं. | 5 सू. बु. के. | 4 शु. | 3 गु. | 7 | 8 चं. | 2 | 9 | 11 रा. | 1 | 10 | 12 श.

रवौ पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 7 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
4	10	5	4	2	3	11	10	4
20	10	25	14	24	20	5	24	24
25	29	36	21	42	34	22	5	5
31	24	40	57	19	4	39	45	45
58 13	848 50	39 21	116 11	10 9	72 29	4 25	3 11	3 11
पूफा 3	शत 2	चित्रा 1	पूफा 1	पुन 2	श्ले. 2	उभा 1	पूभा 2	पूफा 4
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
मूल	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 7 सितंबर

6 मं. | 5 सू. बु. के. | 4 शु. | 3 गु. | 7 | 8 | 2 | 9 | 11 चं. रा. | 1 | 10 | 12 श.

भाद्रपद शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष में **हरितालिका तृतीया** (26 अग.) का व्रत तथा शिव-गौरी की पूजा करना विशेषकर सौभाग्यवती विवाहित स्त्रियों के लिए पति, पुत्र-सन्तति एवं पौत्रादि सुखों को बढ़ाने वाला होता है। **सिद्धिविनायक** (27 अग.) का व्रत रखकर श्रीगणेश जी के बीजमन्त्र **(ॐ गं गणपतये नमः)** तथा श्रीगणेश स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। इसीदिन सायंकाल चन्द्रदर्शन करना शुभ नहीं माना जाता। 30 अग. को **सन्तान सप्तमी** का व्रत सन्तान सुख प्राप्ति के लिए किया जाता है। ता. 31 अग. को **श्रीराधा** एवं **श्रीमहालक्ष्मी का व्रत** एवं पूजन सौभाग्यवती स्त्रियां अपने सुहाग व परिवार के सौभाग्य एवं सन्तान सुख में वृद्धि के लिए करती है। ता. 4 सितं. को वामन जयन्ती के दिन भगवान् विष्णु जी के पूजन-स्तोत्र पाठ, दानादि के लिए विशेष प्रशस्त होगी। ता. 6 सितं. को अनन्त चतुर्दशी का व्रत रखकर भगवान् विष्णु के अनन्तस्वरूप का ध्यान करते हुए **'ॐ अनन्ताय नमः'** मन्त्रपूर्वक तथा रेशम की पीली एवं 14 ग्रन्थियुक्त डोरी सहित पूजन करने का विधान है। **भाद्रपद पूर्णिमा (7 सितं.)** को ही महालय पूर्णिमा का श्राद्ध होने से अपराह्न-काल में अपने दिवंगत आत्मीय पितरों के निमित्त पूर्णिमा का श्राद्ध किया जाता है। इसीदिन **खग्रास चन्द्रग्रहण** होने के बावजूद पूर्णिमा का श्राद्ध एवं सत्यनारायण व्रत अपने नियत समय पर करने शुभ होंगे (देखें पृष्ठ 22)।

लोक-भविष्य–शनिवारी संक्रान्ति तथा चान्द्र भाद्रपद में पाँच रविवार होने से देश में भय एवं कुछ प्रदेशों में अस्थिरता का वातावरण बनेगा। खाद्यान्नों में कमी एवं महँगाई के कारण सामान्य लोग अत्यन्त दुःखी, परेशान एवं असहाय अनुभव करेंगे। भाद्रपद अमावस भी शनिवासरी होने से लोगों में आपसी भाईचारे एवं प्रेम-भाव की कमी रहेगी। पिता-पुत्र तुल्य निकट सम्बन्धों में भी वैर-विरोध रहे अर्थात् अपने भी परायों जैसा व्यवहार रखेंगे।

आकाश-लक्षण–उ.प्र., बिहार, महाराष्ट्र, गुजरात के कुछ भागों में अतिवृष्टि होगी। उत्तर-पश्चिमी भारत में वर्षा की कमी रहे।

वि. संवत् २०८२, आश्विन कृष्ण पक्ष शाक : १९४७

सन् 2025 ई. (ता. 8 से 21 सितम्बर तक), हिजरी सन् 1447
सूर्य दक्षिणायना, उत्तर गोल, शरद् ऋतु :

प्रातः शुक्र पूर्वक्षितिज से कुछ ऊपर, गुरु पूर्वकपाल में तथा शनि पश्चिमक्षितिज में होगा। सायं मंगल पश्चिम क्षितिज के पास होगा। बुध अदृश्य रहेगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	भाद्र. शक	रबिउल्ल मु.	सितंबर	भाद्र. प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा.अं.क.वि.	भा.स्टै.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
३१:०८	१	चन्द्र	३७:३०	पू.भा.	३४:३८	धृति शूल	०:४५ ५३:१५	बा	१०:३५	17	15	8	२४	मी.२०:४३	**श्राद्ध (पितृपक्ष) प्रारम्भ,** प्रतिपदा तिथि का श्राद्ध, ग्रहणवेध दिन	4:21:25:25	6:12	18:39
३१:०३	२	मंग	३०:४५	उ.भा.	२९:४८	गण्ड	४४:२८	तै	४:०८	18	16	9	२५	मीन	भ. ५७:१० से, द्वितीया तिथि का श्राद्ध, ग्रहणवेध दिन, गण्डमूल 18:07 से	4:22:23:39	6:12	18:37
३०:५८	३	बुध	२३:३५	रेव.	२४:३५	वृद्धि	३५:४८	वि	२३:३५	19	17	10	२६	मे.२४:३५	भ। २३:३५ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12), **पंचक समाप्त (A)**	4:23:21:58	6:13	18:36
३०:५५	४	गुरु	१६:२३	अश्वि	१९:२३	ध्रुव	२७:१०	बा	१६:२३	20	18	11	२७	मेष	भरणी श्राद्ध, पंचमी का श्राद्ध, गण्डमूल 13:58 तक	4:24:20:16	6:13	18:35
३०:४८	५	शुक्र	९:२३	भर.	१४:२३	व्या.	१८:४५	तै	९:२३	21	19	12	२८	वृ.२८:१३	चन्द्र षष्ठी व्रत, षष्ठी का श्राद्ध,	4:25:18:38	6:14	18:33
३०:४३	६	शनि	२:५३	कृति	९:५३	हर्ष	१०:४५	व	२:५३	22	20	13	२९	वृष	भ. २:५३ से २९:५९ तक, सूर्य उ.फा. में २३:३३ (15:40), **मंगल तुला (B)**	4:26:17:04	6:15	18:32
अवम्	७	शनि	५७:०५	०	००	०	००	०	००	०	०	०	०	००	**सप्तमी तिथि का क्षय** ००० ००० ०००	० ० ० ०	० ०	० ०
३०:४०	८	रवि	५२:१०	रोहि.	६:०५	वज्र सिद्धि	३:२० ५६:४०	बा	२४:३८	23	21	14	३०	मि.३४:३३	**श्रीमहालक्ष्मी व्रत सम्पन्न, शुक्र** मघा १ **सिंह में** ४५:०३ (24:16), **(C)**	4:27:15:29	6:15	18:31
३०:३५	९	चन्द्र	४८:१०	मृग.	३:१०	व्य.	५०:४८	तै	२०:१०	24	22	15	३१	मिथुन	**बुध कन्या में १२:१०** (11:08), **सौभाग्यवतीनां श्राद्ध,** नवमी का **(D)**	4:28:13:57	6:16	18:30
३०:३०	१०	मंग	४५:१८	आर्द्रा	१:१५	वरी	४५:४५	व	१६:४४	25	23	16	आ	क.४५:३३	भ. १६:४४ से ४५:१८ तक, **सूर्य कन्या में ४८:४८** (25:47) **(E)**	4:29:12:26	6:16	18:28
३०:२५	११	बुध	४३:२८	पुन.	०:२३	परि.	४१:३५	ब	१४:२३	26	24	17	२	कर्क	**इन्दिरा एकादशी व्रत,** विश्वकर्मा पूजन, एकादशी का श्राद्ध	5:00:11:00	6:17	18:27
३०:२०	१२	गुरु	४२:४८	पुष्य	०:३८	शिव	३८:१८	कौ	१३:०८	27	25	18	३	कर्क	**संन्यासिनां श्राद्ध,** द्वादशी का श्राद्ध, गण्डमूल 6:33 से	5:01:09:34	6:18	18:26
३०:१५	१३	शुक्र	४३:२०	आश्ले	२:००	सिद्ध	३५:५८	ग	१३:०४	28	26	19	४	सिं. २:००	भ. ४३:२० से, **प्रदोष व्रत,** गुरु पुन. ३ में १७:१० (13:10), मासशिवरात्रि **(F)**	5:02:08:10	6:18	18:24
३०:१०	१४	शनि	४४:५५	मघा	४:२८	साध्य	३४:३०	वि	१४:०८	29	27	20	५	सिंह	भ. १४:०८ तक, बुध हस्त में ४६:२३ (24:52), शस्त्र-विष-दुर्घटनादि **(G)**	5:03:06:49	6:19	18:23
३०:०८	३०	रवि	४७:४३	पू.फा.	८:०३	शुभ	३३:५५	च	१६:१९	30	28	21	६	कं.२४:०८	**आश्विन/महालय अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध,** चतुर्दशी/**अमावस तिथि (H)**	5:04:05:28	6:19	18:22

(A) २४:३५ (16:03), **तृतीया एवं चतुर्थी का श्राद्ध** (देखें पृष्ठ 22) **(B) में** ३७:४५ (21:21), बुध उ.फा. में २४:२८ (16:02), सप्तमी का श्राद्ध **(C)** अष्टमी का श्राद्ध, जीवित्पुत्रिका व्रत **(D)** श्राद्ध, मातृ-नवमी **(E) आश्विन संक्रान्ति,** मु. ४५, पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रातः 8:11 तक, दशमी का श्राद्ध **(F)** व्रत, त्रयोदशी का श्राद्ध, **मघा श्राद्ध,** गण्डमूल विचार **(G)** (अपमृत्यु) से मृतों का श्राद्ध, गण्डमूल 8:06 तक **(H) का श्राद्ध,** पितृ-विसर्जन, राहु पू.भा. १-केतु पू.फा. ३ में २१:२० (14:51), **श्राद्ध-समाप्त**

रवौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 14 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
4	1	6	4	2	3	11	10	4
27	21	0	27	25	29	4	23	23
13	27	13	42	51	2	51	43	43
29	33	29	56	14	56	6	30	30
58 26	842 2	39 48	111 12	9 25	72 58	4 36	3 11	3 11
उफा 1	रोहि 4	चित्रा 3	उफा 1	पुन 2	श्ले. 4	उभा 1	पूभा 2	पूफा 4
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
स्व	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 14 सितं.

5 सू. बु. के. / 6 / 4 शु. / 3 गु. / 7 मं. / 8 / 2 चं. / 9 / 11 रा. / 1 / 10 / 12 श.

रवौ अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 21 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
5	4	6	5	2	4	11	10	4
4	24	4	10	26	7	4	23	23
3	34	53	20	54	35	18	21	21
29	4	28	13	44	0	38	14	14
58 41	744 33	40 15	104 7	8 36	73 23	4 39	3 11	3 11
उफा 3	पूफा 4	चित्रा 4	हस्त 1	पुन. 3	मघा 3	उभा 1	पूभा 2	पूफा 4
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
सम	मित्र	सम	उच्च	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु

कुं. सूर्योदय, 21 सितंबर

6 सू. बु. / 7 मं. / के.5 शु. चं. / 4 / 8 / 9 / 3 गु. / 10 / 12 श. / 2 / 11 रा. / 1

आश्विन कृष्ण पक्षफल—

आश्विन कृष्णपक्ष '**पितृपक्ष**' कहलाता है। पितरों के निमित्त किए जाने वाले प्रायः सभी श्राद्धकर्म पार्वण श्राद्ध कहलाते हैं। श्राद्धों में अपने दिवंगत पूर्वजों की मृत्यु-तिथ्यानुसार तिल, कुशा, जौं, चावल एवं गंगाजल सहित संकल्पपूर्वक पिण्डदान व तर्पणादि करने के बाद ब्राह्मणों को यथाशक्ति भोजन, फल-वस्त्रादि का दान दक्षिणा सहित करता है, उसके पितर संतृप्त होकर साधक को दीर्घायु, आरोग्य, स्वास्थ्य, धन-यश, सम्पदा, मोक्षादि का आशीर्वाद देते हैं। **ता. 14 सितं.** को अष्टमी तिथि के दिन **श्रीमहालक्ष्मी** एवं **जीवित्पुत्रिका व्रत,** पूजनादि सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपने सुहाग एवं सन्तान की दीर्घायु की कामना से करती हैं। **ता. 21 सितं.** को **सर्वपितृ श्राद्ध** के दिन ज्ञात-अज्ञात तिथियों में मृतकजनों के निमित्त श्राद्धकर्म करने से पितरों की शान्ति तथा श्राद्धकर्त्ता के गृह में सुख-शान्ति एवं पारिवारिक सौभाग्य में वृद्धि होती है। शास्त्रों में मध्याह्न विशेषकर अपराह्ण-काल में श्राद्ध कर्म करने का विधान कहा गया है। इसदिन गौ-ग्रास एवं पीपल पर जल-तिलाञ्जली अर्पण करना शुभ होता है। सायंकाल को गृहद्वार के बाहर दीप-प्रज्वलित करके श्रद्धापूर्वक **पितृ-विसर्जन** करना चाहिए। **आश्विन संक्रान्ति**—16 सितं., मंगलवार, 2025 ई. को अर्द्धरात्रि के बाद 1 बजकर 47 मिन्ट (25:47) पर **कर्क लग्न** में प्रवेश करेगी। ४५ मुहू. इस सं. का पुण्यकाल अगले दिन प्रातः 8:11 बजे तक रहेगा। वारानुसार तथा नक्षत्रानुसार भी महोदरी नामक यह संक्रां. चोरों, ठग तथा बेईमान लोगों को लाभ देने वाली रहेगी। **संक्रान्ति राशिफल**—यह सं. मेष, वृष, मिथुन, कर्क, वृश्चिक तथा मकर राशि वालों के लिए शुभ फलदायी रहेगी।

आकाश लक्षण—पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में कहीं अति वर्षा से बाढ़ादि का प्रकोप, तो कहीं रुक-रुक कर खण्ड वर्षा हो। **शकुन**—आ. कृ. दशमी को बादल गर्जे, तो आगामी मास अनाजादि में तेजी है।

वि. संवत् २०८२, आश्विन शुक्ल पक्ष शाक: १९४७										तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2025 ई. (ता. 22 सितं. से 7 अक्तूबर तक), हिजरी सन् 1447 सूर्य दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद् ऋतु:	सूर्योदय कालिक	भा.स्टै.टा. जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	भाद्र.शक	रविउल्ल मु.	सितंबर	आश्वि प्रवि.	प्रवेश घड़ी–पल	प्रात: शुक्र पूर्वक्षितिज में, गुरु पूर्वकपाल से कुछ ऊपर होगा। सायं मंगल पश्चिमक्षितिज में तथा शनि पूर्वकपाल में होगा। ता. 1 अक्तू. से बुध भी सायं पश्चिमक्षितिज में दिखेगा।	सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.
३०:००	१	चन्द्र	५१:३३	उ.फा.	१२:४०	शुक्ल	३४:०८	किं	१९:३८	31	29	22	७	कन्या	**आश्विन-शरद् नवरात्र प्रारम्भ**, घटस्थापन, मातामह (नाना/नानी) श्राद्ध **(A)**	5:05:04:12	6:20	18:20
२९:५५	२	मंग	५६:१८	हस्त	१८:१८	ब्रह्म	३५:०५	बा	२३:५६	आ	30	23	८	तु.५१:२८	**चन्द्रदर्शन**, मु. ३०, मंगल स्वाती में ३६:२८ (20:56), शक आश्विन प्रारंभ	5:06:02:57	6:21	18:19
२९:५३	३	बुध	६०:००	चित्रा	२४:५०	ऐन्द्र	३१:४५	तै	२९:०६	2	रबि	24	९	तुला	रबि-उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ	5:07:01:39	6:21	18:18
२९:४८	३	गुरु	१:५३	स्वा.	३१:५८	वैधृ	३८:५०	ग	१:५३	3	2	25	१०	तुला	भ. ३४:५७ से, शुक्र पू.फा. में ३९:३० (22:10)	5:08:00:33	6:22	18:17
२९:४३	४	शुक्र	८:००	विशा	३९:२८	विष्क	४१:१०	वि	८:००	4	3	26	११	वृ.२२:३५	भ. ८:०० तक, **उपाङ्ग ललिता व्रत** (देखें पृष्ठ 22)	5:08:59:21	6:22	18:15
२९:३८	५	शनि	१४:१३	अनु.	४६:५३	प्रीति	४३:२८	बा	१४:१३	5	4	27	१२	वृश्चिक	सूर्य हस्त में १:४८ (7:06), गण्डमूल 25:08 से	5:09:58:14	6:23	18:14
२९:३३	६	रवि	२०:१०	ज्ये.	५३:४८	आयु	४५:२०	तै	२०:१०	6	5	28	१३	ध.५३:४८	बुध चित्रा में ४१:४५ (23:06)	5:10:57:09	6:24	18:13
२९:२८	७	चन्द्र	२५:२०	मूल	५९:४५	सौभा	४६:३०	व	२५:२०	7	6	29	१४	धनु	भ. २५:२० से ५७:१८ तक, **सरस्वती आवाहन**, भद्रकाली अवतार, गण्डमूल 30:18 तक,	5:11:56:03	6:24	18:11
२९:२३	८	मंग	२९:१५	पू.षा.	— —	शोभ	४६:३५	ब	२९:१५	8	7	30	१५	धनु	**श्रीदुर्गाष्टमी**, महाष्टमी, **सरस्वती पूजन**, बुध पश्चिम में उदय 28:47	5:12:55:01	6:25	18:10
२९:२०	९	बुध	३१:३३	पू.षा.	४:१३	अति	४५:२३	बा	०:२४	9	8	अक्तू	१६	म.२०:०५	**महानवमी** (व्रत, पूजा, बलिदान एवं होम हेतु), सरस्वती बलिदान उ.षाभे **(B)**	5:13:53:58	6:25	18:09
२९:१५	१०	गुरु	३१:५३	उ.षा.	६:५८	सुक	४२:३८	तै	१:४३	10	9	2	१७	मकर	**नवरात्र व्रत पारणा, विजयादशमी (दशहरा), बुध तुला में** ५३:१३ **(C)**	5:14:53:01	6:26	18:08
२९:०८	११	शुक्र	३०:१८	श्रव.	७:५०	धृति	३८:१८	व	१:०६	11	10	3	१८	कुं.३७:३३	भ. १:०६ से ३०:१८ तक, **पंचक प्रारम्भ ३७:३३** (21:28), **पापांकुशा (D)**	5:15:52:04	6:27	18:06
२९:०५	१२	शनि	२६:४८	धनि.	६:४८	शूल	३२:३०	बा	२६:४८	12	11	4	१९	कुम्भ	**शनि प्रदोष व्रत**, पद्मनाभ द्वादशी	5:16:51:06	6:27	18:05
२९:००	१३	रवि	२१:३०	शत. पू.भा.	३:५३ ५९:३०	गण्ड	२५:१५	तै	२१:३०	13	12	5	२०	मी.४५:४५	श्री सूर्यनारायण को अर्घ्यदान	5:17:50:14	6:28	18:04
२८:५५	१४	चन्द्र	१४:४८	उ.भा.	५३:५३	वृद्धि	१६:५३	व	१४:४८	14	13	6	२१	मीन	भ. १४:४८ से ४०:५६ तक, शुक्र उ.फा. में २९:०० (18:05), **शरद् (E)**	5:18:49:22	6:29	18:03
२८:५०	१५	मंग	७:०३	रेव.	४७:२८	ध्रुव व्या.	७:३५ ५७:४५	ब	७:०३	15	14	7	२२	मे.४७:२८	**आश्विन पूर्णिमा** (स्नानदानादि), **पंचक समाप्त ४७:२८** (25:28) **(F)**	5:19:48:30	6:29	18:01

(A) महाराजा अग्रसेन जयन्ती, सूर्य सायन तुला में 23:49, दक्षिण गोल प्रारम्भ **(B) नवरात्र समाप्त**, अक्तूबर मास प्रारम्भ **(C)** (27:43), **सरस्वती विसर्जन** (श्रवणे), महात्मा गाँधी जयन्ती, अपराजिता-पूजन, शमी-पूजा, आयुध (शस्त्र) पूजन, सीमोल्लंघन **(D) एकादशी व्रत**, वक्री शनि पू.भा. ४ में ४३:१३ (23:44), भरत-मिलाप **(E) पूर्णिमा व्रत** (देखें पृष्ठ 22), कोजागर व्रत (लक्ष्मी-इन्द्र पूजा), वाराह-चतुर्दशी, मेला शाकम्भरी देवी (देवबन), महारास पूर्णिमा (ब्रजभूमि), गण्डमूल 28:02 से, श्रीसत्यनारायण व्रत **(F)** महर्षि श्रीवाल्मीकि जयन्ती, बुध स्वाती में १४:३३ (12:18), **कार्तिक स्नान-नियम प्रारम्भ**, नवान्नभक्षणं, आकाश दीपदान प्रारम्भ, कार्तिक द्विदलं त्यजेत्

भौमे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 30 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
5	8	6	5	2	4	11	10	4
12	12	10	25	28	18	3	22	22
52	55	58	22	7	37	36	52	52
46	52	3	30	21	21	58	37	37
58 57	742 35	40 49	95 40	7 24	73 51	4 33	3 10	3 10
हस्त 1	मूल 4	स्वा. 2	चित्रा 1	पुन. 3	पूफा 2	उभा 1	पूभा 1	पूफा 3
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
सम	सम	सम	उच्च	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 30 सितं.

भाव	राशि / ग्रह
1	6 सू. बु.
2	7 मं.
3	5 के. शु.
4	4
5	3 गु.
6	2
7	1
8	12 श.
9	11 रा.
10	10
11	9 चं.
12	8

भौमे पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 7 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
5	11	6	6	2	4	11	10	4
19	17	15	6	28	27	3	22	22
46	34	45	14	56	15	5	30	30
5	38	3	32	3	13	42	22	22
59 11	898 53	41 15	89 52	6 22	74 10	4 20	3 11	3 11
हस्त 3	रेव 1	स्वा. 3	चित्रा 4	पुन 3	उफा 1	पूभा 4	पूभा 1	पूफा 3
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 7 अक्तू.

भाव	राशि / ग्रह
1	6 सू.
2	7 बु. मं.
3	5 के. शु.
4	4
5	3 गु.
6	2
7	1
8	12 चं. श.
9	11 रा.
10	10
11	9
12	8

आश्विन शुक्ल पक्षफल–

आश्विन शुक्ल प्रतिपदा (22 सितं.) से **शारदीय नवरात्रों** का शुभारम्भ होगा। प्रतिपदा को सूर्योदय से 10 घटी (4 घण्टे) तक अथवा अभिजित् मुहूर्त में मंत्रोच्चारण सहित **घटस्थापन**, षोडशोपचार सहित **श्रीदुर्गा पूजन** करना चाहिए। संकल्पपूर्वक प्रतिपदा से नवमी तिथि तक, श्रीभगवती देवि के सम्मुख दीप जलाकर '**श्रीदुर्गा-सप्तशती**' का नियमित रूप से पाठ करना चाहिए। पूजन मन्त्र–'**ॐ नमश्चण्डिकायै। आगच्छ वरदे देवी ! पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये।।**' विजयादशमी (2 अक्तू.) को सायंकाले रावणदाह, श्रीरामचन्द्र जी की पूजा, अपराजिता पूजन तथा आयुध पूजन करना चाहिए। **स कालो विजयोज्ञय: सर्वकार्य सिद्धये।।** ता. 3 अक्तू. को **पापांकुशा एका.** का व्रत **पुत्रदा एकादशी** भी कहलाता है। विधिवत आश्वि. शु. एकादशी को 12 वर्ष या प्रत्येक महीने की शुक्ल एका. को 12 मास व्रत करें तो देवतुल्य दीर्घायु पुत्र होता है। **शरद् पूर्णिमा** (6 अक्तू.) का व्रत रखकर भगवान् लक्ष्मीनारायण का पूजन करके तथा रात्रि के समय उत्तम गोदुग्ध की खीर में घी और सफेद खाँड मिलाकर अर्द्धरात्रि के समय भगवान् को अर्पण करें। फिर अगले दिन प्रात: ब्राह्मण भोजन करवाकर स्वयं एवं परिवार में सेवन करने से मानसिक एवं अनेक असाध्य रोगों की शान्ति होती है। आश्विन पूर्णिमा (7 अक्तू.) से कार्तिक मास का स्नान शुरु हो जाएगा। **शकुन-विचार**–आश्विन शुक्ल १० (2 अक्तू.) को दक्षिण की वायु चले तो आगे अच्छी वर्षा हो। चावल, हल्दी, घी का स्टॉक करने से लाभ होगा।

वि. संवत् २०८२, कार्तिक कृष्ण पक्ष शाक : १९४७

सन् 2025 ई. (ता. 8 अक्टू. से 21 अक्तूबर तक), हिजरी सन् 1447
सूर्य दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद् ऋतुः
प्रातः शुक्र पूर्वक्षितिज में तथा गुरु याम्योत्तरवृत्त की ओर बढ़ता दिखाई देगा। सायं श. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में, मंगल-बुध पास-पास पश्चिमी क्षितिज में होंगे।

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	आश्वि शक	रबिउस्सानी मु.	अक्तू.	आश्वि. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.
अवम्	१	मंग	५८:३३	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	००० ०००	० ० ० ०	००	००
२८:४५	२	बुध	४९:४३	अश्वि	४०:३८	हर्ष	४७:३८	तै	२४:०८	16	15	8	२३	मेष	**कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा का क्षय**	5:20:47:43	6:30	18:00
२८:४३	३	गुरु	४१:०३	भर.	३३:५३	वज्र	३७:३५	व	१५:२३	17	16	9	२४	वृ.४७:१५	गण्डमूल ४०:३८ (22:45) तक,	5:21:46:56	6:30	17:59
२८:३८	४	शुक्र	३२:५०	कृति.	२७:३३	सिद्धि	२७:५८	ब	६:५७	18	17	10	२५	वृष	भ. १५:२३ से ४१:०३ तक, **शुक्र कन्या में १०:४५** (10:48)	5:22:46:12	6:31	17:58
२८:३३	५	शनि	२५:३०	रोहि.	२२:००	व्य.	१८:५८	तै	२५:३०	19	18	11	२६	मि.४९:४३	**व्रत करवा-चौथ** (करक-चतुर्थी), चन्द्रोदय हेतु देखें पृष्ठ 12, सूर्य चित्रा में **(A)**	5:23:45:33	6:32	17:57
२८:२८	६	रवि	१९:२५	मृग.	१७:४३	वरी	१०:५८	व	१९:२५	20	19	12	२७	मिथुन		5:24:44:52	6:32	17:55
२८:२३	७	चन्द्र	१४:४०	आर्द्रा	१४:४५	परि. शिव	४:०३ ५८:२५	ब	१४:४०	21	20	13	२८	क.५८:३५	भ. १९:२५ से ४७:०३ तक, **स्कन्द षष्ठी व्रत**	5:25:44:15	6:33	17:54
२८:१८	८	मंग	११:३०	पुन.	१३:२३	सिद्ध	५४:०३	कौ	११:३०	22	21	14	२९	कर्क	**अहोई अष्टमी व्रत** (चन्द्रोदय-व्यापिनी), मंगल विशाखा में ६:५० (9:17)	5:26:43:42	6:34	17:53
२८:१३	९	बुध	९:५८	पुष्य	१३:३३	साध्य	५०:५५	ग	९:५८	23	22	15	३०	कर्क		5:27:43:11	6:35	17:52
२८:१०	१०	गुरु	१०:०३	आश्ले	१५:१८	शुभ	४९:००	वि	१०:०३	24	23	16	३१	सिं.१५:१८	भ. ४०:०१ से, गण्डमूल 12:00 से,	5:28:42:39	6:35	17:51
२८:०५	११	शुक्र	११:३३	मघा	१८:२५	शुक्ल	४८:०३	बा	११:३३	25	24	17	का.	सिंह	भ. १०:०३ तक, बुध विशाखा में ३१:१५ (19:05)	5:29:42:13	6:36	17:50
२८:००	१२	शनि	१४:१८	पू.फा.	२२:४३	ब्रह्म	४७:५८	तै	१४:१८	26	25	18	२	कं.३८:५८	**रमा एकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी** (देखें पृष्ठ 23), **सूर्य तुला में १७:५३(B)**	6:00:41:48	6:37	17:49
२७:५५	१३	रवि	१८:०८	उ.फा.	२८:०३	ऐन्द्र	४८:४०	व	१८:०८	27	26	19	३	कन्या	**शनि प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, गुरु पुन. ४ कर्क में ३२:५३**(19:46), **(C)**	6:01:41:23	6:37	17:47
२७:५०	१४	चन्द्र	२२:४८	हस्त	३४:०८	वैधृ.	४९:५३	श	२२:४८	28	27	20	४	कन्या	भ. १८:०८ से ५०:२८ तक, **श्रीहनुमान जयन्ती** (उत्तर-भारत)-अर्द्धरात्रि**(D)**	6:02:41:04	6:38	17:46
२७:४५	३०	मंग	२८:१०	चित्रा	४०:५०	विष्क	५१:३३	ना	२८:१०	29	28	21	५	तु. ७:२३	**नरक-चतुर्दशी** (पूर्व-अरुणोदय वाली), प्रभात-स्नान, तैलाभ्यंग, रूप **(E)**	6:03:40:45	6:39	17:45

(पिछली पंक्ति के बाद:) **कार्तिक अमावस** (देव-पितृकार्येषु), **दीपावली** (देखें पृष्ठ 24) **(F)**

(A) ३४:१० (20:11) **(B)** (13:45), **कार्तिक संक्रान्ति**, मु. ३० पुण्यकाल सं. प्रातः 7:21 से, शुक्र हस्त में १४:१८ (12:19), गण्डमूल 13:58 तक, कौमुदि महोत्सव प्रारम्भ **(C)** यम प्रीत्यर्थं दीपदान **(D)** व्यापिनी, **श्रीधनवन्तरी-जयन्ती**, यमाय-तर्पण, मासशिवरात्रि व्रत **(E)** चौदश, **(F) श्रीमहालक्ष्मी-पूजन** (देखें पृष्ठ 194), **भौमवती अमावस**, कुबेर-पूजा, सायं दीपदान देवालये, कौमुदि महोत्सव सम्पन्न, श्रीमहावीर निर्वाण दिन (जैन), काली-पूजन

भौमे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 14 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
5	2	6	6	2	5	11	10	4
26	29	20	16	29	5	2	22	22
41	43	35	26	37	55	36	8	8
5	42	5	25	18	18	19	7	7
59 27	802 34	41 41	84 00	5 14	74 28	3 59	3 11	3 11
चित्रा 2	पुन 3	विशा 1	स्वा 3	पुन. 3	उफा 3	पूभा 4	पूभा 1	पूफा 3
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
सम	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	नीच	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 14 अक्तू.: 6 सू. शु.; 7 बु. मं.; 5 के.; 4; 3 चं. गु.; 2; 1; 12 श.; 11 रा.; 10; 9; 8

भौमे अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 21 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
6	5	6	6	3	5	11	10	4
3	27	25	25	0	14	2	21	21
37	57	28	53	10	37	9	45	45
56	9	15	35	27	22	35	52	52
59 42	717 28	42 8	76 28	3 51	74 43	3 33	3 11	3 11
चित्रा 4	चित्रा 2	विशा 2	विशा 2	पुन 4	हस्त 2	पूभा 4	पूभा 1	पूफा 3
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नीच	मित्र	सम	मित्र	उच्च	नीच	सम	मित्र	शत्रु

कुंडली सूर्योदय, 21 अक्तू.: 7 सू. मं. बु.; 8; 6 शु. चं.; 5 के.; 4 गु.; 3; 2; 1; 12 श.; 11 रा.; 10; 9

कार्तिक कृष्ण पक्षफल—

इस पक्ष में **करवा-चौथ** (10 अक्तू.) का व्रत सुहागिन स्त्रियां पति की मंगल कामना एवं आयु वृद्धि के लिए करती हैं। व्रती को चाहिए कि उस दिन प्रातः स्नानादि नित्यकर्म करके **'मम सुखसौभाग्य पुत्रपौत्रादि सुस्थिर श्रीप्राप्त्ये करक चतुर्थी व्रतमहं करिष्ये।'** यह संकल्प करें तथा सायं श्रीगणेश जी एवं गौरी की कथा सुनकर चन्द्रमा को अर्घ्य देने के पश्चात् भोजन करती हैं। **धन त्रयोदशी** (18 अक्तू.) को सायं नवीन बर्तन क्रय करना, श्रीलक्ष्मीनारायण का पूजन करने के बाद अनाज, वस्त्र, औषधियां एवं यमार्थ दीपदान करने से अकालमृत्यु का भय नहीं रहता। 20 अक्तू. को **नरक-चतुर्दशी** के दिन बिजली, अग्नि, उल्का आदि से मृतकों की शान्ति के लिए चार मुख वाले दीपक को प्रज्वलित करके यथाशक्ति दान करें **(देखें पृष्ठ 110)। ता. 21 अक्तू., मंगलवार** को **कार्तिक अमावस्या (दीपावली)** को प्रदोषकाल में दीपदान करके अपने गृह के पूजा-स्थान में मन्त्रपूर्वक दीप प्रज्वलित करके महालक्ष्मी की यथाविधि पूजा करनी चाहिए। ता. 20 अक्तू. को भी अमावस्या तिथि प्रदोषकाल युता है, परन्तु शास्त्रानुसार यदि अमावस्या अगले दिन प्रदोषयुता हो, तीन प्रहर व्यापिनी तथा वृद्धिगामिनी हो, तो दूसरे (अगले) दिन ही दीपावली (महालक्ष्मी पूजन) करना चाहिए (देखें पृष्ठ 24)। **कार्तिक संक्रान्ति**—ता. **17 अक्तू., शुक्रवार,** 2025 ई. को दोपहर 1 बजकर 45 मिनट (13:45) पर मकर लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहूर्त्ति इस सं. का पुण्यकाल प्रातः 7:21 मिनट से प्रारम्भ होगा। वारानुसार मिश्रा तथा नक्षत्रानुसार घोरा नामक यह सं. नीच प्रवृत्ति वाले लोगों, पशुओं तथा पशुओं से सम्बन्धित व्यापारियों के लिए लाभप्रद होगी। **संक्रान्ति राशिफल**—यह सं. मेष, वृष, कर्क, वृश्चिक, धनु, मकर राशि वालों के लिए शुभ रहेगी। **आकाश लक्षण**—पक्ष के पूर्वार्द्ध में आकाश निर्मल रहे, उत्तरार्द्ध में उत्तर-पश्चिमी विशेषकर पहाड़ी क्षेत्रों में खण्ड वर्षा के योग हैं। **कार्तिक अमावस** (21 अक्तू.) मंगलवार को होने से इसदिन श्रीगङ्गादि तीर्थ पर स्नान, जप, दान, देव-पूजन एवं पितृतर्पण, ब्राह्मण-भोजनादि कराने से एक हजार गोदान का फल मिलता है।

वि. संवत् २०८२, कार्तिक शुक्ल पक्ष शाक : १९४७

सन् 2025 ई. (ता. 22 अक्तू. से 5 नवम्बर तक), हिजरी सन् 1447
सूर्य दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद्–हेमन्त ऋतु :
प्रातः शुक्र पूर्वक्षितिज में तथा गुरु याम्योत्तरवृत्तासन्न नज़र आएगा। सायं शनि पूर्वकपाल में, मंगल–बुध एक दूसरे के पास–पास पश्चिमक्षितिज में होंगे।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	आश्वि. शक	रविउल्सा मु.	अक्तू.	कार्ति. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा.अं.क.वि.	भा.स्टे.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
२७:४०	१	बुध	३४:०३	स्वा.	४८:००	प्रीति	५३:३५	किं	१:०७	30	29	22	६	तुला	अन्नकूट-गोवर्धन पूजा, गोक्रीड़ा, बलिपूजा, मार्गपाली-पूजा, विश्वकर्मा दिवस (पं.)	6:04:40:30	6:40	17:44
२७:३८	२	गुरु	४०:१८	विशा.	५५:२८	आयु	५५:५०	बा	७:११	का	30	23	७	वृ.३८:३५	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, **भ्रातृ (भाई) दूज**, यमद्वितीया, यमुना-स्नान, कलम-**(A)**	6:05:40:16	6:40	17:43
२७:३३	३	शुक्र	४६:३८	अनु.	– –	सौभा	५८:०५	तै	१३:२८	2	जम	24	८	वृश्चिक	**बुध वृश्चिक में १४:४८** (12:36), जमादिउल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ	6:06:40:04	6:41	17:42
२७:२८	४	शनि	५२:४८	अनु.	२:५५	शोभ	– –	व	१९:४३	3	2	25	९	वृश्चिक	भ. १९:४३ से ५२:४८ तक, दूर्वा गणपति व्रत, गण्डमूल 7:52 से	6:07:39:54	6:42	17:41
२७:२३	५	रवि	५८:२५	ज्ये.	१०:१०	शोभ	०:०८	ब	२५:३७	4	3	26	१०	ध.१०:१०	सौभाग्य-पंचमी, जया-पंचमी, ज्ञान-पंचमी (जैन)	6:08:39:45	6:43	17:40
२७:२०	६	चन्द्र	६०:००	मूल	१६:५३	अति	१:५०	कौ	३०:४८	5	4	27	११	धनु	**मंगल वृश्चिक में २२:२५** (15:41), बुध अनुराधा में ७:०० (9:31), **(B)**	6:09:39:36	6:43	17:39
२७:१५	६	मंग	३:१०	पू.षा.	२२:३३	सुक	२:४८	तै	३:१०	6	5	28	१२	म.३८:४८		6:10:39:31	6:44	17:38
२७:१०	७	बुध	६:३८	उ.षा.	२६:५३	धृति	२:४५	व	६:३८	7	6	29	१३	मकर	भ. ६:३८ से ३७:३१ तक,	6:11:39:27	6:45	17:37
२७:०८	८	गुरु	८:२३	श्रव.	२९:३०	शूल गण्ड	१:२८ ५८:४५	ब	८:२३	8	7	30	१४	मकर	**गोपाष्टमी**	6:12:39:26	6:46	17:37
२७:०५	९	शुक्र	८:१५	धनि.	३०:१३	वृद्धि	५४:२५	कौ	८:१५	9	8	31	१५	कुं. ०:०८	**पंचक प्रारम्भ ०:०८** (6:49), अक्षय-कूष्माण्ड नवमी, आमला नवमी,**(C)**	6:13:39:24	6:46	17:36
२७:००	१०	शनि	६:०३	शत.	२८:५५	ध्रुव	४८:२५	ग	६:०३	10	9	नवं	१६	कुम्भ	भ. ३३:५७ से, **हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स्मार्त)** देखें पृष्ठ 23, मंगल **(D)**	6:14:39:25	6:47	17:35
२६:५५	११	रवि	१:५०	पू.भा.	२५:४०	व्या.	४०:५५	वि	१:५०	11	10	2	१७	मी.११:३८	भ. १:५० तक, **हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)** देखें पृष्ठ 23 **(E)**	6:15:39:28	6:48	17:34
अवम्	१२	रवि	५५:५०	००	००	०	००	०	००	०	०	०	०	००	**द्वादशी तिथि का क्षय** ००० ००० ०००	० ० ० ०	० ०	० ०
२६:५०	१३	चन्द्र	४८:२३	उ.भा.	२०:४३	हर्ष	३२:०५	कौ	२२:०७	12	11	3	१८	मीन	**सोम प्रदोष व्रत**, गण्डमूल 15:06 से, **वैकुण्ठ चतुर्दशी** (देखें पृष्ठ 25)	6:16:39:33	6:49	17:33
२६:४५	१४	मंग	३९:२८	रेव.	१४:२३	वज्र	२२:१३	ग	१३:५६	13	12	4	१९	मे.१४:२३	भ. ३९:२८ से, **पंचक समाप्त १४:२३** (12:35),	6:17:39:40	6:50	17:32
२६:४३	१५	बुध	२९:५५	अश्वि भर.	७:०३ ५९:१८	सिद्धि	११:३३	वि	४:४२	14	13	5	२०	मेष	भ. ४:४२ तक, **कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरु नानकदेव जयन्ती, भीष्मपंचक(F)**	6:18:39:47	6:51	17:32

(A) दवात पूजन, सूर्य स्वाती में ५९:५८, विश्वकर्मा पूजन, सूर्य सायन वृश्चिक में 9:21, शक कार्तिक प्रारम्भ, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ **(B)** शुक्र चित्रा में 29:10, **सूर्य षष्ठी पर्व (बिहार) (छठ)**, गण्डमूल 13:28 तक **(C)** जगधातृ-पूजा, आरोग्य-व्रत **(D)** अनुराधा में ३:४३ (8:16), **भीष्मपंचक प्रारम्भ** (देखें पृष्ठ 25), **(E) तुलसी विवाह (सायं)**, चातुर्मास्य व्रत-नियम समाप्त, **शुक्र तुला में** १६:०८ (13:15), **हरिप्रबोधोत्सव, त्रिस्पर्शा महाद्वादशी (F) समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत**, कार्तिक-स्नान समाप्त, **मेला रामतीर्थ** (अमृतसर, पं.), **मेला पुष्करतीर्थ** (राजस्थान), आकाशदीपदान समाप्ति, **मंगल पश्चिम में अस्त 27:10**, कार्तिक व्रतोद्यापनं, त्रिपुरोत्सव

गुरौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 30 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
6	9	7	7	3	5	11	10	4
12	16	1	6	0	25	1	21	21
36	20	49	19	40	50	40	17	17
16	20	39	29	12	51	16	14	14
59 58	776 48	42 40	57 59	2 22	74 58	2 51	3 10	3 10
स्वा. 2	श्रव 2	विशा 4	अनु 1	पुन 4	चित्रा 1	पूभा 4	पूभा 1	पूफा 3
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नीच	सम	स्व	सम	उच्च	नीच	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 30 अक्तू.

7 सू. | 8 बु. मं. | 6 शु. | 9 | 5 के. | 10 चं. | 4 गु. | 1 | 11 रा. | 3 | 12 श. | 2

बुधे पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 5 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
6	0	7	7	3	6	11	10	4
18	10	6	11	0	3	1	20	20
36	41	6	9	51	20	24	58	58
25	6	35	43	34	55	27	10	10
60 8	918 5	43 2	31 37	1 14	75 6	2 19	3 11	3 11
स्वा 4	अश्वि 4	अनु 1	अनु 3	पुन 4	चित्रा 4	पूभा 4	पूभा 1	पूफा 3
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नीच	सम	स्व	सम	उच्च	मूल	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 5 नवंबर

7 सू. शु. | 8 बु. मं. | 6 | 9 | 5 के. | 10 | 4 गु. | 1 | 11 रा. | 3 | 12 श. | 2

कार्तिक शुक्ल पक्षफल–

शुक्ल प्रतिपदा (22 अक्तू.) को श्रीकृष्ण भगवान् की प्रसन्नता के लिए **अन्नकूट पर्व** के उपलक्ष्य में छप्पन (56) भोग के पकवान बनाकर गोवर्धन, श्रीकृष्ण व गौओं की पूजा की जाती है। **द्वितीया** (23 अक्तू.) को **भाई-दूज** के दिन स्नान-उपरान्त शिव-पार्वती एवं यम पूजनोपरान्त बहन अपने भाई की मंगल-कामना हेतु उसे तिलक लगाती हैं। भाई अपनी बहन को श्रद्धानुसार वस्त्राभूषण आदि का उपहार देता है। **अक्षय नवमी** (31 अक्तू.) को किया हुआ पूजा-पाठ और दिया हुआ दान-पुण्य अक्षय होता है। **भीष्मपंचक** पंचदिनात्मक होने से 1 से 5 नवं. तक रहेंगे। उत्तर-भारत में कुछ विद्वान परम्परानुसार भीष्मपंचकों में विवाहादि शुभ कार्यों को करना शुभ नहीं मानते, जबकि उ.प्र., राज., महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में यह परम्परा शास्त्र-विहित न होने के कारण **भीष्मपंचक** सम्बन्धी दोष अविचारणीय माने जाते हैं। **तुलसी विवाह** द्वादशी तिथि (2 नवं.) को विवाह नक्षत्र (उ.भा.) कालीन में ही करना शास्त्रसम्मत होगा। ता. 5 नवं. को **कार्तिक पूर्णिमा** के दिन कार्तिक स्नान-दानादि का विशेष माहात्म्य होगा। इसीदिन श्रीसत्यनारायण का व्रत रखकर अनाज, गर्म वस्त्रों एवं फलों आदि का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। **कार्तिक मास** में पाँच मंगलवार एवं पाँच बुधवार होने से मिश्रित फल रहेंगे। देश में कहीं युद्ध-भय, हिंसक घटनाओं की सम्भावना, छत्रभङ्ग एवं साम्प्रदायिक घटनाओं का भय होगा। किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु के भी योग हैं।

वि. संवत् २०८२, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष शाक : १९४७

सन् 2025 ई. (ता. 6 से 20 नवंबर तक), हिजरी सन् 1447
सूर्य दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु :

प्रातः शुक्र पूर्वक्षितिजासन्न तथा गुरु याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर होगा। सायं शनि पूर्वकपाल में, पश्चिम में वृश्चिक मंगल ता. 6 नवं. से पश्चिम में ही लुप्त होगा, 14 नवं. से बुध भी पश्चिम में लुप्त होगा।

भा. स्टैं. टा. — जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	कार्ति. शक	अमा.उ.मु.	नवंबर	कार्ति. प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	विवरण	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा.अं.क.वि.	सूर्योदय घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.
२६:४०	१	गुरु	२०:१०	कृति.	५१:३३	व्य. वरी	०:३५ ४९:३५	कौ	२०:१०	15	14	6	२१	वृ.१२:२०	सूर्य विशाखा में २०:०० (14:51), मृगछोड़ी स्नान प्रारम्भ, पद्मक योग **(A)**	6:19:39:55	6:51	17:31
२६:३५	२	शुक्र	१०:३५	रोहि.	४४:१५	परि.	३९:००	ग	१०:३५	16	15	7	२२	वृष	भ. ३६:०८ से, शुक्र स्वाती में ३५:३५ (21:06)	6:20:40:07	6:52	17:30
२६:३०	३	शनि	१:४०	मृग.	३७:५५	शिव	२९:०८	वि	१:४०	17	16	8	२३	मि.१०:५५	भ. १:४० तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12), सौभाग्य सुन्दरी व्रत,	6:21:40:20	6:53	17:29
अवम्	४	शनि	५३:५३	०	००	०	००	०	००	०	०	०	०	००	**चतुर्थी तिथि का क्षय** ०० ००० ०००	० ० ० ०	० ०	० ०
२६:२८	५	रवि	४७:३५	आर्द्रा	३२:५८	सिद्ध	२०:२०	कौ	२०:४४	18	17	9	२४	मिथुन	**बुध वक्री ४३:५८** (24:29)	6:22:40:36	6:54	17:29
२६:२३	६	चन्द्र	४३:०५	पुन.	२९:४५	साध्य	१२:५५	ग	१५:२०	19	18	10	२५	क.१५:२०	भ. ४३:०५ से,	6:23:40:53	6:55	17:28
२६:१८	७	मंग	४०:३५	पुष्य	२८:२५	शुभ	७:०३	वि	११:५०	20	19	11	२६	कर्क	भ. ११:५० तक, **गुरु वक्री ३८:०५** (22:10), गण्डमूल 18:18 से,	6:24:41:14	6:56	17:27
२६:१७	८	बुध	४०:८	आश्ले	२९:१०	शुक्ल	२:४८	बा	१०:२२	21	20	12	२७	सिं.२९:१०	**श्रीकालभैरवाष्टमी, भैरव-जयन्ती**	6:25:41:33	6:56	17:27
२६:१३	९	गुरु	४१:३५	मघा	३१:४३	ब्रह्म ऐन्द्र	०:०३ ५८:४५	तै	१०:५२	22	21	13	२८	सिंह	गण्डमूल 19:38 तक	6:26:41:56	6:57	17:26
२६:१०	१०	शुक्र	४४:४०	पू.फा.	३५:५८	वैधृ.	५८:४०	व	१३:०८	23	22	14	२९	कं.५२:१५	भ. १३:०८ से ४४:४० तक, **वक्री-बुध पश्चिम में अस्त** 26:13, नेहरू-**(B)**	6:27:42:22	6:58	17:26
२६:०५	११	शनि	४९:०८	उ.फा.	४१:३०	विष्क	५९:२८	व	१६:५४	24	23	15	३०	कन्या	**उत्पन्ना एकादशी व्रत**	6:28:42:49	6:59	17:25
२६:०३	१२	रवि	५४:००	हस्त	४७:५८	प्रीति	– –	कौ	२१:३४	25	24	16	मा	कन्या	**सूर्य वृश्चिक में १६:३०** (13:36), **मार्गशीर्ष संक्रान्ति**, मु. ३०, **(C)**	6:29:43:19	7:00	17:25
२५:५८	१३	चन्द्र	६०:००	चित्रा	५५:०३	प्रीति	०:५५	ग	२७:१४	26	25	17	२	तु२१:२५	**सोम प्रदोष व्रत**	7:00:43:51	7:01	17:24
२५:५५	१३	मंग	०:२८	स्वा.	– –	आयु	२:४८	व	०:२८	27	26	18	३	तुला	भ. ०:२८ से ३३:३६ तक, शुक्र विशाखा में १३:१० (12:18) **(D)**	7:01:44:24	7:02	17:24
२५:५०	१४	बुध	६:४३	स्वा.	२:२०	सौभा	४:५३	श	६:४३	28	27	19	४	वृ.५२:५८	सूर्य अनु. में ३४:४० (20:55), मंगल ज्येष्ठा में ३१:०५ (19:29) **(E)**	7:02:44:58	7:03	17:23
२५:४९	३०	गुरु	१३:०५	विशा.	९:५०	शोभ	७:०५	ना	१३:०५	29	28	20	५	वृश्चिक	**मार्गशीर्ष अमावस** (स्नानदानादि), वक्री बुध विशा. ४ में ५३:०० (28:15)	7:03:45:32	7:03	17:23

(A) पुष्करराज) (राज.) (पुष्कर स्नान माहात्म्य) देखें पृष्ठ 26, **(B)** जयन्ती (बाल-दिवस) **(C)** पुण्यकाल सं. प्रातः 7:12 से, आकाशदीपदान समाप्ति **(D)** मासशिवरात्रि व्रत, श्रीबालाजी-जयन्ती **(E)** मेला पुरमण्डल (जम्मू), देविका-स्नान (ऊधमपुर, जम्मू-काश्मीर), पितृकार्येपु अमावस, श्रीबालाजी जयन्ती

बुधे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 12 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
6	3	7	7	3	6	11	10	4
25	22	11	12	0	12	1	20	20
37	52	9	16	55	6	10	35	35
58	12	3	1	59	59	11	54	54
60 21	779 11	43 27	25 54	0 10	75 14	1 39	3 11	3 11
विशा 2	मूल. 2	अनु 3	अनु 3	पुन 4	स्वा 2	पूभा 4	पूभा 1	पूफा 3
०	०	मा	व	व	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नीच	स्व	स्व	सम	उच्च	मूल	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 12 नवं.: 1; 2; 3; 4 चं. गु.; 5 के.; 6; 7 सू. शु.; 8 बु. मं.; 9; 10; 11 रा.; 12 श.

गुरौ अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 20 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
7	7	7	7	3	6	11	10	4
3	0	16	4	0	22	0	20	20
41	37	58	37	49	9	59	10	10
38	43	19	10	3	20	51	28	28
60 35	711 57	43 56	81 21	1 46	75 21	0 49	3 11	3 11
अनु 1	विशा 4	ज्ये. 1	अनु 1	पुन 4	विशा 1	पूभा 4	पूभा 1	पूफा 3
०	०	मा	व	व	मा	व	व	व
०	अ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
मित्र	नीच	स्व	सम	उच्च	मूल	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 20 नवम्बर: 1; 2; 3; 4 गु.; 5 के.; 6; 7 शु.; 8 सू. चं. मं. बु.; 9; 10; 11 रा.; 12 श.

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की अष्टमी तिथि (12 नवं.) को भगवान् शिव के प्रतीकात्मक एवं चमत्कारी स्वरूप महाकाल भैरव की पूजा, जप व संकीर्तन करने का विशेष माहात्म्य कहा गया है। इसदिन '**जागरं चोपवासं च कृत्वा कालाष्टमीदिने। प्रयतः पापनिर्मुक्तः शैवो भवति शोभनः।।**' के अनुसार उपवास करके रात्रि में जागरण करने से पाप क्षीण होते हैं और व्रती कल्याण प्राप्त करता है। त्रयोदशी से अमावस्या (17 से 20 नवं.) तक जम्मू के निकट मेला पुरमण्डल तथा देविका स्नान ऊधमपुर में पुण्य पर्व मनाया जाता है। **मार्गशीर्ष संक्रान्ति**– 16 नवंबर, रविवार, 2025 ई., ३० मुहूर्ति, दोप. 1 बजकर 36 मिनट (13:36) पर कुम्भ लग्न में प्रवेश करेगी। इस सं. के स्नानदानादि जपादि का पुण्यकाल प्रातः 7:12 बाद से शुरु होगा। वारानुसार घोरा तथा नक्षत्रानुसार ध्वांक्षी नामक यह सं. व्यापारियों, नीच कार्य करने वालों को सुखप्रद रहेगी। **लोक-भविष्य**–चांद्र मार्गशीर्ष मास में पाँच बृहस्पतिवार होने से पश्चिमी व मुस्लिम देशों जैसे–सीरिया, सूडान, लेबनान, ईरान-इज़रायल-फिलीस्तीन आदि देशों में राजनीतिक व आतंकवादी टकराव तथा युद्धजन्य हालात बनेंगे। **यत्रमासे पञ्चवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमी देशे खड्गयुद्धं च जायते।।** गुरुवार को मार्गशीर्ष अमावस होने से अनुकूल वर्षा (वृष्टि) तथा पर्याप्त उत्पादन होगा। अनुकूल वर्षा से प्रजा में आरोग्य एवं रोगनाश होगा। **सदावृष्टिः सुभिक्षं च कल्याणं दुःखनाशनम्। आरोग्यं च प्रजा स्वस्थागुरुवारे समादिशेत्।।** देश में धर्म-कर्म का आचरण बढ़े। **संक्रान्ति राशिफल**–*यह सं. मेष, वृष, मिथुन, तुला, वृश्चिक, धनु राशि वालों को लाभप्रद रहेगी।* **आकाश लक्षण**–भारत के पश्चिमोत्तरी भागों में खण्ड वर्षा एवं तेज हवाओं के योग हैं। **शकुन**–*मार्ग. कृ. ४ या ५ को बादल हों, तो आगामी वर्ष पर्याप्त वर्षा हो।*

वि. संवत् २०८२, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष शाक : १९४७

सन् 2025 ई. (21 नवंबर से 4 दिसम्बर तक), हिजरी सन् 1447
सूर्य दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु :

प्रातः शुक्र अत्यल्प समय के लिए पूर्वक्षितिज पर दृष्टिगोचर होगा। गुरु याम्योत्तरवृत्तासन्न दिखेगा। सायंकाल शनि याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में दिखेगा। ता. 26 नवं. से बुध भी प्रातः पूर्वक्षितिज में होगा। मं. अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	तारीखें कार्ति.शक	जमा.उ.मु.	नवम्बर	मार्ग.प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा.अं.क.वि.	भा.स्टै.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.
२५:४८	१	शुक्र	१९:२०	अनु.	१७:१०	अति	९:०८	ब	१९:२०	30	29	21	६	वृश्चिक	मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 13:56 से	7:04:46:09	7:04	17:23
२५:४३	२	शनि	२५:१८	ज्ये.	२४:१५	सुक	११:०३	कौ	२५:१८	मा	30	22	७	ध.२४:१५	**चन्द्रदर्शन**, मु. ३०, सूर्य सायन धनु में 7:06, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ, गण्डमूल विचार	7:05:46:49	7:05	17:22
२५:४०	३	रवि	३०:४८	मूल	३०:५५	धृति	१२:३८	ग	३०:४८	2	जम	23	८	धनु	**वक्री बुध तुला में ३३:२०** (20:26), राहु शत ४-केतु पू.फा. २ में **(A)**	7:06:47:29	7:06	17:22
२५:३८	४	चन्द्र	३५:४०	पू.षा.	३६:५८	शूल	१३:४५	व	३:१४	3	2	24	९	म.५३:२०	भ. ३:१४ से ३५:४० तक, विनायक व्रत	7:07:48:15	7:07	17:22
२५:३३	५	मंग	३९:३५	उ.षा.	४२:०५	गण्ड	१४:१५	ब	७:३८	4	3	25	१०	मकर	**श्रीपञ्चमी**, श्रीराम-विवाहोत्सव, वक्री बुध पूर्व में उदय 30:10, नाग-पंचमी	7:08:48:57	7:08	17:21
२५:३०	६	बुध	४२:१५	श्रव.	४६:००	वृद्धि	१३:५३	कौ	१०:५५	5	4	26	११	मकर	**शुक्र वृश्चिक में १०:३०** (11:21), **स्कन्द (गुह) षष्ठी**, चम्पा-षष्ठी (महाराष्ट्र)	7:09:49:40	7:09	17:21
२५:२९	७	गुरु	४३:२५	धनि.	४८:२८	ध्रुव	१२:३०	ग	१२:५०	6	5	27	१२	कुं.१७:२५	भ. ४३:२५ से, **पंचक प्रारम्भ १७:२५** (14:07), **मित्र (विष्णु) सप्तमी**	7:10:50:23	7:09	17:21
२५:२८	८	शुक्र	४२:४५	शत.	४९:१०	व्या.	९:४८	वि	१३:०५	7	6	28	१३	कुम्भ	भ. १३:०५ तक, **शनि मार्गी ५:२८** (9:21), शुक्र अनु. में ४९:३५ **(B)**	7:11:51:10	7:10	17:21
२५:२५	९	शनि	४०:१३	पू.भा.	४८:००	हर्ष	५:४०	बा	११:२९	8	7	29	१४	मी.३३:२८	**बुध मार्गी ३९:५०** (23:07), नन्दा नवमी	7:12:51:56	7:11	17:21
२५:२३	१०	रवि	३५:४५	उ.भा.	४४:५८	वज्र सिद्धि	०:०१ ५२:५५	तै	७:५९	9	8	30	१५	मीन	गण्डमूल 25:11 से,	7:13:52:45	7:12	17:21
२५:२०	११	चन्द्र	२९:३३	रेव	४०:१३	व्य.	४४:२५	व	२:३९	10	9	दिसं	१६	मे.४०:१३	भ. २:३९ से २९:३३ तक, **पंचक समाप्त ४०:१३** (23:18), **मोक्षदा (C)**	7:14:53:34	7:13	17:21
२५:१५	१२	मंग	२१:५०	अश्वि	३४:०५	वरी	३४:४५	बा	२१:५०	11	10	2	१७	मेष	**भौम प्रदोष व्रत**, सूर्य ज्येष्ठा में ४५:०० (25:14), अखण्ड द्वादशी, **(D)**	7:15:54:24	7:14	17:20
२५:१४	१३	बुध	१३:००	भर.	२६:५५	परि.	२४:१८	तै	१३:००	12	11	3	१८	वृ.४०:००	**पिशाचमोचन श्राद्ध**, शिव चतुर्दशी व्रत, भरणी दीपम्-कृतिका दीपम्	7:16:55:13	7:14	17:20
२५:१४	१४	गुरु	३:२८	कृति.	१९:०८	शिव	१३:१८	व	३:२८	13	12	4	१९	वृष	भ. ३:३८ से २८:३६ तक, **मार्गशीर्ष पूर्णिमा** (स्नानदानादि 8:38 बाद)**(E)**	7:17:56:04	7:15	17:21
अवम्	१५	गुरु	५३:४३	००	००	०	००	०	००	०	०	०	०	००	**पूर्णिमा तिथि का क्षय** ०० ००	० ० ० ०	० ०	० ०

(A) १३:१०, गण्डमूल 19:28 तक **(B)** (27:00), **श्रीदुर्गाष्टमी** **(C) एकादशी व्रत, श्रीगीता-जयन्ती**, दिसम्बर मास प्रारम्भ **(D)** गण्डमूल 20:52 तक **(E) श्रीदत्तात्रेय जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, त्रिपुरभैरव जयन्ती**

शुक्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 28 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
7	10	7	6	3	7	11	10	4
11	8	22	26	0	2	0	19	19
46	16	51	45	29	12	56	45	45
56	34	17	50	23	26	15	1	1
60 44	793 6	44 21	13 43	3 19	75 25	0 3	3 10	3 10
अनु 3	शत. 1	ज्ये. 2	विशा 3	पुन 4	विशा 4	पूभा 4	शत 4	पूफा 2
०	०	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
मित्र	सम	स्व	मित्र	उच्च	सम	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 28 नवं.

9 | 8 सू. मं. शु. | 7 बु. | 10 | 6 | 11 चं. रा. | 5 के. | 12 श. | 2 | 4 गु. | 1 | 3

गुरौ चतुर्दश्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 4 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
7	1	7	6	3	7	11	10	4
17	3	27	27	0	9	0	19	19
51	29	18	56	6	45	58	25	25
38	36	14	31	40	2	5	57	57
60 51	920 25	44 40	41 49	4 25	75 27	0 47	3 11	3 11
ज्ये. 1	कृति 3	ज्ये. 4	विशा 3	पुन 4	अनु 2	पूभा 4	शत 4	पूफा 2
०	०	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
मित्र	सम	स्व	मित्र	उच्च	सम	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 4 दिसंबर

9 | 8 सू. मं. शु. | 7 बु. | 10 | 6 | 11 रा. | 5 के. | 12 श. | 2 चं. | 4 गु. | 1 | 3

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की पंचमी को श्रीराम-विवाहोत्सव मनाया जाता है। इसीदिन श्रीपंचमी (25 नवं.) को कमलासन पर विराजित एवं कमलपुष्प लिए श्रीलक्ष्मी की सुवर्णमयी या ताम्र अथवा चाँदी की मूर्त्ति को कलश पर स्थापित कर गणपति, मातृका-पूजन सहित लक्ष्मी पूजन एवं श्रीसूक्त, लक्ष्मीसूक्त का पाठ, ब्राह्मण-भोजन दानादि करने से सौभाग्य एवं अचल लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। **मार्ग. शुक्ल षष्ठी** को कार्तिकेय जी तारकासुर को मारकर अभिषिक्त हुए थे। इसमें स्नानदान और व्रत करने से पुण्य होता है। ता. 1 दिसं. को **मोक्षदा एकादशी** का विधिपूर्वक व्रत रखने तथा भगवान् विष्णु की पूजा, दानादि करने से अनेक मानसिक व कायिक पापों की निवृत्ति तथा पुण्यों की प्राप्ति होती है। इसीदिन श्रीगीता जयन्ती के उपलक्ष्य में भगवान् कृष्ण की पूजा-स्तुति करके श्रीमद्भगवद्गीता का सुगन्धित फूलों द्वारा पूजा, स्वाध्याय, मनन व चिन्तन करना चाहिए। ता. 4 दिसं. सायंकाले पूर्णिमा को ब्रह्मा, विष्णु, महेश के अंशावतार श्रीदत्तात्रेय की बालरूप में पूजा की जाती है। **लोक भविष्य**–26 नवं. से सू.-मं.-शु. पर गुरु की इन पर विशेष दृष्टि रहने से सरकार द्वारा विशेष आर्थिक एवं राजनीतिक घोषणाएं की जाएगी। कुछ राज्यों में सत्ता-परिवर्तन के स्पष्ट संकेत हैं। ता. 16 नवं. को मार्ग. संक्रान्ति रविवार को होने के कारण अनाज, चावल, चीनी, गुड़, तिल, तैल, चने, दालें आदि दैनिक उपभोग की वस्तुओं के मूल्यों में ज़बरदस्त तेजी होने से सामान्य लोगों में परेशानियां एवं असुरक्षा की भावना होगी। राजनेताओं में परस्पर विग्रह एवं खींचातानी बढ़ेगी। राजनैतिक परिस्थितियाँ कुछ काल के लिए अनिश्चित एवं अस्थिर रहेंगी। कश्मीर, असम आदि सीमावर्त्ती प्रदेशों में कहीं विस्फोटक एवं हिंसक घटनाएं घटित होंगी। **आकाश लक्षण**–देश के उत्तर-पश्चिमी भागों में खण्ड वर्षा व तेज शीत वायु चलने के योग हैं। मार्ग. पूर्णिमा का क्षय होने से कहीं छत्रभंग, प्रजा को पीड़ा व अनाजादि महँगा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०८२, पौष कृष्ण पक्ष							शाक : १९४७				तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2025 ई. (ता. 5 दिसं. से 19 दिसम्बर तक), हिजरी सन् 1447 सूर्य दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु :	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट	भा.स्टै.टा. जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	मार्ग.शक	जमा.उ.मु.	दिसंबर	मार्ग.प्रवि	प्रवेश घड़ी–पल	मंगल अस्त है। प्रातः वृश्य शुक्र भी 12 दिसम्बर को पूर्व में लुप्त हो जाएगा। बुध प्रातः पूर्वक्षितिज में तथा गुरु याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा। सायं शनि याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा।	रा.अं.क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
२५:१३	१	शुक्र	४४:१०	रोहि	११:१५	सिद्ध साध्य	२:१० ५१:२७	बा	१८:५७	14	13	5	२०	मि.३७:३०	पौष कृष्णपक्ष प्रारम्भ, **वक्री गुरु** पुन. 3 **मिथुन में २५:२३ (17:25)**	7:18:56:58	7:16	17:21
२५:११	२	शनि	३५:२३	मृग. आर्द्रा	३:५० ५७:२७	शुभ	४१:१३	तै	९:४७	15	14	6	२१	मिथुन	**बुध वृश्चिक में ३३:०५** (20:31)	7:19:57:52	7:17	17:21
२५:१०	३	रवि	२७:५३	पुन.	५४:४८	शुक्ल	३२:०८	व	१:३८	16	15	7	२२	क.३८:२५	भ. १:३८ से २७:५३ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12), **मंगल (A)**	7:20:58:44	7:17	17:21
२५:०८	४	चन्द्र	२१:५५	पुष्य	४८:५८	ब्रह्म	२४:२०	बा	२१:५५	17	16	8	२३	कर्क	गण्डमूल 26:53 से,	7:21:59:41	7:18	17:21
२५:०५	५	मंग	१७:५८	आश्ले	४७:४०	ऐन्द्र	१८:०५	तै	१७:५८	18	17	9	२४	सिं.४७:४०	बुध अनुराधा में ४७:५८ (26:30), शुक्र ज्येष्ठा में २५:२३ (17:28) **(B)**	7:23:00:39	7:19	17:21
२५:०४	६	बुध	१६:०८	मघा	४८:३३	वैधृ.	१३:३५	व	१६:०८	19	18	10	२५	सिंह	भ. १६:०८ से ४६:२२ तक, गण्डमूल 26:45 तक,	7:24:01:38	7:20	17:21
२५:०३	७	गुरु	१६:३५	पू.फा.	५१:३०	विष्क	१०:५०	ब	१६:३५	20	19	11	२६	सिंह		7:25:02:35	7:20	17:21
२५:०२	८	शुक्र	१९:००	उ.फा.	५६:१३	प्रीति	९:३८	कौ	१९:००	21	20	12	२७	कं. ७:३०	**शुक्र पूर्व में अस्त ४०:०३** (26:10), **रूक्मणि–अष्टमी** अष्टका श्राद्ध	7:26:03:37	7:21	17:22
२५:००	९	शनि	२३:१३	हस्त	— —	आयु	९:४५	ग	२३:१३	22	21	13	२८	कन्या	भ. ५५:५७ से,	7:27:04:38	7:22	17:22
२४:५९	१०	रवि	२८:४०	हस्त	२:२३	सौभा	१०:५८	वि	२८:४०	23	22	14	२९	तु.३५:५०	भ. २८:४०तक,	7:28:05:39	7:22	17:22
२४:५९	११	चन्द्र	३४:५५	चित्रा	९:२५	शोभ	१२:४८	ब	१:४८	24	23	15	पौ	तुला	**सफला एकादशी व्रत, सूर्य** मूल १ **धनु में ५२:२०** (28:19), **पौष (C)**	7:29:06:44	7:23	17:23
२४:५८	१२	मंग	४१:२५	स्वा.	१६:५५	अति	१४:५८	कौ	८:१०	25	24	16	२	तुला	बोधनाचार्य जयन्ती, सुरुप द्वादशी	8:00:07:49	7:24	17:23
२४:५७	१३	बुध	४७:५३	विशा.	२४:३०	सुक	१७:१३	ग	१४:३९	26	25	17	३	वृ. ७:३५	भ. ४७:५३ से, **प्रदोष व्रत**	8:01:08:53	7:24	17:23
२४:५७	१४	गुरु	५३:५८	अनु.	३१:४५	धृति	१९:१३	वि	२०:५६	27	26	18	४	वृश्चिक	भ. २०:५६ तक, मासशिवरात्रि व्रत, गण्डमूल 20:07 से,	8:02:10:00	7:25	17:24
२४:५७	३०	शुक्र	५९:३०	ज्ये.	३८:३५	शूल	२०:५५	च	२६:४४	28	27	19	५	ध.३८:३५	**पौष अमावस**, बुध ज्येष्ठा में ५६:४८ (30:08)	8:03:11:05	7:25	17:24

(A) मूल १ धनु में ३२:२५ (20:15), **(B)** शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 26:10 **(C) संक्रान्ति**, मु. १५, पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रातः 10:43 तक

शुक्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 12 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
7	4	8	7	2	7	11	10	4
25	27	3	5	29	19	1	19	19
58	29	17	50	26	48	6	0	0
55	14	6	55	34	49	31	31	31
60 59	740 36	45 6	75 6	5 44	75 30	1 32	3 11	3 11
ज्ये.	उफा	मूल	अनु	पुन	ज्ये.	पूभा	शत	पूफा
3	1	1	1	3	1	4	4	2
०	०	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
मित्र	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	सम	सम	मूल	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 12 दिसं.

9 मं.; 8 सू. बु. शु.; 7; 10; 6; 11 रा.; 5 चं. के.; 2; 12 श.; 4; 1; 3 गु.

शुक्रे अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 19 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
8	7	8	7	2	7	11	10	4
3	21	8	15	28	28	1	18	18
6	20	33	12	43	37	19	38	38
13	14	50	29	21	25	29	15	15
61 6	719 47	45 26	85 12	6 43	75 32	2 16	3 10	3 10
मूल	ज्ये.	मूल	अनु	पुन	ज्ये.	पूभा	शत	पूफा
1	2	3	4	3	4	4	4	2
०	०	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	अ	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
मित्र	नीच	मित्र	सम	शत्रु	सम	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 19 दिसंबर

10; 9 सू. मं.; शु. 8 बु. चं.; 11 रा.; 7; 12 श.; 6; 3 गु.; 1; 5 के.; 2; 4

पौष कृष्ण पक्षफल–

पौष मास में गेहूँ, धान्यादि अनाज, कम्बलादि गर्मवस्त्र, ईंधन सामग्री, मौसमी फल, मिष्ठान्न दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। ता. 12 दिसं. **रुक्मिणी अष्टमी** को कृष्ण रुक्मिणी और प्रद्युम्न की मूर्तियों का गन्धयुक्त पूजनकर उत्तम पदार्थ अर्पण करें और सामर्थ्यानुसार सौभाग्यवती आठ स्त्रियों को भोजन करवाकर दक्षिणा दें तो रुक्मिणी जी की प्रसन्नता प्राप्त होती है। ता. 15 दिसं. को सफला एकादशी का व्रत विधिपूर्वक करने से सर्वप्रकार के पापों का क्षय होता है। **पौष संक्रान्ति** को अनाज से पूरित ताम्र-पात्र (कलश–गड़वा आदि) का गुड़ सहित दान करने से क्लिष्ट रोग की शान्ति होती है। **पौष संक्रान्ति–**15 दिसम्बर, सोमवार, 2025 ई. की मध्यरात्रि के बाद अगले दिन सूर्योदय से पहिले प्रातः 4 बजकर 19 मिन्ट (28:19) पर तुला लग्न में प्रवेश करेगी। वारानुसार ध्वांक्षी तथा नक्षत्रानुसार महोदरी नामक यह सं. व्यापारियों तथा बेईमान, चोर, ठगी करने वालों के लिए लाभप्रद रहेगी। **संक्रान्ति राशिफल–**यह सं. मेष, मिथुन, कर्क, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर राशि वालों के लिए शुभप्रद, शेष राशि वालों के लिए कुछ भागदौड़ वाली रहेगी। **लोक भविष्य–**पौष मास में पाँच शुक्र एवं पाँच शनिवार होने से मिश्रित प्रभाव होंगे। आगामी अनाजादि की फसलें अच्छी होंगी। कुछ विशेष वर्ग के लोगों में सुख-साधनों की वृद्धि होगी। अधिकांश लोग भोग-विलासादि कार्यों में प्रवृत्त होंगे। जनसंख्या में वृद्धि होगी। पाँच शनिवारों के कारण जनोपयोगी वस्तुओं के मूल्यों में आशातीत महँगाई, देश में कहीं दुर्भिक्ष, अग्निकाण्ड, युद्धादि का भय, कहीं छत्रभंग (शासन–परिवर्तन) हो–**शनिवारा यदा पंचपाताले कम्पते फणी:। ईशान देशभंगश्च वह्णि दाहो महर्घता।। आकाश लक्षण–**बादल–चाल के बावजूद वर्षा की कमी अनुभव होगी। **शकुन–**परन्तु पौष अमावस को मूल नक्षत्र का सम्पर्क होने से आगामी मास/पक्ष में वर्षा की सम्भावना बने–**पौषमूलममावस्यां वृष्टये लोकतुष्टये।।**

वि. संवत् २०८२, पौष शुक्ल पक्ष				शाक: १९४७						तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	सन् 2025–26 ई. (ता. 20 दिसं.(25) से 3 जन.(26) तक), हिजरी सन् 1447 सूर्य दक्षिण–उत्तरायण, दक्षिणगोल, हेमन्त–शिशिर ऋतु: मंगल–शुक्र अस्त हैं। बुध भी 30 दिसम्बर से पूर्व में लुप्त हो जाएगा। गुरु पश्चिम–कपाल में दिखाई देगा। सायं शनि पश्चिम–कपाल में होगा।	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट	भा.स्टैं.टा. जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	मार्ग.शक	जमादि मु.	दिसंबर	पौष प्रवि			रा.अं.क.वि.	सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
२४:५६	१	शनि	६०:००	मूल	४४:५०	गण्ड	२२:०८	किं	३१:५८	29	28	20	६	धनु	शुक्र मूल १ धनु में ०:४५ (7:44), गण्डमूल 25:22 तक	8:04:12:13	7:26	17:25
२४:५५	१	रवि	४:२५	पू.षा.	५०:२५	वृद्धि	२२:५५	ब	४:२५	30	29	21	७	धनु	**चन्द्रदर्शन**, मु. ३०, सूर्य सायन मकर में 20:33, सायन उत्तरायण प्रारम्भ,**(A)**	8:05:13:20	7:26	17:25
२४:५६	२	चन्द्र	८:३३	उ.षा.	५५:१३	ध्रुव	२३:०५	कौ	८:३३	पौ	रज्ज	22	८	म. ६:४०	शक पौष प्रारम्भ, रज्जब (मु.) मास प्रारम्भ	8:06:14:30	7:27	17:26
२४:५६	३	मंग	११:५५	श्रव.	५९:१३	व्या.	२२:३८	ग	११:५५	2	2	23	९	मकर	भ. ४३:०८ से,	8:07:15:37	7:27	17:26
२४:५७	४	बुध	१४:२०	धनि.	— —	हर्ष	२१:२५	वि	१४:२०	3	3	24	१०	कुं.३०:४८	भ. १४:२० तक, **पंचक प्रारम्भ ३०:४८** (19:47)	8:08:16:47	7:28	17:27
२४:५७	५	गुरु	१५:३८	धनि.	२:०८	वज्र	१९:२५	बा	१५:३८	4	4	25	११	कुम्भ	मंगल पू.षा. में ११:५५ (12:14), **तुलसी पूजन महोत्सव**, क्रिसमिस दिवस (क्रिश्चियन)	8:09:17:54	7:28	17:27
२४:५८	६	शुक्र	१५:३८	शत.	३:५०	सिद्धि	१६:२०	तै	१५:३८	5	5	26	१२	मी.४९:१५		8:10:19:05	7:29	17:28
२४:५८	७	शनि	१४:१३	पू.भा.	४:१३	व्य.	१२:१३	व	१४:१३	6	6	27	१३	मीन	भ. १४:१३ से ४२:४६ तक, **मार्त्तण्ड सप्तमी**, श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती	8:11:20:13	7:29	17:28
२४:५९	८	रवि	११:१८	उ.भा.	३:०८	वरी	६:५३	ब	११:१८	7	7	28	१४	मीन	श्रीदुर्गाष्टमी, सूर्य पू.षा. में ५७:३३ (30:30), **बुध मूल १ धनु ५९:४५(B)**	8:12:21:21	7:29	17:29
२५:००	९	चन्द्र	६:४८	रेव अश्वि	०:२८ ५६:२८	परि शिव	०:१५ ५२:३३	कौ	६:४८	8	8	29	१५	मे. ०:२८	**पंचक समाप्त ०:२८** (7:41), **बुध पूर्व में अस्त** 29:14, गण्डमूल 30:05 से	8:13:22:32	7:30	17:30
२५:०२	१०	मंग	०:५५	भर.	५१:१३	सिद्ध	४३:५०	ग	०:५५	9	9	30	१६	मेष	भ. २७:२२ से ५३:४८ तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत** (स्मार्त्त) देखें पृष्ठ 26,**(C)**	8:14:23:40	7:30	17:30
अवम्	११	मंग	५३:४८	०	००	०	००	०	००	०	०	०	०	००	**एकादशी तिथि का क्षय** ००० ००० ०००	० ० ० ०	० ०	० ०
२५:०२	१२	बुध	४५:४५	कृति.	४५:००	साध्य	३४:२०	ब	१९:४७	10	10	31	१७	वृ. ४:४३	**पुत्रदा एकादशी व्रत (वैष्णव)** देखें पृष्ठ 26, सुजन्म द्वादशी	8:15:24:48	7:30	17:31
२५:०३	१३	गुरु	३७:१०	रोहि.	३८:१५	शुभ	२४:१५	कौ	११:२८	11	11	जन	१८	वृष	**प्रदोष व्रत**, जनवरी (सन् 2026 ई.) मास प्रारम्भ	8:16:25:59	7:31	17:32
२५:०४	१४	शुक्र	२८:२८	मृग.	३१:२३	शुक्ल	१४:००	ग	२:४९	12	12	2	१९	मि. ४:४८	भ. २८:२८ से ५४:१७ तक, **श्रीसत्यनारायण व्रत** (देखें पृष्ठ 26), ईशान व्रत	8:17:27:06	7:31	17:33
२५:०५	१५	शनि	२०:०५	आर्द्रा	२४:५३	ब्रह्म ऐन्द्र	३:५५ ५४:२३	ब	२०:०५	13	13	3	२०	मिथुन	**पौष पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ**, शाकम्भरी जयन्ती	8:18:28:14	7:31	17:33

(A) शिशिर ऋतु प्रारम्भ, आरोग्य व्रत (चन्द्रोदय व्या.) **(B)** (31:23), महारूद्र व्रत, गण्डमूल 8:44 से **(C)** शुक्र पू.षा. में ३६:१३ (21:59)

रवौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 28 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
8	11	8	7	2	8	11	10	4
12	14	15	28	27	9	1	18	18
16	49	24	22	39	57	43	9	9
19	27	26	38	0	8	31	39	39
61 8	833 44	45 51	90 14	7 37	75 30	3 10	3 11	3 11
मूल 4	उभा 4	पूषा 1	ज्ये. 4	पुन 3	मूल 3	पूभा 4	शत 4	पूफा 2
०	०	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
मित्र	सम	मित्र	सम	शत्रु	सम	सम	मूल	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 28 दिसं.

10; 9 सू. मं. शु.; 8 बु.; 7; 6; 5 के.; 4; 3 गु.; 2; 1; 12 चं. श.; 11 रा.

शनौ पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 3 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
8	2	8	8	2	8	11	10	4
18	12	20	7	26	17	2	17	17
23	33	0	29	52	30	3	50	50
6	49	4	34	22	7	55	34	34
61 7	891 22	46 4	92 24	7 58	75 29	3 43	3 11	3 11
पूषा 2	आर्द्रा 2	पूषा 3	मूल 3	पुन 3	पूषा 2	पूभा 4	शत 4	पूफा 2
०	०	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
मित्र	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	सम	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 3 जनवरी

10; 9 सू. मं. बु. शु.; 8; 7; 6; 5 के.; 4; 3 चं. गु.; 2; 1; 12 श.; 11 रा.

पौष शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की द्वितीया को गायों के सींगों को धोकर लिए जल सहित स्नान करके श्वेत वस्त्र धारण करके बालेन्दु (द्वितीया) के चन्द्रमा का गन्धादि से पूजन करके ब्राह्मणों को क्षीर सहित विविध भोजन करवाकर सन्तुष्ट करना चाहिए। स्वयं भूमि पर शयन करें। इससे रोगों की निवृत्ति और आरोग्य की प्राप्ति होती है। **मार्त्तण्ड-सप्तमी** (27 दिसं.) को भगवान् सूर्य का व्रत, पूजन करके गोदान करनी चाहिए। इस प्रकार प्रत्येक पक्ष की सप्तमी को व्रत, पूजन करने से आरोग्य व तेज की वृद्धि होती है। ता. 30 दिसं. को स्मार्त्तों एवं 31 दिसं. को वैष्णवों को **पुत्रदा एकादशी** का विधिवत् व्रत रखकर जप, हवन, ब्राह्मण-भोजन एवं यथाशक्ति दान करने से दम्पत्ति को मनोवांछित पुत्र सन्तान की प्राप्ति होती है। **पौष पूर्णिमा** (3 जन.) में हरिद्वार, प्रयाग, कुरुक्षेत्र आदि तीर्थों पर (अथवा गृह में ही गंगाजल सहित) शुद्ध जल से स्नान, जप, ध्यान, दानादि का विशेष माहात्म्य होता है। ***ग्रह-गोचर***–पक्ष में गुरु-शुक्र के मध्य समसप्तक दृष्टि तथा सूर्य-शनि के मध्य (4-10) दृष्टि सम्बन्ध होने से केन्द्रीय मोदी सरकार का विपक्षी पार्टियों द्वारा विरोध तथा नीतिगत फैसलों में अड़चनें उत्पन्न की जाएंगी। उ.प्र., बिहार, प.बंगाल, असम आदि पूर्वी प्रदेशों में हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी। **आकाश लक्षण**–उत्तर-पश्चिम भारत में शीत लहर एवं बादल चाल रहे। कहीं-कहीं खण्ड वर्षा और बर्फबारी होने के भी योग हैं। **शकुन**–पौ. शु. ९ या ११ को बादल चाल हो, तो सब धान्य महँगे होंगे।

वि. संवत् २०८२, माघ कृष्ण पक्ष शाक : १९४७

सन् 2026 ई. (ता. 4 से 18 जनवरी तक), हिजरी सन् 1447
सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु :
मंगल–बुध–शुक्र–तीन ग्रह अस्तगत हैं। सायं गुरु पूर्व क्षितिज पर तथा शनि पश्चिम कपाल में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	पौष शाका	रज्जब मु.	जनवरी	पौष प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा.अं.क.वि.	सूर्योदय घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.
२५:०८	१	रवि	१२:३०	पुन.	१९:१३	वैधृ	४५:४३	कौ	१२:३०	14	14	4	२१	क. ५:३०	माघ कृष्ण पक्ष शुरु, वक्री गुरु पुन. 2 में 18:42	8:19:29:21	7:31	17:34
२५:१०	२	चन्द्र	६:०५	पुष्य	१४:४५	विष्क	३८:१०	ग	६:०५	15	15	5	२२	कर्क	भ. ३४:५७ से, गण्डमूल 13:25 से,	8:20:30:29	7:31	17:35
२५:१२	३	मंग	३:४८	आश्ले	११:५८	प्रीति	३२:०८	वि	३:४८	16	16	6	२३	सिं.११:५८	भ. ३:४८ तक, **श्रीगणेश (अङ्गारकी) संकष्ट चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12)**(A)** ०००	8:21:31:37	7:31	17:36
अवम्	४	मंग	५८:२५	००	००	०	००	०	००	०	०	०	०	००	**चतुर्थी तिथि का क्षय** ००० ०००	० ० ० ०	० ०	० ०
२५:१३	५	बुध	५७:३५	मघा	११:०३	आयु	२७:३५	कौ	२८:००	17	17	7	२४	सिंह	गण्डमूल 11:57 तक,	8:22:32:46	7:32	17:37
२५:१४	६	गुरु	५८:५५	पू.फा.	१२:१३	सौभा	२४:४५	ग	२८:१५	18	18	8	२५	कं.२७:४८	भ. ५८:५५ से,	8:23:33:54	7:32	17:37
२५:१५	७	शुक्र	६०:००	उ.फा.	१५:२३	शोभ	२३:३०	वि	३१:४८	19	19	9	२६	कन्या	भ. ३१:४८ तक, स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (तिथ्यनुसार)	8:24:35:02	7:32	17:38
२५:१७	७	शनि	४:४०	हस्त	२०:२०	अति	२३:३८	ब	४:४०	20	20	10	२७	तु.५३:२३	शुक्र उ.षा. में १२:०३ (12:21)	8:25:36:10	7:32	17:39
२५:२०	८	रवि	७:०३	चित्रा	२६:४०	सुक	२४:४८	कौ	७:०३	21	21	11	२८	तुला	सूर्य उ.षा. में २:३८ (8:35), मंगल उ.षा. में ३४:०० (21:08)	8:26:37:19	7:32	17:40
२५:२५	९	चन्द्र	१३:००	स्वा.	३३:५८	धृति	२६:४३	ग	१३:००	22	22	12	२९	तुला	भ. ४६:१४ से, **शुक्र मकर में ५१:०५** (27:57), युवा–दिवस	8:27:38:24	7:31	17:41
२५:२५	१०	मंग	१९:२८	विशा	४१:३०	शूल	२८:५५	वि	१९:२८	23	23	13	३०	वृ.२४:३५	भ. १९:२८ तक, **लोहड़ी पर्व** (पंजाब, हरियाणा, जम्मू–दिल्ली)	8:28:39:32	7:31	17:41
२५:२८	११	बुध	२५:५५	अनु.	४८:५३	गण्ड	३१:०३	बा	२५:५५	24	24	14	मा	वृश्चिक	**षट्तिला एकादशी व्रत, सूर्य मकर में १८:५८** (15:06), **मकर (B)**	8:29:40:40	7:31	17:42
२५:३०	१२	गुरु	३१:५५	ज्ये.	५५:४३	वृद्धि	३२:४८	तै	३१:५५	25	25	15	२	ध.५५:४३	**तिल द्वादशी, मंगल मकर में ५२:२०** (28:27), बुध उ.षा. में ४:३० (9:19)	9:00:41:47	7:31	17:43
२५:३३	१३	शुक्र	३७:०८	मूल	– –	ध्रुव	३४:००	ग	४:३२	26	26	16	३	धनु	भ. ३७:०८ से, **प्रदोष व्रत,** मासशिवरात्रि व्रत, गण्डमूल विचार, मेरू त्रयोदशी (जैन)	9:01:42:55	7:31	17:44
२५:३५	१४	शनि	४१:२३	मूल	१:४३	व्या.	३४:२८	वि	९:१६	27	27	17	४	धनु	भ. ९:१६ तक, **बुध मकर में ७:१०** (10:23), गण्डमूल 8:12 तक	9:02:44:02	7:31	17:45
२५:४०	३०	रवि	४४:४०	पू.षा.	६:५०	हर्ष	३४:१३	च	१३:०२	28	28	18	५	म.२२:५८	**माघ (मौनी) अमावस,** तीर्थस्नान माहात्म्य (हरिद्वार, प्रयागादि)	9:03:45:07	7:30	17:46

(A) बुध पू.षा. में ४१:१३ (24:00), गौरी–वक्रतुण्ड चतुर्थी **(B) (माघ) संक्रान्ति,** मु. ३०, पुण्यकाल सं. प्रातः 8:42 से, निरयण उत्तरायण प्रारम्भ, गण्डमूल 27:04 से

रवौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 11 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
8	6	8	8	2	8	11	10	4
26	0	26	19	25	27	2	17	17
32	18	9	59	47	33	36	25	25
9	57	45	26	57	56	10	8	8
61 7	718 12	46 23	95 35	8 6	75 29	4 26	3 11	3 11
पूषा	चित्रा	पूषा	पूषा	पुन	उषा	पूभा	शत	पूफा
4	3	4	2	2	1	4	4	2
०	०	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
मित्र	सम	मित्र	सम	शत्रु	सम	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 11 जन.

10 · 9 सू. मं. बु. शु. · 8 · 7 चं. · 11 रा. · 12 श. · 6 · 1 · 3 गु. · 5 के. · 2 · 4

रवौ अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 18 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
9	8	9	9	2	9	11	10	4
3	24	1	1	24	6	3	17	17
40	13	35	18	51	22	8	2	2
2	42	11	27	43	8	50	53	53
61 5	746 27	46 37	99 2	7 54	75 26	4 59	3 11	3 11
उषा	पूषा	उषा	उषा	पुन	उषा	पूभा	शत	पूफा
3	4	2	2	2	3	4	4	2
०	०	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	अ	अ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
शत्रु	सम	उच्च	सम	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 18 जनवरी

11 रा. · 10 सू. मं. बु. शु. · 9 चं. · 12 श. · 8 · 1 · 7 · 4 · 2 · 6 · 3 गु. · 5 के.

माघ कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की चतुर्थी (6 जन.) को श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी के व्रत का संकल्प '**गणपति प्रीतये संकष्ट चतुर्थी व्रतं करिष्ये**' पढ़कर व्रत करके '**ॐ गं गणपतये नमः**' मन्त्र जप व स्तोत्र का पाठ करें। रात्रि को श्रीगणेश एवं चन्द्र की लड्डुओं सहित पूजा करके चन्द्रोदय होने पर '**ॐ सोम सोमाय नमः**' द्वारा अर्घ्य देने से कष्टों का निवारण हो जाता है। संक्रान्ति से पूर्व **लोहड़ी पर्व** (13 जन.) अग्नि की पूजा के रूप में उत्तरी भारत में लकड़ियां, समिधा, रेवड़ियां, तिल सहित अग्नि प्रदीप्त करके बड़े उत्साह से मनाया जाता है। **षट्तिला एकादशी** (14 जन.) को तिल मिश्रित जल से स्नान करके तिलों द्वारा श्रीविष्णु पूजा एवं हवन करें। श्रीकृष्ण के '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः**' का 108 बार पाठ करें, फिर तिलयुक्त सामग्री द्वारा हवन करें एवं भोग लगाकर स्वयं ग्रहण करने से पापों का नाश होता है। इसीदिन **मकर संक्रान्ति** (14 जन.) स्नानादि उपरान्त तिलों से हवन, तिलयुक्त वस्तुओं का दान व भगवान् विष्णु सहित पंचदेव पूजन, पुरुष–सूक्त, सूर्याष्टक स्तोत्र, सूर्य द्वादशनाम, सूर्यार्घ्य, पितृ–तर्पण करके ब्राह्मणों को क्षीर सहित भोजन, वस्त्र, फल, धार्मिक पुस्तक आदि का दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। **मकर संक्रान्ति**–ता. 14 जन., बुधवार, सन् 2026 ई. को दोपहर बाद 3 बजकर 06 मिन्ट (15:06) पर वृष लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहू. इस सं. का पुण्यकाल प्रातः 8:42 बाद से सूर्यास्त तक रहेगा। मन्दाकिनी नामक यह सं. राजनेताओं के लिए सुखकर रहेगी। **संक्रान्ति राशिफल**–यह सं. वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, वृश्चिक तथा मकर राशि वालों के लिए शुभ फल देने वाली, शेष राशि वालों को कुछ भागदौड़ रहेगी। ता. 18 जन. को **माघ (मौनी) अमावस** होने से इसदिन तीर्थस्नान, वस्त्र, चावलादि अन्न दान, फल, आँवला, तिल, निर्मित रेवड़ियाँ, गच्चकादि मिष्ठान्न, पितृ–तर्पण, ब्राह्मण, भोजन दक्षिणा सहित देने का अक्षय फल होगा। **ग्रहगोचर**–ता. 13 तक सूर्य–मंग–बुध–शुक्र पर गुरु–शनि की संयुक्त दृष्टियां रहने से खण्ड वर्षा, प्राकृतिक प्रकोप रहेंगे। राजनीतिक षड्यन्त्र, कुछ राज्यों में शासन–परिवर्तन तथा पश्चिमी–मुस्लिम देशों में युद्धमय वातावरण बनेगा। **आकाश लक्षण**–पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में उत्तर–पश्चिमी भारत में शीत–लहरें सहित खण्ड वर्षा होगी।

वि. संवत् २०८२, माघ शुक्ल पक्ष — शाक : १९४७

सन् 2026 ई. (ता. 19 जनवरी से 1 फरवरी तक), हिजरी सन् 1447
सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु :

मंगल–बुध–शुक्र ग्रह अस्त हैं। ता. 31 जन. से शुक्र सायं पश्चिमक्षितिज में दृश्य हो जाएगा। शनि पश्चिम कपाल में और गुरु पूर्व क्षितिज पर होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	पौष शक	रज.मु.	जनवरी	माघ प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा.अं.क.वि.	जालन्धर सूर्योदय घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.
२५:४३	१	चन्द्र	४६:५३	उ.षा.	१०:५८	वज्र	३३:०८	किं	१५:४७	29	29	19	६	मकर	**गुप्त नवरात्र प्रारम्भ,** सूर्य सायन कुम्भ में 31:15	9:04:46:12	7:30	17:47
२५:४५	२	मंग	४८:०३	श्रव.	१४:०३	सिद्धि	३१:१८	बा	१७:२८	30	30	20	७	कुं.४५:१५	**चन्द्रदर्शन,** मु. ३०, **पंचक प्रारम्भ** ४५:१५ (25:36), शुक्र श्रवण में **(A)**	9:05:47:18	7:30	17:48
२५:४८	३	बुध	४८:१५	धनि.	१६:१०	व्य.	२८:४३	तै	१८:०९	मा	श.	21	८	कुम्भ	**गौरी तृतीया (गोंतरी) व्रत,** शक माघ प्रारम्भ, शब्बान (मु.) मास प्रारम्भ	9:06:48:23	7:30	17:49
२५:५०	४	गुरु	४७:३०	शत.	१७:२५	वरी	२५:२३	व	१७:२३	2	2	22	९	कुम्भ	भ. १७:२३ से ४७:३० तक, **वरद्-तिल-कुन्द चतुर्थी**	9:07:49:24	7:29	17:49
२५:५३	५	शुक्र	४५:४५	पू.भा.	१७:४०	परि	२१:१५	ब	१६:३८	3	3	23	१०	मी. २:४३	**वसन्त-पञ्चमी**, श्रीपञ्चमी, सरस्वती-लक्ष्मी पूजन, बुध श्रवण में **(B)**	9:08:50:28	7:29	17:50
२५:५८	६	शनि	४३:००	उ.भा.	१७:००	शिव	१६:२५	कौ	१४:२३	4	4	24	११	मीन	सूर्य श्रवण में ८:२३ (10:49), गण्डमूल 14:16 से,	9:09:51:27	7:28	17:51
२६:००	७	रवि	३९:१८	रेव.	१५:२०	सिद्ध	१०:४५	ग	११:०९	5	5	25	१२	मे.१५:२०	भ. ३९:१८ से, **पंचक समाप्त १५:२०** (13:36), रथ सप्तमी व्रत **(C)**	9:10:52:29	7:28	17:52
२६:०३	८	चन्द्र	३४:३८	अश्वि	१२:४३	साध्य शुभ	४:२० ५७:१०	वि	६:५८	6	6	26	१३	मेष	भ. ६:५८ तक, **भीष्माष्टमी, भारत गणतन्त्र दिवस** (77वाँ),गण्डमूल 12:33 तक	9:11:53:29	7:28	17:53
२६:०८	९	मंग	२९:०८	भर.	९:१५	शुक्ल	४९:२५	बा	१:५३	7	7	27	१४	वृ.२३:१५	**गुप्त नवरात्र समाप्त** **शुक्र उदय 31 जनवरी**	9:12:54:26	7:27	17:54
२६:१०	१०	बुध	२२:५५	कृति.	५:००	ब्रह्म	४१:०८	ग	२२:५५	8	8	28	१५	वृष	भ. ४९:३५ से, मंगल श्रवण में ४२:५३ (24:36)	9:13:55:24	7:27	17:55
२६:१५	११	गुरु	१६:१५	रोहि मृग.	०:१५ ५५:१०	ऐन्द्र	३२:३५	वि	१६:१५	9	9	29	१६	मि.२७:४३	भ. १६:१५ तक, **जया एकादशी व्रत, भीष्म-द्वादशी** (देखें पृष्ठ 26)	9:14:56:18	7:26	17:56
२६:१८	१२	शुक्र	९:२०	आर्द्रा	५०:०५	वैधृ	२३:५३	बा	९:२०	10	10	30	१७	मिथुन	**प्रदोष व्रत**, बुध धनिष्ठा में ४९:५५ (27:24), वक्री गुरु पुन. १ में **(D)**	9:15:57:14	7:26	17:57
२६:२३	१३	शनि	२:३३	पुन.	४५:२३	विष्क	१५:२३	तै	२:३३	11	11	31	१८	क.३१:३०	भ. ५६:१० से, शुक्र धनिष्ठा में २५:२८ (17:36), मेला जैसलमेर (राजस्थान) शुरु	9:16:58:06	7:25	17:58
अवम्	१४	शनि	५६:१०	०	००	०	००	०	००	०	०	०	०	००	**चतुर्दशी तिथि का क्षय** ००० ००० ०००	० ० ० ०	००	००
२६:२५	१५	रवि	५०:३८	पुष्य	४१:२५	प्रीति आयु	७:१८ ५९:५३	वि	२३:२४	12	12	फर	१९	कर्क	भ. २३:२४ तक, **माघ पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त, श्रीगुरु रविदास जयंती(E)**	9:17:58:56	7:24	17:58

(A) ४८:१८ (26:49), शनि उ.भा. १ में ८:१० (10:46), बाबा श्रीलालदयाल जयन्ती (ध्यानपुर, पंजाब) **(B)** ७:१८ (10:24) **(C)** (पूर्व-अरुणोदय वाली), पुत्र आरोग्य व्रत, भानु सप्तमी, राहु शत. ३-केतु पू.फा. १ में ६:३८ (10:07) **(D)** ११:१० (11:54), **शुक्र पश्चिम में उदय 31:05**, तिल द्वादशी **(E)** फरवरी (सन् 2026 ई.) मास शुरु, गण्डमूल 23:58 से,

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 26 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
9	0	9	9	2	9	11	10	4
11	9	7	14	23	16	3	16	16
48	13	48	46	50	25	50	37	37
30	4	57	28	24	22	45	27	27
60 59	846 00	46 50	103 33	7 17	75 22	5 33	3 11	3 11
श्रव 1	अश्वि 3	उषा 4	श्रव 2	पुन 2	श्रव 2	उभा 1	शत 3	पूफा 1
०	०	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
शत्रु	सम	उच्च	सम	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 26 जन.

11 रा. | 10 सू. मं. बु. शु. | 9 | 12 श. | 1 चं. | 8 | 7 | 2 | 4 | 6 | 3 गु. | 5 के.

रवौ पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 1 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
9	3	9	9	2	9	11	10	4
17	5	12	25	23	23	4	16	16
54	41	30	15	8	57	25	18	18
7	26	18	2	13	18	3	22	22
60 52	854 7	46 58	106 7	6 38	75 16	5 56	3 11	3 11
श्रव 3	पुष्य 1	श्रव 1	धनि 1	पुन 1	धनि 1	उभा 1	शत 3	पूफा 1
०	०	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
शत्रु	स्व	उच्च	सम	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 1 फरवरी

11 रा. | 10 सू. मं. बु. शु. | 9 | 12 श. | 1 | 8 | 7 | 2 | 4 चं. | 6 | 3 गु. | 5 के.

माघ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष में **गौरी तृतीया** (21 जन.) को उमा (पार्वती) का पूजन करके गुड़, अदरख, लवण, पालक और खीर-इनसे बलि देकर ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। **वसन्त-पंचमी** (23 जन.) को भगवान् श्रीविष्णु, सरस्वती व श्रीकृष्ण-राधा की पूजा पीले पुष्पों, गुलाल, अर्घ्य, धूप, दीप, नैवेद्य आदि द्वारा करके फिर पीले एवं मीठे चावलों एवं पीले हलुवा का भोग लगाकर स्वयं सेवन करने की परम्परा है। **रथ-सप्तमी** (25 जन.) को भगवान् सूर्यनारायण ने मन्वन्तर के आदि में इसीदिन जगत् को अपने प्रकाश से आलोकित किया था। विधि अनुसार व्रत रखने से, पुत्र-सन्तति, आरोग्य, धनादि की प्राप्ति होती है। **जया एकादशी** (29 जन.) का व्रत, पाठादि करने से पिशाचादि योनियों से छुटकारा मिलता है। **माघ-पूर्णिमा** (1 फर.) को तीर्थजल से स्नान करके देव-पितृ तर्पण करने के बाद तिल, गुड़, अनाज, घी, फल, वस्त्रों आदि का दान करने से विशेष पुण्य प्राप्त होता है। **लोक-भविष्य**–माघ मास में पांच रविवार होने से प्राकृतिक प्रकोपों एवं विपक्षी गतिरोधों के कारण सामान्य लोगों में असुरक्षा एवं भय की स्थिति बने, कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) एवं विस्फोट, जातीय हिंसा, अग्निकाण्ड आदि घटनाओं का भय होगा। कहीं अनाज की कमी, अत्यधिक महँगाई, दुर्भिक्ष अथवा अकालजन्य परिस्थितियां बन सकती हैं–**यत्र मासे रविवारा: जायन्ते पंचसततम्। दुर्भिक्षं छत्रभङ्ग स्यात् दास्ते च महद्भयम्।।** पक्ष में भारत की प्रभावराशि मकर पर **चतुर्ग्रही योग** होने से राजनेताओं (विशेषकर विपक्षी) को सरकारी तन्त्रों से भय हो। विश्व में भी प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धि होगी। **आकाश लक्षण**–पक्ष के पूर्वार्द्ध में उत्तर-पर्वतीय क्षेत्रों में खण्ड वर्षा, बर्फबारी एवं कहीं बूंदा-बांदी होगी। **शकुन**–माघ पूर्णिमा स्वच्छ-निर्मल होना शुभ है-**माघी पूनम निर्मल होय, अन्न आषाढ़ै सस्तो होय।।**

वि. संवत् २०८२, फाल्गुन कृष्ण पक्ष शाक : १९४७

सन् 2026 ई. (ता. 2 से 17 फरवरी तक), हिजरी सन् 1447
सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु :

मंगल अस्त है। 9 फर. से बुध सायं पश्चिम क्षितिजासन्न होगा तथा शुक्र-शनि उत्तरोत्तर क्षितिज से ऊपर उठे होंगे। इस समय गुरु पूर्व में दिखाई देगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	माघ शक	शब्बा मु.	फरवरी	माघ प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टै.टा. जालन्धर सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
२६:२८	१	चन्द्र	४६:१३	आश्ले	३८:३०	सौभा	५३:२५	बा	१८:२६	13	13	2	२०	सिं.३८:३०	फाल्गुन कृष्णपक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल विचार, शुक्र बाल्यत्व समाप्त 31:05	09:18:59:48	7:24	17:59
२६:३३	२	मंग	४३:१५	मघा	३७:००	शोभ	४८:१०	तै	१४:४४	14	14	3	२१	सिंह	**बुध कुम्भ में ३६:१०** (21:51), गण्डमूल 22:11 तक,	09:20:00:38	7:23	18:00
२६:३८	३	बुध	४२:००	पू.फा.	३७:०८	अति	४३:५३	व	१२:३८	15	15	4	२२	कं.५२:२५	भ. १२:३८ से ४२:०० तक, यूरेनस मार्गी 8:05	09:21:01:25	7:22	18:01
२६:४०	४	गुरु	४२:३३	उ.फा.	३९:००	सुक	४१:४५	ब	१२:१७	16	16	5	२३	कन्या	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12), **शुक्र कुम्भ में ४४:३०** (25:10)	09:22:02:14	7:22	18:02
२६:४५	५	शुक्र	४४:५५	हस्त	४२:३८	धृति	४०:४०	कौ	१३:४४	17	17	6	२४	कन्या	सूर्य धनिष्ठा में १६:४५ (14:03)	09:23:03:01	7:21	18:03
२६:५०	६	शनि	४८:५८	चित्रा	४७:५३	शूल	४०:५३	ग	१६:५७	18	18	7	२५	तु.१५:०५	भ. ४८:५८ से, बुध शतभिषा २२:५५ (16:30)	09:24:03:45	7:20	18:04
२६:५५	७	रवि	५४:१८	स्वा.	५४:२०	गण्ड	४२:०३	वि	२१:३८	19	19	8	२६	तुला	भ. २१:३८ तक, **बुध पश्चिम में उदय** 27:40, श्रीनाथ-उत्सव	09:25:04:28	7:19	18:05
२६:५८	८	चन्द्र	६०:००	विशा.	— —	वृद्धि	४३:५३	बा	२७:२२	20	20	9	२७	वृ.४४:४०	जानकी व्रत	09:26:05:13	7:19	18:06
२७:००	८	मंग	०:२५	विशा.	१:३३	ध्रुव	४६:००	कौ	०:२५	21	21	10	२८	वृश्चिक		09:27:05:55	7:18	18:06
२७:०५	९	बुध	६:४५	अनु.	९:००	व्या.	४८:०३	ग	६:४५	22	22	11	२९	वृश्चिक	भ. ३९:४७ से, शुक्र शतभिषा में ३:५५ (8:51), गण्डमूल 10:53 से,	09:28:06:36	7:17	18:07
२७:१०	१०	गुरु	१२:४८	ज्ये.	१६:०८	हर्ष	४९:३५	वि	१२:४८	23	23	12	फा	ध.१६:०८	भ. १२:४८ तक, **सूर्य कुम्भ में ५२:१०** (28:08), **फाल्गुन संक्रान्ति (A)**	09:29:07:16	7:16	18:08
२७:१५	११	शुक्र	१७:५८	मूल	२२:२५	वज्र	५०:२३	बा	१७:५८	24	24	13	२	धनु	**विजया एकादशी व्रत**, गण्डमूल 16:13 तक	10:00:07:54	7:15	18:09
२७:२०	१२	शनि	२२:००	पू.षा.	२७:३५	सिद्धि	५०:१०	तै	२२:००	25	25	14	३	म.४३:४०	**शनि प्रदोष व्रत**, मंगल धनिष्ठा में ४३:२५ (24:36)	10:01:08:31	7:14	18:10
२७:२५	१३	रवि	२४:४०	उ.षा.	३१:२८	व्य.	४८:५५	व	२४:४०	26	26	15	४	मकर	भ. २४:४० से ५५:१९ तक, **श्रीमहाशिवरात्रि व्रत**, बुध पू.भा. में **(B)**	10:02:09:04	7:13	18:11
२७:२८	१४	चन्द्र	२५:५८	श्रव.	३४:००	वरी	४६:३५	श	२५:५८	27	27	16	५	मकर		10:03:09:42	7:12	18:11
२७:३०	३०	मंग	२५:४८	धनि.	३५:१०	परि	४३:१३	ना	२५:४८	28	28	17	६	कुं. ४:४५	**फाल्गुन अमावस, पंचक प्रारम्भ** ४:४५ (9:06), **भौमवती अमावस (C)**	10:04:10:18	7:12	18:12

(A) मु. ३०, पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रातः 10:32 तक, स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती **(B)** ३६:१० (21:41) **(C)** तीर्थस्नान माहात्म्य (हरिद्वार, प्रयागराजादि)

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 9 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
9	6	9	10	2	10	11	10	4
26	20	18	9	22	3	5	15	15
0	13	46	20	18	59	14	52	52
37	44	37	46	56	10	8	56	56
60 45	714 33	47 8	102 41	5 30	75 10	6 22	3 11	3 11
धनि 1	विशा 1	श्रव 3	शत 1	पुन 1	धनि 4	उभा 1	शत 3	पूफा 1
०	०	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	०	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
शत्रु	सम	उच्च	सम	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 9 फर.

10 सू. मं. | 11 रा. शु. बु. | 12 श. | 1 | 2 | 3 गु. | 4 | 5 के. | 6 | 7 चं. | 8 | 9

भौमे अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 17 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
10	9	9	10	2	10	11	10	4
4	28	25	21	21	14	6	15	15
6	2	4	48	39	0	6	27	27
1	45	3	0	28	11	31	30	30
60 34	790 5	47 14	74 39	4 10	75 4	6 45	3 11	3 11
धनि 4	धनि 2	धनि 1	पूभा 1	पुन 1	शत 3	उभा 1	शत 3	पूफा 1
०	०	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	अ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
शत्रु	सम	उच्च	सम	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 17 फरवरी

11 सू. बु. शु. रा. | 12 श. | 1. | 2 | 3 गु. | 4 | 5 के. | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 मं. चं.

फाल्गुन कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष में **श्रीगणेश चतुर्थी** (5 फर.) को व्रत रखकर श्रीगणेश पूजन, बीज-मन्त्र एवं स्तोत्र स्तवन करते हुए रात्रि में चन्द्रमा को अर्घ्य देकर भगवान् को लड्डुओं सहित तिल निर्मित द्रव्यों का भोग लगाकर स्वयं प्रसाद रूप में ग्रहण करना चाहिए। **विजया एकादशी** (13 फर.) को विधिवत व्रत रखने से हर प्रकार के वाद-विवाद में सफलता प्राप्त होती है। **ता. 15 फर.**, रविवार को **श्रीमहाशिवरात्रि** का सर्वकल्याणकर व्रत रखने से अश्वमेघ यज्ञ तुल्य फल प्राप्त होता है। इसदिन काले तिलों सहित स्नानकर व्रत पालन कर रात्रि में भगवान् शिव-शंकर की विधिवत पूजा करनी चाहिए। पूजन के समय शिवरात्रि-कथा, शिव-सहस्रनाम तथा शिवस्तोत्रादि का पाठ करना चाहिए। **फाल्गुन संक्रान्ति**–ता. 12 फरवरी, बृहस्पतिवार, 2026 ई. को अर्द्धरात्रि के बाद प्रातः 4 बजकर 08 मिन्ट पर धनु लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहू. इस सं. का पुण्यकाल अगले दिन 13 फर. को प्रातः 10घं.–32मिं. तक रहेगा। वारानुसार नन्दा व नक्षत्रानुसार राक्षसी नामक यह सं. ब्राह्मणों, लेखकों, अध्यापकों तथा नीच प्रवृत्ति वाले लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। **संक्रान्ति राशिफल**–यह सं. मेष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मकर राशि वालों के लिए शुभ समाचार वाली, शेष राशि वालों के लिए अनिष्टकर होगी। **लोक-भविष्य**–ता. 13 फर. से कुम्भ राशि में चतुर्ग्रही योग रहने से विश्व तथा भारतीय राजनीति में विशेष उथल-पुथल एवं घटनाप्रद रहेगा। प्राकृतिक उत्पातों से विशेष जन-धन हानि होगी। परन्तु इस चतुर्ग्रही योग पर गुरु की विशेष दृष्टि रहने के कारण सरकारी तन्त्र की सक्रियता से हानि कम होगी। **आकाश लक्षण**–पक्ष में वायु वेग के साथ पहाड़ी क्षेत्रों में हिमपात तथा मैदानी क्षेत्रों में खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०८२, फाल्गुन शुक्ल पक्ष शाक: १९४७										तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश	सन् 2026 ई. (ता. 18 फरवरी से 3 मार्च तक), हिजरी सन् 1447 सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतु : सायं बुध-शुक्र-शनि पास-पास पश्चिम क्षितिज में होंगे। ता. 28 फर. से बुध पश्चिम में लुप्त हो जाएगा। गुरु सायंकाल पूर्व में कुछ ऊपर होगा। मंगल अस्त है।	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट	जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	माघ शक	शब्बा. मु.	फरवरी	फाल्गु. प्रवि	घड़ी-पल		रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.
२७:३५	१	बुध	२४:२८	शत.	३५:१३	शिव	३८:५५	ब	२४:२८	29	29	18	७	कुम्भ	चन्द्रदर्शन, मु. १५, सूर्य सायन मीन में 21:22, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, (A)	10:05:10:49	7:11	18:13
२७:४०	२	गुरु	२२:०३	पू.भा.	३४:१५	सिद्ध	३३:५३	कौ	२२:०३	30	रम	19	८	मी.१९:३५	सूर्य शत. में २८:२५ (18:32), श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती, फूलेरा-दूज(B)	10:06:11:20	7:10	18:14
२७:४५	३	शुक्र	१८:४५	उ.भा.	३२:२८	साध्य	२८:०५	ग	१८:४५	फा	2	20	९	मीन	भ. ४६:४४ से, शक-फाल्गुन प्रारम्भ, गण्डमूल 20:08 से,	10:07:11:48	7:09	18:15
२७:५०	४	शनि	१४:४३	रेव.	२९:५८	शुभ	२१:४८	वि	१४:४३	2	3	21	१०	मे.२९:५८	भ. १४:४३ तक, पंचक समाप्त २९:५८ (19:07), शुक्र पू.भा. में (C)	10:08:12:16	7:08	18:16
२७:५५	५	रवि	१०:१०	अश्वि	२७:०३	शुक्ल	१५:०८	बा	१०:१०	3	4	22	११	मेष	याज्ञवलक्य जयन्ती, गण्डमूल 17:55 तक	10:09:12:37	7:06	18:16
२८:००	६	चन्द्र	५:१३	भर.	२३:४३	ब्रह्म	८:०५	तै	५:१३	4	5	23	१२	वृ.३७:५०	भ. ५९:५५ से, मंगल कुम्भ में ११:५० (11:49)	10:10:13:00	7:05	18:17
अवम्	७	चन्द्र	५९:५५	००	००	०	००	०	००	०	०	०	०	००	सप्तमी तिथि का क्षय ००० ०००	० ० ० ०	० ०	० ०
२८:०५	८	मंग	५४:३०	कृति	२०:०८	ऐन्द्र वैधृ.	०:५० ५३:२५	वि	२७:१३	5	6	24	१३	वृष	भ. २७:१३ तक, होलाष्टक प्रारम्भ, अन्नपूर्णा-अष्टमी, लक्ष्मी-सीताष्टमी	10:11:13:22	7:04	18:18
२८:१०	९	बुध	४९:०५	रोहि.	१६:३०	विष्क	४६:०५	बा	२१:४८	6	7	25	१४	मि.४४:४०		10:12:13:40	7:03	18:19
२८:१३	१०	गुरु	४३:५०	मृग.	१२:५५	प्रीति	३८:५०	तै	१६:०८	7	8	26	१५	मिथुन	बुध वक्री १३:०५ (12:16)	10:13:13:58	7:02	18:19
२८:१८	११	शुक्र	३८:५०	आर्द्रा	९:३०	आयु	३१:४८	व	११:२०	8	9	27	१६	क.५२:१०	भ. ११:२० से ३८:५० तक, आमलकी एकादशी व्रत	10:14:14:13	7:01	18:20
२८:२३	१२	शनि	३४:२०	पुन.	६:२८	सौभा	२५:०५	ब	६:३५	9	10	28	१७	कर्क	गोविन्द-द्वादशी, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 20:20, मेला श्याम जी (खाटू)	10:15:14:27	7:00	18:21
२८:२८	१३	रवि	३०:२८	पुष्य	४:००	शोभ	१८:५५	कौ	२:२४	10	11	मार्च	१८	कर्क	प्रदोष व्रत, शुक्र मीन में ४४:५३ (24:56), मार्च (सन् 2026 ई.) (D)	10:16:14:38	6:59	18:22
२८:३०	१४	चन्द्र	२७:२५	आश्ले	२:१५	अति	१३:२३	व	२७:२५	11	12	2	१९	सिं. २:१५	भ. २७:२५ से ५६:२७ तक, होलिका-दहन (प्रदोष में, देखें पृष्ठ 26)(E)	10:17:14:48	6:58	18:22
२८:३५	१५	मंग	२५:२८	मघा	१:२८	सुक	८:४०	ब	२५:२८	12	13	3	२०	सिंह	फाल्गुन पूर्णिमा, ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण (देखें पृष्ठ 30), होली-पर्व(F)	10:18:14:55	6:57	18:23

ग्रस्तोदय चंद्रग्रहण 3 मार्च

होलाष्टक ता. 24 फर. से 3 मार्च

(A) फाल्गुन शुक्लपक्ष प्रारम्भ **(B)** (मथुरा-वृन्दावन), रमज़ान (मु.) मास प्रा. **(C)** ४३:४० (24:36), शनि उ.भा. २ में ५०:०३ (27:09), अविघ्नकर व्रत **(D)** मास प्रारम्भ, महेश्वर व्रत, गण्डमूल 8:35 से, **(E) श्रीसत्यनारायण व्रत** (देखें पृष्ठ 27), लक्ष्मीनारायण व्रत **(F) होलाष्टक समाप्त,** होलिकाविभूति धारण, धूलिवन्दन, श्रीचैतन्यमहाप्रभु जयन्ती, गण्डमूल, मंगल शत. में 22:53

भौमे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 24 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
10	1	10	10	2	10	11	10	4
11	4	0	27	21	22	6	15	15
9	18	34	54	14	45	54	5	5
26	43	50	50	12	10	36	14	14
60 22	852 6	47 16	17 32	2 51	74 54	7 1	3 10	3 10
शत 2	कृति 3	धनि 3	पूभा 3	पुन 1	पूभा 1	उभा 2	शत 3	पूफा 1
०	०	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
शत्रु	सम	सम	सम	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 24 फर.: 12 श. | 11 सू. मं. बु. शु. रा. | 10 | 9 | 8 | 7 | 6 | 5 के. | 4 | 3 गु. | 2 चं. | 1

भौमे पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 3 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
10	4	10	10	2	11	11	10	4
18	12	6	26	20	1	7	14	14
11	12	5	36	58	28	44	42	42
18	12	45	58	16	59	20	59	59
60 9	797 18	47 16	45 2	1 30	74 44	7 13	3 11	3 11
शत 4	मघा 4	धनि 4	पूभा 2	पुन 1	पूभा 4	उभा 2	शत 3	पूफा 1
०	०	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	उच्च	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 3 मार्च: 12 श. | 11 सू. मं. बु. रा. शु. | 10 | 9 | 8 | 7 | 6 | 5 चं. के. | 4 | 3 गु. | 2 | 1

फाल्गुन शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष में ता. 24 फर. से 3 मार्च तक '**होलाष्टक**' रहेंगे। इन दिनों उत्तर-भारत के दिल्ली, पंजाब, हिमाचल, हरियाणा आदि प्रदेशों में शुभ कार्यों का आरम्भ वर्जित माना जाता है। जबकि अन्य प्रदेशों में विचार नहीं किया जाता। **आमलकी एकादशी** (27 फर.) के दिन आँवले के वृक्ष के नीचे बैठकर भगवान् विष्णु की भक्ति करनी चाहिए तथा आँवले की टहनी को कलश में स्थापन कर पूजन करना चाहिए। पूजनोपरान्त इस दिन आँवलों सहित भोजन का दान एवं सेवन करना उत्तमोत्तम होता है। ता. 2 मार्च को प्रदोष-व्यापिनी पूर्णिमा में '**होलिका-दहन**' किया जाएगा। **क्योंकि 3 मार्च को पूर्णिमा प्रदोष-व्यापिनी नहीं है।** यद्यपि 2 मार्च को सम्पूर्ण प्रदोष एवं अर्द्धरात्रि के बाद तक भद्रा व्याप्त है, अतएव शास्त्रानुसार भद्रा में ही प्रदोष व्यापिनी पूर्णिमा में **होलिका-दहन** किया जाएगा। (देखें पृष्ठ 26)। ता. 3 मार्च-फाल्गुन पूर्णिमा को ही होली का पर्व बड़ी श्रद्धा एवं उत्साह से मनाया जाएगा। इसीदिन भारत में **ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण** भी घटित होगा। **ग्रहगोचर**–ता. 23 फर. से 1 मार्च के मध्य कुम्भ राशि में '**पंचग्रही योग**' घटित होने से अनाज, सोना आदि धातुएँ, पैट्रोल आदि में ज़बरदस्त तेज़ी बने। कहीं दुर्भिक्ष (अनाज की कमी) एवं दूध, पनीर, घी आदि स्निग्ध पदार्थ भी महँगे होंगे। राष्ट्रनेताओं को आन्तरिक एवं बाह्य शत्रुओं एवं राजनीतिक संकट का सामना हो। चान्द्र फाल्गुन में पाँच मंगलवारों के प्रभाव से भी कहीं छत्रभंग (शासन-परिवर्तन), पदच्युति या किसी प्रधाननेता का आकस्मिक निधन हो। सरकार एवं विपक्षी पार्टियों के मध्य वाद-विवाद एवं आरोप-प्रत्यारोप एक नए शिखर तक पहुँच जाएंगे। **आकाश-लक्षण**–इस पक्ष में भारत के उत्तर-पश्चिमी भागों में तेज़ आँधियां तथा खण्ड वर्षा के योग हैं। **शकुन**–फा.शु. ८ या १३ ति. को वृष्टि होना एवं आरोग्यता के संकेत होंगे।

वि. संवत् २०८२, चैत्र कृष्ण पक्ष — शाक: १९४७

सन् 2026 ई. (ता. 4 से 19 मार्च तक), हिजरी सन् 1447
सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतु :

मंगल अस्त है। ता. 8 मार्च से शनि भी पश्चिम में अस्त हो जाएगा। शुक्र सायं पश्चिम-क्षितिज में चमकता रहेगा। गुरु याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा। ता. 15 मार्च से बुध प्रातः पूर्वक्षितिज में दिखेगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	फाल्गु. शक	रमज़ा.मु.	मार्च	फाल्गु प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	विवरण	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
२८:४३	१	बुध	२४:४५	पू.फा.	१:५०	धृति	४:५५	कौ	२४:४५	13	14	4	२१	कं.१७:०८	सूर्य पू.भा. में ४४:५३(24:52), **होला मेला** (श्रीआनन्दपुर व पाओंटा साहिब), **(A)**	10:19:14:59	6:55	18:24
२८:४८	२	गुरु	२५:२५	उ.फा.	३:३०	शूल	२:१०	ग	२५:२५	14	15	5	२२	कन्या	भ. ५६:२९ से, **सन्त तुकाराम जयन्ती**, ग्रहणवेध दिन	10:20:15:04	6:54	18:25
२८:५०	३	शुक्र	२७:३३	हस्त	६:३३	गण्ड वृद्धि	०:३३ ५९:५८	वि	२७:३३	15	16	6	२३	तु.३८:३५	भ. २७:३३ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12), ग्रहणवेध दिन	10:21:15:06	6:53	18:25
२८:५५	४	शनि	३१:०५	चित्रा	११:००	ध्रुव	– –	बा	३१:०५	16	17	7	२४	तुला	श्रीभगवान्नारायण जयन्ती	10:22:15:07	6:52	18:26
२९:००	५	रवि	३५:५३	स्वा.	१६:४३	ध्रुव	०:३३	कौ	३:२९	17	18	8	२५	तुला	**शनि पश्चिम में अस्त** 18:29, **श्रीरंग-पंचमी**, मेला गुरु रामराय **(B)**	10:23:15:06	6:51	18:27
२९:०३	६	चन्द्र	४१:३५	विशा.	२३:२५	व्या.	१:५५	ग	८:४४	18	19	9	२६	वृ. ६:४०	भ. ४१:३५ से, एकनाथ षष्ठी	10:24:15:04	6:50	18:27
२९:१०	७	मंग	४७:४८	अनु.	३०:४३	हर्ष	५:०८	वि	१४:४२	19	20	10	२७	वृश्चिक	भ. १४:४२ तक, वक्री बुध शत. ४ में २:५३ (7:57), शीतला सप्तमी **(C)**	10:25:14:57	6:48	18:28
२९:१५	८	बुध	५३:५३	ज्ये.	३८:०३	वज्र	६:०३	बा	२०:५१	20	21	11	२८	ध.३८:०३	**गुरु मार्गी** ५:२३ (8:56), **शीतलाष्टमी व्रत**	10:26:14:51	6:47	18:29
२९:२०	९	गुरु	५९:२०	मूल	४४:५५	सिद्धि	८:०३	तै	२६:३७	21	22	12	२९	धनु	गण्डमूल 24:44 तक,	10:27:14:44	6:46	18:30
२९:२३	१०	शुक्र	६०:००	पू.षा.	५०:४५	व्य.	९:२८	व	३२:४५	22	23	13	३०	धनु	भ. ३२:४५ से,	10:28:14:34	6:45	18:30
२९:३०	१०	शनि	६:१०	उ.षा.	५५:१५	वरी	१०:००	वि	६:१०	23	24	14	चै.	म. ७:०५	भ. ६:१० तक, **सूर्य मीन में** ४५:४५ (25:01), **चैत्र संक्रान्ति**, मु. ४५, **(D)**	10:29:14:21	6:43	18:31
२९:३५	११	रवि	६:२८	श्रव.	५८:०५	परि	९:२०	बा	६:२८	24	25	15	२	मकर	**पापमोचनी एकादशी व्रत**, शुक्र रेवती में ९:५० (10:38)	11:00:14:09	6:42	18:32
२९:३८	१२	चन्द्र	७:३०	धनि.	५९:१३	शिव	२:५०	तै	७:३०	25	26	16	३	कुं.२८:५३	**पंचक प्रारम्भ २८:५३** (18:14), **सोम प्रदोष व्रत**, वारुणी योग 30:22 से	11:01:13:54	6:41	18:32
२९:४३	१३	मंग	६:४८	शत.	५८:४३	सिद्ध साध्य	३:५८ ५९:१५	व	६:४८	26	27	17	४	कुम्भ	भ. ६:४८ से ३५:३९ तक, **वारुणी पर्व** (सूर्योदय से 9:23 तक), **(E)**	11:02:13:39	6:40	18:33
२९:५०	१४	बुध	४:३०	पू.भा.	५६:४८	शुभ	५३:२८	श	४:३०	27	28	18	५	मी.४२:२५	सूर्य उ.भा. में ६:४५ (9:20), पितृकार्येषु अमावस	11:03:13:18	6:38	18:34
२९:५३	३०	गुरु	०:४०	उ.भा.	५३:४०	शुक्ल	४६:४०	ना	०:४०	28	29	19	६	मीन	**चैत्र अमावस** (प्रातः 6:53 तक), **वि. संवत् 2082 पूर्ण, 'रौद्र' नाम (F)**	11:04:12:57	6:37	18:34
अवम्	१	गुरु	५५:४०	००	००	०	००	०	००	०	०	०	०	००	**चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का क्षय** ००० (देखें पृष्ठ 27)	० ० ० ०	० ०	० ०

(A) वसन्तोत्सव, ध्वजारोहण, धुलैण्डी, शुक्र उ.भा. में २५:३५ (17:09), आम्रकुसुम-प्राशन, ग्रहणवेध-दिन **(B)** (देहरादून, उत्तराखण्ड), मेला नवचण्डी (मेरठ, उ.प्र.) **(C)** (पूजा), मेला शीतलामाता (कुराली) पं., गण्डमूल 19:05 से **(D)** पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रातः 7:25 तक, वक्री बुध पूर्व में उदय 18:33 **(E)** मासशिवरात्रि व्रत, **मेला पृथूदक-पिहोवातीर्थ (हरि.)** **(F)** नव **वि. संवत् 2083 प्रारम्भ, चैत्र (वासन्त) नवरात्र प्रारम्भ, घटस्थापन** (अभिजित् मुहूर्त्त में), ध्वजारोहण, तैलाभ्यंग, श्रीदुर्गा-पूजा, गुड़ी-पड़वा, संवत्सरफल श्रवण, गण्डमूल 28:05 से

बुधे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 11 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
10	7	10	10	2	11	11	10	4
26	21	12	19	20	11	8	14	14
11	49	23	8	51	26	42	17	17
39	22	53	26	45	7	40	33	33
59 55	714 19	47 15	54 4	0 4	74 32	7 23	3 11	3 11
पूभा 2	ज्ये. 2	शत 2	शत 4	पुन 1	उभा 3	उभा 2	शत 3	पूफा 1
०	०	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ	अ
शत्रु	नीच	सम	सम	शत्रु	उच्च	सम	मूल	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 11 मार्च

12 श. शु. | 11 सू. मं. बु. रा. | 10 | 9 | 8 चं. | 7 | 6 | 5 के. | 4 | 3 गु. | 2 | 1

गुरौ अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 19 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
11	11	10	10	2	11	11	10	4
4	3	18	14	20	21	9	13	13
10	25	41	25	57	21	42	52	52
10	17	42	53	44	37	5	7	7
59 42	845 14	47 10	7 58	1 38	74 19	7 28	3 11	3 11
उभा 1	उभा 1	शत 4	शत 3	पुन 1	रेव. 2	उभा 2	शत 3	पूफा 1
०	०	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	उच्च	सम	मित्र	शत्रु

कुण्डली सूर्योदय, 19 मार्च

12 सू. चं. शु. श. | 11 रा. बु. मं. | 10 | 9 | 8 | 7 | 6 | 5 के. | 4 | 3 गु. | 2 | 1

चैत्र कृष्ण पक्षफल–

प्रतिपदा (4 मार्च) को होला-मेला, धुलैण्डी व वसन्तोत्सव पंजाब, हरियाणा, हि.प्र. आदि अनेक प्रदेशों में मनाया जाता है। ता. 6 मार्च को मातृविद्धा चतुर्थी के दिन **श्रीगणेश चतुर्थी** का व्रत रखकर श्रीगणेश पूजन, मन्त्र-जप (**ॐ गं गणपतये नमः**) करने से विघ्न दूर होते हैं तथा पुत्र-पौत्रादि की प्राप्ति होती है। ता. 17 मार्च को त्रयोदशी एवं शतभिषा नक्षत्र का योग होने **वारुणी योग** बना हुआ है। इसदिन तीर्थादि स्थल पर स्नान, दानादि का विशेष महत्त्व होता है। इसका माहात्म्य ग्रहणतुल्य होता है। **चैत्र संक्रान्ति**–ता. 14 मार्च, शनिवार, सन् 2026 ई. को अर्द्धरात्रि के बाद 1 बजकर 1 मिनट (25:01) पर वृश्चिक लग्न में प्रवेश करेगी। 45 मुहू. इस सं. का पुण्यकाल अगले दिन 15 मार्च को प्रातः 7 घं.-25 मिं. तक रहेगा। वारानुसार राक्षसी तथा नक्षत्रानुसार नन्दा नामक यह सं. दुष्ट, कपटी, भ्रष्ट लोगों को कुछ लाभप्रद, परन्तु लेखकों, अध्यापकों को विशेष लाभप्रद रहेगी। **सं. राशिफल**–यह सं. वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, धनु, मकर तथा मीन राशि वालों के लिए लाभदायक रहेगी। **लोक-भविष्य**–पक्ष में शनिवारी संक्रांति तथा 14 मार्च तक '**चतुर्ग्रही योग**' रहने से राजनीतिक पार्टियों के मध्य विरोध एवं टकराव पैदा होंगे। सर्वप्रकार के अनाजों, तैल आदि, पैट्रोल, सोना, लोहा आदि धातुओं में तेजी बने। क्लिष्ट रोगों का प्रसार अधिक रहे। **आकाश लक्षण**–हि.प्र., जम्मू-काश्मीर आदि पहाड़ी क्षेत्रों में तेज हवाओं के साथ वर्षा के योग हैं। **शकुन**–चैत्र कृ. १ को बूंदा-बांदी हो तो आगामी कृषि-फसल को हानि होगी।

शुद्ध एवं शुभ विवाह मुहूर्त–सं. २०८२ वि. (सन् 2025-26 ई.)

समय शुद्धि विचार (शुभ–अशुभ समय का विचार)—

(1) गुरु अस्त—वि. संवत् 2082 में **10 जून, 2025 ई.**, मंगलवार को गुरु पश्चिम में **अस्त** होकर **6 जुलाई, 2025 ई.**, रविवार को पूर्व में **उदित** हो जाएगा।

(2) शुक्र–अस्त—शुक्र 12 दिसम्बर, 2025 ई., शुक्रवार को पूर्व में अस्त होकर 31 जनवरी, 2026 ई. को पश्चिम में उदित होगा।

ध्यान रहे :—गुरु-शुक्र के अस्त-दिन से 3 दिन पहले **'वार्धक्य-दोष'** और उदय-दिन के 3 दिन बाद तक, **'बाल्यत्व-दोष'** रहता है। इन वार्धक्य तथा बाल्यत्व दोष के दिनों में भी शुभ कार्य नहीं किए जाते।

गुरु-शुक्र के अस्त की ये उपरोक्त तारीखें पंजाब, हरियाणा, जम्मू-काश्मीर, हि.प्र., दिल्ली आदि राज्यों के लिए हैं। अक्षांश-भेद के कारण उदय-अस्त की तारीखों में भिन्नता आ जाती है, इसलिए अपने अभीष्ट नगर के अक्षांशानुसार उस नगर के गुरु-शुक्र की उदय-अस्त की तारीख नीचे दिए गए कोष्ठक से जानकर विवाह तथा अन्य मुहूर्त्तों का पाठकों को निर्णय करना चाहिए।

अक्षांशभेद से भारत के विभिन्न स्थलों पर गुरु-शुक्र का उदयास्त सं. २०८२ वि.

अक्षांश ⟹	+5°	+15°	+25°	+35°
गुरु पश्चिम में अस्त	9 जून, 2025 ई.	9 जून, 2025 ई.	10 जून, 2025 ई.	11 जून, 2025 ई.
गुरु पूर्व में उदित	4 जुला., 2025 ई.	4 जुला., 2025 ई.	5 जुला., 2025 ई.	6 जुला., 2025 ई.
शुक्र पूर्व में अस्त	13 दिसं., 2025 ई.	13 दिसं., 2025 ई.	12 दिसं., 2025 ई.	11 दिसं., 2025 ई.
शुक्र पश्चिम में उदित	1 फर., 2026 ई.	31 जन., 2026 ई.	30 जन., 2026 ई.	30 जन., 2026 ई.

(3) चातुर्मास्यादि में विवाह–मुहूर्त्त—पंजाब, हि.प्र., दिल्ली, हरियाणा, जम्मू-काश्मीर आदि प्रदेशों में चातुर्मास (आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक) में गत सैंकड़ों वर्षों से परम्परया एवं लोकमान्यतानुसार विवाहादि शुभ मुहूर्त्त स्वीकार किए गए हैं। हमारे मुहूर्त्तकारों ने भी स्थानीय परम्पराओं को शास्त्रादेश के समान आदर देने की अनुमति दी है। इस सम्बन्ध में **'ज्योतिर्विदाभरण'** नामक ग्रन्थ का निम्न वाक्य तो शास्त्र एवं लोकपरम्परा में वैमत्य की स्थिति में लोकपरम्परा को ही बलवत्तर बतलाता है। यथा–

''पुराण–वेद–स्मृति धर्मतो बहिः धर्मोऽयमत्र प्रतिपादनीयः।
शास्त्रप्रमाणादपि लोकधर्मः प्रमाणमेतद् बलवत्तदादरात्॥''

प्रत्यक्ष है–शास्त्रकारों ने भी लोकपरम्परा को अधिमान दिया है। इसीलिए गत लगभग 150 वर्षों से हम **'पंचांगदिवाकर'** में चातुर्मास में भी विवाह मुहूर्त्त शोधन करके दे रहे हैं, जिसे पंजाब, हरियाणा, जम्मू, हि.प्र. के विद्वान एवं श्रद्धालु जन सहर्ष स्वीकार करते हैं।

(4) कार्तिक मास—ता. 17 अक्तू. से 15 नवम्बर, 2025 ई. तक सौर कार्तिक मास रहेगा। इस समयावधि में केवल पर्वतीय प्रदेशों में विवाहादि शुभकृत्य सम्पादित करने की शास्त्राज्ञा है।

(5) भीष्मपंचक विचार (1 से 5 नवम्बर)—पंजाब, हिमाचल, जम्मू, हरियाणादि कुछ प्रदेशों में परम्परावश भीष्मपंचकों में विवाह, उपनयन, गृहारम्भादि शुभ कार्यों का सम्पादन शुभ नहीं माना जाता, जबकि भारत के अधिकांश अन्य प्रदेशों में जैसे– उत्तरप्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र आदि में परम्परागत विवाहादि शुभ कृत्यों का निषेध नहीं माना जाता है।

(6) होलाष्टक—ता. 24 फरवरी से 3 मार्च, 2026 ई. तक होलाष्टक रहेंगे। इस अवधि में विवाहादि शुभ कृत्य वर्जित रहेंगे। विशेषकर पंजाब, हि.प्र., जम्मू-काश्मीर, हरियाणादि राज्यों में। जबकि कुछ राज्यों/क्षेत्रों में (पूर्वी उ.प्र., बिहारादि) होलाष्टक दिनों में मंगल-कार्यों का सम्पादन शुभ माना जाता है। (देखें–**'पंचांगदिवाकर'** वि. संवत् २०७३ पृष्ठ 98)

आगे दिए गए विवाह मुहूर्त्तों में 'लतादि दश गुण–दोष रेखाएं' शीर्षक के अन्तर्गत सीधी रेखा (।) दोषाभाव अर्थात् गुण की सूचक है, जबकि आड़ी रेखा (ऽ) दोष की सूचक है। मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह की युति, वेध, मृत्युबाण, क्रान्तिसाम्य, भद्रा, लग्नस्थ व सप्तमस्थ क्रूर ग्रहादि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। (आगामी पृष्ठों पर दिया गया लेख 'विवाह–मुहूर्त्त में लतादि दश दोष विचार' पढ़ें।) परन्तु जहाँ पर इन दोषों के शास्त्र सम्मत परिहार मिल जाते हैं, वहाँ सम्बद्ध ग्रह की पूजा, दानादि के पश्चात् विवाह मुहूर्त्त को शुभ एवं ग्राह्य मान लिया गया है, नवम दोष क्रान्तिसाम्य के लिए स्थूल क्रान्तिसाम्य के स्थान पर सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य (महापात् गणित) प्रक्रिया का आश्रय लिया गया है।

***सांकेतिक शब्दों का स्पष्टीकरण*—विवाह मुहूर्त्तों में लग्न विवरण में १ को मेष, २ को वृष, ३ को मिथुन, ४ को कर्क, ५ को सिंह, ६ को कन्या, ७ को तुला, ८ को बृश्चिक, ९ को धनु, १० को मकर, ११ को कुम्भ** तथा **१२ की संख्या** को **मीन लग्न** जानें॥

दि. ल. = दिन का लग्न ; रा. ल. = रात्रि का लग्न

चं. दा. = अर्थात् इस विवाह लग्न में चन्द्रमा से सम्बन्धित वस्तुओं का दान व पूजा करके विवाह कर सकते हैं। इसी प्रकार मं.दा., बु. दा. आदि अन्य ग्रहों का भी जानें।

आवश्यके = लग्न निर्बल है, अतः अत्यावश्यकता में इस लग्न में विवाह किया जा सकता है।

पादवेध = विवाह लग्न के समय नक्षत्रचरण को शुभ ग्रह का वेध है।

आवश्यक नोट—*जिस मुहूर्त्त में गुरू, बुध–शुक्र की केन्द्र–त्रिकोण में स्थिति अथवा गुरू की शुभ दृष्टिवश परिहार हो जाता है, उस मुहूर्त्त, लग्न को शुभ मुहूर्त्तों में शामिल कर लिया गया है। **परन्तु मुहूर्त्त शास्त्रानुसार लग्नस्थ एवं सप्तमस्थ क्रूर ग्रह की स्थिति को त्याज्य ही माना गया है।***

✲ वैशाख मास (अप्रैल-मई) ✲ सन् 2025 ईसवी

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	विवाह नक्षत्र	समय (भा.स्टै.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा, दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिनटों में)
वैशा.कृ.१, चंद्र	14 अप्रै.	२ वैशा.	स्वाति	24:14 तक	मेष	तुला	।।।।ऽसू।।ऽ।।	15:36 तक सूर्य क्षीणांश, रा.ल.८ (गु.दा.), मृत्युबाण दोष 27:50 से
वैशा.कृ.३, बुध	16 अप्रै.	४ वैशा.	अनु.	29:55 तक	मेष	वृश्चिक	।ऽ।।।ऽअऽ।।।	24:18 तक व्यतीपात दोष, **रा. ल. ११**
वैशा.कृ.५, शुक्र	18 अप्रै.	६ वैशा.	मूल	8:21 बाद	मेष	धनु	।।।।ऽगु.ऽनृऽऽ।।	परिघ दोष परिहार, **दि. ल. २** (8:21 बाद, अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. पूज्य), ३ (चं. दा.), **गोधूलि, रा. ल. ८** (गु. दा.), ११ -दग्धा तिथिदोष परिहार
वैशा.कृ.६, शनि	19 अप्रै.	७ वैशा.	मूल	10:21 तक	मेष	धनु	।।।।ऽगु।ऽऽ।ऽ	**दि.ल.२** (अष्टमस्थ चं. परिहार, चंद्र पूज्य), ३ (10:21 तक, चं. दा.)
वैशा.कृ.७, रवि	20 अप्रै.	८ वैशा.	उ.षा.	11:49 बाद	मेष	धनु/मकर	ऽशु.।।ऽगु.।ऽचौऽऽ।।	पादेन गुरु वेधऽभावः, **गोधूलि, रा. ल. ८** (गु. दा.), **११**
वैशा.कृ.८, चंद्र	21 अप्रै.	९ वैशा.	श्रवण	12:37 बाद	मेष	मकर	।ऽ।।ऽमं।ऽऽ।।	**गोधूलि, रा. ल. ८** (गु. दा.)
वैशा.कृ.९, मंग	22 अप्रै.	१० वैशा.	श्रवण	12:44 तक	मेष	मकर	।ऽ।।ऽमंऽरोऽऽ।।	**दि. ल. २** (गु. दा.), **३** (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. के. दा.)
वैशा.कृ.९, मंग	22 अप्रै.	१० वैशा.	धनि.	12:44 बाद	मेष	म./कुंभ	।।।।।ऽरो।ऽ।।	**गोधूलि, रा. ल. ८** (गु. दा.), **११** (चं. दा.), **29:29 बाद भद्रा-दोष (भूलोके)**
वैशा.कृ.१२,शुक्र	25 अप्रै.	१३ वैशा.	उ.भा.	8:54 बाद	मेष	मीन	।।ऽबु।ऽके।।।।।	**दि. ल. ३** (8:54 बाद, मं. के. दा.), 11:45 से कृष्ण त्रयोदशी, 12:31 से वैधृति दोष
वैशा. शु.२, मंग	29 अप्रै.	१७ वैशा.	रोहि.	18:47 बाद	मेष	वृष	।।।।।ऽचौ।।।।	**रा. ल. ८** (गु. दा.), **११**
वैशा. शु.३, बुध	30 अप्रै.	१८ वैशा.	रोहि.	16:18 तक	मेष	वृष	।।।।।।ऽ।।।	**दि. ल. २** (चं. गु. दान व पूज्य), **३** (चं. गु. के.दा.) 12:02 से 14:26 तक अतिगण्ड दोष
वैशा. शु.३, बुध	30 अप्रै.	१८ वैशा.	मृग.	16:18 बाद	मेष	वृ/मिथु.	।।ऽगु.।।।।।।।	**रा. ल. ८** (चं. गु. दा.), **११** (भद्रा परिहार-स्वर्गे)
वैशा. शु.४, गुरु	1 मई	१९ वैशा.	मृग.	14:21 तक	मेष	मिथुन	।।ऽगु।।ऽरो।।।।	भद्रा-परिहार (स्वर्गे), **दि. ल. २** (चं. गु. दा.), **३** (चं. गु. दा.)
वैशा. शु.८, चंद्र	5 मई	२३ वैशा.	मघा	14:01 बाद	मेष	सिंह	ऽमं।।।।।।।ऽ।	14:50 तक क्रान्तिसाम्य दोष, गोधूलि, **रा. ल. ८** (गु. दा.), **११** (चं. दा.)
वैशा. शु.९, मंग	6 मई	२४ वैशा.	मघा	15:52 तक	मेष	सिंह	ऽमं।।।।।ऽ।।।	**दि. ल. २** (गु. दा.), **३** (के. दा.)
वैशा. शु.१०,बुध	7 मई	२५ वैशा.	उ.फा.	18:17 बाद	मेष	सिंह/कं.	।।ऽके।ऽरा।ऽ।।।	केतु-युति परिहार, गोधूलि (18:17 बाद), **रा. ल. ८** (गु. दा.), 23:25 से 24:58 तक भद्रा-दोष (भूलोके), तदुपरान्त परिहार, **रा. ल. ११**
वैशा.शु.११, गुरु	8 मई	२६ वैशा.	उ.फा.	21:07 तक	मेष	कन्या	।।ऽके।ऽराऽचौऽ।।।	केतु-युति परिहार, **दि. ल. २** (गु. दा.), **३** (के. दा.), **गोधूलि, रा. ल. ८** (21:07 तक)
वैशा.पूर्णिमा,चंद्र	12 मई	३० वैशा.	स्वा.	6:17 तक	मेष	तुला	।ऽ।।ऽबु.।।।।।	**दि. ल. २** (6:17 तक)-**अत्यल्पकाले** (भद्रा-परिहार)

✲ ज्येष्ठ मास (मई-जून) ✲ सन् 2025 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	विवाह नक्षत्र	समय (भा.स्टै.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा, दानादि का विवरण
ज्ये. कृ. ३, गुरु	15 मई	२ ज्ये.	मूल	14:08 बाद	वृष	धनु	।।।।ऽगु.।ऽ।।।	12:38 तक सूर्य क्षीणांश, गोधूलि, **रा. ल. ९** (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. गु. दा.), **११** (मं. दा.), **१** (बु. दा.)-28:03 से दग्धा तिथिदोष परिहार
ज्ये. कृ.५, शनि	17 मई	४ ज्ये.	उ.षा.	17:44 बाद	वृष	धनु/मक	।।ऽगु।ऽरोऽ।।।	**गोधूलि, रा. ल. ९** (अष्टमस्थ मं. परिहार, चं. मं. गु. दा. व पूज्य), 24:01 से 30:19 तक गुरु पादवेध
ज्ये. कृ. ५, रवि	18 मई	५ ज्ये.	उ.षा.	18:53 तक	वृष	मकर	।।।।।।।।ऽऽ।	प्रातः 6:19 तक गुरुपादवेध, **दि. ल. ३** (के. दा.), गोधूलि
ज्ये. कृ. ५, रवि	18 मई	५ ज्ये.	श्रवण	18:53 बाद	वृष	मकर	।।।।।।।।।ऽ।	गोधूलि, **रा. ल. ९** (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. गु. दा.), **१**
ज्ये. कृ.६, चन्द्र	19 मई	६ ज्ये.	श्रवण	19:30 तक	वृष	मकर	।।।।।ऽनृ।।ऽ।	**दि. ल. ३** (अष्टमस्थ चं. परिहार चं. गु. पूज्य दान वा), 10:19 से 15:24 तक क्रान्तिसाम्य दोष), **गोधूलि** (19:30 तक)
ज्ये. शु. २, बुध	28 मई	१५ ज्ये.	मृग.	24:29 तक	वृष	वृष/मिथु	।।ऽगु।।ऽनृ।।।।	**दि. ल. ३** (चं. गु. दा.), **गोधूलि**, 19:09 से 21:09 तक शूल दोष, **रा. ल. ९** (21:09 बाद), **१** (श.दा.)
ज्ये. शु. ६, रवि	1 जून	१९ ज्ये.	मघा	21:37 बाद	वृष	सिंह	ऽगु।।।।ऽरो।ऽ।।	**रा. ल. ९** (21:37 बाद, अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. गु. दा.), **१** (शु. श. दा.)
ज्ये. शु. ७, चंद्र	2 जून	२० ज्ये.	मघा	22:56 तक	वृष	सिंह	ऽगु।।।।।।।ऽ।।	**दि. ल. ३** (बु. गु. दा.), **७** (शु. दा.), **गोधूलि, रा. ल. ९** (20:36 तक, अष्टमस्थ मं. परिहार), 20:36 से भद्रादोष (भूलोके)

शुभ विवाह मुहूर्त—ज्येष्ठ मास (मई-जून)—सन् 2025 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा, दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिनटों में)
ज्ये. शु. ९, बुध	4 जून	२२ ज्ये.	उ.फा.	27:36 तक	वृष	सिंह/कं.	।।ऽके.।ऽरा.।।।।	केतु युति परिहार, मृत्युबाण दोष प्रातः 7:10 तक, **दि. ल. ३** (7:10 बाद) (गु. दा.), **७**, **गोधूलि**, **रा. ल. ९** (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. गु. दा.), **१** (27:36 तक, शु. दा.)
ज्ये. शु.१२, शनि	7 जून	२५ ज्ये.	स्वाति	9:40बाद	वृष	तुला	ऽसू।।।ऽशु.ऽनृ।।।।	**दि. ल. ४** (9:40 बाद, मं. दा.), **७** (चं. शु. दा.), 19:29 से गुरु वार्धक्य प्रारम्भ

[10 जून से 6 जुलाई, 2025 ई. तक गुरु अस्त रहेगा।]—ता. 7 जून से गुरु वार्धक्य तथा 9 जुला., 2025 तक बाल्यत्व दोष रहेगा।

✲ आषाढ़ मास (जून-जुलाई) ✲ सन् 2025 ई.

देवशयनकाल (चातुर्मास्य) के विवाह—मुहूर्त (पंजाब, हरियाणा, हिमाचल—प्रदेश, जम्मू—कश्मीर, राजस्थान आदि के लिए)

6 जुलाई से 2 नवम्बर, 2025 ई. तक

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	विवरण
श्राव.कृ.१, शुक्र	11जुला.	२७आषा.	उ.षा.	5:56 बाद	मिथुन	धनु/मक	।ऽ।।ऽसू।ऽऽऽ।	21:56 तक वैधृति-विष्कम्भ दोष, **रा. ल. १** (मं. के. दा.), **२** (शु. दा.)
श्राव.कृ.२, शनि	12जुला.	२८आषा.	उ.षा.	6:36 तक	मिथुन	मकर	।ऽ।।ऽसू.।।ऽ।।	**दि. ल. ४** (6:36 तक, बु. दा.)—**अत्यल्पकाले**
श्राव.कृ.२, शनि	12जुला.	२८आषा.	श्रवण	6:36 बाद	मिथुन	मकर	।।।।।ऽरो।।।।	**दि. ल. ४** (6:36 बाद, बु. दा.), **८** (गु. शु. दा. व पूजा), **गोधूलि**, **रा. ल. १, २** (शु. दा.)
श्राव.कृ.३, रवि	13जुला.	२९आषा.	श्रवण	6:53 तक	मिथुन	मकर	।।।।।।।।।।	**दि. ल. ४** (6:53 तक, बु. दा.) अल्पकाले
श्राव.कृ.३, रवि	13जुला.	२९आषा.	धनि.	6:53 बाद	मिथुन	मक/कुंभ	।।।ऽबुऽबु।।।।।	**दि. ल. ४** (6:53 बाद, चं. बु. दा.), **८** (गु. शु. दा.), 18:51 से 24:50 तक बुधपादवेध 18:54 से 25:03 तक भद्रा-दोष (भूलोके), **रा. ल. १** (25:03 बाद, मं. दा.), **२** (शु. दा.)

✲ श्रावण मास (जुलाई-अगस्त) ✲ सन् 2025 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	विवरण
श्राव.कृ.१०, रवि	20जुला.	५श्रावण	रोहि.	22:54 बाद	कर्क	वृष	।।।।।ऽनृ।ऽ।।	**रा. ल. १** (के. दा.), **२** (चं. शु. के. दा.), **३** (चं. गु. दा.)
श्राव.कृ.११, चंद्र	21जुला.	६श्रावण	रोहि.	21:07 तक	कर्क	वृष	।।।।।ऽनृ।ऽ।।	**दि. ल. ८** (गु. शु. दा.), **९** (षष्ठस्थ शु. परिहार, गु. शु. पूज्य)
श्राव.कृ.११, चंद्र	21जुला.	६श्रावण	मृग.	21:07 बाद	कर्क	वृष	।।ऽशु।।।।ऽ।।	शुक्र युति परिहार, **रा. ल. १** (मं. के. दा.), **२** (चं. शु. दा.), **३** (चं. गु. दा.)
श्राव. शु.४, चंद्र	28जुला.	१३श्रावण	उ.फा.	17:36 बाद	कर्क	सिंह/कं.	।।ऽमं।ऽराऽअ।ऽ।।	**भौम-युति परिहार**, 23:25 तक भद्रा-दोष (भूलोके), **रा. ल. २** (के. दा.), **३** (गु. शु. दा.)
श्राव. शु.५, मंग	29जुला.	१४श्रावण	उ.फा.	19:28 तक	कर्क	कन्या	।।ऽमं.।ऽरा।।ऽ।।	भौमयुति परिहार, **दि. ल. ७** (चं. मं. दा.), **९** (गु. शु. दा.)
श्राव. शु.७, गुरु	31जुला.	१६श्रावण	स्वाति	24:42 बाद	कर्क	तुला	।ऽ।।।।।ऽ।।	**रा. ल. २** (षष्ठस्थ चंद्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभप्रदा, चं. दा. व पूजा), **३** (गु. शु. दा.) –28:59 से भद्रा परिहार (पाताले)
श्राव. शु.८, शुक्र	1 अग.	१७श्रावण	स्वाति	27:41 तक	कर्क	तुला	।ऽ।।।ऽचौ।ऽ।।	भद्रा परिहार-पाताले (18:12 तक), **दि. ल. ७** (चं. मं. दा., 12:38 तक), 12:38 से 17:48 तक –क्रान्तिसाम्य दोष, **९** (17:48 बाद, गु. शु. दा., धनु लग्न अल्पकाले), **गोधूलि**, **रा. ल. २** (षष्ठस्थ चं. परिहार, के. दा.), **३** (गु. शु. दा.)
श्राव. शु.९, रवि	3 अग.	१९श्रावण	अनु.	6:35 बाद	कर्क	वृश्चिक	।।।।।ऽरो।।ऽ।	**दि. ल. ७, ९** (चं. गु. शु. दा.), **गोधूलि, रा. ल. २** (चं. दा.), **३** (षष्ठस्थ चं. परिहार, चन्द्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभप्रदा, चं. गु. शु. दा.)
श्राव. शु.१२, बुध	6 अग.	२२श्रावण	मूल	13:00 तक	कर्क	धनु	ऽकेऽ।।।।ऽ।।।	प्रातः 8:30 तक वैधृति-विष्कम्भ दोष, **दि. ल. ७** (13:00 तक)
श्राव. शु.१३, गुरु	7 अग.	२३श्रावण	उ.षा.	14:01 बाद	कर्क	धनु/मक	।।।।।।।।।।	**दि. ल. ९** (गु. शु. दा.), गोधूलि, **रा. ल. २** (के. दा.), **३** (गु. शु. दा.)
श्राव.शु.१४, शुक्र	8 अग.	२४श्रावण	उ.षा.	14:28 तक	कर्क	मकर	।।।।।।।।।।	**दि. ल. ७** (भद्रा परिहार-पाताले)

शुभ विवाह मुहूर्त—श्रावण मास (जुलाई-अगस्त) ✲ सन् 2025 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा, दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिनटों में)
श्राव.शु.१४, शुक्र	**8 अग.**	२४श्रावण	**श्रवण**	14:28 बाद	कर्क	मकर	।।।।ऽबुऽनृ।ऽ।।	**दि. ल. ९** (गु. शु. दा.), **गोधूलि, रा. ल. २, ३** (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. गु. शु. दान) (भद्रा-परिहार-पाताले)
श्राव.पूर्णिमा,शनि	**9 अग.**	२५श्रावण	**श्रवण**	14:24 तक	कर्क	मकर	।।।।ऽबु।।ऽ।।	**दि. ल. ७** (मं. दा.)
भाद्र. कृ.४, बुध	**13 अग.**	२९श्रावण	रेवती	10:33 बाद	कर्क	मीन	।।।।ऽमं।।ऽ।।	**22:31 तक भौम-वेध, रा. ल. २** (के. दा.), **३** (गु. शु. दा.)–28:24 से दग्धातिथि-दोष परिहार

✲ भाद्रपद मास (अगस्त-सितम्बर) ✲ सन् 2025 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	विवरण
भाद्र.कृ. ९, रवि	**17 अग.**	२भाद्र.	**रोहि.**	27:18 तक	सिंह	वृष	।।।।।।ऽऽ।ऽ	प्रातः 8:04 तक व्याघात दोष, सूर्य क्षीणांश–14:21 तक, **दि. ल. ९** (षष्ठस्थ चं. परिहार, गु. शु. दा.), गोधूलि, **रा. ल. २** (चं. दा.), **३** (गु. शु. दा.)
भाद्र.कृ.१०, चंद्र	**18 अग.**	३भाद्र.	**मृग.**	26:06 तक	सिंह	वृष/मि.	।ऽ।।।।।ऽ।।	मृत्युबाण दोष 15:18 तक, 17:23 तक दग्धा तिथि परिहार **दि. ल. ९** (15:18 बाद, चं. गु. शु. दा.), गोधूलि, 23:00 से 26:36 तक वज्र दोष, **रा. ल. ३** (26:36 बाद, चं. गु. दा.), **४** (चं. बु. शु. दा.)–भद्रा परिहार (स्वर्गे)
भाद्र.शु. १, रवि	**24 अग.**	९भाद्र.	**उ.फा.**	26:06 बाद	सिंह	सिंह	ऽगु।।ऽरा।।।।।	**रा. ल. ३** (26:06 बाद, गु. दा.), **४** (बु. शु. दा.)
भाद्र.शु. २, चंद्र	**25 अग.**	१०भाद्र.	**उ.फा.**	27:50 तक	सिंह	कन्या	ऽगु।।ऽराऽरो।।।।	**दि. ल. ७** (चं. मं. दा.), **८** (गु. रा. पूज्य), **९** (अष्टमस्थ शु. परिहार, गु. शु. दा.), गोधूलि, **रा. ल. २** (के. दा.), **३** (गु. दा.), **४** (27:50 तक, शु. रा. दा.)
भाद्र.शु. ५, गुरु	**28 अग.**	१३भाद्र.	**स्वाति**	8:44 बाद	सिंह	तुला	ऽमं.।।।।।।।।।	मृत्युबाण दोषऽभावः, **दि. ल. ७** (चं. दा.), **८** (चं. गु. दा.), **९** (अष्टमस्थ शु. परिहार, गु. शु. दा.), **गोधूलि, रा. ल. २** (षष्ठस्थ चं. परिहार, चन्द्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभप्रदा, के. दा.), **३** (गु. दा.), **४**
भाद्र.शु. ६, शुक्र	**29 अग.**	१४ भाद्र.	**स्वाति**	11:39 तक	सिंह	तुला	ऽमं।।।।।।।।।	**दि. ल. ७** (11:39 तक, चं. दा.)
भाद्र.शु. ९, चंद्र	**1 सितं.**	१७ भाद्र.	**मूल**	19:55 बाद	सिंह	धनु	ऽके।।ऽगु।ऽचौ।।।।	पादेन गुरु वेधऽभाव, **रा. ल. २** (के. दा.), **३** (गु. दा.), **४** (शु. दा.)
भाद्र.शु.१०, मंग	**2 सितं.**	१८ भाद्र.	**मूल**	21:51 तक	सिंह	धनु	ऽके।।ऽगु।।।।।ऽ	**प्रातः 8:53** से 15:22 तक गुरु पादवेध, **दि. ल. ९** (15:22 बाद, अष्टमस्थ शु. परिहार), **१०** (गु. शु. दा.), **रा. ल. २, ३** (गु. दा.), **४** (शु. दा.)
भाद्र.शु.११, बुध	**3 सितं.**	१९ भाद्र.	**उ.षा.**	23:09 बाद	सिंह	धनु/मक	।।।।ऽगुऽरो।।।।	भद्रा परिहार (पाताले), **रा. ल. २** (23:09 बाद, अष्टमस्थ चं. परिहार), **३** (चं. गु. दा.)
भाद्र.शु.१२, गुरु	**4 सितं.**	२० भाद्र.	**उ.षा.**	23:44 तक	सिंह	मकर	।।।।ऽगु।।।।।	**दि. ल. ७, ८** (गु. दा.),**९** (अष्टमस्थ शु. परिहार), **१०** (चं. दा.), **रा. ल. २** (23:44 तक)
भाद्र.शु.१३, शुक्र	**5 सितं.**	२१ भाद्र.	**श्रवण**	23:39 तक	सिंह	मकर	ऽसू।।ऽबुऽशु।।।।	पादेन बुध वेधऽभाव, **दि. ल. ७, ८** (13:53 तक), 13:53 से 16:17 तक अतिगण्ड दोष, 14:38 से 27:09 तक मृत्युबाण दोष
भाद्र.शु.१३, शुक्र	**5 सितं.**	२१ भाद्र.	**धनि.**	23:39 बाद	सिंह	मकर	।।।ऽशुऽशु।।।।	मृत्युबाण 27:09 तक, पादेन शुक्र वेधऽभाव, **रा. ल. ४** (27:09 बाद, चं. दा.)

✲ आश्विन मास (सितम्बर-अक्तूबर) ✲ सन् 2025 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	विवरण
आश्वि.शु.१, चंद्र	**22 सितं.**	७आश्वि	**उ.फा.**	11:24 तक	कन्या	कन्या	ऽगु।ऽसू।ऽरा.।।।।।	सूर्य-युति परिहार, **दि. ल. ८** (11:24 तक, चं.-गु. पूज्य दान वा)
आश्वि.शु.४, शुक्र	**26 सितं.**	११आश्वि	**अनु.**	22:09 बाद	कन्या	वृश्चिक	ऽमं।।।।।।।।।	**रा. ल. ३** (षष्ठस्थ चं. परिहार, गु. दा.), **४**
आश्वि.शु.५, शनि	**27 सितं.**	१२आश्वि	**अनु.**	25:08 तक	कन्या	वृश्चिक	ऽमं।।।।ऽमृ।ऽ।।	प्रातः 7:06 से 19:19 तक मृत्युबाण दोष, **रा. ल. २** (चं. के. दान), **३** (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. गु. पूज्य), **४** (कर्क लग्न 25:08 तक, अत्यल्पकाले)
आश्वि.शु.७, चंद्र	**29 सितं.**	१४आश्वि	**मूल**	30:18 तक	कन्या	धनु	ऽके।।ऽगु।।ऽ।।	प्रातः 10:31 से 17:07 तक पादेन गुरु वेध, 16:32 से भद्रा का परिहार है (पाताले), **रा. ल. २** (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. गु. दा.), **३** (चं. गु. दा.)

शुभ विवाह मुहूर्त्त–आश्विन मास (सितम्बर-अक्तूबर) ✲ सन् 2025 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि.नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा, दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिनटों में)
आश्वि.शु.९, बुध	1 अक्तू.	१६आश्वि.	उ.षा.	8:06 बाद	कन्या	धनु/मक	।।।ऽगु।।।।।	दि. ल. ८ (गु. रा. दा.), ९ (चं. गु. दा.), १० (अष्टमस्थ शु. परिहार, चं. शु. दा.), रा. ल. २, ३ (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. गु. दा.), ४ (चं. दा.)
आश्वि.शु.१०, गुरु	2 अक्तू.	१७आश्वि.	श्रवण	9:13 बाद	कन्या	मकर	।।।।ऽचौ।ऽ।।	दि. ल. ८ (गु. रा. दा.), ९ (चं. गु. दा.), १० (अष्टमस्थ शु. परिहार, चं. शु. दा.), रा. ल. २ (के. दा.), ३ (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. गु. दा.), ४ (चं. दा.)
आश्वि.शु.११,शुक्र	3 अक्तू.	१८आश्वि.	धनि.	9:35 बाद	कन्या	म./कुंभ	।।।।।।।।।।	दि. ल. ८ (गु. रा. दा.), ९ (गु. दा.), १० (अष्टमस्थ शु. परिहार, चं. शु. दा.), रा. ल. २ (21:46 तक, के. दा.), 21:46 से 23:46 तक शूल दोष, ३ (23:46 बाद, चं. गु. दा.), भद्रा परिहार (पाताले)
आश्वि.पूर्णिमा,मंग	7 अक्तू.	२२आश्वि.	रेवती	25:28 तक	कन्या	मीन	।।।ऽशुऽसू।ऽऽ।	प्रात: 9:31 से 13:07 तक व्याघात दोष, दि. ल. ९ (13:07 बाद), १० (अष्टमस्थ शु. परिहार, शु. पूज्य), 20:07 से 25:28 तक पादेन शुक्र-वेध
कार्ति.कृ.५, शनि	11अक्तू.	२६आश्वि.	रोहि.	15:20 तक	कन्या	वृष	।ऽ।।।।।ऽ।।	14:07 तक व्यतीपात-दोष, दि. ल. १० (14:07 बाद)-**अल्पकाले**
कार्ति.कृ.५, शनि	11अक्तू.	२६आश्वि.	मृग.	15:20 बाद	कन्या	वृष/मि.	ऽश।।।।ऽचौ।ऽ।।	रा. ल. २ (चं. दा.), ३ (चं. गु. दा.), ४ (शु. दा.)

✲ कार्तिक मास (अक्तूबर-नवम्बर) ✲ सन् 2025 ई. (केवल पर्वतीय प्रदेशों के लिए)

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि.नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा, दानादि का विवरण
कार्ति.शु.१, बुध	22 अक्तू	६कार्ति.	स्वाति	25:52 तक	तुला	तुला	।।।।।।।।।।	दि. ल. ८ (चं. मं. दा. व चं. पूज्य), १० (गु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ३, ४ (गु. शु. दा.) (सभी लग्नों में चन्द्र पूज्य दान वा-क्षीण चंद्र है।)
कार्ति.शु.३, शुक्र	24 अक्तू	८कार्ति.	अनु.	सारा दिन	तुला	वृश्चिक	।।।।।।।।।।	दि. ल. ८, १० (गु. दा.), **गोधूलि**, रा. ल. ३ (लग्नेश बुध एवं चं. षष्ठस्थ का परिहार), ४ (चं. गु. दा.)
कार्ति.शु.५, रवि	26 अक्तू	१०कार्ति.	मूल	10:47 बाद	तुला	धनु	ऽके।।ऽगु।।।ऽ।।	प्रात: 10:47 से 17:27 तक पादेन गुरु वेध, गोधूलि, रा. ल. ३ (लग्नेश बु. षष्ठस्थ-परिहार, चं. बु. दा.)
कार्ति.शु.६, चंद्र	27 अक्तू	११कार्ति.	मूल	13:28 तक	तुला	धनु	ऽके।।ऽगु।।।ऽ।।	दि. ल. ८, १० (चं. गु. दा.)-पादेन गुरु वेधऽभाव:, मृत्युबाण 14:54 से
कार्ति.शु.६, मंग	28 अक्तू	१२कार्ति.	उ.षा.	15:45 बाद	तुला	धनु/मक	।।।।ऽगु।ऽ।।	**गोधूलि**, रा. ल. ३ (लग्नेश बुध षष्ठस्थ परिहार, चं. बु. दा.), ४ (22:15 तक चंद्रमा षष्ठस्थ है, तदुपरान्त सप्तमस्थ, कर्क लग्न 22:15 बाद, चं. गु. दा.), मृत्युबाणऽभाव:
कार्ति.शु.७, बुध	29 अक्तू	१३कार्ति.	उ.षा.	17:30 तक	तुला	मकर	।।।।ऽगु।ऽऽ।।	प्रात: 7:51 से 9:51 तक शूल दोष, भद्रा-परिहार (पाताले), दि. ल. १० (चं. गु. दा.)
कार्ति.शु.८, गुरु	30 अक्तू	१४कार्ति.	धनि.	18:34 बाद	तुला	मकर	।ऽ।।।ऽनृ।।।।	रा. ल. ४ (चं. गु. दा.)
कार्ति.शु.९, शुक्र	31 अक्तू	१५कार्ति.	धनि.	18:51 तक	तुला	कुम्भ	।ऽ।।।।।।ऽ।	प्रात: 9:34 से 13:46 तक क्रान्तिसाम्य दोष, गोधूलि
कार्ति.शु.११,रवि	2 नवं.	१७कार्ति.	उ.भा.	17:04 बाद	तुला	मीन	ऽसू।।।।।ऽ।।ऽ	गोधूलि, रा. ल. ३ (लग्नेश बु. षष्ठस्थ परिहार, बु. दा.), ४ (गु. दा.),-**भीष्मपंचक विचार**
[देवशयन एवं चातुर्मास्य के विवाह-मुहूर्त्त समाप्त]								
कार्ति.शु.१३,चंद्र	3 नवं.	१८कार्ति.	उ.भा.	15:06 तक	तुला	मीन	ऽसू।।।।।।।।।	दि. ल. १० (गु. दा.)-भीष्मपंचक विचार
कार्ति.शु.१३,चंद्र	3 नवं.	१८कार्ति.	रेवती	15:06 बाद	तुला	मीन	।ऽ।।।ऽरो।।।।	गोधूलि, 19:39 से 23:15 तक वज्र दोष, रा. ल. ४ (23:15 बाद, गु. दा.)-भीष्मपंचक विचार
मार्ग. कृ.२, शुक्र	7 नवं.	२२कार्ति.	रोहि.	24:34 तक	तुला	वृष	।।।।ऽमंबु।।।।।	दि. ल. १० (गु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ३ (लग्नेश बु. षष्ठस्थ परिहार, चं. बु. गु. दा.), ४-भद्रा परि.
मार्ग. कृ.३, शनि	8 नवं.	२३कार्ति.	मृग.	22:03 तक	तुला	वृष/मि.	ऽश।।।।ऽनृ।।।।	दि. ल. १० (गु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ३ (लग्नेश बु. षष्ठस्थ परिहार)
मार्ग. कृ.८, बुध	12 नवं.	२७कार्ति.	मघा	18:36 बाद	तुला	सिंह	।।।।।ऽरो।ऽ।।	रा. ल. ३ (लग्नेश बु. षष्ठस्थ परिहार, बु. पूज्य), ४ (गु. दा.)
मार्ग. कृ.९, गुरु	13 नवं.	२८कार्ति.	मघा	19:38 तक	तुला	सिंह	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. १० (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. गु. पूज्य दान वा)

✲ मार्गशीर्ष मास (नवम्बर-दिसम्बर) ✲ सन् 2025 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	दि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा, दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिनटों में)
मार्ग. शुक्ल २, शनि	22 नवं.	७ मार्ग.	मूल	16:47 बाद	वृश्चिक	धनु	ऽके।।ऽगु।ऽचौ।।।।	**16:47 से 23:27 तक पादेन गुरु वेध, रा. ल. ७** (शु. दा.)
मार्ग.शु. ३, रवि	23 नवं.	८ मार्ग.	मूल	19:28 तक	वृश्चिक	धनु	ऽके।।ऽगु।।ऽ।।।	पादेन गुरु वेधऽभाव:, **दि. ल. १०** (12:09 तक), 12:09 से 14:09 तक शूल दोष, गोधूलि, **रा. ल. ३** (19:28 तक, मिथुन लग्न अल्पकाले)
मार्ग.शु. ४, चंद्र	24 नवं.	९ मार्ग.	उ.षा.	21:54 बाद	वृश्चिक	ध/मक	।ऽ।।ऽगुऽरो।ऽ।।	**रा. ल. ४** (21:54 बाद, गु. दा.) (षष्ठस्थ चं. परिहार), **७** (बु. शु. दा.)
मार्ग.शु. ५, मंग	25 नवं.	१० मार्ग.	उ.षा.	23:58 तक	वृश्चिक	मकर	।ऽ।।ऽगु।।ऽ।।	**दि. ल. १०** (चं. गु. दा.), **गोधूलि, रा. ल. ३** (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. दा.), **४** (चं. गु. दा.)
मार्ग.शु. ५, मंग	25 नवं.	१० मार्ग.	श्रवण	23:58 बाद	वृश्चिक	मकर	।।।।।।।।।।	**रा. ल. ७** (29:26 तक, बु. शु. दा.), 29:16 से क्रान्तिसाम्य दोष
मार्ग.शु. ६, बुध	26 नवं.	११ मार्ग.	श्रवण	25:33 तक	वृश्चिक	मकर	।।।।।ऽमृ।।।।	क्रान्तिसाम्य दोष 11:08 तक, मृत्युबाण दोष 11:15 से 23:07 तक, **रा. ल. ४** (चं. गु. दा.)
मार्ग.शु. ६, बुध	26 नवं.	११ मार्ग.	धनि.	25:33 बाद	वृश्चिक	मकर	।।।।।।।।ऽ।।	मृत्युबाण दोषऽभाव:, **रा. ल. ७** (बु. दा.)
मार्ग.शु. ७, गुरु	27 नवं.	१२ मार्ग.	धनि.	26:32 तक	वृश्चिक	मक/कुं.	।।।।।ऽअ।ऽ।।	**दि. ल. १०** (चं. गु. दा., 12:09 तक), 12:09 से 15:45 तक व्याघात दोष, गोधूलि, **रा. ल. ३** (षष्ठस्थ शु. परिहार, शु. दा.), 24:31 से भद्रादोष (भूलोके)
मार्ग.शु. ९, शनि	29 नवं.	१४ मार्ग.	उ.भा.	26:23 बाद	वृश्चिक	मीन	।।।।।ऽनृ।ऽ।ऽ	वज्र दोष परिहार, **रा. ल. ७** (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. पूज्य)-दग्धा तिथि परिहार
मार्ग.शु.१०, रवि	30 नवं.	१५ मार्ग.	उ.भा.	25:11 तक	वृश्चिक	मीन	।।।।।।।ऽ।ऽ	दग्धा तिथि दोष परिहार, **दि. ल. १०** (गु. दा.), **१** (बु. दा.), **गोधूलि, रा. ल. ३** (षष्ठस्थ शु. परिहार, शु. दा.), **४** (गु. दा.)
मार्ग.शु.१०, रवि	30 नवं.	१५ मार्ग.	रेवती	25:11 बाद	वृश्चिक	मीन	।।।।।।।।।।	**रा. ल. ७** (28:22 तक, तुला लग्न अल्पकाले), 28:22 से व्यतीपात दोष
मार्ग. पूर्णिमा,गुरु	4 दिसं.	१९ मार्ग.	रोहि.	14:54 बाद	वृश्चिक	वृष	।।।।ऽशु।।ऽ।।	गोधूलि, **रा. ल. ३** (षष्ठस्थ शु. परिहार, शु. दा.), **४** (गु. दा.), **७** (बु. दा.)
पौष कृ. १, शुक्र	5 दिसं.	२० मार्ग.	मृग.	11:46 बाद	वृश्चिक	वृष/मि.	ऽशराऽ।।ऽसू।।ऽ।।	मृत्युबाण दोष 20:17 तक, **रा. ल. ४, ७** (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. दा.)
पौष कृ. २, शनि	6 दिसं.	२१ मार्ग.	मृग.	8:49 तक	वृश्चिक	मिथुन	ऽशराऽ।।ऽऽअ।ऽ।।	**दि. ल. ९** (8:49 तक, गु. दा., धनु लग्न अत्यल्पकाले)

[12 दिसम्बर, 2025 ई. से 30 जनवरी, 2026 ई. तक शुक्र अस्त रहेगा।] ता. 9 दिसं. से वार्धक्य तथा 2 फरवरी, 2026 ई. तक बाल्यत्व दोष रहेगा।

✲ माघ मास (जनवरी-फरवरी) ✲ सन् 2026 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	दि. नक्षत्र	समय	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	विवरण
फाल्गु.कृ.३; बुध	4 फर.	२२ माघ	उ.फा.	22:13 बाद	मकर	सिं./कं.	ऽगु।।।।।।ऽ।।	24:10 तक भद्रादोष (भूलोके), **रा. ल. ७** (24:10 बाद) (चं. दा.), **८** (रा. दा.), **९** (गु. दा.)
फाल्गु.कृ.४, गुरु	5 फर.	२३ माघ	उ.फा.	22:58 तक	मकर	कन्या	ऽगु।।।।ऽनृ।ऽ।।	**दि. ल. १** (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. दा.), **२, ३** (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दा.), गोधूलि
फाल्गु.कृ.८, मंग	10 फर.	२८ माघ	अनु.	7:55 बाद	मकर	वृश्चिक	।।।।।।।।ऽ।।	**दि. ल. १** (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. दा.), **२** (चं. दा.), **३** (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दा.), गोधूलि, **रा. ल. ७** (चं. दा.), **८** (25:42 तक केवल) 25:42 से 29:18 तक-व्याघात दोष

✲ फाल्गुन मास (फरवरी-मार्च) ✲ सन् 2026 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	दि. नक्षत्र	समय	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	विवरण
फाल्गु.शु.३, शुक्र	20 फर.	९फाल्गु	रेवती	20:08 बाद	कुम्भ	मीन	।।।।।।।।।ऽ	**रा. ल. ७** (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. दा.), **८** (25:50 तक), 25:50 से भद्रा-दोष (भूलोके)
फाल्गु.शु.४, शनि	21 फर.	१०फाल्गु	रेवती	19:07 तक	कुम्भ	मीन	।।।।।ऽरो।।।।	13:01 तक भद्रा-दोष (भूलोके), प्रात: 8:09 से 11:55 तक क्रान्तिसाम्य दोष, **दि. ल. ३**

✲ होलाष्टक में (केवल उत्तराखण्ड, पूर्वी उ.प्र., बिहार आदि राज्यों के लिए) ✲ सन् 2026 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	दि. नक्षत्र	समय	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	विवरण
फाल्गु शु.८, मंग	24 फर.	१३ फाल्गु	रोहि.	15:07 बाद	कुम्भ	वृष	।ऽ।।।।।।ऽऽ।	29:38 तक वैधृति-विष्कम्भ दोष, **रा. ल. १०** (29:38 बाद)-होलाष्टक विचार

शुभ विवाह मुहूर्त–फाल्गुन मास (फरवरी-मार्च) ❋ सन् 2026 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा, दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिनटों में)
फाल्गु.शु.९,बुध	25 फर.	१४फाल्गु	रोहि.	13:39 तक	कुम्भ	वृष	।ऽ।।।।।ऽऽ।	दि. ल. १ (श. दा.), २ (चं. दा.), ३ (13:39 तक, चं. दा.) (होलाष्टक विचार)
फाल्गु.शु.९,बुध	25 फर.	१४फाल्गु	मृग.	13:39 बाद	कुम्भ	वृष/मि.	ऽरा।।।।।ऽ।ऽ।	दि. ल. ३ (13:39 बाद), रा. ल. ७ (अष्टमस्थ चं. परिहार), ८ (रा. दा.), ९ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. गु. पूज्य), १० (गु. दा.) (होलाष्टक विचार)
फाल्गु.शु.१०,गुरु	26 फर.	१५फाल्गु	मृग.	12:12 तक	कुम्भ	मिथुन	ऽरा।।।।ऽनृ।।।।	दि. ल. १ (श. दा.), २ (12:12 तक, चं. दा.) (होलाष्टक विचार)
चैत्र कृष्ण६,चंद्र	9 मार्च	२६फाल्गु	अनु.	16:12 बाद	कुम्भ	वृश्चिक	।ऽ।।।।।।।।	रा. ल. ८ (चं. रा. दा.), ९ (गु. दा.), १० (शु. दा.)–भद्रा परिहार (स्वर्गे)
चैत्र कृष्ण७,मंग	10मार्च	२७फाल्गु	अनु.	19:05 तक	कुम्भ	वृश्चिक	।ऽ।।।।।।।।	प्रात: 8:21 से 11:57 तक वज्र दोष, भद्रा परिहार (स्वर्गे), दि. ल. ३ (गु. दा.) ४ (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दा.)
चैत्र कृष्ण८,बुध	11मार्च	२८फाल्गु	मूल	22:00 बाद	कुम्भ	धनु	ऽके।।ऽगु।।।ऽ।।	रा. ल. ८ (रा. दा.), ९ (गु. दा.), १० (शु. दा.)
चैत्र कृष्ण९,गुरु	12मार्च	२९फाल्गु	मूल	24:44 तक	कुम्भ	धनु	ऽके।।ऽगु.।।।ऽ।।	दि. ल. १ (श. दा.), 9:59 से व्यतीपात दोष

विशेष–आगामी वर्ष (वि. संवत् २०८३) गुरु–शुक्रास्त की सम्भावित तारखिें :–

(1) गुरु लगभग 15 जुलाई, 2026 ई. को पश्चिम में अस्त होकर 9 अगस्त, 2026 ई. को पूर्व में उदित होगा।

(2) शुक्र लगभग 12 अक्तूबर, 2026 ई. को पश्चिम में अस्त होकर 29 अक्तूबर, 2026 ई. को पूर्व में उदय होगा।

कालसर्पयोग–अरिष्ट निवारक कुछ उपाय

कालसर्प दोष की शान्ति के लिए मुख्य रूप से (1) ग्रह शान्ति (2) सर्प दोष (3) पितृ दोष शान्ति एवं नागबलि एवं शिव पूजन वैदिक पुराणोक्त विधि से किसी योग्य ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। (4) विधिपूर्वक महामृत्युञ्जय का जप भी करें।

यदि कुण्डली में **काल सर्पयोग** पड़ा हो, तो निम्नलिखित किंचित् उपाय करने **शुभ एवं कल्याणकारी** होंगे–(1) **कालसर्प** की अरिष्ट शान्ति के लिए शिव मन्दिर में सवा लाख **ॐ नमः शिवाय** मन्त्र का पाठ करना तथा पाठोपरान्त रूद्राभिषेक करवाने का विशेष महत्त्व है। साथ ही शिवलिंग पर चांदी का **सर्प युगल-नाग स्तोत्र** एवं नाग पूजनादि करके चढ़ाना शुभ होगा।

नाग गायत्री मन्त्र–ॐ नव कुलाय विद्महे विषदंताय धीमहि तन्नो सर्पः प्रचोदयात्॥

(2) प्रत्येक शनिवार एक नारियल को तैल एवं काले तिलों का तिलक लगाकर, मौली लपेटकर अपने शिर से तीन बार घुमा कर **ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः** मन्त्र कम-से-कम तीन बार पढ़कर चलते पानी में बहा देवें–ऐसे कम-से-कम **पाँच शनिवार करें।**

(3) प्रत्येक **शनिवार** कुत्तों को दूध और चपाती डालनी तथा गौओं, कौओं को तैल के छीटें देकर रसोई की प्रथम चपातियां डालना शुभ है।

(4) **कालसर्प** योग के कारण यदि वैवाहिक जीवन में बाधा आती हो, तो जातक पत्नी के साथ दोबारा विवाह करें एवं घर के चौखट द्वार पर चांदी का स्वस्तिक चिन्ह बनवा कर लगवाएं।

(5) घर में **मयूर पंख** का पंखा पवित्र स्थान पर रखें तथा भगवान् शिव का ध्यान करते हुए प्रातः उठते ही तथा सोने से पूर्व मयूर पंखे द्वारा हवा करें।

(6) प्रत्येक संक्रान्ति को गंगा जल सहित गोमूत्र का छिड़काव घर के सभी कमरों में करें।

(7) कालसर्प योग शान्ति के लिए नवनाग देवताओं के नाम का उच्चारण करना चाहिए–

नवनाग स्तोत्र–**अनंतं वासुकिं शेष पद्मानाभम् च कंबलम्। शंखपालं कर्कोटकं कालियं तक्षकं तथा॥ एतानि संस्मरेन्नित्यं आयुः कामार्थ सिद्धये। सर्पदोष क्षयार्थं च पुत्रपौत्रान् समृद्धये॥ तस्मै विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्॥**

(8) महाकुम्भ पर्व के अवसर पर प्रमुख स्नान करें और कुम्भ में स्थित शिव मन्दिर में जाकर विधिपूर्वक पूजन करें। चाँदी के बने नाग–नागिन के कम-से-कम ११ जोड़ों को प्रतिदिन शिवलिंग में चढ़ाएँ तथा महादेव से इस कुयोग से मुक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करें।

(9) सोना–७ रत्ती, चाँदी–१२ रत्ती, तांबा–१६ रत्ती–ये तीनों मिलाकर सर्पाकार अंगूठी अनामिका अंगुली में धारण करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। जिस दिन धारण करें, उस दिन राहु की सामग्री का आंशिक दान भी करना चाहिए।

(10) नागपंचमी का व्रत करें तथा नवनाग स्तोत्र का पाठ करें। 'अनन्त चतुर्दशी' का व्रत भी विधिपूर्वक रखें।

(11) प्रत्येक बुधवार को काले वस्त्र में उड़द या मूंग एक मुट्ठी डालकर, राहु का मन्त्र जाप कर किसी भिखारी को दे देवें। यदि दान लेने वाला कोई नहीं मिले तो बहते पानी में उस अन्न को छोड़ देना चाहिए। इस प्रकार 72 बुधवार करते रहने से अवश्य लाभ होता है।

(12) यदि किसी स्त्री की कुंडली इस योग से दूषित है तथा संतति का अभाव है, पूजन-विधि नहीं करवा सकती तो किसी अश्वत्थ (बट) के वृक्ष से नित्य १०८ प्रदक्षिणा (घेरे) लगाने चाहिए। तीन सौ दिन में जब २८००० प्रदक्षिणा पूरी होगी तो दोष दूर होकर स्वतः *ही संतति की प्राप्ति होगी।*

(13) इसके अतिरिक्त महाकाल रुद्र स्तोत्र, *मनसादेवी नाग स्तोत्र, महामृत्युञ्जय आदि स्तोत्रों* का विधि-विधान से पूजन, हवन करने से *कालसर्प दोष की शान्ति हो जाती है।*

त्रिबल शुद्धि पर आधारित-वर-कन्या की राशि-अनुसार शुभ विवाह-मुहूर्त्त निकालें-संवत् २०८२ वि. (सन् 2025-26 ई.)

नीचे वर-कन्या की जन्म अथवा नाम राशि के अनुसार (**त्रिबल शुद्धि-सूर्य, चन्द्र एवं गुरु पर आधारित**) विवाह मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं। वर-कन्या की कुण्डली मिलान के पश्चात् उनकी राशियों में जो-जो तारीखें समान होंगी, उन तारीखों में वर-कन्या का विवाह शुभ एवं ग्राह्य होगा। **विवाह लग्न** का निर्णय करने के लिए गत पृष्ठों पर दिए गए शुद्ध मुहूर्तों में से किसी विद्वान पण्डित जी के परामर्श अनुसार चयन करना चाहिए। **उदाहरण**–मेष राशि का लड़का और सिंह राशि की लड़की का विवाह मुहूर्त्त **अगस्त** (भाद्रपद), 2025 ई. में देखना हो तो, दोनों की राशियों में 17,18,24,25 अगस्त की तारीखों एवं मुहूर्तों में समानता पाई गई है, इनमें से कोई भी तारीख अपनी सुविधानुसार ग्रहण कर सकते हैं। **कार्तिक मास के मुहूर्त्त यद्यपि पर्वतीय** (पहाड़ी) क्षेत्रों में ही ग्राह्य माने जाते हैं। परन्तु वर्तमान परिस्थितियों वश, अन्य प्रदेशों के वासी भी कार्तिक मास में विवाह ग्रहण करने लगे हैं। **ध्यान रहे,** विवाह के मास का निर्धारण मुख्यतः लड़के (वर) की राश्यनुसार किया जाता है। **कन्या** की राशि से गुरु बल तथा दोनों में चन्द्र बल विचारणीय होता है। वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में जबकि कन्याओं का विवाह बालिग होने पर ही करते हैं, अतः गुरु शुद्धि को गम्भीरतापूर्वक न लेते एवं 4,8,12वें गुरु को वर्ज्य न समझते हुए पूज्य के रूप में ग्रहण किया गया है।

ध्यान रहे, लड़के की जन्म (अथवा नाम) राशि से 3, 6, 10, 11वें सूर्य शुभ; 1, 2, 5, 7, 9 वें सूर्य पूज्य तथा 4, 8, 12वें सूर्य त्याज्य होता है। कन्या को 1, 3, 6 व 10वें गुरु साधारण पूज्य एवं उन्हें 4, 8, 12वें गुरु विशेष रूपेण पूज्य होगा। विवाह समय में अशुभ ग्रहों का यथाशक्ति दान व पूजा करवा लेनी चाहिए। सूर्य एवं गुरु स्वराशि या मित्रक्षेत्री हों तो उन्हें पूज्य न मानकर शुभ एवं ग्राह्य मान लिया जाता है।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
मेष राशि–अप्रै. 14, 18, 19, 20, 21, 22, 25 (चं.दा.), 29, 30, **मई** 1, 5, 6, 7, 8, 12, 15, 17, 18, 19, 28, **जून** 1, 2, 4, 7, **जुला.** 11, 12, 13, **अग.** 17, 18, 24, 25, 28, 29, **सितं.** 1, 2, 3, 4, 5, 22, 29, **अक्तू.** 1, 2, 3, 7 (चं.दा.), 11 [कार्तिक मासे **अक्तू.** 22, 26, 27, 28, 29, 30, 31, **नवं.** 2–3 (चं.दा.), 7, 8, 12, 13] **सन् 2026 ई.** में **फर.** की 4, 5, 20, 21 (चं.दा.), ***(होलाष्टक में फर. 24, 25, 26)***, **मार्च** 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।	मेष राशि के **वर** को आषाढ़, आश्विन, माघ, फाल्गुन **शुभ** ; वैशाख, ज्येष्ठ व कार्तिक मासों में **सूर्य पूज्य** तथा श्रावण, मार्गशीर्ष व चैत्र मास **त्याज्य** रहेंगे। इस राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 14 मई तक शुभ, 14 मई से 18 अक्तू. तक साधारण पूज्य, 18 अक्तू. से 5 दिसं. तक विशेष पूज्य, तदुपरान्त संवतान्त तक साधारणतया पूज्य होगा।	**मेष राशि–अप्रै.** 14, 18, 19, 20, 21, 22, 25, 29, 30, **मई** 1, 5, 6, 7, 8, 12 15, 17, 18, 19, 28, **जून** 1, 2, 4, 7, **जुला.** 11, 12, 13, 20, 21, 28, 29, 31, **अग.** 1, 6, 7, 8, 9, 13 (चं.दा.), 17, 18, 24, 25, 28, 29, **सितं.** 1, 2, 3, 4, 5, 22, 29, **अक्तू.** 1, 2, 3, 7, 11, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 22, 26, 27, 28, 29, 30, 31, **नवं.** 2, 3, 7, 8, 12, 13] मार्गशीर्षे **नवं.** 22, 23, 24, 25, 26, 27, 29–30 (चं.दा.), **दिसं.** 4, 5, 6, **सन् 2026 ई.** में **फर.** 4, 5, 20, 21 ***(होलाष्टक में फर. 24, 25, 26)***, **मार्च** 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।
वृष राशि–मई 17 (24:04 बाद), 18, 19, 28, **जून** 4 (7:35 बाद), 7, **जुला.** 11 (12:09 बाद), 12, 13, 20, 21, 28 (24:00 बाद), 29, 31, **अग.** 1, 3, 7 (20:11 बाद), 8, 9, 13, **सितं.** 22, 26, 27, **अक्तू.** 1 (14:27 बाद), 2, 3, 7, 11 [कार्तिक मासे **अक्तू.** 22, 24, 28 (22:15 बाद), 29, 30, 31, **नवं.** 2, 3, 7, 8] मार्गशीर्षे **नवं.** 24 (28:27 बाद), 25, 26, 27, 29, 30, **दिसं.** 4, 5, 6, **सन् 2026 ई.** में **फर.** की 4 (28:20 बाद), 5, 10, 20, 21, ***(होलाष्टक में फर. 24, 25, 26)***, **मार्च** 9, 10 तारीखें शुभ होंगी।	वृष राशि के **वर** को श्रावण, कार्तिक, फाल्गुन मास-**शुभ**; ज्येष्ठ, आषाढ़, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ मासों में **सूर्य पूज्य** तथा वैशाख, भाद्रपद मास **त्याज्य** रहेंगे। इस राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 14 मई तक साधारण पूज्य, 14 मई से 18 अक्तू. तक–**शुभ**, 18 अक्तू. से 5 दिसं. तक पुनः साधारणतया पूज्य, तदुपरान्त संवतान्त तक शुभ रहेगा।	**वृष राशि–अप्रै.** 14, 16, 20 (18:05 बाद), 21, 22, 25, 29, 30, **मई** 1, 7 (24:58 बाद), 8, 12, 17 (24:04 बाद), 18, 19, 28, **जून** 4 (7:35 बाद), 7, **जुला.** 11 (12:09 बाद), 12, 13, 20, 21, 28 (24:00 बाद), 29, 31, **अग.** 1, 3, 7 (20:11 बाद), 8, 9, 13, 17, 18, 25, 28, 29, **सितं.** 3 (29:21 बाद), 4, 5, 22, 26, 27, **अक्तू.** 1 (14:27 बाद), 2, 3, 7, 11, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 22, 24, 28 (22:15 बाद), 29, 30, 31, **नवं.** 2, 3, 7, 8] मार्गशीर्षे **नवं.** 24 (28:27 बाद), 25, 26, 27, 29, 30, **दिसं.** 4, 5, 6, **सन् 2026 ई.** में **फर.** 4 (28:20 बाद), 5, 10, 20, 21, ***(होलाष्टक में फर. 24, 25, 26)***, **मार्च** 9, 10 तारीखें शुभ होंगी।
मिथुन राशि–अप्रै. 14, 16, 18, 19, 20 (18:05 तक), 22 (24:31 बाद), 25, 29–30 (चं.दा.), **मई** 1, 5, 6, 7 (24:58 तक), 12, **जुला.** 11 (12:09 तक), 13 (18:54 बाद), 20, 21, 28 (24:00 तक), 31, **अग.** 1, 3, 6, 7 (20:11 तक), 13, 17–18 (चं.दा.) 24, 28, 29, **सितं.** 1, 2, 3 (29:21 तक), [कार्तिक मासे **अक्तू.** 22, 24, 26, 27, 28 (22:15 तक), 31, **नवं.** 2, 3, 7–8 (चं.दा.), 12, 13] मार्गशीर्षे **नवं.** 22, 23, 24 (28:27 तक), 27 (14:07 बाद), 29, 30, **दिसं.** 4–5 (चं.दा.), 6, **सन् 2026 ई.** में फर. 20, 21 ***(होलाष्टक में फर. 24–25 (चं.दा.), 26)***, **मार्च** 9, 10, 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।	मिथुन राशि के **वर** को वैशाख, मार्गशीर्ष, भाद्रपद मास-**शुभ**, आषाढ़, श्रावण, कार्तिक व फाल्गुन मासों में **सूर्य पूज्य** तथा ज्येष्ठ, आश्विन, माघ मास **त्याज्य** रहेंगे। इस राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 14 मई तक विशेष रूपेण पूज्य, 14 मई से 18 अक्तू. तक साधारण पूज्य, 18 अक्तू. से 5 दिसं. तक **शुभ**, तदुपरान्त **साधारणतया** पूज्य रहेगा।	**मिथुन राशि–अप्रै.** 14, 16, 18, 19, 20 (18:05 तक), 22 (24:31 बाद), 25, 29, 30, **मई** 1, 5, 6, 7 (24:58 तक), 12, **मई** 15, 17 (24:04 तक), 28, **जून** 1, 2, 4 (7:35 तक), 7, **जुला.** 11 (12:09 तक), 13 (18:54 बाद), 20, 21, 28 (24:00 तक), 31, **अग.** 1, 3, 6, 7 (20:11 तक), 13, 17, 18, 24, 28, 29, **सितं.** 1, 2, 3 (29:21 तक), 26, 27, 29, **अक्तू.** 1 (14:27 तक), 3 (21:28 बाद), 7, 11 (चं.दा.), [कार्तिक मासे **अक्तू.** 22, 24, 26, 27, 28 (22:15 तक), 31, **नवं.** 2, 3, 7, 8, 12, 13] मार्गशीर्षे **नवं.** 22, 23, 24 (28:27 तक), 27 (14:07 बाद), 29, 30, **दिसं.** 4, 5, 6, **सन् 2026 ई.** में **फर.** 4 (28:20 तक), 10, 20, 21, ***(होलाष्टक में फर. 24–25, 26)***, **मार्च** 9, 10, 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
कर्क राशि–अप्रै. 16, 18, 19, 20, 21, 22 (24:31 तक), 25, 29, 30–**मई** 1 (चं.दा.), 5, 6, 7, 8, 15, 17, 18, 19, 28 (चं.दा.), **जून** 1, 2, 4, **जुला.** 20, 21, 28, 29, **अग.** 3, 6, 7, 8, 9, 13, 17, 18 (चं.दा.), 24, 25, **सितं.** 1, 2, 3, 4, 5, 22, 26, 27, 29, **अक्तू.** 1, 2, 3 (21:28 तक), 7, 11 (चं.दा.), मार्गशीर्षे **नवं.** 22, 23, 24, 25, 26, 27 (14:07 तक), 29, 30, **दिसं.** 4, 5–6 (चं.दा.), **सन् 2026 ई.** में **फर.** 4, 5, 10 तारीखें शुभ होंगी।	कर्क राशि के **वर** को वैशाख, ज्येष्ठ, आश्विन मास–**शुभ,** श्रावण, भाद्रपद, मार्गशीर्ष व माघ मासों में **सूर्य पूज्य** तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास **त्याज्य** रहेंगे। कर्क राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 14 मई तक शुभ ; 14 मई से 18 अक्तू. विशेष रूपेण पूज्य, 18 अक्तू. से 5 दिसं. तक साधारणतया पूज्य, तदुपरान्त पुनः विशेषतया पूज्य रहेगा।	**कर्क राशि–अप्रै.** 16, 18, 19, 20, 21, 22 (24:31 तक), 25, 29, 30, **मई** 1, 5, 6, 7, 8, 15, 17, 18, 19, 28, **जून** 1, 2, 4, **जुला.** 11, 12, 13 (18:54 तक), 20, 21, 28, 29, **अग.** 3, 6, 7, 8, 9, 13, 17, 18, 24, 25, **सितं.** 1, 2, 3, 4, 5, 22, 26, 27, 29, **अक्तू.** 1, 2, 3 (21:28 तक), 7, 11, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 24, 26, 27, 28, 29, 30, **नवं.** 2, 3, 7, 8 (चं.दा.), 12, 13] मार्गशीर्षे **नवं.** 22, 23, 24, 25, 26, 27 (14:07 तक), 29, 30, **दिसं.** 4, 5, 6, **सन् 2026 ई.** में **फर.** 4, 5, 10, 20, 21, **[होलाष्टक में फर. 24, 25, 26 (चं.दा.)],** **मार्च** 9, 10, 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।
सिंह राशि–अप्रै. 14, 18, 19, 20, 21, 22, 29, 30, **मई** 1, 5, 6, 7, 8, 12, 15, 17, 18, 19, 28, **जून** 1, 2, 4, 7, **जुला.** 11, 12, 13, **अग.** 17, 18, 24, 25, 28, 29, **सितं.** 1, 2, 3, 4, 5, 22, 29, **अक्तू.** 1, 2, 3, 11, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 22, 26, 27, 28, 29, 30, 31, **नवं.** 7, 8, 12, 13], **सन् 2026 ई.** में **फर.** 4, 5, ***(होलाष्टक में फर. 24, 25, 26),*** **मार्च** 11, 12, तारीखें शुभ होंगी।	सिंह राशि के **वर** को ज्येष्ठ, आषाढ़, कार्तिक व माघ मास **शुभ** ; आश्विन, भाद्रपद, वैशाख व फाल्गुन मासों में सूर्य **पूज्य** तथा श्रावण–मार्गशीर्ष मास **त्याज्य** रहेंगे। सिंह राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 14 मई तक साधारण रुपेण पूज्य ; 14 मई से 18 अक्तू. शुभ ; 18 अक्तू. से 5 दिसं. विशेष रुपेण पूज्य तदुपरान्त शुभ रहेगा।	**सिंह राशि–अप्रै.** 14, 18, 19, 20, 21, 22, 29, 30, **मई** 1, 5, 6, 7, 8, 12, 15, 17, 18, 19, 28, **जून** 1, 2, 4, 7, **जुला.** 11, 12, 13, 20, 21, 28, 29, 31, **अग.** 1, 6, 7, 8, 9, 17, 18, 24, 25, 28, 29, **सितं.** 1, 2, 3, 4, 5, 22, 29, **अक्तू.** 1, 2, 3, 11, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 22, 26, 27, 28, 29, 30, 31, **नवं.** 7, 8, 12, 13] मार्गशीर्षे **नवं.** 22, 23, 24, 25, 26, 27, **दिसं.** 4, 5, 6, **सन् 2026 ई.** में **फर.** 4, 5 ***(होलाष्टक में फर. 24, 25, 26),*** **मार्च** 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।
कन्या राशि–मई 17 (24:04 बाद), 18, 19, 28, **जून** 1–2–4 (चं.दा.), 7, **जुला.** 11 (12:09 बाद), 12, 13, 20 21, 28 (चं.दा.), 29, 31, **अग.** 1, 3, 7 (20:11 बाद), 8, 9, 13, **सितं.** 22, 26, 27, **अक्तू.** 1 (14:27 बाद), 2, 3, 7, 11, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 22, 24, 28 (22:15 बाद), 29, 30, 31, **नवं.** 2, 3, 7, 8, 12–13 (चं.दा.)] मार्गशीर्षे **नवं.** 24 (28:27 बाद), 25, 26, 27, 29, 30, **दिसं.** 4, 5, 6, **सन् 2026 ई.** में **फर.** 4 (चं.दा.), 5, 10, 20, 21, ***(होलाष्टक में फर. 24, 25, 26),*** **मार्च** 9, 10 तारीखें शुभ होंगी।	कन्या राशि के **वर** को आषाढ़, श्रावण, मार्गशीर्ष व फाल्गुन मास **शुभ**, ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक व माघ मासों में सूर्य **पूज्य;** वैशाख, भाद्रपद मास **त्याज्य** होंगे। इस राशि की कन्या को गुरु संवतारम्भ से 14 मई तक **शुभ** ; 14 मई से 18 अक्तू. तक साधारण रुपेण पूज्य ; **18 अक्तू.** से **5 दिसं.** शुभ ; तदुपरान्त संवतान्त तक साधारणतया पूज्य रहेगा।	**कन्या राशि–अप्रै.** 14, 16, 20 (18:05 बाद), 21, 22, 25, 29, 30, **मई** 1, 5–6–7 (चं.दा.), 8, 12, 17(24:04 बाद), 18, 19, 28, **जून** 1, 2, 4, 7, **जुला.** 11 (12:09 बाद), 12, 13, 20, 21, 28 (चं.दा.), 29, 31, **अग.** 1, 3, 7 (20:11 बाद), 8, 9, 13, 17, 18, 24 (चं.दा.), 25, 28, 29, **सितं.** 3 (29:21 बाद), 4, 5, 22, 26, 27, **अक्तू.** 1 (14:27 बाद), 2, 3, 7, 11, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 22, 24, 28 (22:15 बाद), 29, 30, 31, **नवं.** 2, 3, 7, 8, 12, 13] मार्गशीर्षे **नवं.** 24 (28:27 बाद), 25, 26, 27, 29, 30, **दिसं.** 4, 5, 6, **सन् 2026 ई.** में **फर.** 4, 5, 10, 20, 21, ***(होलाष्टक में फर. 24, 25, 26),*** **मार्च** 9, 10 तारीखें शुभ होंगी।
तुला राशि–अप्रै. 14, 16, 18, 19, 20 (18:05 तक), 22 (24:31 बाद), 25, 30 (27:15 बाद), **मई** 1, 5, 6, 7–8 (चं.दा.), 12, **जुला.** 11 (12:09 तक), 13 (18:54 बाद), 28–29 (चं.दा.), 31, **अग.** 1, 3, 6, 7 (20:11 तक), 13, 18 (14:41 बाद), 24, 25 (चं.दा.), 28, 29, **सितं.** 1, 2, 3 (29:21 तक), [कार्तिक मासे **अक्तू.** 22, 24, 26, 27, 28 (22:15 तक), 31, **नवं.** 2, 3, 8 (11:15 बाद), 12, 13] मार्गशीर्षे **नवं.** 22, 23, 24 (28:27 तक), 27 (14:07 बाद), 29, 30, **दिसं.** 5 (22:16 बाद), 6, **सन् 2026 ई.** में **फर.** 20, 21 ***[होलाष्टक में फर. 25 (24:55 बाद), 26],*** **मार्च** 9, 10, 11 12 तारीखें शुभ होंगी।	तुला राशि के **वर** को श्रावण, भाद्रपद–**शुभ;** वैशाख, आषाढ़, कार्तिक, मार्गशीर्ष व फाल्गुन मासों में सूर्य की **पूजा/दानादि होगा।** ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास **त्याज्य** होंगे। तुला राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 14 मई तक **विशेष रुपेण पूज्य** ; 14 मई से 18 अक्तू. तक **शुभ** ; 18 अक्तू. 5 दिसं. तक साधारणतया पूज्य, तदुपरान्त संवतान्त तक पुनः **शुभ** रहेगा।	**तुला राशि–अप्रै.** 14, 16, 18, 19, 20 (18:05 तक), 22 (24:31 बाद), 25, 30 (27:15 बाद), **मई** 1, 5, 6, 7, 8, 12, 15, 17 (24:04 तक), 28 (13:37 बाद), **जून** 1, 2, 4, 7, **जुला.** 11 (12:09 तक), 13 (18:54 बाद), 28, 29, 31, **अग.** 1, 3, 6, 7 (20:11 तक), 13, 18 (14:41 बाद), 24, 25, 28, 29, **सितं.** 1, 2, 3 (29:21 तक), 22, 26, 27, 29, **अक्तू.** 1 (14:27 तक), 3 (21:28 बाद), 7, 11 (26:25 बाद), [कार्तिक मासे **अक्तू.** 22, 24, 26, 27, 28 (22:15 तक), 31, **नवं.** 3, 8 (11:15 बाद), 12, 13] मार्गशीर्षे **नवं.** 22, 23, 24 (28:27 तक), 27 (14:07 बाद), 29, 30, **दिसं.** 5 (22:16 बाद), 6, **सन् 2026 ई.** में **फर.** 4–5 (चं.दा.), 10, 20, 21, ***[होलाष्टक में फर. 25 (24:55 बाद), 26],*** **मार्च** 9, 10, 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
वृश्चिक राशि–अप्रै. 14 (चं.दा.), 16, 18, 19, 20, 21, 22 (24:31 तक), 25, 29, 30 (27:15 तक), **मई** 5, 6, 7, 8, 12 (चं.दा.), 15, 17, 18, 19, 28 (13:37 तक), **जून** 1, 2, 4, 7 (चं.दा.), **जुला.** 20, 21, 28, 29, 31–**अग.** 1 (चं.दा.), 3, 6, 7, 8, 9, 13, 17, 18 (14:41 तक), 24, 25, 28–29 (चं.दा.), **सितं.** 1, 2, 3, 4, 5, 22, 26, 27, 29, **अक्तू.** 1, 2, 3 (21:28 तक), 7, 11 (26:25 तक), मार्गशीर्ष में **नवं.** 22, 23, 24, 25, 26, 27 (14:07 तक), 29, 30, **दिसं.** 4, 5 (22:16 तक), **सन् 2026 ई.** में **फर.** 4, 5, 10 तारीखें शुभ होंगी।	वृश्चिक राशि के **वर** को वैशाख, भाद्रपद, आश्विन एवं माघ मास **शुभ,** ज्येष्ठ, श्रावण और मार्गशीर्ष मासों में **सूर्य पूज्य** तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास **त्याज्य** होंगे। इस राशि की कन्या को गुरु संवतारम्भ से 14 मई तक **शुभ ;** 14 मई से 18 अक्तू. विशेष रुपेण पूज्य, 18 अक्तू. से 5 दिसं. साधारण पूज्य, तदुपरान्त संवतान्त तक **विशेष रुपेण पूज्य** रहेगा।	**वृश्चिक राशि–अप्रै.** 14, 16, 18, 19, 20, 21, 22 (24:31 तक), 25, 29, 30 (27:15 तक), **मई** 5, 6, 7, 8, 12, 15, 17, 18, 19, 28 (13:37 तक), **जून** 1, 2, 4, 7, **जुला.** 11, 12, 13 (18:54 तक), 20, 21, 28, 29, 31, **अग.** 1, 3, 6, 7, 8, 9, 13, 17, 18 (14:41 तक), 24, 25, 28, 29, **सितं.** 1, 2, 3, 4, 5, 22, 26, 27, 29, **अक्तू.** 1, 2, 3 (21:28 तक), 7, 11 (26:25 तक), [कार्तिक मासे **अक्तू.** 22 (चं.दा.) 24, 26, 27, 28, 29, 30, **नवं.** 2, 3, 7, 8 (11:15 तक), 12, 13] मार्गशीर्ष **नवं.** 22, 23, 24, 25, 26, 27 (14:07 तक), 29, 30, **दिसं.** 4, 5 (22:16 तक), **सन् 2026 ई.** में **फर.** 4, 5, 10, 20, 21, (***होलाष्टक में फर. 24, 25 (24:55 तक)***], **मार्च** 9, 10, 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।
धनु राशि–अप्रै. 14, 16 (चं.दा.), 18, 19, 20, 21, 22, 29, 30, **मई** 1, 5, 6, 7, 8, 12, 15, 17, 18, 19, 28, **जून** 1, 2, 4, 7, **जुला.** 11, 12, 13, **अग.** 17, 18, 24, 25, 28, 29, **सितं.** 1, 2, 3, 4, 5, 22, 26–27 (चं.दा.), 29, **अक्तू.** 1, 2, 3, 11, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 22, 24 (चं.दा.), 26, 27, 28, 29, 30, 31, **नवं.** 7, 8, 12, 13] **सन् 2026 ई.** में **फर.** 4, 5, 10 (चं. दा.), (***होलाष्टक में फर. 24, 25, 26),*** **मार्च** 9–10 (चं.दा.) 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।	धनु राशि के **वर** को ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक व फाल्गुन मास **शुभ;** वैशाख, आषाढ़, भाद्रपद व माघ मासों में **सूर्य पूज्य** तथा श्रावण, मार्गशीर्ष मास **त्याज्य** होंगे। धनु राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 14 मई तक साधारण पूज्य, 14 मई से 18 अक्तू. शुभ ; 18 अक्तू. से 5 दिसं. विशेष रुपेण पूज्य तदुपरान्त संवतान्त तक शुभ होगा।	**धनु राशि–अप्रै.** 14, 16, 18, 19, 20, 21, 22, 29, 30, **मई** 1, 5, 6, 7, 8, 12, 15, 17, 18, 19, 28, **जून** 1, 2, 4, 7, **जुला.** 11, 12, 13, 20, 21, 28, 29, 31, **अग.** 1, 3 (चं.दा.), 6, 7, 8, 9, 17, 18, 24, 25, 28, 29, **सितं.** 1, 2, 3, 4, 5, 22, 26, 27, 29, **अक्तू.** 1, 2, 3, 11 [कार्तिक मासे **अक्तू.** 22, 24, 26, 27, 28, 29, 30, 31, **नवं.** 7, 8, 12, 13] मार्गशीर्ष में **नवं.** 22, 23, 24, 25, 26, 27, **दिसं.** 4, 5, 6, **सन् 2026 ई.** में **फर.** 4, 5, 10, ***[होलाष्टक में फर. 24, 25, 26],*** **मार्च** 9, 10, 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।
मकर राशि–मई 15–17 (चं.दा.), 18, 19, 28, **जून** 4 (7:35 बाद), 7, **जुला.** 11 (चं.दा.) 12, 13, 20, 21, 28 (24:00 बाद), 29, 31, **अग.** 1, 3, 6–7 (चं.दा.), 8, 9, 13, **सितं.** 22, 26, 27, 29–**अक्तू.** 1 (चं.दा.), 2, 3, 7, 11, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 22, 24, 26–27 (चं.दा.), 28, 29, 30, 31, **नवं.** 2, 3, 7, 8] मार्गशीर्ष नवं. 22–23–24 (चं.दा.), 25, 26, 27, 29, 30, **दिसं.** 4, 5, 6, **सन् 2026 ई.** में **फर.** 4 (28:20 बाद), 5, 10, 20, 21, ***[होलाष्टक में फर. 24, 25, 26],*** **मार्च** 9, 10, 11–12 (चं.दा.) तारीखें शुभ होंगी।	मकर राशि के **वर** को आषाढ़, कार्तिक, मार्गशीर्ष मास–**शुभ;** ज्येष्ठ, श्रावण, आश्विन, माघ व फाल्गुन मासों में **सूर्य पूज्य** तथा वैशाख, भाद्रपद मास **त्याज्य** होंगे। मकर राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 14 मई, 2025 ई. तक शुभ; 14 मई से 18 अक्तू. साधारण पूज्य, 18 अक्तू. से 5 दिसं. शुभ, तदुपरान्त संवतान्त तक साधारण पूज्य रहेगा।	**मकर राशि–अप्रै.** 14, 16, 18–19–20 (चं.दा.), 21, 22, 25, 29, 30, **मई** 1, 7 (24:58 बाद), 8, 12, 15, 17, 18, 19, 28, **जून** 4 (7:35 बाद), 7, **जुला.** 11, 12, 13, 20, 21, 28 (24:00 बाद), 29, 31, **अग.** 1, 3, 6, 7, 8, 9, 13, 17, 18, 25, 28, 29, **सितं.** 1–2–3 (चं.दा.), 4, 5, 22, 26, 27, 29, **अक्तू.** 1, 2, 3, 7, 11, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 22, 24, 26, 27, 28, 29, 30, 31, **नवं.** 2, 3, 7, 8], मार्गशीर्ष **नवं.** 22, 23, 24, 25, 26, 27, 29, 30, **दिसं.** 4, 5, 6, **सन् 2026 ई.** में **फर.** 4 (28:20 बाद), 5, 10, 20, 21, [होलाष्टक में **फर.** 24, 25, 26], **मार्च** 9, 10, 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।
कुम्भ राशि–अप्रै. 14, 16, 18, 19, 20–21–22 (चं.दा.), 25, 30 (27:15 बाद), **मई** 1, 5, 6, 7 (24:58 तक), 12, **जुला.** 11–12–13 (चं.दा.), 28 (24:00 तक), 31, **अग.** 1, 3, 6, 7–8–9 (चं.दा.), 13, 18 (14:41 बाद), 24, 28, 29, **सितं.** 1, 2, 3–4–5 (चं.दा.), [कार्तिक मासे **अक्तू.** 22, 24, 26, 27, 28–29–30 (चं.दा.), 31, **नवं.** 2, 3, 8 (11:15 बाद), 12, 13], मार्गशीर्ष में **नवं.** की 22, 23, 24–25–26–27 (चं.दा.), 29, 30, **दिसं.** 5 (22:16 बाद), 6, **सन् 2026 ई.** में **फर.** 20, 21, ***[होलाष्टक में फर. 25 (24:55 बाद), 26],*** **मार्च** 9, 10, 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।	कुम्भ राशि के **वर** को वैशाख, मार्गशीर्ष, श्रावण मास **शुभ,** आषाढ़, भाद्रपद, कार्तिक व फाल्गुन मासों में **सूर्य पूज्य** तथा ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास **त्याज्य** होंगे। कुम्भ राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 14 मई तक विशेष रुपेण पूज्य, 14 मई से 18 अक्तू. **शुभ ;** 18 अक्तू. से 5 दिसं. **साधारण पूज्य,** तदुपरान्त संवतान्त तक पुनः **शुभ** रहेगा।	**कुम्भ राशि–अप्रै.** 14, 16, 18, 19, 20, 21, 22, 25, 30 (27:15 बाद), **मई** 1, 5, 6, 7 (24:58 तक), 8, 12, 15, 17, 18–19 (चं.दा.), 28 (13:37 बाद), **जून** 1, 2, 4 (7:35 तक), 7, **जुला.** 11, 12, 13, 28 (24:00 तक), 31, **अग.** 1, 3, 6, 7, 8, 9, 13, 18 (14:41 बाद), 24, 28, 29, **सितं.** 1, 2, 3, 4, 5, 26, 27, 29, **अक्तू.** 1–2–3 (चं.दा.), 7, 11 (26:25 बाद), [कार्तिक मासे **अक्तू.** 22, 24, 26, 27, 28, 29, 30, 31, **नवं.** 2, 3, 8 (11:15 बाद), 12, 13], मार्गशीर्ष **नवं.** 22, 23, 24, 25, 26, 27, 29, 30, **दिसं.** 5 (22:16 बाद), 6, **सन् 2026 ई.** में **फर.** 4 (28:20 तक), 10, 20, 21, ***[होलाष्टक में फर. 25(24:55 बाद), 26],*** **मार्च** 9, 10, 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।

❑ वर (लड़का) ❑

मीन राशि–अप्रै. 16, 18, 19, 20, 21, 22 (चं.दा.), 25, 29, 30 (27:15 तक), **मई** 5, 6, 7, 8, 15, 17, 18, 19, 28 (13:37 तक), **जून** 1, 2, 4, **जुला.** 20, 21, 28, 29, **अग.** 3, 6, 7, 8, 9, 13, 17, 18 (14:41 तक), 24, 25, **सितं.** 1, 2, 3, 4, 5, 22, 26, 27, 29, **अक्तू.** 1, 2, 3 (चं.दा.), 7, 11 (26:25 तक), मार्गशीर्ष मास में **नवं.** 22, 23, 24, 25, 26, 27 (चं.दा.), 29, 30, **दिसं.** 4, 5 (22:16 तक), **सन् 2026 ई. में फर.** 4, 5, 10 तारीखें शुभ होंगी।

वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि

मीन राशि के वर को ज्येष्ठ, भाद्रपद व माघ मास शुभ; वैशाख, श्रावण, आश्विन व मार्गशीर्ष मासों में **सूर्य पूज्य** तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास **त्याज्य** होंगे।

मीन राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 14 मई तक साधारण रूपेण पूज्य, 14 मई से 18 अक्तू. विशेष रूपेण पूज्य, 18 अक्तू. से 5 दिसं. तक शुभ; 5 दिसं. से संवतान्त तक पुनः **विशेष रूपेण पूज्य** रहेगा।

❑ कन्या (लड़की) ❑

मीन राशि–अप्रै. 16, 18, 19, 20, 21, 22, 25, 29, 30 (27:15 तक), **मई** 5, 6, 7, 8, 15, 17, 18, 19, 28 (13:37 तक), **जून** 1, 2, 4, **जुला.** 11, 12, 13 (चं.दा.), 20, 21, 28, 29, **अग.** 3, 6, 7, 8, 9, 13, 17, 18 (14:41 तक), 24, 25, **सितं.** 1, 2, 3, 4, 5, 22, 26, 27, 29, **अक्तू.** 1, 2, 3, 7, 11 (26:25 तक), [कार्तिक मासे **अक्तू.** 24, 26, 27, 28, 29, 30, 31, **नवं.** 2, 3, 7, 8 (11:15 तक), 12, 13] मार्गशीर्ष **नवं.** 22, 23, 24, 25, 26, 27, 29, 30, **दिसं.** 4, 5 (22:16 तक), **सन् 2026 ई. में फर.** 4, 5, 10, 20, 21, ***[होलाष्टक में फर. 24, 25 (24:55 तक)],*** **मार्च** 9, 10, 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।

होमादि में अग्निवास एवं फल जानना

जिस दिन को हवन करना हो, उस दिन तात्कालिक तिथि और वार सँख्या में 1 जोड़कर 4 द्वारा भाग देवें। भाग देने पर यदि **शेष 3 या शून्य (0) बचे**, तो उस दिन अग्नि का वास **पृथिवी पर** जानें, शेष 1 बचे तो अग्नि का वास **आकाश** में तथा तिथि, यदि शेष **2** बचें तो अग्नि का वास **पाताल** में जानना चाहिए। **पृथिवी** पर अग्नि का वास शुभ एवं कल्याणकारक होता है। **आकाश** में वास हो तो आयु का क्षय तथा पाताल में वास हो तो धन की हानि होती है वार की गणना रविवार से तथा तिथि की गणना शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से करनी चाहिए। अग्निवास चक्र के पश्चात् गत पृष्ठों में दिए गए ग्रह मुख में आहुति चक्र का विचार करना चाहिए।–**पं. पन्ना लाल ज्यो.**

अग्निवास एवं फल जानने का चक्र (शुक्ल-पक्ष)

शुक्ल पक्ष तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश
२	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल
३	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी
४	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी
५	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश
६	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल
७	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी
८	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी
९	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश
१०	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल
११	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी
१२	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी
१३	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश
१४	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल
१५	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी

अग्निवास एवं फल जानने का चक्र (कृष्ण-पक्ष)

कृष्ण पक्ष तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी
२	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश
३	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल
४	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी
५	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी
६	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश
७	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल
८	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी
९	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी
१०	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश
११	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल
१२	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी
१३	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी
१४	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश
१५	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल

मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, विपणि, उपनयन, सर्वदेव प्रतिष्ठादि मुहूर्त्त–वि. संवत् २०८२

प्राचीन भारतीय ज्योतिषाचार्यों द्वारा शुद्धता की दृष्टि से विवाह, मुण्डनादि मुहूर्तों के निर्धारण में मुख्यतः इक्कीस दोषों का उल्लेख किया गया है। इनमें पंचाँगशुद्धि, क्रूर ग्रह का नक्षत्र–वेध, पापग्रह की युति, क्रान्तिसाम्य दोष, मृत्युबाण, षष्ठाष्टम चन्द्र एवं शुक्र विचार, व्यतीपात– वैधृति आदि दुष्ट योगों की युति, गुरु शुक्रास्त का विचार, दग्धा तिथि विचार आदि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। राजमार्त्तण्ड–वशिष्ठ आदि शास्त्रकारों एवं आचार्यों ने भी विवाह के अतिरिक्त चूड़ाकरण, गृहारम्भ, व्रत, प्रतिष्ठा, पुंसवन, कर्णवेध आदि मुहूर्तों में भी क्रूर ग्रहों के वेध, युति, व्यतीपात, वैधृति आदि अशुभ योगों एवं दोषों का विचार करने का निर्देश दिया है–विवाहेऽर्ध प्रतिष्ठायां व्रते पुंसवनं तथा कर्णवेधादि चूडायां विद्धऋक्षं विवर्जयेत्॥ ध्यान रहे, शास्त्र नियमानुसार बुधवार के दिन अभिजित मुहूर्त्त भी ग्राह्य नहीं होता। जिन मुहूर्तों के आगे केवल शुद्धकाल दिया गया है, वहाँ दैवज्ञों को शुद्धकाल की अवधि में सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र एवं लग्नेश की शुभ स्थानों में स्थिति को ध्यान रखते हुए शुभ लग्न का निर्णय स्वयं कर सकते हैं। **'पंचांगदिवाकर'** में दिए गए सभी मुहूर्तों में सर्वत्र शास्त्र विहित नियमों का यथासम्भव पालन किया जाता है। कुछ अन्य नए प्रचलित पंचांगों के मुहूर्तों में क्रूर ग्रहों का वेध, क्रूर ग्रह युति, क्षीण चन्द्र आदि अपरिहार्य दोष पाए जाते हैं, जो मुहूर्त्त–शास्त्र की दृष्टि से सर्वथा चिन्तनीय है।

–निवेदकः पं. विवेक शर्मा

मुण्डन मुहूर्त्त–२०८२ वि.

मुण्डन संस्कार को चूडाकरण संस्कार या चौलकर्म भी कहते हैं, जिसका अर्थ है–वह संस्कार जिसमें बालक को चूड़ा अर्थात् शिखा दी जाएं। गर्भावस्था की अपवित्रता दूर करने के लिए भी मुण्डन संस्कार किया जाता है। मुण्डन संस्कार करके बालक को अन्य संस्कारों (वेदारम्भ, यज्ञादि) के योग्य बनाया जाता है, क्योंकि मुण्डन संस्कार करते समय यह प्रार्थना की जाती है कि इसका सिर पवित्र हो, यह दीर्घजीवी हो। अतः बालक के स्वास्थ्य व शरीर के लिए नया संस्कार है।

मुण्डन मुहूर्त्त सम्बन्धी विशेष लेख इसी पंचांग में आगे पृष्ठ नं. 200 पर 'आवश्यक मुहूर्त्त निर्णय' शीर्षक के अन्तर्गत देखें।

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ. १,	चन्द्र	14 अप्रै.	स्वा.	मु. प्रातः 9:45 बाद, सूर्य पूज्य
वैशा. कृ. ८,	चन्द्र	21 अप्रै.	श्रव.	मु. 12:37 बाद
वैशा. कृ.११,	गुरु	24 अप्रै.	शत.	ल. २, ३, मु. 10:49 तक
वैशा. शु. ४,	गुरु	1 मई	मृग.	मु. 11:24 से 14:21 तक
वैशा. शु.५,	शुक्र	2 मई	पुन.	मु. 13:04 बाद
वैशा. शु.६,	शनि	3 मई	पु/पु	ल. २, ३, अभि. (वैश्यानां केवलम्)
वैशा. शु.७,	रवि	4 मई	पुष्य	मु. प्रातः 7:20 तक (ब्राह्मणों के लिए) (भौम-युति परि.)
वैशा.पूर्णिमा,	चन्द्र	12 मई	स्वा.	मु. प्रातः 6:17 तक
ज्ये. कृ. ३,	गुरु	15 मई	ज्ये.	अभिजित् (सूर्य पूजा)
ज्ये. कृ. ६,	चन्द्र	19 मई	श्रव.	मु. 10:19 तक (10:19 से 15:24 तक क्रान्तिसाम्य)
ज्ये. शु. २,	बुध	28 मई	मृग.	ल. ३, ६
ज्ये. शु. ५,	शनि	31 मई	पुष्य	ल. ३, ६, अभि. (वैश्यानां)
ज्ये. शु. १२,	शनि	7 जून	स्वा.	मु. 9:40 बाद (वैश्यानां)
(आश्विन नवरात्रों में–आवश्यके)				
आश्वि. शु. ६,	रवि	28 सितं.	ज्ये.	ल. ८, अभिजित् ९ (ब्राह्मणों के लिए)
(सन् 2026 ई०)				
फाल्गु. शु.१,	बुध	18 फर.	शत.	ल. १, २, ३
फाल्गु. शु.४,	शनि	21 फर.	रेव.	मु. 13:01 बाद (वैश्यानां केवलम्)
चैत्र कृ. ६,	चन्द्र	9 मार्च	अनु.	मु. 16:12 बाद
चैत्र कृ. ८,	बुध	11 मार्च	ज्ये.	ल. १, २, ३

नींव/गृहारम्भ मुहूर्त्त–सं. २०८२

(खनन, भूमि–पूजन एवं शिलान्यास मुहूर्त्त)

विशेष–नींव मुहूर्त्त (शिलान्यास) सम्बन्धी विशेष विवरण हेतु इसी पंचांग में आगे पृष्ठ नं. 205 पर 'आवश्यक मुहूर्त्त निर्णय' शीर्षक के अन्तर्गत देखें। नोट–देवालय खनन हेतु केवल उत्तरायण काल (16 जुलाई से पूर्व) के मुहूर्त्त ही ग्राह्य होंगे। नींव (शिलान्यास) एवं गृह निर्माण आदि के मुहूर्तों में गृहस्वामी की राशि–अनुकूलता देखकर निम्न शुभ मुहूर्तों में वास्तु पूजन, नवग्रह शान्ति, होम–यज्ञादि करके शिलान्यास, नींव भरण, गृहारम्भ (निर्माण) प्रारम्भ करना चाहिए। गृहारम्भ में ५, ७, ९, १५, २१, २४ प्रविष्टों में भूमि–शयन (सुप्त–भूमि) का भी विचार किया गया है।

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा.कृ. १,	चन्द्र	14 अप्रै.	स्वा.	मु. प्रातः 9:45 बाद, सूर्य पूजा
*वैशा.कृ.११,	गुरु	24 अप्रै.	शत.	मु. 10:49 तक
*वैशा.कृ.१२,	शुक्र	25 अप्रै.	उ.भा.	मु. 8:54 से 11:45 तक
*वैशा. शु.३,	बुध	30 अप्रै.	रोहि.	ल. २, ३, मु. 12:02 तक
*वैशा. शु.४,	गुरु	1 मई	मृग.	मु. 11:24 से 14:21 तक
*वैशा. शु.५,	शुक्र	2 मई	पुन.	मु. 13:04 बाद
वैशा. शु.११,	गुरु	8 मई	उ.फा.	ल. २, ३, अभि. (भद्रा परिहार)
वैशा. पूर्णिमा,	चन्द्र	12 मई	स्वा.	मु. प्रातः 6:17 तक (भद्रा-परि.)
ज्ये. कृ. ६,	चन्द्र	19 मई	श्रव.	ल. ३,, मु. 10:19 तक (10:19 से 15:24 तक क्रान्तिसाम्य)
ज्ये. कृ.१२,	शनि	24 मई	अश्वि	मु. 13:48 बाद
श्राव. कृ.२,	शनि	12 जुला	उ.षा.	मु. प्रातः 6:36 तक (अल्पकाले)
श्राव. कृ.२,	शनि	12 जुला	श्रव.	मु. 6:36 बाद
*श्राव.कृ.११,	चंद्र	21 जुला	रोहि	ल. ८, ९, अभिजित्
*श्राव.शु.१,	शुक्र	25 जुला	पुष्य	ल. ८, ९, अभिजित् (सूर्य युति परिहार)
श्राव. शु.८,	शुक्र	1 अग.	स्वा.	ल. ७, मु. 12:38 तक
श्राव. शु.१३,	गुरु	7 अग.	उ.षा.	मु. 14:01 बाद
श्राव.पूर्णिमा,	शनि	9 अग.	श्रव.	मु. 14:07 तक, ल. ७

नींव/गृहारम्भ मुहूर्त्त

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
भाद्र कृ.२,	चन्द्र	11 अग.	शत.	ल. ७, अभिजित्
भाद्र कृ.१०,	चन्द्र	18 अग.	मृग.	ल. ६, ७, अभिजित्
*भाद्र. शु.२,	चन्द्र	25 अग.	उ.फा.	ल. ७, ८, अभिजित्
*भाद्र. शु.५,	गुरु	28 अग.	स्वा.	मु. 8:44 बाद, ल. ७, ८
*भाद्र. शु.६,	शुक्र	29 अग.	स्वा.	ल. ७, मु. 11:39 तक
भाद्र शु.१२,	गुरु	4 सितं.	उ.षा.	ल. ७, ८, अभिजित्
*कार्ति. शु.१,	बुध	22 अक्टू.	स्वा.	ल. ८, १०
*कार्ति. शु.३,	शुक्र	24 अक्टू.	अनु.	ल. ८, १०, अभिजित्
मार्ग. कृ.२,	शुक्र	7 नवं.	रोहि.	ल. १०, अभिजित्
मार्ग. कृ.३,	शनि	8 नवं.	मृग.	मु. प्रातः 7:33 तक
मार्ग. शु.१४,	गुरु	4 दिसं.	रोहि.	मु. 14:54 बाद, भद्रा परि.
पौष कृ.१,	शुक्र	5 दिसं.	रो/मृ	अभि., मृत्युबाण परिहार
(सन् 2026 ई०)				
*फाल्गु शु.४,	शनि	21 फर.	रेव.	मु. 13:01 बाद

नोट–(*) तारांकित मुहूर्त्तों में केवल वृष वास्तु चक्र शुद्धि नहीं है। शेष सभी मुहूर्त्त दोषों से मुक्त (शुद्ध) हैं।

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश मुहूर्त्त (संवत् २०८२)

नूतन गृह-प्रवेश के समय पण्डित जी द्वारा निकाले गए मुहूर्त्त पर नए घर में वास्तु-पूजा शान्ति, नवग्रह पूजा शान्ति, स्वस्तिवाचन, एवं पंचदेव, गोपूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों एवं आश्रितजनों को भोजन-दानादि एवं कन्या-पूजन, जलपूर्ण कलश (नारियल सहित) तथा ब्राह्मणों को आगे करके शंख ध्वनि एवं सुहागिनों द्वारा मंगल-गान सहित नव गृह में प्रवेश करना चाहिए।

विशेष विस्तृत विवरण हेतु इसी पंचांग के पृष्ठ नं. 207 का अवलोकन अवश्य करें।

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
*वैशा. कृ.१,	चन्द्र	14 अप्रै.	स्वा.	मु. 9:45 बाद, सूर्य पूज्य
*वैशा. कृ.८,	चन्द्र	21 अप्रै.	श्रव.	मु. 12:37 बाद
वैशा. कृ.११,	गुरु	24 अप्रै.	शत.	मु. 10:49 तक, ल. २
वैशा. कृ.१२,	शुक्र	25 अप्रै.	उ.भा.	मु. 8:54 से 11:45 तक
*वैशा. शु.३,	बुध	30 अप्रै.	रोहि.	ल. २, ३ (मु. 12:02 तक)
*वैशा. शु.४,	गुरु	1 मई	मृग.	मु. 11:24 से 14:21 तक
वैशा. शु.५,	शुक्र	2 मई	पुन.	मु. 13:04 बाद
वैशा. शु.६,	शनि	3 मई	पुन.	मु. 12:34 तक
वैशा. शु.११,	गुरु	8 मई	उ.फा.	ल. २, ३, अभिजित् (भद्रा एवं केतु युति परिहार)
वैशा. पूर्णिमा	चंद्र	12 मई	स्वा.	मु. प्रातः 6:17 तक (भद्रा परिहार)
*ज्ये. कृ.६,	चन्द्र	19 मई	श्रव.	ल. ३, मु. 10:19 तक (10:19 से क्रान्तिसाम्य)
*ज्ये. शु.२,	बुध	28 मई	मृग.	ल. ३
*ज्ये. शु. ५,	शनि	31 मई	पुष्य	ल. ३, अभिजित्
ज्ये. शु. १२,	शनि	7 जून	स्वा.	मु. 9:40 बाद, ल. ४, अभि., ७
*श्राव. कृ.२,	शनि	12 जुला.	उ.षा.	मु.प्रातः 6:36 तक(अल्पकाले)
*श्राव. कृ.२,	शनि	12 जुला.	श्रव.	मु. 6:36 बाद, ल. ४, ५, अभि.
*कार्ति. शु.१,	बुध	22 अक्टू.	स्वा.	ल. ८, १०
*कार्ति. शु.३,	शुक्र	24 अक्टू.	अनु.	ल. ८, १०, अभिजित्
कार्ति. शु.७,	बुध	29 अक्टू.	उ.षा.	ल. १० (मु. 9:51 बाद), भद्रा परिहार
कार्ति. शु.९,	शुक्र	31 अक्टू.	धनि.	मु. 13:46 बाद
कार्ति. शु.१३,	चंद्र	3 नवं.	उ.भा.	ल. १०, अभिजित्
*मार्ग. कृ.२,	शुक्र	7 नवं.	रोहिं.	ल. १०, अभिजित्
*मार्ग. कृ.३,	शनि	8 नवं.	मृग.	मु. 7:33 तक
*मार्ग. कृ.६,	चन्द्र	10 नवं.	पुन.	ल. १०, अभिजित्
मार्ग. शु.७,	गुरु	27 नवं.	धनि.	ल. १०, मु. 12:09 तक
*मार्ग. शु.१४,	गुरु	4 दिसं.	रोहि.	मु. 14:54 बाद, भद्रा-परिहार
*पौष कृ.१,	शुक्र	5 दिसं.	रो/मृ	ल. ९ (मृत्युबाण परिहार)
*पौष कृ.२,	शनि	6 दिसं.	मृग.	ल. ९, मु. 8:49 तक
(सन् 2026 ई०)				
*फाल्गु.शु.४,	शनि	21 फर.	रेव.	मु. 13:01 बाद

विशेष नोट–(*) तारांकित मुहूर्त्तों में केवल कलश चक्र शुद्धि नहीं है। शेष सभी मुहूर्त्त दोषों से मुक्त (शुद्ध) हैं।

पुरातन गृह-प्रवेश मुहूर्त्त-सं. २०८२ वि.

पहिले दिए गए नूतन (नवीन) गृह प्रवेश मुहूर्त्तों के अतिरिक्त पुरातन (प्राचीन) गृह प्रवेश में निम्नलिखित मुहूर्त्त भी ग्राह्य होंगे। विशेष विवरण पृष्ठ 207 पर देखें।

गुरु-अस्त काल में (आवश्यक परिस्थितिवश)

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
ज्ये. शु.१३,	चन्द्र	9 जून	अनु.	मु. 15:31 बाद
आषा.कृ.१०,	शनि	21 जून	अश्वि	ल. ६,
आषा. शु.१,	गुरु	26 जून	पुन.	मु. 8:47 बाद
आषा. शु.२,	शुक्र	27 जून	पु/पु.	ल. ४, ६, अभिजित्
आषा. शु.७,	बुध	2 जुला.	उ.फा	मु. 11:08 तक, केतु युति परि.
आषा. शु.१२,	चंद्र	7 जुला.	अनु.	ल. ४, ६, अभिजित्
श्राव. कृ.११,	चन्द्र	21 जुला.	रोहि.	ल. ८, ९, अभिजित्
श्राव. शु.१,	शुक्र	25 जुला.	पुष्य	ल. ८, ९, अभिजित्, (सूर्य युति परिहार)
श्राव. शु.८,	शुक्र	1 अग.	स्वा.	ल. ७ (मु. 12:38 तक) भद्रा परिहार
श्राव. शु.१०,	चन्द्र	4 अग.	अनु.	मु. 9:13 तक
श्राव. शु.१३,	गुरु	7 अग.	उ.षा.	मु. 14:01 बाद
श्राव. शु.१४,	शुक्र	8 अग.	उ/श्र	मु. 14:13 बाद, ल. ९ (भद्रा परिहार)
श्राव.पूर्णिमा,	शनि	9 अग.	श्रव.	ल. ७, मु. 14:24 तक
भाद्र.कृ. २,	चन्द्र	11 अग.	शत.	मु. 13:01 तक

शुक्र अस्त काल में (आवश्यक परिस्थितिवश)

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
पौष कृ. ८,	शुक्र	12 दिसं.	उ.फा.	ल. १०, अभिजित्
(सन् 2026 ई०)				
माघ शु. १०,	बुध	28 जन.	रोहि	मु. 9:27 बाद (भद्रा-परिहार-स्वर्गे)
माघ शु. ११,	गुरु	29 जन.	रो/मृ	ल. १, अभिजित्
माघ शु.१३,	शनि	31 जन.	पुन.	मु. 8:26 तक

व्यवसाय (विपणि) शुरु करने के मुहूर्त्त

[दुकान, कार्यालय, फैक्ट्री (कारखाना) आदि शुरु करने के मुहूर्त्त]

वि. संवत् २०८२ (2025-26 ई.)

मुहूर्त्त के समय किसी कर्मकाण्डी ब्राह्मण द्वारा सर्वदेव, नवग्रह पूजन के पश्चात् कलश-स्थापन एवं कन्या-पूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों, आश्रित एवं सहयोगी-जनों को यथाशक्ति

व्यवसाय (विपणि) शुरु करने के मुहूर्त [दुकान, कार्यालय, फैक्ट्री (कारखाना) आदि शुरु करने के मुहूर्त]

भोजन आदि करवाना चाहिए। विशाल पैमाने पर व्यापार करने के लिए केवल बु.गु. एवं शुक्रवारों को ही ग्रहण करना चाहिए।

नोट–मुहूर्त्त वाले दिन अपनी राशि से चन्द्र 4, 8, 12वें हो, तो वह दिन त्याग दें। वार-स्वामी भी उदित होना चाहिए।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ.१, चन्द्र	14 अप्रै.	स्वा.	मु. 9:45 बाद, सूर्य पूज्य
वैशा. कृ.७, रवि	20 अप्रै.	उ.षा.	मु. 11:49 बाद (गुरुवेधऽभावः)
वैशा. कृ.८, चन्द्र	21 अप्रै.	श्रव.	मु. 12:37 बाद, ल. ५ (बु. शु. दा.)
वैशा. कृ.१२, शुक्र	25 अप्रै.	उ.भा.	मु. 8:54 से 11:45 तक, चं. पूज्य
वैशा. शु.३, बुध	30 अप्रै.	रोहि.	मु. 12:02 तक (अक्षय-तृतीया)
वैशा.शु.४-५, गुरु	1 मई	मृग.	मु. 11:24 बाद, अभिजित्
वैशा. शु.५, शुक्र	2 मई	पुन.	मु. 13:04 बाद
वैशा. शु.६, शनि	3 मई	पु/पु	ल. २, ३, अभि., ५ (शु. दा.)–भौमयुति परिहार
वैशा. शु.७, रवि	4 मई	पुष्य	मु. 7:20 तक (भौम युति परिहार)
वैशा. शु.११, गुरु	8 मई	उ.फा.	ल. २, ३, अभि. (भद्रा परि.)
वैशा. पूर्णिमा, चंद्र	12 मई	स्वा.	मु. प्रातः 6:17 तक
ज्ये. कृ.५, रवि	18 मई	उ.षा.	ल. ३, अभिजित्
ज्ये. कृ. ६, चन्द्र	19 मई	श्रव.	मु. 10:19 तक, (10:19 से क्रान्तिसाम्य दोष)
ज्ये. शुक्ल २, बुध	28 मई	मृग.	ल. ३, ६
ज्ये. शु. ५, शनि	31 मई	पुष्य	ल. ३, अभिजित्
ज्ये. शु. १२, शनि	7 जून	स्वा.	मु. 9:40 से 11:17 तक (11:17 से 14:17 तक परिघ दोष)
श्राव. कृ. २, शनि	12 जुला	उ/श्र	ल. ४, अभि., ८
श्राव. कृ. ३, रवि	13 जुला	श्र/ध	ल. ४, अभि., ८
श्राव. कृ.११, चन्द्र	21 जुला	रोहि	ल. ८, ९, अभिजित्
श्राव. शु. १, शुक्र	25 जुला	पुष्य	ल. ८, ९, अभिजित्
श्राव. शु. ८, शुक्र	1 अग.	स्वा.	ल. ७, मु. 12:38 तक (12:38 से क्रान्तिसाम्य दोष)
श्राव. शु. ९, रवि	3 अग.	अनु.	मु. 9:43 बाद

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
श्राव. शु.१०, चंद्र	4 अग.	अनु.	मु. 9:13 तक
श्राव. शु.१३, गुरु	7 अग.	उ.षा.	मु. 14:01 बाद
श्राव. शु.१४, शुक्र	8 अग.	उ/श्र	मु. 14:13 बाद
श्राव पूर्णिमा, शनि	9 अग.	श्रव.	ल. ७, अभिजित्
भाद्र. कृ.१०, चन्द्र	18 अग.	मृग.	ल. ७, अभिजित्
भाद्र. कृ.१२, बुध	20 अग.	पुन.	ल. ६, ७, मु. 13:59 तक
भाद्र. शु. २, चन्द्र	25 अग.	उ.फा.	ल. ७, ८, ९
भाद्र. शु ५, गुरु	28 अग.	स्वा.	मु. 8:44 बाद
भाद्र. शु. ६, शुक्र	29 अग.	स्वा.	मु. 11:39 तक, ल. ७
भाद्र. शु. १२, गुरु	4 सितं.	उ.षा.	ल. ७, ८, अभिजित्
भाद्र. शु.१३, शुक्र	5 सितं.	श्रव.	ल. ७, ८, अभिजित् (मु. 13:53 तक)
आश्वि. शु.१, चन्द्र	22 सितं.	उ.फा.	मु. 11:24 तक (चं. दा.)
आश्वि. शु.५, शनि	27 सितं.	अनु.	ल. ८, अभिजित् (मृत्युबाण परिहार)
आश्वि. शु.१०, गुरु	2 अक्तू	उ/श्र	ल. ८, ९, अभिजित्
आश्वि.शु.११, शुक्र	3 अक्तू	श्र/ध	ल. ८, ९, अभिजित्
आश्वि.शु.१२, शनि	4 अक्तू	धनि	मु. प्रातः 9:10 तक
कार्ति. कृ. ५, शनि	11 अक्तू	रो/मृ	मु. 14:07 बाद
कार्ति. कृ. ६, रवि	12 अक्तू	मृग.	मु. 10:55 तक (10:55 से परिघ दोष)
कार्ति. कृ. ९, बुध	15 अक्तू	पुष्य	मु. 10:34 से 12:00 तक
कार्ति. शु. १, बुध	22 अक्तू	स्वा.	ल. ८, १०
कार्ति. शु. ३, शुक्र	24 अक्तू	अनु.	ल. ८, १०, अभिजित्
कार्ति. शु. ७, बुध	29 अक्तू	उ.षा.	ल. १०, मु. 9:51 बाद (भद्रा-परिहार)
कार्ति. शु.१३, चंद्र	3 नवं.	उ.भा.	ल. १०, अभिजित्
मार्ग. कृ. २, शुक्र	7 नवं.	रोहि.	ल. १०, अभिजित्
मार्ग. कृ. ३, शनि	8 नवं.	मृग.	मु. प्रातः 7:33 तक केवल
मार्ग. कृ. ६, चन्द्र	10 नवं.	पुन.	ल. १०, अभिजित्
मार्ग. शु. ७, गुरु	27 नवं.	धनि.	ल. १०, मु. 12:09 तक
मार्ग. शु.१०, रवि	30 नवं.	उ.भा.	ल. १०, अभिजित्
मार्ग. शु.१४, गुरु	4 दिसं	रोहि	मु. 14:54 बाद, भद्रा. परिहार

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
पौष कृ. १, शुक्र	5 दिसं.	रो/मृ	अभि. (मृत्युबाण दोष परि.)
पौष कृ. २, शनि	6 दिसं.	मृग.	ल. ९, मु. 8:49 तक
(सन् 2026 ई०)			
फाल्गु. शु.४, शनि	21 फर.	रेव.	मु. 13:01 बाद
चैत्र कृ. ६, चंद्र	9 मार्च	अनु.	मु. 16:12 बाद

उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्त-सं. २०८२

शास्त्रमतानुसार ज्येष्ठ (बड़े) पुत्र का यज्ञोपवीत ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए। पुनर्वसु नक्षत्र में ब्राह्मण का उपनयन न करें। बुध अस्त हो या पापाक्रान्त हो, तो बुधवार को उपनयन न करें। मुहूर्त्त के दिन चन्द्रा बालव की राशि से 4, 8 या 12वें स्थान नहीं होना चाहिए। उपनयन सम्बन्धी विशेष विवरण आगामी पृष्ठों पर 'आवश्यक-मुहूर्त्त' लेख में पृष्ठ 201 पर देखें।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शुक्ल ५, बुध	2 अप्रै.	रोहि.	ल. २ (चं. दा.)
चैत्र शु. १०, चन्द्र	7 अप्रै.	पु/आ	ल. २, अभिजित्
चैत्र शु.१२, बुध	9 अप्रै.	पू.फा.	मु. 9:57 बाद
वैशा. कृ. १, चंद्र	14 अप्रै.	स्वा.	मु. 9:45 बाद, सूर्य पूजा
वैशा. कृ. ५, शुक्र	18 अप्रै.	मूल	मु. 8:21 बाद, ल. २ (चं. दा.), ३
वैशा. शु. ३, बुध	30 अप्रै.	रोहि.	मु. 12:02 तक, ल. २ (चं.दा.)
वैशा. शु. ५, शुक्र	2 मई	आ/पु	ल. २, अभि.
वैशा. शु.१०, बुध	7 मई	पू.फा.	ल. २
वैशा. शु.११, गुरु	8 मई	उ.फा.	ल. २, ३, अभिजित् (केतु युति परिहार)
ज्ये. कृष्ण ५, रवि	18 मई	उ.षा.	मु. प्रातः 6:19 बाद, ल. ३
ज्ये. शुक्ल २, बुध	28 मई	मृग	ल. ३,
ज्ये. शु. ३, गुरु	29 मई	आर्द्रा	ल. ३, अभिजित्
ज्ये. शु. ५, शनि	31 मई	पुष्य	ल. ३, अभिजित्
ज्ये. शु. १२, शनि	7 जून	स्वा.	मु. 9:40 से 11:17 तक
(सन् 2026 ई०)			
फाल्गु. कृ.३, बुध	4 फर.	पू.फा.	ल. १ (चं. दा.)
फाल्गु. शु.२, गुरु	19 फर.	पू.भा.	ल. १ (चं. दा.); २, ३
फा.शु.४/५, शनि	21 फर.	रेव.	मु. 13:01 से 13:48 तक

मुहूर्त्त मुकलावा (द्विरागमन)-सं. २०८२

विवाह के दिन से 16 दिन के भीतर ही द्विरागमन हो, तो निर्धारित मुहूर्तों के बगैर भी वधू-प्रवेश या द्विरागमन करवाना शुभ होता है। इसके अतिरिक्त नवविवाहिता स्त्री को विवाह के बाद द्विरागमन अथवा प्रथम यात्रा में सम्मुख शुक्र एवं दक्षिण शुक्र का भी विचार किया जाता है। द्विरागमन में शुक्ल पक्ष विशेष प्रशस्त होता है।

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ.१,	चन्द्र	14 अप्रै.	स्वा.	मु. 9:45 बाद, सूर्य पूज्य
वैशा. कृ.५,	शुक्र	18 अप्रै.	मूल	मु. प्रात: 8:21 बाद
वैशा. कृ.८,	चन्द्र	21 अप्रै.	श्रव.	मु. 12:37 बाद
वैशा. कृ.१०,	बुध	23 अप्रै.	शत.	मु. 16:44 बाद
वैशा. कृ.११,	गुरु	24 अप्रै.	शत.	मु. 10:49 तक, ल. २
वैशा. कृ.१२,	शुक्र	25 अप्रै.	उ.भा.	मु. 8:54 से 11:45 तक
वैशा. शु. ३,	बुध	30 अप्रै.	रोहि	मु. 12:02 तक, (12:02 से 14:26 तक अतिगण्ड दोष) 14:26 से 16:18 तक
वैशा. शु. ४,	गुरु	1 मई	मृग.	मु. 11:24 से 14:21 तक
वैशा. शु. ५,	शुक्र	2 मई	पुन.	मु. 13:04 बाद
वैशा. शु.१०,	बुध	7 मई	उ.फा.	मु. 18:17 बाद
वैशा. शु.११,	गुरु	8 मई	उ.फा.	ल. २, ३, अभि. (केतु युति परिहार)
वैशा.पूर्णिमा,	चंद्र	12 मई	स्वा.	मु. प्रात: 6:17 तक
मार्ग. शु. ७,	गुरु	27 नवं.	धनि.	ल. १०, मु. 12:09 तक, पुन: 15:45 बाद
मार्ग. पूर्णिमा,	गुरु	4 दिसं.	रोहि.	मु. 14:54 बाद, भद्रा परिहार
पौष कृ. १,	शुक्र	5 दिसं.	रो/मृ	ल. १०, १
(सन् 2026 ई०)				
फाल्गु.कृ.११,	शुक्र	13 फर.	मूल	मु. प्रात: 9:36 तक (9:36 से गुरु पादवेध)
फाल्गु. शु. १,	बुध	18 फर.	शत.	ल. १, २, ३
चैत्र कृ. ६,	चंद्र	9 मार्च	अनु.	मु. 16:12 बाद

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-सं. २०८२

आगे लिखे उत्तरायण-काल में सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त प्राय: सभी सात्त्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति-स्थापना, जलाशय, बावड़ी, कूँआं आदि के निर्माण हेतु भी ग्रहणीय होंगे। सात्त्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना में उत्तरायण मास तथा **उनके अवतरण (जयन्ती) का दिवस भी विशेष रूप से ग्राह्य होगा।**

जैसे-श्रीविष्णु, राम की मूर्त्ति स्थापना में वैशाख आदि उत्तरायण मासों के अतिरिक्त अक्षय-तृतीया, रामनवमी विजयादशमी, दीपावली आदि विशेष शुभ हैं। श्रीविष्णु-प्रतिमा प्रतिष्ठा में माघ मास वर्जित होता है। श्रीकृष्ण की प्रतिमा के लिए उत्तरायण मास, भाद्र. कृष्णाष्टमी तथा मार्गशीर्ष मास शुभ माने जाते हैं। श्रीशिव मूर्त्ति एवं शिवलिङ्ग की प्रतिष्ठा में श्रावण एवं फाल्गुन मास की चतुर्दशी (महाशिवरात्रि) विशेषतया प्रशस्त है।

सभी सात्त्विक देवी-देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्ण-काल में (मध्याह्न से पहिले) ही की जाती है। कालभैरव आदि तामस देवों के लिए दक्षिणायन एवं मार्गशीर्ष मास विशेष ग्राह्य हैं। अत: दक्षिणायन में भी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त अलग से दिए गए हैं।

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ. १,	चन्द्र	14 अप्रै.	स्वा.	मु. 9:45 बाद, ल. ३, ५ अभि.
वैशा. कृ. ५,	शुक्र	18 अप्रै.	मूल	मु. प्रात: 8:21 बाद
वैशा. कृ. ६,	शनि	19 अप्रै.	मूल	मु. 10:21 तक
वैशा. कृ. ७,	रवि	20 अप्रै.	उ.षा.	मु. 11:49 बाद (पादेन गुरुवेधऽभाव:)
वैशा. कृ. ८,	चंद्र	21 अप्रै.	श्रव.	मु. 12:37 बाद
वैशा. कृ.११,	गुरु	24 अप्रै.	शत.	मु. 10:49 तक, ल. २
वैशा. कृ.१२,	शुक्र	25 अप्रै.	उ.भा.	मु. 8:54 से 11:45 तक
वैशा. शु. ३,	बुध	30 अप्रै.	रोहि.	मु. 12:02 तक, पुन: 14:26 से
वैशा. शु. ४,	गुरु	1 मई	मृग.	मु. 11:24 से 14:21 तक
वैशा. शु. ६,	शनि	3 मई	पु/पु	ल. २, ३, अभिजित्
वैशा. शु. ७,	रवि	4 मई	पुष्य	मु. प्रात: 7:20 तक (अल्पकाले)
वैशा. शु.११,	गुरु	8 मई	उ.फा.	ल. २, ३, अभिजित् (केतु युति परिहार)
ज्ये. कृ. ५,	रवि	18 मई	उ.षा.	मु. 6:19 बाद, ल. ३, अभि.
ज्ये. कृ. ६,	चन्द्र	19 मई	श्रव.	मु. प्रात: 10:19 तक (10:19 से 15:24 क्रान्तिसाम्य)
ज्ये. शुक्ल २,	बुध	28 मई	मृग.	ल. ३ (चं. दा.)
ज्ये. शु. ५,	शनि	31 मई	पुष्य	ल. ३, अभिजित्
ज्ये. शु.१२,	शनि	7 जून	स्वा.	मु. 9:40 से 11:17 तक केवल
(सन् 2026 ई०)				
फाल्गु.कृ.११,	शुक्र	13 फर.	मूल	9:36 तक (सूर्य-पूजा) (9:36 से गुरु पादवेध)
फाल्गु. शु. १,	बुध	18 फर.	शत.	ल. १, २, ३
फाल्गु. शु. ४,	शनि	21 फर.	रेव.	मु. 13:01 बाद (मध्यमे)

तामसदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (दक्षिणायन में)

(देवी, वाराह, नृसिंह, काली आदि उग्र देवताओं के प्रतिष्ठा मुहूर्त्त)

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
श्राव. कृ. २,	शनि	12 जुला	उ/श्र	ल. ४, अभि., ८
श्राव. कृ. ३,	रवि	13 जुला	श्र/ध	ल. ४, अभि., ८
कार्ति. शु.१३,	चंद्र	3 नवं.	उ.भा.	ल. ८, १०, अभिजित्
मार्ग. कृ. २,	शुक्र	7 नवं.	रोहि	ल. ८, १०, अभिजित्
मार्ग. कृ. ६,	चन्द्र	10 नवं.	पुन.	ल. १०, अभिजित्
मार्ग. शु. ३,	रवि	23 नवं.	मूल	मु. 12:09 तक
मार्ग. शु. ७,	गुरु	27 नवं.	धनि.	ल. १०, अभिजित्
मार्ग. शु. १०,	रवि	30 नवं.	उ.भा.	लग्न १०, १, अभिजित्
पौष कृ. १,	शुक्र	5 दिसं.	रोहि.	मृत्युबाण परिहार
पौष कृ. २,	शनि	6 दिसं.	मृग.	मु. 8:49 तक, ल. ९
पौष कृ. ३,	रवि	7 दिसं.	पुन.	ल. ९, १०, अभिजित्

श्रीदुर्गा/गौरी देवी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-२०८२

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
वैशा. कृ. १,	चन्द्र	14 अप्रै.	स्वा.	मु. 9:45 बाद, सूर्य पूज्य
वैशा. कृ. ५,	शुक्र	18 अप्रै.	मूल	मु. 8:21 बाद, ल. २, ३ (प्रतिष्ठा) रा. ल. ८, ११ (जागरण हेतु)
वैशा. कृ. ६,	शनि	19 अप्रै.	मूल	मु. 10:21 तक,
वैशा. शु. ३,	बुध	30 अप्रै.	रोहि	मु. 12:02 तक स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त
वैशा. शु. ६,	शनि	3 मई	पु/पु	ल. २, ३, अभि., ५ (भौमयुति परिहार)
वैशा. शु. ७,	रवि	4 मई	पुष्य	मु. 7:20 तक
वैशा. शु.११,	गुरु	8 मई	उ.फा.	ल. २, ३, अभिजित्

श्रीदुर्गा/गौरी देवी प्रतिष्ठा मुहूर्त

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
ज्ये. कृष्ण ३,	गुरु	15 मई	ज्ये.	मु. 6:35 बाद, ल. ३, अभि.
ज्ये. कृ. ५,	रवि	18 मई	उ/श्र	ल. ३, अभिजित् रा. ल. ९, १ (जागरण हेतु)
ज्ये. कृ. ६,	चन्द्र	19 मई	श्रव.	ल. ३ (मु. 10:19 तक)
ज्ये. शु. २,	बुध	28 मई	मृग.	ल. ३, ६ (प्रतिष्ठा हेतु) रा. ल. ९, १ (जागरण हेतु)
ज्ये. शु. ५,	शनि	31 मई	पुष्य	ल. ३, अभिजित्
श्राव. कृ. २,	शनि	12 जुला	उ/श्र	ल. ४, अभि., ८
श्राव. कृ. ३,	रवि	13 जुला	श्र/ध	ल. ४, अभि., ८
श्राव. कृ.११,	चंद्र	21 जुला	रोहि	ल. ६, ७, अभिजित्
श्राव. शु. १,	शुक्र	25 जुला	पुष्य	ल. अभिजित्, ८,९ (सूर्य युति परिहार)
श्राव. शु. ८,	शुक्र	1 अग.	स्वा.	ल. ७, मु. 12:38 तक (12:38 से क्रान्तिसाम्य दोष)
श्राव. शु. ९,	रवि	3 अग.	अनु.	मु. 6:35 बाद
श्राव. शु. १०,	चंद्र	4 अग.	अ/ज्ये	ल. ७, अभिजित्
श्राव. शु.१२,	बुध	6 अग.	मूल	प्रातः 8:30 से 13:00 तक
श्राव. पूर्णिमा,	शनि	9 अग.	श्रव.	ल. ७, अभिजित्
भाद्र. कृ. ६,	गुरु	14 अग.	रेव.	मु. प्रातः 9:06 तक
भाद्र. कृ. ९,	रवि	17 अग.	रोहि.	ल. ७, अभिजित्
भाद्र. कृ.१०,	चंद्र	18 अग.	मृग.	ल. ७, अभिजित् (मृत्युबाण एवं भद्रादोष परिहार)
भाद्र. कृ.१२,	बुध	20 अग.	पुन.	ल. ७, ८
भाद्र. शु. २,	चन्द्र	25 अग.	उ.फा.	ल. ७, ८, ९
भाद्र. शु. ५,	गुरु	28 अग.	स्वा.	मु. 8:44 बाद, ल. ७,८,९
भाद्र. शु. ६,	शुक्र	29 अग.	स्वा.	मु. 11:39 तक
भाद्र. शु. १२,	गुरु	4 सितं.	उ.षा.	ल. ७, ८, ९
भाद्र. शु. १३,	शुक्र	5 सितं.	श्रव.	ल. ७, ८, मु. 13:53 तक
आश्वि शु.१,	चन्द्र	22 सितं.	उ.फा.	मु. 11:24 तक (चंद्र-पूज्य) (प्रथम नवरात्र)
आश्वि शु. ५,	शनि	27 सितं.	अनु.	मृत्युबाण परिहार, ल. ८ (गु. पूज्य), ९
आश्वि. शु.६,	रवि	28 सितं.	ज्ये.	ल. ९, अभिजित्
आश्वि. शु.७,	चन्द्र	29 सितं.	मूल	ल. ९, अभिजित् रा. ल. २, ३ (जागरण हेतु)
आश्वि. शु.९,	बुध	1 अक्तू	उ.षा.	मु. 8:06 बाद
आश्वि. शु.१०,	गुरु	2 अक्तू	उ/श्र	ल. ८, ९, १०
आश्वि. शु.११,	शुक्र	3 अक्तू	श्र/ध	ल. ८, ९, १० (भद्रा परिहार)
आश्वि. शु.१२,	शनि	4 अक्तू	धनि.	मु. प्रातः 9:10 तक
कार्ति. कृ. ६,	रवि	12 अक्तू	मृग.	मु. 10:55 तक
कार्ति. कृ. ९,	बुध	15 अक्तू	पुष्य	मु. 12:00 तक
कार्ति. शु. १,	बुध	22 अक्तू	स्वा.	ल. ८, १०
कार्ति. शु. ३,	शुक्र	24 अक्तू	अनु.	ल. ८, १०, अभिजित्
कार्ति. शु. ६,	चन्द्र	27 अक्तू	मूल	ल. ८, १०, अभिजित् (पादेन गुरु वेधऽभावः)
कार्ति. शु. ७,	बुध	29 अक्तू	उ.षा.	ल. १० (7:51 से 9:51 तक शूलदेष)
कार्ति. शु.१३,	चन्द्र	3 नवं.	उ.भा.	ल. ८, १०, अभिजित्
मार्ग. कृ. १,	गुरु	6 नवं.	कृति.	ल. १०, अभिजित्
मार्ग. कृ. २,	शुक्र	7 नवं.	रोहि.	ल. ८, १०, अभिजित्
मार्ग. कृ. ६,	चन्द्र	10 नवं.	पुन.	ल. १०, अभिजित्
मार्ग. शु. ३,	रवि	23 नवं.	मूल	मु. 12:09 तक
मार्ग. शु. ७,	गुरु	27 नवं.	धनि.	ल. १०, मु. 12:09 तक
मार्ग. शु.१०,	रवि	30 नवं.	उ.भा.	ल. १०, अभिजित्
पौष कृ. १,	शुक्र	5 दिसं.	रोहि.	ल. १० (मृत्युबाण परिहार)
पौष कृ. २,	शनि	6 दिसं.	मृग.	ल. ९, मु. 8:49 तक

भगवान् शिव प्रतिष्ठा मुहूर्त-सं. २०८२

गत कालमों में दिए गए सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्तों के अतिरिक्त आगे भगवान् शिव प्रतिमा व शिवलिङ्ग स्थापना हेतु मुख्य मुहूर्त दिए जा रहे हैं, जो विशेषतः शुभ एवं ग्राह्य होंगे। शिव प्रतिमा/शिवलिङ्ग प्रतिष्ठा हेतु निम्न मुहूर्तों में आगे दिए गए '**शिववास चक्र**' का भी प्रयोग कर लें तो विशेष शुभ होगा, परन्तु अनिवार्य नहीं है। शिव प्रतिष्ठा हेतु उत्तरायण मास, मिथुन लग्न व आर्द्रा नक्षत्र विशेष प्रशस्त एवं ग्राह्य माने गए हैं। शिव प्रतिष्ठा में श्रावण व मार्गशीर्ष मास भी ग्राह्य माने गए हैं।

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ.१,	चन्द्र	14 अप्रै.	स्वा.	मु. 9:45 बाद, सूर्य पूज्य
वैशा. कृ.५,	शुक्र	18 अप्रै.	मूल	ल. २, ३, मु. 8:21 बाद
वैशा. कृ.६,	शनि	19 अप्रै.	मूल	ल. २, ३ (10:21 तक)
वैशा. कृ.११,	गुरु	24 अप्रै.	शत.	मु. 10:49 तक, ल. २, ३

शिव-प्रतिष्ठा मुहूर्त

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. शु. ३,	बुध	30 अप्रै.	रोहि	मु. 12:02 तक, ल. ३
वैशा. शु.५,	शुक्र	2 मई	आर्द्रा	ल. ३
वैशा. शु. ६,	शनि	3 मई	पु/पु	ल. २, ३, अभिजित्
वैशा. शु.१०,	बुध	7 मई	पू.फा.	ल. २, ३
ज्ये. कृ. ४,	शुक्र	16 मई	मूल	ल. ३
ज्ये. कृ. ५,	शनि	18 मई	उ.षा.	मु. 6:19 बाद, ल. ३
ज्ये. कृ. ६,	रवि	19 मई	श्रव.	ल. ३, मु. प्रातः 10:19 तक
ज्ये. शु. २,	बुध	28 मई	मृग.	ल. ३ (चंद्र पूज्य)
ज्ये. शु. ३,	गुरु	29 मई	आर्द्रा	ल. ३ (चं. दा.)
ज्ये. शु. ५,	शनि	31 मई	पुष्य	ल. ३
श्राव. कृ.११,	चन्द्र	21 जुला	रोहि.	ल. ६, अभिजित्
श्राव. कृ.१४,	बुध	23 जुला	आर्द्रा	ल. ६
श्राव. शु. १,	शुक्र	25 जुला	पुष्य	ल. ६, अभिजित्
श्राव. शु. ८,	शुक्र	1 अग.	स्वा.	ल. ७, मु. 12:38 तक (12:38 से क्रान्तिसाम्य)
श्राव. शु. ९,	रवि	3 अग.	अनु.	मु. 6:35 बाद
श्राव. शु.१०,	चन्द्र	4 अग.	अ/ज्ये.	ल. ७, अभिजित्
श्राव. शु.१२,	बुध	6 अग.	मूल	मु. 8:30 से 13:00 तक
श्राव. शु.१४,	शुक्र	8 अग.	उ.षा.	ल. ७
श्राव. पूर्णिमा,	शनि	9 अग.	श्रव.	ल. ७, अभिजित्
भाद्र. कृ. ६,	गुरु	14 अग.	रेव.	मु. प्रातः 9:06 तक
(सन् 2026 ई०)				
फाल्गु. कृ. ४,	गुरु	5 फर.	उ.फा.	ल. १, २, ३
फाल्गु.कृ.१४,	चंद्र	16 फर.	श्रव.	ल. १, २, ३
फाल्गु. शु.१,	बुध	18 फर.	शत.	ल. २, ३
चैत्र कृ. ८,	बुध	11 मार्च	ज्ये.	ल. १, २, ३

श्रीगणेश प्रतिमा प्रतिष्ठा मुहूर्त

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण
ज्ये. कृ. ४,	शुक्र	16 मई	मूल	ल. ३
श्राव. कृ. ४,	चन्द्र	14 जुला	ध/श	ल. ४, ६
कार्ति. कृ.४,	शुक्र	10 अक्तू	कृति.	ल. ७, ८
मार्ग. कृ. ३,	शनि	8 नवं.	मृग.	ल. १०
पौष कृ. ४,	चन्द्र	8 दिसं.	पुष्य	ल. ९, १०
(सन् 2026 ई०)				
फाल्गु. कृ. ४,	गुरु	5 फर.	उ.फा.	ल. १, अभिजित्

शिववास चक्र

शिवलिङ्ग एवं शिव मूर्त्ति स्थापना एवं प्रतिष्ठार्थ

ऊपर लिखे शास्त्र-विहित मुहूर्तों में से विशेष मुहूर्त्त के चयन हेतु कुछ विद्वान् शिववास चक्र का भी प्रयोग करते हैं। पाठकों के लाभ हेतु शिववास चक्र दिया जा रहा हैं। इस चक्र की प्रयोग विधि इस प्रकार से है–

शेष	शिववास	फल
१	कैलाश पर	शुभ/लाभ, सुख
२	गौरी संग	शुभ-लाभ
३	बैल पर	कार्य सिद्धि
४	सभा में	कष्टकारी
५	भोजन	दुख प्रदायक
६	रमण	कष्टप्रद
(०)	श्मशान	नेष्ट फल

उपरोक्त लिखी गई तिथियों में से अभीष्ट (Required) तिथि की संख्या को दोगुणा करके उसमें, पाँच जोड़ देवें, फिर कुल मान को सात से भाग कर देवें, जो शेष संख्या बचे, उसके अनुसार शिव का वास जानना। उदाहरण–मान लो हमने पंचमी तिथि के सम्बन्ध में शिववास जानना है, तो पाँच संख्या को दोगुणा करने पर दस संख्या मिली, इसमें 5 जमा करके 15 संख्या हुई, इसको 7 द्वारा भाग देने पर शेष 1 बचा, इसका फल लाभ/सुख अच्छा लिखा है। कुछ विद्वान् महामृत्युमुञ्जय आदि शैव मन्त्रानुष्ठान के पश्चात् करणीय होमादि में भी इस शिववास चक्र का विचार करते हैं।

राहु कालम्

शुभ कार्यों में विशेषतया त्याज्य

दक्षिण भारत में राहु-कालम का विशेष प्रचलन है। विशेष वार प्रतिदिन डेढ़ घण्टे के लिए यह अनिष्ट समय होता है। जिसे शुभ कार्यारम्भ में यथासम्भव टाल देना चाहिए। दक्षिणी भारत में राहु कालम का विशेष विचार किया जाता है।

सोमवार–प्रातः 7/30 से प्रातः 9 बजे तक
मंगलवार–अपराह्न 3/00 से 4/30 बजे तक
बुधवार–दोपहर 12/00 से 1/30 बजे तक
बृहस्पतिवार–दोपहर 1/30 से 3/00 बजे तक
शुक्रवार–प्रातः 10/30 से दुपै. 12 बजे तक
शनिवार–प्रातः 9/00 से प्रातः 10/30 बजे तक
रविवार–सायं 4/30 से सायं 6/00 बजे तक

नोट–यह समयावधि प्रत्येक नगर के दिनमान के अनुसार परिवर्तित होती रहती है।

श्री स्कन्द प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-सं. २०८२

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. शु. ६, शनि	3 मई	पुन.	ल. २, ३
भाद्र. शु. ६, शुक्र	29 अग.	स्वा.	ल. ७
आश्वि. शु. ६, रवि	28 सितं.	ज्ये.	ल. ८, ९
कार्ति. शु. ६, चन्द्र	27 अक्तू.	मूल	ल. ८ (मं. दा.)

श्रीलक्ष्मीनारायण व श्रीराधा-कृष्ण मूर्त्ति प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-सं. २०८२

गत पृष्ठों में दिए गए सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्तों के अतिरिक्त निम्नलिखित मुहूर्त्त भी श्री लक्ष्मीनारायण एवं राधा-कृष्ण हेतु विशेष तप से ग्राह्य होंगे। नोट–मतान्तर से कुछ विद्वान माघ मास में श्रीविष्णु जी की प्रतिष्ठि को वर्ज्य मानते हैं।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ.१२, शुक्र	25 अप्रै.	उ.भा.	मु. 8:54 से 11:45 तक
वैशा. शु. ३, बुध	30 अप्रै.	रोहि	मु. 12:02 तक
वैशा. शु. ६, शनि	3 मई	पु/पु	ल. २, ३, अभिजित्
वैशा. शु. ७, रवि	4 मई	पुष्य	मु. प्रातः 7:20 तक
वैशा. शु.११, गुरु	8 मई	उ.फा.	ल. २, ३, अभिजित्
ज्ये. कृ. ३, गुरु	15 मई	ज्ये.	मु. 6:35 बाद
ज्ये. कृ. ५, रवि	18 मई	उ.षा.	मु. 6:19 बाद, ल. ३, अभि.
ज्ये. कृ. ६, चन्द्र	19 मई	श्रव.	मु. प्रातः 10:19 तक
ज्ये. शु. २, बुध	28 मई	मृग.	ल. ३ (चं. पूज्य)
ज्ये. शु. ५, शनि	31 मई	पुष्य	ल. ३, अभिजित्
मार्ग. शु. ७, गुरु	27 नवं.	धनि.	ल. १०, अभिजित्
मार्ग. शु.१०, रवि	30 नवं.	उ.भा.	ल. १०, १, अभिजित्
पौष कृ. १, शुक्र	5 दिसं.	रो/मृ	ल. १०, मृत्युबाण परिहार
पौष कृ. २, शनि	6 दिसं.	मृग.	मु. 8:49 तक, ल. ९
पौष कृ. ३, रवि	7 दिसं.	पुन.	ल. ९, १०, अभिजित्

स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, श्रीरामनवमी, अक्षय तृतीया, विजयादशमी, दीपावली तिथियां स्वयं सिद्ध (अणपुच्छ) मुहूर्त्त कहलाती हैं। आवश्यक परिस्थितिवश गृहारंभादि मुहूर्त्तों में कोई मुहूर्त्त न बन पड़े तो इन स्वयं सिद्ध मुहूर्त्तों में से शुभ कार्य का सम्पादन कर सकते हैं।

श्रीमद्भागवत्, हरिवंशपुराण, रामायणादि कथा प्रारम्भ मुहूर्त्त-वि. संवत् २०८२

वैसे तो भगवान् श्री हरि की कथा किसी भी स्थिति या समय में गाई जा सकती है, परन्तु श्रीमद्भागवत्, श्रीहरिवंश पुराण, रामायण, शिव महापुराण आदि पूज्य ग्रन्थों के पाठ का प्रारम्भ शास्त्र निर्धारित तिथि, नक्षत्र, वार, मास आदि के अनुसार किया जाए, तो विशेष अधिक पुण्यफल प्रद होता है। सुनिश्चित मुहूर्त्तों में भी कृष्ण पक्ष की अपेक्षा शुक्ल पक्ष श्रेष्ठतर माना गया है। श्री शिवपुराण पाठारम्भ में श्रावण, माघ व फागुन मास विशेष प्रशस्त माने जाते हैं। श्रीदेवीभागवत् वाचन हेतु श्री दुर्गा प्रतिष्ठा में लिखे मुहूर्त्त भी ग्राह्य होंगे।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ. १, चन्द्र	14 अप्रै.	स्वा.	मु. 9:45 बाद, ल. २
वैशा. कृ. ६, शनि	19 अप्रै.	पू.षा.	मु. 10:21 बाद
वैशा. कृ. ७, रवि	20 अप्रै.	पू/उषा	ल. २, ३, अभिजित्
वैशा. कृ.११, गुरु	24 अप्रै.	शत.	मु. 10:49 तक, ल. २
वैशा. कृ.१२, शुक्र	25 अप्रै.	उ.भा.	मु. 8:54 से 11:45 तक
वैशा. शु. ३, बुध	30 अप्रै.	रोहि	मु. 12:02 तक
वैशा. शु. ४, गुरु	1 मई	मृग.	मु. 11:24 से 14:21 तक
वैशा. शु. ७, रवि	4 मई	पुष्य	मु. प्रातः 7:20 तक
वैशा. शु.१०, बुध	7 मई	पू.फा.	मु. 11:41 तक (11:41 से बुधवेध)
वैशा. शु.११, गुरु	8 मई	उ.फा.	ल. २, ३, अभि. (भद्रा.परि.)
ज्ये. कृ. ५, रवि	18 मई	उ.षा.	ल. ३, अभिजित्
ज्ये. कृ. ६, चन्द्र	19 मई	श्रव.	मु. 10:19 तक
ज्ये. शु. २, बुध	28 मई	मृग.	ल. ३, ६
श्राव. कृ. ३, रवि	13 जुला.	श्र/ध	ल. ४, अभि., ८
श्राव. कृ.११, चन्द्र	21 जुला.	रोहि	ल. ८, ९, अभिजित्
श्राव. शु. १, शुक्र	25 जुला.	पुष्य	ल. ८, ९, अभिजित्
श्राव. शु. ८, शुक्र	1 अग.	स्वा.	ल. ७, मु. 12:38 तक
श्राव. शु. ९, रवि	3 अग.	अनु.	मु. 9:43 बाद
श्राव. शु.१०, चन्द्र	4 अग.	अनु.	मु. 9:13 तक
श्राव. शु.१३, गुरु	7 अग.	पू.षा.	ल. ७, अभि.
भाद्र. कृ. २, चन्द्र	11 अग.	शत.	ल. ७, अभिजित्
भाद्र. कृ. ६, गुरु	14 अग.	रेव.	मु. प्रातः 9:06 तक
भाद्र. कृ. ९, रवि	17 अग.	रोहि	मु. 8:04 बाद, सूर्य पूज्य

श्रीमद्भागवत्, हरिवंशपुराण, रामायणादि कथा

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
भाद्र. कृ.१०, चन्द्र	18 अग.	मृग.	ल. ७
भाद्र. कृ.१२, बुध	20 अग.	पुन.	ल. ६, ७, मु. 13:59 तक
भाद्र. शु. २, चन्द्र	25 अग.	उ.फा.	ल. ७, ८, ९
भाद्र. शु. ५, गुरु	28 अग.	स्वा.	मु. 8:44 बाद
भाद्र. शु. ६, शुक्र	29 अग.	स्वा.	मु. 11:39 तक, ल. ७
भाद्र. शु. ९, चन्द्र	1 सितं.	ज्ये.	ल. ७ (पादेन शुक्रवेधऽभावः)
भाद्र शु.११, बुध	3 सितं.	पू.षा.	ल. ७
भाद्र. शु.१२, गुरु	4 सितं.	उ.षा.	ल. ७, ८, अभिजित्
भाद्र. शु.१३, शुक्र	5 सितं.	श्रव.	ल. ७, ८, अभिजित्
आश्वि. शु.१, चन्द्र	22 सितं.	उ.फा.	मु. 11:24 तक
आश्वि.शु.१०, गुरु	2 अक्तू.	उ/श्र	ल. ८, ९, अभिजित्
आश्वि.शु.११, शुक्र	3 अक्तू.	श्र/ध	ल. ८, ९, अभि.
आश्वि.शु.१२, शनि	4 अक्तू.	धनि.	मु. प्रातः 9:10 तक
कार्ति. कृ.६, रवि	12 अक्तू.	मृग.	मु. प्रातः 10:55 तक
कार्ति. कृ.९, बुध	15 अक्तू.	पुष्य	मु. 10:34 से 12:00 तक
कार्ति. शु. १, बुध	22 अक्तू.	स्वा.	ल. ८, १०
कार्ति. शु. ३, शुक्र	24 अक्तू.	अनु.	ल. ८, १०, अभि.
कार्ति. शु. ७, बुध	29 अक्तू.	उ.षा.	मु. 9:51 बाद
कार्ति. शु.१३, चंद्र	3 नवं.	उ.भा.	ल. १०, अभिजित्
मार्ग. कृ. २, शुक्र	7 नवं.	रोहि.	ल. १०, अभिजित्
मार्ग. कृ. ३, शनि	8 नवं.	मृग.	मु. प्रातः 7:33 तक
मार्ग. कृ. ६, चंद्र	10 नवं.	पुन.	ल. १०, अभिजित्
मार्ग. शु. ७, गुरु	27 नवं.	धनि.	ल. १०, मु. 12:09 तक
मार्ग. शु.१०, रवि	30 नवं.	उ.भा.	ल. १०, अभिजित्
पौष कृ. १, शुक्र	5 दिसं.	रो/मृ	मृत्युबाण परिहार
पौष कृ. ३, रवि	7 दिसं.	पुन.	ल. ९ (भद्रा परिहार)
(सन् 2026 ई०)			
फाल्गु. कृ.३, बुध	4 फर.	पू.फा.	ल. १२, १
फाल्गु. शु.२, गुरु	19 फर.	पू.भा.	ल. १२, १

वाहनादि क्रय मुहूर्त्त-वि. संवत् २०८२

आगे लिखे मुहूर्त्त कार, स्कूटर, साईकल, ट्रक आदि का क्रय करने के अतिरिक्त कम्प्यूटर, रेफ्रिजरेटर, जनरेटर, टैलीविजन, जमीन-जायदाद, बहुमूल्य आभूषण, वस्त्रादि की खरीद करने में समान रूप में उपयोगी होंगे। शनिवार वाला दिन तभी ग्रहण करें, यदि कुण्डली में शनि शुभ या योगकारक हो। वाहनादि से पूर्ण लाभ प्राप्ति एवं सुरक्षा हेतु अपने पण्डित या पुरोहित जी द्वारा वाहन पर मन्त्रपूर्वक स्वास्तिक चिन्ह रचना, श्रीगणेश अम्बिका पूजन एवं हनुमान पूजा एवं कवच/स्तोत्र पाठ करवाना शुभ होगा। पूजनोपरान्त पण्डित जी को यथाशक्ति दान-दक्षिणा देकर उनसे शुभाशीष ग्रहण करना चाहिए। वाहन क्रय करने वाले व्यक्ति का चंद्रमा भी 4, 8 या 12वें नहीं होना चाहिए।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ. १, चन्द्र	14 अप्रै.	स्वा.	मु. 9:45 बाद, सूर्य पूजा
वैशा. कृ. ५, शुक्र	18 अप्रै.	मूल	मु. 8:21 बाद, ल. २, ३
वैशा. कृ. ६, शनि	19 अप्रै.	मू/पू	ल. २, ३
वैशा. कृ. ७, रवि	20 अप्रै.	पू/उषा	ल. २, ३
वैशा. कृ.११, गुरु	24 अप्रै.	शत.	मु. 10:49 तक
वैशा. कृ.१२, शुक्र	25 अप्रै.	उ.भा.	मु. 8:54 से 11:45 तक
वैशा. शु. ३, बुध	30 अप्रै.	रोहि.	मु. 12:02 तक, ल. २ पुनः 14:26 से 16:18 तक
वैशा. शु. ४, गुरु	1 मई	मृग.	मु. 11:24 से 14:21 तक
वैशा. शु. ५, शुक्र	2 मई	पुन.	मु. 13:04 बाद
वैशा. शु. ६, शनि	3 मई	पु/पु	ल. २, ३, अभि., ५
वैशा. शु.१०, बुध	7 मई	पू.फा.	मु. 11:41 तक (11:41 से पादेन बुधवेध)
वैशा. शु.११, गुरु	8 मई	उ.फा.	ल. २, ३, अभि. (भद्रा-परि.)
ज्ये. कृ. ५, रवि	18 मई	उ.षा.	ल. ३, अभिजित्
ज्ये. कृ. ६, चन्द्र	19 मई	श्रव.	मु. 10:19 तक
ज्ये. शु. २, बुध	28 मई	मृग.	ल. ३, ६
ज्ये. शु. ५, शनि	31 मई	पुष्य	ल. ३, अभिजित्
ज्ये. शु. १२, शनि	7 जून	स्वा.	मु. 9:40 से 11:17 तक
श्राव. कृ. २, शनि	12 जुला	उ/श्र	ल. ४, ८, अभिजित्
श्राव. कृ. ३, रवि	13 जुला	श्र/ध	ल. ४, अभि., ८
श्राव. कृ.११, चन्द्र	21 जुला	रोहि	ल. ८, ९, अभिजित्
श्राव. शु. १, शुक्र	25 जुला	पुष्य	ल. ८, ९, अभिजित्
श्राव. शु. ८, शुक्र	1 अग.	स्वा.	ल. ७, मु. 12:38 तक
श्राव. शु. ९, रवि	3 अग.	अनु.	मु. 9:43 बाद
श्राव. शु.१३, गुरु	7 अग.	पू/उषा	ल. ७, अभिजित्
श्राव. शु.१४, शुक्र	8 अग.	उ/श्र	मु. 14:13 बाद
श्राव.पूर्णिमा, शनि	9 अग.	श्रव.	ल. ७, अभिजित्
भाद्र. कृ.२, चन्द्र	11 अग.	शत.	ल. ७. मु. 13:01 तक
भाद्र. कृ.१०, चन्द्र	18 अग.	मृग.	ल. ७, अभिजित्
भाद्र. कृ.१२, बुध	20 अग.	पुन.	ल. ६, ७, मु. 13:59 तक

वाहनादि क्रय मुहूर्त्त

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
भाद्र. शु.२, चन्द्र	25 अग.	उ.फा.	ल. ७, ८, ९
भाद्र. शु. ५, गुरु	28 अग.	स्वा.	मु. 8:44 बाद, ल. ७
भाद्र. शु. ६, शुक्र	29 अग.	स्वा.	मु. 11:39 तक
भाद्र. शु.११, बुध	3 सितं.	पू.षा.	ल. ७
भाद्र. शु.१२, गुरु	4 सितं.	उ.षा.	ल. ७, ८, अभिजित्
भाद्र शु.१३, शुक्र	5 सितं.	श्रव.	ल. ७, ८, अभिजित्
आश्वि. शु.१, चन्द्र	22 सितं.	उ.फा.	मु. 11:24 तक
आश्वि. शु.५, शनि	27 सितं.	अनु.	ल. ८, अभिजित्
आश्वि. शु.७, चन्द्र	29 सितं.	मूल	ल. ९, अभिजित्
आश्वि. शु.१०, गुरु	2 अक्तू.	उ/श्र	ल. ८, ९, अभिजित्
आश्वि. शु.११, शुक्र	3 अक्तू.	श्र/ध	ल. ८, ९, १० (भद्रा-परि.)
कार्ति. कृ. ५, शनि	11 अक्तू.	रो/मृ	मु. 14:07 बाद
कार्ति. कृ. ६, रवि	12 अक्तू.	मृग.	मु. 10:55 तक (10:55 से परिघ)
कार्ति. कृ. ७, चन्द्र	13 अक्तू.	पुन.	मु. 12:27 बाद
कार्ति. कृ. ९, बुध	15 अक्तू.	पुष्य	मु. 10:34 से 12:00 तक
कार्ति. कृ.१२, शनि	18 अक्तू.	पू.फा.	ल. ८, अभिजित् (चं. पूज्य)
कार्ति. शु.१, बुध	22 अक्तू.	स्वा.	ल. ८, १०
कार्ति. शु. ३, शुक्र	24 अक्तू.	अनु.	ल. ८, १०, अभिजित्
कार्ति. शु.६, चन्द्र	27 अक्तू.	मूल	ल. ८, १०, अभिजित्
कार्ति. शु.७, बुध	29 अक्तू.	उ.षा.	ल. १० (7:51 से 9:51 तक शूलदोष)
कार्ति. शु.१३, चन्द्र	3 नवं.	उ.भा.	ल. १०, अभि. (भीष्मपंचक वि.)
मार्ग. कृ. २, शुक्र	7 नवं.	रोहि.	ल. १०, अभिजित्
मार्ग. कृ. ६, चन्द्र	10 नवं.	पुन.	ल. १०, अभिजित्
मार्ग. शु. ३, रवि	23 नवं.	मूल	मु. 12:09 तक, पुनः 14:09 से
मार्ग. शु. ७, गुरु	27 नवं.	धनि.	ल. १०, मु. 12:09 तक
मार्ग. शु.१०, रवि	30 नवं.	उ.भा.	ल. १०, अभिजित्
पौष कृ. १, शुक्र	5 दिसं.	रो/मृ	मृत्युबाण परिहार
पौष कृ. ३, रवि	7 दिसं.	पुन.	ल. ९, १०, अभिजित्
(सन् 2026 ई०)			
फाल्गु.कृ.११, शुक्र	13 फर.	मूल	9:36 तक (9:36 से पादेन गुरुवेध)
फाल्गु.शु.१, बुध	18 फर.	शत.	ल. १, २, ३
फाल्गु.शु.४, शनि	21 फर.	रेव.	मु. 13:01 बाद
चैत्र कृ. ६, चन्द्र	9 मार्च	अनु.	मु. 16:12 बाद

शुद्ध वर-कन्या मेलापक सारिणी (भाग-१)

कन्या	वर/नक्षत्र → नक्षत्र ↓	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि 1 से 4	भर. 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पू.फा. 1 से 4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि 1 से 4	28 / 8	33 / 4	28 / 3,6	18 ॥ / 1236	21 ॥ / 1,2,3	22 ॥ / 1,2,3	26 / 1,3,5	17 / 1,5,8	19 / 1358	23 ॥ / 3,8	31 ॥ / 3	28 / 6	21 / 6,9,व	25 / 9,व	15 / 389व	11 / 3578	9 / 14578	13 ॥ / 14567
	भर 1 से 4	34 / 4	28 / 8	29 / 6	19 / 1,2,6	23 / 1,2,3	14 ॥ / 1238	18 / 1358	26 ॥ / 1,3,5	27 / 1,3,5	31 ॥ / 3	23 ॥ / 3,8	25 / 3,6	20 / 6,9,व	18 ॥ / 8,9व	26 / 9,व	21 ॥ / 1,5,7	20 / 1357	5 / 13578
	कृति 1 चरण	27 ॥ / 3,6	29 / 6	28 / 8	18 / 1,2,8	10 / 1268	16 ॥ / 1236	20 / 1356	20 ॥ / 1356	21 / 1356	25 ॥ / 3,6	26 ॥ / 3,6	23 ॥ / 3,8	17 / 389व	20 / 6,9व	20 / 6,9व	15 ॥ / 1567	16 / 1567	18 / 1357
वृष	कृति 2,3,4	19 / 2,3,6	20 / 2,6	19 / 2,8	28 / 8	20 / 6,8	26 ॥ / 3,6	17 ॥ / 2,3,6	17 ॥ / 2,3,6	18 ॥ / 2,3,6	22 / 3,5,6	23 / 3,5,6	20 / 3,5,8	19 / 358व	22 / 5,6व	22 / 5,6व	21 / 6,9	21 / 6,9	23 ॥ / 3,9
	रोह 1 से 4	24 / 2,3	23 ॥ / 2,3	11 / 2,6,8	20 / 6,8	28 / 8	36	27 / 1,2	24 / 1,2,3	23 / 1234	26 / 3,4,5	27 / 3,5	12 ॥ / 3468	10 ॥ / 3568	24 ॥ / 3,5व	27 / 5,व	26 / 4,9	26 / 4,9	20 / 4,6,9
	मृग 1-2	23 ॥ / 2,3	15 / 2,3,8	19 / 2,3,6	27 ॥ / 3,6	35 / -	28 / 8	19 ॥ / 1,2,8	24 ॥ / 1,2,4	23 / 1234	26 / 3,4,5	19 / 3,5,8	21 / 3,5,6	19 ॥ / 456व	15 / 3458	24 ॥ / 3,5व	24 / 3,9	26 / 4,9	13 / 6,8,9
मिथुन	मृग 3-4	27 / 3,5	18 / 3,5,8	22 / 3,5,6	20 / 2,3,6	27 ॥ / 2,व	20 / 2,8,व	28 / 8	33 / 4	31 ॥ / 3,4	19 ॥ / 2,4,5	12 / 2358	14 ॥ / 2356	24 / 3,4,6	20 / 348व	28 ॥ / 3,व	31 ॥ / 3	34 / 4	21 / 4,6,8
	आर्द्रा 1 से 4	19 ॥ / 3,5,8	27 ॥ / 3,5	21 ॥ / 3,5,6	19 / 2,3,6	25 / 2,3,4	26 / 2,4	34 / -	28 / 8	25 / 4,8	13 / 24568	20 ॥ / 235व	13 / 2356	24 / 3,6,व	29 ॥ / 3,4व	21 ॥ / 3,4,8	24 ॥ / 3,4,8	25 / 3,4,8	27 ॥ / 4,6
	पुन. 1,2,3	20 / 3,5,8	27 / 3,5	23 ॥ / 3,5,6	20 ॥ / 2,3,6	23 / 2,3,4	24 / 2,3,4	31 ॥ / 3,4	24 / 4,8	28 / 8	16 / 258व	23 / 2,5,व	17 / 235व	23 / 346व	27 / 3,4व	22 / 3,8व	25 / 3,8	26 / 3,8	27 ॥ / 3,6
कर्क	पुन. 4	23 / 1,3,8	29 ॥ / 1,3	25 ॥ / 1,3,6	22 / 1356	24 / 1345	25 / 1345	18 / 1245	10 / 12568	15 / 1258	28 / 8	35 / -	29 ॥ / 3,6	16 ॥ / 1246	20 ॥ / 1234	15 ॥ / 1238	18 / 1358	19 ॥ / 1358	21 / 1356
	पुष्य 1 से 4	30 ॥ / 1,3	21 ॥ / 1,3,8	27 / 1,3,6	23 / 1356	25 / 1,3,5	18 / 1358	11 ॥ / 12358	18 ॥ / 1235	22 / 125व	35 / -	28 / 8	30 / 6	20 / 1236	15 ॥ / 1238	23 ॥ / 1,2,3	26 / 1,3,5	27 / 1,3,5	12 ॥ / 14568
	श्ले. 1 से 4	26 / 1,6	25 / 1,3,6	23 / 1,3,8	19 / 1358	11 ॥ / 14568	19 / 1456	13 / 12456	12 / 12456	15 ॥ / 12356व	28 / 3,6	29 / 6	28 / 8	15 / 1248	15 ॥ / 1246	18 ॥ / 1236	21 ॥ / 1356	21 / 1356	26 / 1,3,5
सिंह	मघा 1 से 4	20 / 6,9,व	20 / 6,9,व	16 ॥ / 8,9,व	17 ॥ / 158व	9 ॥ / 1568व	17 ॥ / 156व	21 ॥ / 146व	22 ॥ / 136व	21 / 1346व	16 ॥ / 2,4,6	20 / 2,3,6	16 ॥ / 2,4,8	28 / 8	30 / 6	27 / 3,6	16 / 1236	16 ॥ / 1236	21 ॥ / 123व
	पू.फा. 1 से 4	26 / 9,व	18 ॥ / 8,9,व	20 / 6,9,व	21 / 156व	23 ॥ / 145व	15 ॥ / 1458	20 / 148व	28 ॥ / 1,3,व	26 / 1,4,व	22 ॥ / 2,3,4	17 ॥ / 2,3,8	16 ॥ / 2346	30 / 6	28 / 8	35	24 / 1,2व	23 / 123व	7 ॥ / 1268
	उ.फा. 1	17 / 8,9,व	26 / 9,व	21 / 6,9,व	21 / 156व	26 / 1,5,व	25 / 135व	28 ॥ / 1,3व	21 / 1,3,8	21 ॥ / 1,3,8	17 ॥ / 2,3,8	25 ॥ / 2,3	20 / 2,3,6	27 ॥ / 3,6	35 / -	28 / 8	17 / 128व	16 ॥ / 128व	13 ॥ / 1236
कन्या	उ.फा. 2,3,4	13 / 3578	22 ॥ / 5,7	16 / 5,6,7	21 / 6,9	26 / 4,9	24 ॥ / 3,9	31 ॥ / 1,3	23 ॥ / 1,3,8	24 ॥ / 1,3,8	20 / 3,5,8	28 / 3,5	22 ॥ / 3,5,6	18 / 2,6,व	25 / 2,व	18 / 2,8व	28 / 8	27 ॥ / 8	25 / 3,4,6
	हस्त 1 से 4	10 / 34578	20 / 3,5,7	17 ॥ / 5,6,7	22 / 6,9	25 / 9	26 / 9	33 / 1,4	22 ॥ / 1,3,8	24 / 1,3,8	20 / 358व	28 / 3,5व	23 / 3,5,6	18 ॥ / 236व	22 ॥ / 2,3व	16 / 2,8व	26 / 8	28 / 8	28 / 4,6
	चित्रा 1,2	13 / 3567	4 ॥ / 45678	19 / 3,5,7	24 / 3,4,9	20 / 6,9	12 ॥ / 6,8,9	19 / 1,6,8	26 / 1,4,6	25 ॥ / 1,3,6	21 ॥ / 356व	12 ॥ / 3568व	27 / 35,व	22 ॥ / 2,3,व	8 ॥ / 2368व	14 ॥ / 2346व	24 ॥ / 3,4,6	27 ॥ / 4,6	28 / 8

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1 ,2 ,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-२)

कन्या राशि	वर/नक्षत्र → कन्या नक्षत्र ↓	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि 1 से 4	भर. 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पू.फा. 1 से 4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	22 ॥ 3,4,6	14 3468	28 ॥ 3,4	24 3,7	20 ॥ 4,6,7	12 6,7,8	13 6,8,9	21 4,6,9	19 ॥ 3,6,9	20 ॥ 3,5,6	11 3568	26 ॥ 3,5,व	25 ॥ 3,5,व	11 ॥ 3568	17 ॥ 456व	17 ॥ 2346	20 2,4,6	21 2,8
	स्वा. 1 से 4	27 ॥ 3,4	29 ॥ 3	17 ॥ 3,6,8	13 3678	15 ॥ 3,7,8	26 4,7	27 9	26 ॥ 4,9	28 9	29 5,व	27 3,5	14 व3568	13 3568	25 ॥ 3,5व	25 ॥ 3,5व	26 2,3	27 ॥ 2,3	21 2,4,6
	विशा 1,2,3	22 ॥ 3,4,6	23 3,4,6	20 ॥ 3,4,8	15 ॥ 3478	10 ॥ 3678	18 ॥ 3,6,7	20 3,6,9	20 4,6,9	21 4,6,9	22 56,व	21 ॥ 4,5,6	18 ॥ व358	17 ॥ 358,व	19 ॥ 356व	17 ॥ व3456	17 ॥ 2346	19 2346	27 ॥ 2,3
वृश्चिक	विशा 4	17 1467	17 1467	14 ॥ 1478	19 ॥ 1,4,8	14 ॥ 1368	22 ॥ 1,3,6	12 ॥ 1567	13 1567	13 ॥ 1567	19 ॥ 4,6,9	18 ॥ 4,6,9	15 ॥ 3,8,9	22 1,3,8	23 ॥ 136व	21 ॥ 146व	17 ॥ 1456	18 1456	27 135व
	अनु. 1 से 4	25 1,3,7	15 ॥ 1378	20 1367	24 ॥ 1,3,6	27 ॥ 1,3,4	20 ॥ 1,3,8	10 13578	15 13457	20 ॥ 1,5,7	26 ॥ 9	18 ॥ 8,9	21 6,9	25 1,3,6	21 138व	29 ॥ 1,3व	25 135व	26 135व	11 ॥ 1358
	ज्ये. 1 से 4	12 1678	18 ॥ 1367	25 1,3,7	29 ॥ 1,3	22 ॥ 1,3,6	22 ॥ 1,3,6	13 13567	3 134578	5 ॥ 135678	10 ॥ 3689	20 6,9	26 9	31 1 व	24 136व	17 1368	13 13568	13 1568व	24 ॥ 1व345
धनु	मूल 1 से 4	12 4689	21 6,9	25 3,9	19 ॥ 1,5,7	13 1567	13 ॥ 1567	21 1356	15 1568	12 14568	7 ॥ 4678	17 ॥ 3,6,7	24 4,7	25 9,व	20 6,9व	9 ॥ 689व	13 1568	13 1568	26 1,4,5
	पू.षा. 1 से 4	26 9	18 ॥ 8,9	18 ॥ 4,6,9	12 ॥ 14567	18 ॥ 1457	11 14578	18 ॥ 1458	27 1,3,5	27 1,3,5	23 ॥ 37,व	13 3478	17 ॥ 3,6,7	19 6,9,व	17 ॥ 8,9व	25 9,व	28 ॥ 1,5	27 1,3,5	13 ॥ 13568
	उ.षा. 1	25 3,9	26 4,9	12 4689	6 15678	10 14578	17 1457	25 1,4,5	27 1,3,5	27 ॥ 1,3,5	23 ॥ 37,व	23 ॥ 3,7,व	8 ॥ 678व	8 ॥ 4689	24 4,9व	25 9,व	28 ॥ 1,5	28 ॥ 1,5	21 1,5,6
मकर	उ.षा. 2,3,4	27 3,5	28 ॥ 4,5	14 ॥ 4568	12 4689	16 4,8,9	23 3,4,9	21 1347	22 1,3,7	22 ॥ 1,3,7	28 3,5	28 3,5	14 3568	4 ॥ 45678	20 4,5,7	21 4,5,7	24 ॥ 9,व	25 9,व	17 ॥ 4,6,9
	श्रव 1234	27 3,5	26 ॥ 3,4,5	14 4568	12 4689	16 4,8,9	26 4,9	23 147व	21 1,3,7	22 1,4,7	28 4,5	26 4,5	15 4568	6 ॥ 5678	18 ॥ 4,5,7	20 4,57	24 4,9व	24 ॥ 4,9व	19 ॥ 4,6,9
	धनि 1,2	20 3456	11 ॥ 34568	26 3,4,5	24 3,4,9	20 ॥ 4,6,9	12 4689	9 1678	16 1467	16 1467	22 4,5,6	13 4568	28 4,5	19 ॥ 4,5,7	5 ॥ 5678	12 ॥ 4567	16 469व	18 469व	15 489व
कुम्भ	धनि 3,4	20 4,5,6	10 ॥ 4568	26 3,4,5	30 ॥ 3,4	27 4,6	19 ॥ 4,6,8	12 4,8,9	19 4,6,9	18 ॥ 3469	13 4567	4 ॥ 45678	19 ॥ 357व	25 ॥ 3,5,व	11 568व	18 ॥ 456व	18 4,6,7	19 4,6,7	17 4,7,8
	शत 1 से 4	15 3568	21 3,5,6	28 3,5	32 ॥ 3	25 ॥ 3,4,6	27 4,6	20 4,6,9	12 4698	13 6,9,8	8 5678व	14 567व	21 5,7,व	26 ॥ 3,5,व	20 ॥ 356व	12 ॥ 568व	11 ॥ 3678	9 4678	25 4,7
	पू.भा. 1,2,3	18 4,5,8	25 3,4,5	20 4,5,6	25 3,4,6	31 ॥ 3,4	31 ॥ 3	25 3,4,9	17 ॥ 4,8,9	18 ॥ 4,8,9	13 ॥ 4578व	20 457व	13 3567व	19 ॥ 5,6,व	25 ॥ 4,5व	16 ॥ 458व	15 ॥ 4,7,8	15 ॥ 3478	17 ॥ 3467
मीन	पू.भा. 4	14 ॥ 1248	22 1234	16 ॥ 1246	19 1456	26 1345	26 1345	26 145व	18 ॥ 1व458	19 1458	18 4,8,9	25 4,9	19 4,6,9	18 1467	23 ॥ 1347	14 ॥ 1478	16 1458व	17 1458	18 ॥ 1456
	उ.भा. 1 से 4	25 1,2,3	17 1238	19 1236	21 1356	26 135	18 1358	17 ॥ 1358	25 135व	28 1,5,व	27 ॥ 9	19 ॥ 8,9	21 ॥ 6,9	19 1367	17 1378	26 1,3,7	27 ॥ 135व	27 135व	10 14568
	रेव 1 से 4	25 1,2,4	24 ॥ 1,2,3	11 1268	14 1568	17 ॥ 1358	26 1,3,5	25 135व	24 ॥ 135व	26 1,3,5	26 3,9	27 ॥ 9	14 6,8,9	13 1687	23 ॥ 1,3,7	24 1,3,7	26 135व	27 135व	19 ॥ 1456

नोट–गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1, 2, 3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-३)

वर/नक्षत्र → कन्या	नक्षत्र ↓	तुला			बृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूल 1 से 4	पू.षा. 1 से 4	उ.षा. 1 चरण	उ.षा. 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1 से 4	रेव 1 से 4
मेष	अश्वि 1 से 4	22 ॥ 1346	26 ॥ 1,3,4	22 ॥ 1346	18 ॥ 3467	25 ॥ 3,7	14 ॥ 6,7,8	13 6,8,9	25 4,9	23 ॥ 1,3,9	25 1,3,5	26 1,3,5	20 13456	20 ॥ 1456	15 1358	16 1358	15 2348	25 2,3	26 2,4
मेष	भर 1 से 4	13 ॥ 1368	29 1,3	21 ॥ 1,3,6	17 ॥ 3467	17 ॥ 378	20 3,6,7	20 6,9	18 ॥ 8,9	26 9	27 ॥ 1,5	26 1,3,5	10 14568	9 ॥ 14568	20 1356	24 1345	23 2,3,4	17 ॥ 2,3,8	27 2,3
मेष	कृति 1 चरण	27 ॥ 1,3,4	15 1368	19 ॥ 1348	15 ॥ 3478	19 ॥ 3,6,7	25 ॥ 3,7	25 3,9	18 ॥ 4,6,9	12 ॥ 6,8,9	13 ॥ 1568	12 14568	25 1,3,5	25 ॥ 1,3,5	27 1,3,5	19 ॥ 1356	17 ॥ 2346	19 ॥ 2,3,6	12 2368
वृष	कृति 2,3,4	23 1347	11 13678	14 ॥ 1378	20 ॥ 3,4,8	24 ॥ 3,6	30 ॥ 3	20 3,5,7	14 4567	7 5678	12 6,9,8	10 ॥ 4689	24 3,4,9	29 ॥ 1,3,4	31 ॥ 1,3	23 ॥ 1346	20 3456	22 3,5,6	14 3568
वृष	रोह 1 से 4	19 ॥ 1,6,7	15 ॥ 1378	9 ॥ 1678	15 1368	29 ॥ 3,4	24 3,6	14 ॥ 3567	19 ॥ 3,5,7	11 ॥ 4578	16 4,8,9	17 ॥ 4,8,9	20 ॥ 4,6,9	26 1,4,6	25 1,3,6	31 1,3	27 3,4,5	27 3,4,5	19 3,5,8
वृष	मृग 1-2	12 1678	25 ॥ 1,7	19 1367	25 3,6	21 ॥ 3,5,8	24 ॥ 3,6	15 3567	10 ॥ 3578	17 ॥ 3457	22 3,4,9	25 ॥ 4,9	13 4689	19 ॥ 1468	27 1,4,6	29 ॥ 1,3,4	26 3,5	18 3,5,8	27 3,5
मिथुन	मृग 3-4	14 6,8,9	27 4,9	21 3,6,9	14 3567	11 3578	14 3567	23 3,5,6	18 ॥ 3458	25 3,4,5	20 ॥ 347व	24 4,7,व	11 678व	13 6,8,9	21 ॥ 6,9	24 3,9	25 ॥ 3,5,व	17 ॥ 3,5,8	26 ॥ 3,5,व
मिथुन	आर्द्रा 1 से 4	21 4,6,9	27 9	20 ॥ 4,6,9	13 4567	17 ॥ व3457	3 345678	16 3568	28 3,5	28 3,5	23 ॥ 3,7व	23 ॥ 3,7,व	18 467व	19 ॥ 4,6,9	12 ॥ 689	17 ॥ 4,8,9	19 5,8,व	26 ॥ 3,5व	27 3,5,व
मिथुन	पुन. 1,2,3	21 3,6,9	28 9	22 6,9	15 5,7व	22 5,7व	7 35678	14 34568	27 3,5	27 3,5	22 ॥ 3,7व	23 ॥ 3,7,व	17 ॥ 3467	19 3469	14 6,8,9	16 4,8,9	18 ॥ 4,8,9	28 5,व	27 ॥ 3,5,व
कर्क	पुन. 4	21 1356	28 1,5व	22 156व	20 6,9	26 9	12 3689	8 ॥ 14678	21 147व	21 ॥ 147व	26 1,3,5	27 1,3,5	21 1456	12 14567	8 ॥ 1567	10 ॥ 14578	16 ॥ 4,8,9	26 ॥ 9	26 3,9
कर्क	पुष्य 1 से 4	11 14568	26 ॥ 1व35	21 ॥ 1456	19 ॥ 4,6,9	18 ॥ 8,9	21 6,9	17 ॥ 1367	11 ॥ 1478	21 ॥ 1347	26 1,3,5	25 1345	13 13568	4 ॥ 145678	14 13567	18 ॥ 1457	24 4,9	18 ॥ 8,9	27 9
कर्क	श्ले. 1 से 4	25 ॥ 1,3,5	12 1568	17 ॥ 1,5,8	15 3,8,9	20 ॥ 6,9	26 9	23 व 1,4,7	16 1367	7 ॥ 3678	13 4568	13 13568	26 1,4,5	17 ॥ 1457	20 1357	11 14567	18 4,6,9	21 6,9	13 6,8,9
सिंह	मघा 1 से 4	24 ॥ 1,3,5	11 ॥ 13568	16 ॥ 1358व	22 ॥ 3,8व	26 3,6व	33 व	25 9,व	19 ॥ 6,9व	8 ॥ 689व	3 ॥ 15678	4 ॥ 15678	18 ॥ 1,5,7	24 ॥ 1,5,व	25 ॥ 135 व	18 ॥ 156व	19 3,6,7	20 3,6,7	13 ॥ 6,7,8
सिंह	पू.फा. 1 से 4	10 ॥ 1568	25 ॥ 135व	18 ॥ 156व	24 3,6व	23 ॥ 3,8व	25 ॥ 3,6व	20 6,9व	17 ॥ 8,9,व	24 4,9व	19 1,5,7	18 ॥ 1,5,7	4 ॥ 15678	11 1568	19 ॥ 1356व	24 ॥ 135व	25 3,7	17 ॥ 3,7,8	26 3,7
सिंह	उ.फा. 1	17 13456	25 ॥ 1,3,5	16 ॥ 13456	22 ॥ 3,4,6	31 ॥ 3,व	17 ॥ 3,6,8	9 ॥ 3689	25 9,व	25 ॥ 9,व	20 1,5,7	20 1,5,7	11 ॥ 1567	17 ॥ 1356	11 3568	15 ॥ 358व	16 3478	26 ॥ 3,7	26 3,7
कन्या	उ.फा. 2,3,4	16 ॥ 1246	25 ॥ 1,2,3	17 1246	18 456व	27 ॥ 3,5व	13 ॥ 568व	14 3568	29 ॥ 5	29 ॥ 5	24 ॥ 9,व	25 9,व	17 3,6,9	16 ॥ 1367	10 ॥ 3678	14 ॥ 1378	17 ॥ 3,5,8	28 3,5व	27 ॥ 3,5,व
कन्या	हस्त 1 से 4	20 1246	26 ॥ 1,2,3	18 ॥ 1236	20 3456	26 3,5व	13 ॥ 3568व	15 3568	27 3,5	28 ॥ 5	24 9,व	24 9,व	19 4,6,9	19 1467	8 ॥ 34678	13 ॥ 1378	16 ॥ 3458	26 ॥ 3,5व	27 ॥ 3,5,व
कन्या	चित्रा 1,2	20 1,2,8	19 1246	26 ॥ 1,2,3	28 ॥ 3,5व	11 3568	25 345व	27 3,4,5	14 3568	22 3,5,6	17 ॥ 3,6,9	19 6,9,व	15 ॥ 4,8,9	16 1478	24 1,4,7	16 ॥ 1467	19 ॥ 3456	10 34568	19 ॥ 3456

नोट–गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-४)

कन्या	वर/नक्षत्र → / नक्षत्र ↓	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूल 1 से 4	पू.षा. 1 से 4	उ.षा. 1 चरण	उ.षा. 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1 से 4	रेव 1 से 4
तुला	चित्रा 3,4	28 8	27 4,6	34 3	23 ॥ 2,3व	6 2348व	21 234व	27 ॥ 3,4,5	14 3568	22 3,5,6	25 3,6,व	27 6,व	23 ॥ 4,8,व	18 ॥ 4,8,9	26 4,9	19 3469	12 4567	3 345678	12 व34578
	स्वा. 1 से 4	28 4,6	28 8	20 4,6,8	10 248व	21 ॥ 2,3व	16 ॥ 236व	23 3,5,6	27 3,5	19 3,5,8	22 3,8,व	23 3,8,व	27 4,6	21 4,6,9	20 4,6,9	25 4,9	19 457,व	19 ॥ 357,व	12 3578
	विशा 1,2,3	34 ॥ 3	19 4,6,8	28 8	17 ॥ 2,8व	16 246व	21 ॥ 234व	27 ॥ 3,4,5	22 3,5,6	14 3568	17 368व	17 ॥ 368व	30 ॥ 3,4,व	25 3,4,9	26 4,9	20 4,6,9	14 4567	13 ॥ 4567	4 45678
वृश्चिक	विशा 4	23 123व	7 12468व	16 ॥ 128व	28 8	27 ॥ 4,6	31 ॥ 3,4	22 1234	17 ॥ 1362व	9 12368	12 ॥ 13568	12 ॥ 13568	25 1345	24 1345	26 145,व	20 1456	19 ॥ 4,6,9	18 ॥ 4,6,9	9 ॥ 4689
	अनु. 1 से 4	6 ॥ 12व68	22 123व	16 1246	28 4,6	28 8	31 6	15 12346	13 ॥ 1238व	22 123व	25 1,3,5	26 1,3,5	12 13568	11 1358	21 1356	24 ॥ 145व	24 4,9	18 ॥ 8,9	27 ॥ 9
	ज्ये. 1 से 4	19 ॥ 1234	15 126व	19 ॥ 1234	31 ॥ 3,4	30 6	28 8	14 ॥ 1248	17 ॥ 1236	17 ॥ 1व236	20 1356	20 1356	25 1345	24 1345व	18 1व358	10 13568	9 ॥ 3689	21 ॥ 6,9	21 6,9
धनु	मूल 1 से 4	26 1,4,5	21 1356	26 1,4,5	23 1234	15 ॥ व2346	15 व248	28 8	28 4,6	26 ॥ 3,6	15 ॥ 1236	15 ॥ 1236	20 ॥ 1234	28 ॥ 1,3,4	21 ॥ 1,3,8	14 ॥ 1468	16 ॥ 3468	25 6,त्र	27 6,व
	पू.षा. 1 से 4	13 1568	27 1,3,5	21 1356	18 246व	15 ॥ 238व	18 246व	28 4,6	28 8	34 -	23 124व	23 ॥ 1,2,व	5 ॥ 1268	14 ॥ 1468	23 ॥ 1,4,6	28 ॥ 1,4	30 ॥ 4,व	23 ॥ 8,व	31 3,व
	उ.षा. 1	21 1,5,6	19 1,5,8	13 1568	9 ॥ 268व	24 2,3व	18 ॥ 2,3,6	26 ॥ 3,4,6	34 -	28 8	16 ॥ 128व	15 1248व	15 ॥ 1236व	23 ॥ 1,3,6	23 ॥ 1,3,6	29 ॥ 1,3,4	31 3,व	31 3,व	23 3,8,व
मकर	उ.षा. 2,3,4	24 1,3,6	22 ॥ 1,3,8	15 ॥ 1368	13 4568	27 4,5	21 4,5,6	16 246व	24 2,4व	17 ॥ 2,8व	28 8	26 4,8	26 ॥ 4,6	17 ॥ 126व	17 ॥ 1236व	23 ॥ 1234	30 ॥ 3	31 3	22 ॥ 3, 8
	श्रव 1234	27 146व	22 ॥ 148व	17 ॥ 1468	14 3568	27 3,4,5	22 3456	17 ॥ 246व	23 ॥ 2,3व	15 248व	25 4,8	28 8	28 4,6	19 1246	18 1व236	21 ॥ 124व	28 ॥ 3,4	29 ॥ 3	22 ॥ 3,8
	धनि 1,2	23 148व	24 ॥ 146व	29 1,4व	26 3,4,5	12 4568	26 3,4,5	21 234व	7 ॥ 2468व	16 2346	27 3,4,6	27 ॥ 4,6	28 8	18 ॥ 128व	24 124व	20 126व	26 ॥ 3,6	15 ॥ 4,6,8	22 ॥ 3,4,6
कुम्भ	धनि 3,4	18 ॥ 4,8,9	20 4,6,9	25 3,4,9	25 4,5व	11 4568	25 4,5व	29 ॥ 3,4	15 ॥ 3468	24 ॥ 3,6	18 236व	19 246व	20 2,8,व	28 8	33 4	28 ॥ 3,6	18 236व	7 2468व	14 ॥ 246व
	शत 1 से 4	26 4,9	19 ॥ 4,6,9	26 4,9	26 ॥ 4,5व	21 356व	19 358व	22 ॥ 3,4,8	24 ॥ 3,4,6	24 ॥ 3,4,6	18 ॥ 236व	18 ॥ 236व	25 2,4,व	33 4	28 8	19 ॥ 4,6,8	8 ॥ 2468व	17 ॥ 236व	16 236व
	पू.भा. 1,2,3	19 3469	26 4,9	20 4,6,9	20 ॥ 456व	26 ॥ 4,5व	11 4568व	15 3468	29 ॥ 3,4	30 ॥ 3,4	24 ॥ 234व	23 ॥ 234व	20 ॥ 236व	28 ॥ 3,6	19 4,6,8	28 8	17 ॥ 2,8,व	22 ॥ 2,4,व	20 ॥ 234व
मीन	पू.भा. 4	12 14567	19 ॥ 1457	13 ॥ 14567	19 ॥ 4,6,9	25 4,9	9 4689	15 ॥ 1468	29 134व	30 1,3व	29 ॥ 1,3,4	28 ॥ 1,3,4	25 ॥ 1,3,6	17 1236व	8 12468	17 128व	28 8	33 4	30 ॥ 3,4
	उ.भा. 1 से 4	3 145678	19 ॥ 1357	12 ॥ 14567	18 ॥ 4,6,9	19 ॥ 8,9	21 ॥ 6,9	24 ॥ 136व	22 ॥ 1,8व	30 134व	29 ॥ 1,3,4	29 ॥ 1,3	14 ॥ 1468	5 ॥ 12468	16 ॥ 1236व	22 124व	33 4	28 8	35 -
	रेव 1 से 4	13 14567	11 1578व	4 ॥ 145678	10 ॥ 4689	27 ॥ 9	22 ॥ 6,9	27 146व	29 ॥ 1,3व	21 ॥ 138व	21 1348	21 ॥ 1348	23 1346	14 ॥ 1246व	16 ॥ 1236व	18 ॥ 124व	30 3,4	34 -	28 8

नोट–गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1, 2, 3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।